Teach Yourself Samskrit

संस्कृतस्वाध्यायः

तृतीया दीक्षा - वाङ्मयावतरणी

प्रधान सम्पादक :
वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री

विदुरनीतिशतकम्

अध्ययनसामग्रीलेखिका
शशिप्रभा गोयल

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
नवदेहली

Teach Yourself Samskrit

संस्कृतस्वाध्यायः

तृतीया दीक्षा-वाङ्मयावतरणी

प्रधानसम्पादकः

वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री

विदुरनीतिशतकम्

अध्ययनसामग्रीलेखिका

शशिप्रभा गोयल

सम्पादकः

ललितकुमारत्रिपाठी

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

नवदेहली

प्रकाशक:

कुलसचिव:
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालय:)
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
जनकपुरी, नवदेहली - 110 058
EPABX: 011-28520977, 28521994, 28524993-94-95
वेबसाइट: www.sanskrit.nic.in
ई-मेल: rsks@nda.vsnl.net.in, rkssale@yahoo.com

प्रथमपुनर्मुद्रणम् वर्षम्, 2006, 1000 प्रतय:
द्वितीयपुनर्मुद्रणम् वर्षम्, 2009, 2000 प्रतय:
तृतीयपुनर्मुद्रणम् वर्षम्, 2010, 2000 प्रतय:
चतुर्थपुनर्मुद्रणम् वर्षम्, 2013, 1000 प्रतय:

ISBN : 81-86111-29-8

मूल्यम् : रु. 130/-

मुद्रक:
ग्राफिक वर्ल्ड
ग्राफिक एंड प्रिंट सर्विसेस
1659-62, दखनीराय स्ट्रीट,
दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002

संस्कृतस्वाध्यायः

तृतीया दीक्षा

विदुरनीतिशतकम्

प्रधानसम्पादनं दिग्दर्शनं च

प्रो. वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री

अध्ययनसामग्रीलेखिका

शशिप्रभा गोयल

पुनरीक्षणं सम्पादनं च

प्रो. रामानुज देवनाथन्, डा. ललितकुमारत्रिपाठी

डा. धर्मेन्द्रकुमारसिंहदेवः

संयोजनम्

डा. ललितकुमारत्रिपाठी

सहयोगः

श्री कुलपतिशर्मा

अक्षरयोजनम्

श्री राजीवकुमारसिंहः

दो शब्द

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने संस्कृत भाषा के प्रारम्भिक अध्ययन के लिए संस्कृत स्वाध्याय योजना का शुभारम्भ किया। इस योजना के अन्तर्गत प्रकाशित प्रथमा एवं द्वितीया दीक्षा की पाठ्य-सामग्री अतीव लोकोपकारक सिद्ध हुई है। संस्थान इसी कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए तृतीया दीक्षा हेतु संस्कृत वाङ्मय के अध्ययन को पाठ्य-सामग्री का मुख्य आधार बना रहा है। इसके अन्तर्गत विभिन्न काव्य-ग्रन्थों से उत्कृष्ट पद्यों का संग्रह करके उन पर भाषा-शिक्षण की दृष्टि से अध्ययन-सामग्री तैयार की जा रही है। 'संक्षेपरामायणम्' का प्रकाशन हो चुका है। सम्प्रति 'विदुरनीतिशतकम्' का प्रकाशन किया जा रहा है।

संस्थान के पञ्चस्तरीय संस्कृत शिक्षण का स्वरूप एवं उद्देश्य इस प्रकार है–

पञ्चस्तरीय पाठ्यक्रम (संक्षिप्त परिचय)

पाठ्यक्रम	उद्देश्य
प्रथमा दीक्षा (प्रथम स्तर) **व्यवहारावतरणी**	⊙ इसका उद्देश्य दैनन्दिन व्यवहारोपयोगी संस्कृत में बोलने, लिखने तथा पढ़ने की प्रारम्भिक क्षमता का विकास करना है।
द्वितीया दीक्षा (द्वितीय स्तर) **व्यवहारावगाहनी**	⊙ इसका उद्देश्य व्यावहारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सभी प्रकार के भावों को संस्कृत में अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करना है।
तृतीया दीक्षा (तृतीय स्तर) **वाङ्मयावगाहनी**	⊙ इसका प्रमुख उद्देश्य अध्येता की भाषा को परिष्कृत करते हुए संस्कृत वाङ्मय की सरल रचनाओं को समझने की सामर्थ्य का विकास करना है।
चतुर्थी दीक्षा (चतुर्थ स्तर) **वाङ्मयावगाहनी**	⊙ इस स्तर में उच्चस्तरीय संस्कृत शिक्षण के साथ-साथ संस्कृत वाङ्मय की विभिन्न कृतियों के अध्ययन के द्वारा अध्येता की भाषा को साहित्यिक-लेखन एवं अभिभाषण की दृष्टि से विकसित करना है।
पञ्चमी दीक्षा (पञ्चम स्तर) **व्युत्पादिनी**	⊙ इस स्तर के माध्यम से भाषीय प्रयोग कौशल के साथ काव्य एवं शास्त्र के गम्भीर अध्ययन हेतु पृष्ठभूमि के रूप में आवश्यक व्युत्पत्ति का विकास करना है।

विदुरनीति का परिचय

संस्कृत के प्रत्येक प्रबुद्ध पाठक को महात्मा विदुर के नाम से सुपरिचित होने का सौभाग्य प्राप्त है। उनके नाम का उल्लेख महाभारत में हुआ है। विदुर एक ऐसे महात्मा थे जो महाप्रज्ञ, परम नीतिज्ञ, सत्यनिष्ठ एवं धर्म के मर्मज्ञ थे। सञ्जय ने युधिष्ठिर और श्रीकृष्ण का सन्देश धृतराष्ट्र को सुनाया कि यदि पाण्डवों का उचित भाग उन्हें न दिया गया हो तो युद्ध अवश्यम्भावी है। इस पर सन्तप्त धृतराष्ट्र को महात्मा विदुर ने धर्मयुक्त तथा कल्याणकारी उपदेश दिया। धृतराष्ट्र जैसे श्रद्धावान् श्रोता के जिज्ञासा-पूर्ण प्रश्नों व विदुर जैसे हितचिन्तक नीतिज्ञ के सारगर्भित उत्तरों का संग्रह ही विदुरनीति है।

विदुरनीति एक ऐसा सद्ग्रन्थ है जो हमें सदाचार, व्यवहार-कुशलता एवं राजनैतिक बुद्धिमत्ता सम्बन्धी उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करता है। आबालवृद्ध सभी इस रोचक ग्रन्थ के पठन-पाठन व मनन से लाभान्वित होकर अपने जीवन को धन्य बना सकते हैं। हमने इसी पावन ग्रन्थ के एक सौ अनूठे रत्नों का संग्रह तृतीया दीक्षा के अध्येताओं के लिए किया है। पाँच-पाँच श्लोकों के अन्तराल पर व्याकरण-सम्बन्धी अभ्यास जोड़े गए हैं। ये श्लोकों के सर्वांगीण हृदयंगम में सहायक सिद्ध होंगे।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि सुधी पाठक हमारे इस विनीत प्रयास का लाभ अवश्य उठाएँगे।

इस अध्ययन-सामग्री की लेखिका श्रीमती शशिप्रभा गोयल अभिनन्दनीय हैं जिन्होंने इस अवस्था में भी पूरे उत्साह एवं मनोयोग से इस पाठ्य-सामग्री को तैयार किया है। इस सामग्री के पुनरीक्षण एवं सम्पादन में प्रो. आर. देवनाथन्, डॉ. ललित कुमार त्रिपाठी, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सिंह देव, श्री वेङ्कटेश मूर्ति, डॉ. रत्नमोहन झा, प्रफुल्ल गड़पाल एवं तङ्गल्लपल्लि महेन्द्र का अवदान उल्लेखनीय है। इस सामग्री के प्रकाशन में जिनका भी साक्षात् या परोक्ष अवदान रहा है; मैं उन सबके प्रति साधुवाद देता हूँ।

अध्येतागण इसका अध्ययन कर इसमें अपेक्षित परिष्करण या परिवर्तन के सुझाव अवश्य दें, जिन्हें अग्रिम संस्करण में क्रियान्वित किया जा सकेगा। हमें विश्वास है कि अध्येताओं के लिए यह अध्ययन-सामग्री उपयोगी सिद्ध होगी।

वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री

सङ्केतसूची

वचनम्

एक. – एकवचनम्

द्वि. – द्विवचनम्

बहु. – बहुवचनम्

विभक्तिः

प्र. – प्रथमा

द्विती. – द्वितीया

तृ. – तृतीया

च. – चतुर्थी

प. – पञ्चमी

ष. – षष्ठी

स. – सप्तमी

सम्बो. – सम्बोधनम्

पुरुषः

प्रपु. – प्रथमपुरुषः

मपु. – मध्यमपुरुषः

उपु. – उत्तमपुरुषः

अन्यसङ्केताः

विलि. – विधिलिङ्

सं. – संज्ञा

वि. – विशेषणम्

क्रि. – क्रिया

अ. – अव्ययम्

आ.प. – आत्मनेपदी

प. – परस्मैपदम्

आ. – आत्मनेपदम्

उत्तर. – उत्तररामचरितम्

कठ. – कठोपनिषद्

किरात. – किरातार्जुनीयम्

चाणक्य. – चाणक्यनीतिः

महा.शान्ति. – महाभारत/शान्तिपर्व

भर्तृ. – भर्तृहरिनीतिशतकम्

मनु. – मनुस्मृतिः

महा.आश्व. – महाभारत/आश्वमेधिकपर्व

महा.वन. – महाभारत/वनपर्व

महा.स्वर्ग. – महाभारत/स्वर्गारोहणपर्व

मृच्छ. – मृच्छकटिकम्

योग. – योगवासिष्ठम्

रघु. – रघुवंशम्

रामा.अयो. – रामायणम् अयोध्याकाण्डम्

विदुर. – विदुरनीतिः

शुक्र. – शुक्रनीतिः

सु.र.भा. – सुभाषितरत्नभाण्डागारम्

हितो. – हितोपदेशः

हितो.सु.भे. – हितोपदेशः सुहृद्भेदः

हितो.मि.ला. – हितोपदेशः मित्रलाभः

चाणक्यराज. – चाणक्यराजनीतिः

विषय-सूची

	विषयः	पृष्ठसंख्या
1.	**विद्यार्थी वा सुखार्थी वा** सुखार्थिनः कुतो विद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम्। सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ।।	1
2.	**विद्यायाः शत्रवः** असूयैकपदं मृत्युरतिवादः श्रियो वधः। अशुश्रूषा त्वरा श्लाघा विद्यायाः शत्रवः त्रयः ।।	2
3.	**विद्यार्थिनां सप्त दोषाः** आलस्यं मदमोहौ च चापलं गोष्ठिरेव च। स्तब्धता चाभिमानित्वं तथाऽत्यागित्वमेव च। एते वै सप्तदोषाः स्युः सदा विद्यार्थिनां मताः ।।	2
4.	**अभिवादनशीलः वर्धते** अभिवादशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। चत्वारि सम्प्रवर्धन्ते कीर्तिरायुर्यशो बलम् ।।	3
5.	**प्रशस्तानां सेवा** निषेवते प्रशस्तानि निन्दितानि न सेवते। अनास्तिकः श्रद्दधान एतत् पण्डितलक्षणम् ।।	4
अभ्यासः – 1		6
6.	**शान्तिः योगेन विन्द्यते** बुद्ध्या भयं प्रणुदति तपसा विन्दते महत्। गुरुशुश्रूषया ज्ञानं शान्तिं योगेन विन्दति ।।	11
7.	**प्रज्ञाबलं बलं श्रेष्ठम्** येन त्वेतानि सर्वाणि सङ्गृहीतानि भारत। यद् बलानां बलं श्रेष्ठं तत् प्रज्ञाबलमुच्यते ।।	11
8.	**प्राज्ञैः मैत्रीं समाचरेत्** मत्या परीक्ष्य मेधावी बुद्ध्या सम्पाद्य चासकृत्। श्रुत्वा दृष्ट्वाथ विज्ञाय प्राज्ञैर्मैत्रीं समाचरेत् ।।	12
9.	**विघ्नेभ्यः भयं कुतः** यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः। समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते ।।	13
10.	**शान्तो हि पण्डितः** न हृष्यत्यात्मसम्माने नावमानेन तप्यते। गाङ्गो ह्रद इवाक्षोभ्यो यः स पण्डित उच्यते ।।	14
अभ्यासः – 2		15
11.	**मूर्खः कः ?** अमित्रं कुरुते मित्रं मित्रं द्वेष्टि हिनस्ति च। कर्म चारभते दुष्टं तमाहुर्मूढचेतसम् ।।	20
12.	**दुर्गुणप्रियाः हि दुर्जनाः**	20

न तथेच्छन्ति कल्याणान् परेषां वेदितुं गुणान् । यथैषां ज्ञातुमिच्छन्ति नैर्गुण्यं पापचेतसः ॥

13. परं क्षिपति दोषेण 21

परं क्षिपति दोषेण वर्तमानः स्वयं तथा । यश्च क्रुध्यत्यनीशानः स च मूढतमो नरः ॥

14. सुभाषिता वाक् 22

अभ्यावहति कल्याणं विविधं वाक् सुभाषिता । सैव दुर्भाषिता राजन्ननर्थायोपपद्यते ॥

15. न संरोहति वाक्क्षतम् 23

रोहते सायकैर्विद्धं वनं परशुना हतम् । वाचा दुरुक्तं बीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम् ॥

अभ्यासः – 3 25

16. नरः कीदृशः स्यात् ? 30

नाक्रोशी स्यान्नावमानी परस्य मित्रद्रोही नोत नीचोपसेवी । न चाभिमानी न च हीनवृत्तो रूक्षां वाचं रुषतीं वर्जयीत ॥

17. मधुरवाक् 31

द्वे कर्मणी नरः कुर्वन्नस्मिंल्लोके विरोचते । अब्रुवन् परुषं किञ्चिदसतोऽनर्चयंस्तथा ॥

18. पञ्च अग्नयः 32

पञ्चाग्नयो मनुष्येण परिचर्या प्रयत्नतः । पिता माताग्निरात्मा च गुरुश्च भरतर्षभ ॥

19. षड् गुणाः धारणीयाः 33

षडेते तु गुणाः पुंसा न हात्व्याः कदाचन । सत्यं दानमनालस्यमनसूया क्षमा धृतिः ॥

20. मानवभूषणानि 33

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च । पराक्रमश्चाबहुभाषिता च दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च ॥

अभ्यासः – 4 35

21. नित्यदुःखिताः 41

ईर्ष्यी घृणी न सन्तुष्टः क्रोधनो नित्यशङ्कितः । परभाग्योपजीवी च षडेते नित्यदुःखिताः ॥

22. आर्यशीलः सत्पुरुषः 41

न स्वे सुखे वै कुरुते प्रहर्षं नान्यस्य दुःखे भवति प्रहृष्टः । दत्त्वा न पश्चात् कुरुतेऽनुतापं स कथ्यते सत्पुरुषार्थशीलः ॥

23. न विरोधः कदाचन 42

सम्भोजनं संकथनं सम्प्रीतिश्च परस्परम् । ज्ञातिभिः सह कार्याणि न विरोधः कदाचन ॥

24. अतिथिसत्कारः 43

पीठं दत्त्वा साधवेऽभ्यागताय आनीयापः परिनिर्णिज्य पादौ । सुखं पृष्ट्वा प्रतिवेद्यात्मसंस्थां ततो दद्यादन्नमवेक्ष्य धीरः ॥

25. शीलं प्रधानम् 44

शीलं प्रधानं पुरुषे तद् यस्येह प्रणश्यति । न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभिः ॥

अभ्यासः–5 46

26. कुलं वृत्तेन रक्ष्यते 52
सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्या योगेन रक्ष्यते। मृजया रक्ष्यते रूपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते॥

27. कुलपरीक्षा 53
परिच्छदेन क्षेत्रेण वेश्मना परिचर्यया। परीक्षेत कुलं राजन् भोजनाच्छादनेन च॥

28. असाधूनां शीलम् 53
अकस्मादेव कुप्यन्ति प्रसीदन्त्यनिमित्ततः। शीलमेतदसाधूनामभ्रं पारिप्लवं यथा॥

29. सतां लक्षणं सदाचारः 54
अकीर्तिं विनयो हन्ति हन्त्यनर्थं पराक्रमः। हन्ति नित्यं क्षमा क्रोधमाचारो हन्त्यलक्षणम्॥

30. मर्यादापालकः वरः 55
दुष्कुलीनः कुलीनो वा मर्यादां यो न लङ्घयेत्। धर्मापेक्षी मृदुर्ह्रीमान् स कुलीनशतात् वरः॥

अभ्यासः–6 57

31. क्षमया साध्यते सर्वम् 63
क्षमा वशीकृतिर्लोके क्षमया किं न साध्यते। शान्तिखड्गः करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः॥

32. दानी दरिद्रः 63
द्वाविमौ पुरुषौ राजन्! स्वर्गस्योपरि तिष्ठतः। प्रभुश्च क्षमया युक्तो दरिद्रश्च प्रदानवान्॥

33. सारं सर्वतः आदद्यात् 64
अप्युन्मत्तात् प्रलपतो बालाच्च परिजल्पतः। सर्वतः सारमादद्याद् अश्मभ्य इव काञ्चनम्॥

34. किम् आद्यम्? 65
यच्छक्यं ग्रसितुं ग्रस्यं ग्रस्तं परिणमेच्च यत्। हितं च परिणामे स्यात् तदाद्यं भूतिमिच्छता॥

35. मितभोजनम् 66
गुणाश्च षण्मितभुक्तं भजन्ते आरोग्यमायुश्च बलं सुखं च। अनाविलं चास्य भवत्यपत्यं न चैनमाद्यून इति क्षिपन्ति॥

अभ्यासः–7 68

36. नापक्वं फलं प्रचेतव्यम् 74
वनस्पतेरपक्वानि फलानि प्रचिनोति यः। स नाप्नोति रसं तेभ्यो बीजं चास्य विनश्यति॥

37. धनता अरोगता च 74
न मनुष्ये गुणः कश्चिद् राजन् सधनतामृते। अनातुरत्वाद् भद्रं ते मृतकल्पा हि रोगिणः॥

38. गुणहीनाः त्याज्याः 75
समृद्धाः गुणतः केचिद् भवन्ति धनतोऽपरे। धनवृद्धान् गुणैर्हीनान् धृतराष्ट्र विवर्जय॥

39. कीर्तिमान् महीयते 76
यावत्कीर्तिर्मनुष्यस्य पुण्या लोके प्रगीयते । तावत् स पुरुषव्याघ्र ! स्वर्गलोके महीयते ॥

40. चञ्चलानि इन्द्रियाणि 77
चलानि हीमानि षडिन्द्रियाणि तेषां यद् यद् वर्धते यत्र यत्र । ततस्ततः स्रवते बुद्धिरस्य छिद्रोदकुम्भादिव नित्यमम्भः ॥

अभ्यासः–8 79

41. विषयासक्तिः नाशाय 84
इन्द्रियाणामनुत्सर्गो मृत्युनाऽपि विशिष्यते । अत्यर्थं पुनरुत्सर्गः सादयेद् दैवतान्यपि ॥

42. न किञ्चित् शाश्वतं लोके 85
पुनर्नरो म्रियते जायते च पुनर्नरो हीयते वर्धते च । पुनर्नरो याचति याच्यते च पुनर्नरः शोचति शोच्यते च ॥

43. जातस्य हि ध्रुवं मृत्युः 86
महाबलान् पश्य महानुभावान् प्रशास्य भूमिं धनधान्यपूर्णाम् । राज्यानि हित्वा विपुलांश्च भोगान् गतान्नरेन्द्रान् वशमन्तकस्य ॥

44. पुण्यपापे हि सहचरे 87
अन्यो धनं प्रेत्यगतस्य भुङ्क्ते वयांसि चाग्निश्च शरीरधातून् । द्वाभ्यामयं सह गच्छत्यमुत्र पुण्येन पापेन च वेष्ट्यमानः ॥

45. सन्तोषे एव सन्तृप्तिः 88
नित्यो धर्मः सुखदुःखे त्वनित्ये जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः । त्यक्त्वानित्यं प्रतितिष्ठस्व नित्ये संतुष्य त्वं तोषपरो हि लाभः ॥

अभ्यासः–9 90

46. धीरो याति सुखम् 95
रथः शरीरं पुरुषस्य राजन् आत्मा नियन्तेन्द्रियाण्यस्य चाश्वाः । तैरप्रमत्तः कुशली सदश्वैः दान्तैः सुखं याति रथीव धीरः ॥

47. पुण्यो हि अलोभः आत्मा 96
आत्मा नदी भारत ! पुण्यतीर्था सत्योदका धृतिकूला दयोर्मिः । तस्यां स्नातः पूयते पुण्यकर्मा पुण्यो ह्यात्मा नित्यमलोभ एव ॥

48. त्रयं त्यजेत् 97
त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः । कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत् त्रयं त्यजेत् ॥

49. धृतिमयी नौका 98
कामक्रोधग्राहवतीं पञ्चेन्द्रियजलां नदीम् । नावं धृतिमयीं कृत्वा जन्मदुर्गाणि सन्तर ॥

50. वृद्धसेवी न मुह्यति 98
प्रज्ञावृद्धं धर्मवृद्धं स्वबन्धुं विद्यावृद्धं वयसा चापि वृद्धम् । कार्याकार्ये पूजयित्वा प्रसाद्य यः सम्पृच्छेन्न स मुह्येत् कदाचित् ॥

अभ्यासः–10 100

51. अनात्मनि श्रुतं नष्टम् 105
नष्टं समुद्रे पतितं नष्टं वाक्यमशृण्वति । अनात्मनि श्रुतं नष्टं नष्टं हुतमनग्निकम् ॥

52. कल्याणे मनः कुर्यात् 106
यथा यथा हि पुरुषः कल्याणे कुरुते मनः। तथा तथाऽस्य सर्वार्थाः सिद्ध्यन्ते नात्र संशयः॥

53. सर्वं हरति अभिमानः 107
जरा रूपं हरति हि धैर्यमाशा मृत्युः प्राणान् धर्मचर्यामसूया। क्रोधः श्रियं शीलमनार्यसेवा ह्रियं कामः सर्वमेवाभिमानः॥

54. विद्वांसः मूढैः अवमन्यन्ते 108
विद्याशीलवयोवृद्धान् बुद्धिवृद्धाँश्च भारत। धनाभिजातवृद्धाँश्च नित्यं मूढोऽवमन्यते॥

55. सप्त श्रियः समिधः 108
धृतिः शमो दमः शौचं कारुण्यं वागनिष्ठुरा। मित्राणां चानभिद्रोहः सप्तैताः समिधः श्रियः॥

अभ्यासः–11 110

56. अष्टविधः धर्ममार्गः 116
इज्याध्ययनदानानि तपः सत्यं क्षमाऽघृणा। अलोभ इति मार्गोऽयं धर्मस्याष्टविधः स्मृतः॥

57. सुखं वसेत् 116
पूर्वे वयसि तत् कुर्याद् येन वृद्धः सुखं वसेत्। यावज्जीवेन तत् कुर्यात् येन प्रेत्य सुखं वसेत्॥

58. सुखिनः पुरुषाः त्रयः 117
सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः। शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्॥

59. भावानुरूपा सिद्धिः 118
यादृशैः सन्निविशते यादृशांश्चोपसेवते। यादृगिच्छेच्च भवितुं तादृग् भवति पूरुषः॥

60. तद् वै मित्रम् 119
न तन्मित्रं यस्य कोपाद् बिभेति यद् वा मित्रं शङ्कितेनोपचर्यम्। यस्मिन् मित्रे पितरीवाश्वसीत तद् वै मित्रं सङ्गतानीतराणि॥

अभ्यासः–12 121

61. चिरस्थायी मैत्री 126
ययोश्चित्तेन वा चित्तं निभृतं निभृतेन वा। समेति प्रज्ञया प्रज्ञा तयोर्मैत्री न जीर्यति॥

62. सन्तापाद् भ्रश्यते सर्वम् 127
सन्तापाद् भ्रश्यते रूपं सन्तापाद् भ्रश्यते बलम्। सन्तापाद् भ्रश्यते ज्ञानं सन्तापाद् व्याधिमृच्छति॥

63. किं केन जयेत् ? 127
अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं साधुना जयेत्। जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम्॥

64. हेयमधर्मयुक्तं धनम् 128
महान्तमप्यर्थमधर्मयुक्तं यः सन्त्यजत्यनपाकृष्ट एव। सुखं सुदुःखान्यवमुच्य शेते जीर्णां त्वचं सर्प इवावमुच्य॥

65. अयोग्येषु धनेषु मनः मा कृथाः 129
अतिक्लेशेन येऽर्थाः स्युर्धर्मस्यातिक्रमेण वा। अरेर्वा प्रणिपातेन मा स्म तेषु मनः कृथाः॥

अभ्यासः–13 131

66. दुरुपायार्जितं धनं न यशसे 136
प्राप्नोति वै वित्तमसद्बलेन नित्योत्थानात् प्रज्ञया पौरुषेण। न त्वेव सम्यग् लभते प्रशंसां न वृत्तमाप्नोति महाकुलानाम्॥

67. शान्तिं नेच्छन्ति वै भिन्नाः 137
न वै भिन्ना जातु चरन्ति धर्मम् न वै सुखं प्राप्नुवन्तीह भिन्नाः। न वै भिन्ना गौरवं प्राप्नुवन्ति न वै भिन्ना प्रशमं रोचयन्ति॥

68. ऐक्येन प्रवर्धन्ते 138
अन्योन्यसमुपष्टम्भात् अन्योन्यापाश्रयेण च। ज्ञातयः सम्प्रवर्धन्ते सरसीवोत्पलान्युत॥

69. षडेते आयुष्यनाशकाः 139
अतिमानोऽतिवादश्च तथाऽत्यागो नराधिप क्रोधश्चात्मविधित्सा च मित्रद्रोहश्च तानि षट्। एत एवासयस्तीक्ष्णाः कृन्तन्त्यायूंषि देहिनाम् एतानि मानवान् घ्नन्ति न मृत्युर्भद्रमस्तु ते॥

70. यत्नेन स्वराष्ट्रं रक्षेत् 140
य एव यत्नः क्रियते परराष्ट्रविमर्दने। स एव यत्नः कर्तव्यः स्वराष्ट्रपरिपालने॥

अभ्यासः–14 141

71. अनीत्या राज्यनाशः 145
पितृपैतामहं राज्यं प्राप्तवान् स्वेन कर्मणा। वायुरभ्रमिवासाद्य भ्रंशयत्यनये स्थितः॥

72. चारचक्षुः भवेत् नृपः 146
गन्धेन गावः पश्यन्ति वेदैः पश्यन्ति ब्राह्मणाः। चारैः पश्यन्ति राजानश्चक्षुर्भ्यामितरे जनाः॥

73. अपृष्टोऽपि हितं ब्रूयात् 147
शुभं वा यदि वा पापं द्वेष्यं वा यदि वा प्रियम्। अपृष्टस्तस्य तद् ब्रूयाद् यस्य नेच्छेत् पराभवम्॥

74. अप्रियपथ्यवक्ता दुर्लभः 148
सुलभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः। अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥

75. अनिद्राकारणानि 148
अभियुक्तं बलवता दुर्बलं हीनसाधनम्। हृतस्वं कामिनं चौरम् आविशन्ति प्रजागराः॥

अभ्यासः–15 150

76. कृतम् आख्याति पण्डितम् 155
यस्य कृत्यं न जानन्ति मन्त्रं वा मन्त्रितं परे। कृतमेवास्य जानन्ति स वै पण्डित उच्यते॥

77. गूढमन्त्रः विजयते 155
यस्य मन्त्रं न जानन्ति बाह्याश्चाभ्यन्तराश्च ये। स राजा सर्वतश्चक्षुश्चिरमैश्वर्यमश्नुते॥

78. मन्त्रविप्लवः 156
एकं विषरसो हन्ति शस्त्रेणैकश्च वध्यते। सराष्ट्रं सप्रजं हन्ति राजानं मन्त्रविप्लवः॥

79. चत्वारः मन्त्रेण वर्ज्याः 157

चत्वारि राज्ञा तु महाबलेन वर्ज्यान्याहुः पण्डितस्तानि विद्यात् । अल्पज्ञैः सह मन्त्रं न कुर्यात् न दीर्घसूत्रैः रभसैश्चारणैश्च ॥

80. अविरोद्धा नश्यति 158

द्वाविमौ ग्रसते भूमिः सर्पो बिलेशयानिव । राजानं चाविरोद्धारं ब्राह्मणं चाप्रवासिनम् ॥

अभ्यासः–16 160

81. आत्मजयी भवेत् 165

आत्मानमेव प्रथमं द्वेष्यरूपेण यो जयेत् । ततोऽमात्यानमित्रांश्च न मोघं विजिगीषते ॥

82. राजा सर्वहरः न भवेत् 165

नाममात्रेण तुष्येत छत्रेण च महीपतिः । भृत्येभ्यो विसृजेदर्थान्नैकः सर्वहरो भवेत् ॥

83. द्यूतं न सेवेत 166

द्यूतमेतत् पुरा कल्पे दृष्टं वैरकरं नृणाम् । तस्माद् द्यूतं न सेवेत हास्यार्थमपि बुद्धिमान् ॥

84. भृत्यवात्सल्यम् 167

यस्तात न क्रुध्यति सर्वकालं भृत्यस्य भक्तस्य हिते रतस्य । तस्मिन् भृत्या भर्तरि विश्वसन्ति न चैनमापत्सु परित्यजन्ति ॥

85. आत्मा इव भृत्यः अनुकम्प्यः 168

अभिप्रायं यो विदित्वा तु भर्तुः सर्वाणि कार्याणि करोत्यतन्द्रीः । वक्ता हितानामनुरक्त आर्यः शक्तिज्ञ आत्मैव हि सोऽनुकम्प्यः ॥

अभ्यासः–17 170

86. आत्मतृप्तम् अनर्थाः त्यजन्ति 175

मितं भुङ्क्ते संविभज्याश्रितेभ्यो मितं स्वपित्यमितं कर्म कृत्वा । ददात्यमित्रेष्वपि याचितः सन् तमात्मवन्तं प्रजहत्यनर्थाः ॥

87. दीनसेवया श्रेयः अश्नुते 176

यो ज्ञातिमनुगृह्णाति दरिद्रं दीनमातुरम् । स पुत्रपशुभिर्वृद्धिं श्रेयश्चानन्त्यमश्नुते ॥

88. अविहिंसया अर्थमादद्यात् 177

यथा मधु समादत्ते रक्षन् पुष्पाणि षट्पदः । तद्वद् अर्थान् मनुष्येभ्यः आदद्यादविहिंसया ॥

89. लोकरञ्जकः 177

चक्षुषा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधम् । प्रसादयति यो लोकं तं लोकोऽनुप्रसीदति ॥

90. अनृतसाक्ष्यफलम् 178

नगरे प्रतिरुद्धः सन् बहिर्द्वारे बुभुक्षितः । अमित्रान् भूयसः पश्येद् यः साक्ष्यमनृतं वदेत् ॥

अभ्यासः–18 180

91. अनृतं सर्वनाशाय 184

तस्माद्राजेन्द्र भूम्यर्थं नानृतं वक्तुमर्हसि । मागमः ससुतामात्यो नाशं पुत्रार्थमब्रुवन् ॥

92. शठे शाठ्यं समाचरेत् 185
यस्मिन् यथा वर्तते यो मनुष्यस् तस्मिंस्तथा वर्तितव्यं स धर्मः। मायाचारो मायया वर्तितव्यः साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः॥

93. विश्वस्तेऽपि न विश्वसेत् 186
न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्ते नातिविश्वसेत्। विश्वासाद् भयमुत्पन्नं मूलान्यपि निकृन्तति॥

94. मिथ्याप्रशंसा नाशाय 187
यं प्रशंसन्ति कितवा यं प्रशंसन्ति चारणाः। यं प्रशंसन्ति बन्धक्यो, न स जीवति मानवः॥

95. सदा गृहे सन्तु 188
अजाश्च कांस्यं रजतं च नित्यं मध्वाकर्षः शकुनिः श्रोत्रियश्च। वृद्धो ज्ञातिरवसन्नः कुलीन एतानि ते सन्तु गृहे सदैव॥

अभ्यासः–19 190

96. स्त्रियः रक्ष्याः विशेषतः 195
पूजनीया महाभागाः पुण्याश्च गृहदीप्तयः। स्त्रियः श्रियः गृहस्योक्तास्तस्माद् रक्ष्या विशेषतः॥

97. सत्त्ववतां भयं कुतः ? 196
कान्तारे वनदुर्गेषु कृच्छ्रास्वापत्सु सम्भ्रमे। उद्यतेषु च शस्त्रेषु नास्ति सत्त्ववतां भयम्॥

98. शत्रुः अवश्यं वध्यः 197
न शत्रुर्वशमापन्नो मोक्तव्यो वध्यतां गतः। न्यग्भूत्वा पर्युपासीत वध्यं हन्याद् बले सति। अहताद्धि भयं तस्माज्जायते न चिरादिव॥

99. सचिव-परीक्षा 198
नापरीक्ष्य महीपालः कुर्यात्सचिवमात्मनः। अमात्ये ह्यर्थलिप्सा च मन्त्ररक्षणमेव च॥

100. धर्मं न जह्यात् 199
इदं च त्वां सर्वपरं ब्रवीमि पुण्यं पदं तात महाविशिष्टम्। न जातु कामान्न भयान्न लोभाद् धर्मं जह्याज्जीवितस्यापि हेतोः॥

अभ्यासः–20 200–204

विदुरनीतिशतकम्

विदुरनीतिशतकम्

1. विद्यार्थी वा सुखार्थी वा

श्लोकः

सुखार्थिनः कुतो विद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ॥ 8/6 ॥

पदच्छेदः

सुखार्थिनः कुतः विद्या न अस्ति विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेत् विद्याम् विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ॥

अन्वयः

सुखार्थिनः विद्या कुतः, विद्यार्थिनः सुखं न अस्ति। सुखार्थी वा विद्यां त्यजेत्, विद्यार्थी वा सुखं त्यजेत्।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः सुखम् इच्छति कथं सः विद्यां साधयितुं शक्नोति, यः च विद्याम् इच्छति तस्य सुखं नास्ति। तस्मात् यः सुखम् इच्छति सः विद्यां त्यजेत्, यः विद्याम् इच्छति सः सुखं त्यजेत्।

हिन्दी– सुख चाहने वाले को विद्या कहाँ और विद्या चाहने वाले को सुख कहाँ? अतः सुख चाहने वाला विद्या को छोड़ दे और विद्या चाहने वाला सुख को छोड़ दे।

आंग्लम्– A pleasure-seeker cannot be a knowledge-seeker and a knowledge-seeker cannot be a pleasure-seeker. Hence a pleasure-seeker should abstain from seeking knowledge and a knowledge-seeker should abstain from seeking pleasure.

सम्बद्धाः श्लोकाः

सुखार्थी चेत् त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी चेत् त्यजेत् सुखम्।
सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ॥ *(चाणक्य. 10/3)*

क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च चिन्तयेत्।
न त्याज्यौ तु क्षणकणौ नित्यं विद्याधनार्थिना ॥ *(शुक्र. 3/17)*

सुखार्थी चेत् त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी चेत् त्यजेत् सुखम्।
न विद्यासुखयोः सन्धिस्तेजस्तिमिरयोरिव ॥ *(चाणक्यराज. 3/25)*

2. विद्यायाः शत्रवः

श्लोकः

असूयैकपदं मृत्युरतिवादः श्रियो वधः।
अशुश्रूषा त्वरा श्लाघा विद्यायाः शत्रवः त्रयः ॥ 8/4 ॥

पदच्छेदः

असूया एक-पदं मृत्युः अतिवादः श्रियः वधः।
अ-शुश्रूषा त्वरा श्लाघा विद्यायाः शत्रवः त्रयः ॥

अन्वयः

असूया एकपदं मृत्युः। अतिवादः श्रियः वधः। अशुश्रूषा, त्वरा, श्लाघा (इत्येते) विद्यायाः त्रयः शत्रवः।

भावार्थः

संस्कृतम्– असूया (गुणेषु दोषारोपणप्रवृत्तिः) मृत्युतुल्या भवति। अतिप्रशंसया सम्पत्तिः नश्यति। शुश्रूषाऽकरणं, त्वरा, आत्मश्लाघनम् इति एते त्रयः विद्यायाः शत्रवः भवन्ति।

हिन्दी– असूया तुरन्त होने वाली मृत्यु के समान है। अति प्रशंसा धन-सम्पत्ति का नाश करने वाली है। सेवा न करना, जल्दबाजी करना और आत्मप्रशंसा– ये तीनों विद्या के शत्रु हैं।

आंग्लम्– Jealousy is like sudden death. boasting is murder of fortunes. Non-service attitude, haste and self-praise are the three enemies of knowledge.

सम्बद्धः श्लोकः

धर्मार्थौ यत्र न स्यातां शुश्रूषा वापि तद्विधा।
तत्र विद्या न वक्तव्या शुभं बीजमिवोषरे ॥ *(मनु. 2/115)*

3. विद्यार्थिनां सप्त दोषाः

श्लोकः

आलस्यं मदमोहौ च चापलं गोष्ठिरेव च।
स्तब्धता चाभिमानित्वं तथाऽत्यागित्वमेव च।
एते वै सप्त दोषाः स्युः सदा विद्यार्थिनां मताः ॥ 8/5 ॥

पदच्छेदः

आलस्यम् मद-मोहौ च चापलम् गोष्ठिः एव च।
स्तब्धता च अभिमानित्वम् तथा अ-त्यागित्वम् एव च।
एते वै सप्त दोषाः स्युः सदा विद्यार्थिनाम् मताः॥

अन्वयः

आलस्यं मदमोहौ च चापलं, गोष्ठिः एव च स्तब्धता च अभिमानित्वं तथा अत्यागित्वम् एते वै सप्त दोषाः विद्यार्थिनां सदा मताः स्युः।

भावार्थः

संस्कृतम्– आलस्यं, मदः, मोहः, चपलता, निरर्थकगोष्ठिः, उद्दण्डता, अभिमानः, दुराशा इति एते विद्यार्थिनां दोषाः भवन्ति। विद्यार्थिभिः इमे दोषाः परिहरणीयाः।

हिन्दी– आलस्य, मद, मोह रखना, चंचलता, व्यर्थ की बातों में समय बिताना, उद्दण्डता, अभिमान करना और त्याग से दूर रहना अर्थात् लालची होना– ये निश्चय से विद्यार्थियों के सात दोष सदा ही माने गये हैं।

आंग्लम्– Laziness, pride and passion, ficklemindedness, futile loose talks, haughtiness, self-conceit and greediness-these are the seven ills definitely counted (which are to be avoided) by the seekers of knowledge.

टिप्पणी

मदः मोहश्च इति द्वयम् एकीकृत्य सप्त दोषाः परिगणिताः।

सम्बद्धाः श्लोकाः

कामं क्रोधं तथा लोभं स्वादं शृंङ्गारकौतुके।
अतिनिद्राऽतिसेवे च विद्यार्थी ह्यष्ट वर्जयेत्॥ *(चाणक्य. 11/16)*

आलस्योपहता विद्या। *(चाणक्य. 5/7)*

अभ्यासाद्धार्यते विद्या। *(चाणक्य. 5/8)*

4. अभिवादनशीलः वर्धते

श्लोकः

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि सम्प्रवर्धन्ते कीर्तिरायुर्यशो बलम्॥ 7/74॥

पदच्छेदः

अभिवादन-शीलस्य नित्यम् वृद्ध-उपसेविनः ।
चत्वारि सम्-प्र-वर्धन्ते कीर्तिः आयुः यशः बलम् ॥

अन्वयः

नित्यम् अभिवादनशीलस्य वृद्धोपसेविनः कीर्तिः, आयुः, यशः, बलम् (इति) चत्वारि सम्प्रवर्धन्ते ।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः वृद्धान् नित्यं सेवते अभिवादयते च, तस्य कीर्तिः, आयुः, यशः, बलं च प्रवर्धन्ते ।

हिन्दी– हमेशा वृद्धों की सेवा करने वाले और नमनशील मनुष्य की कीर्ति, आयु, यश और बल ये चार चीजें बढ़ती हैं ।

आंग्लम्– Fame, age, raputation and strength –these four things keep on increasing for one who bows and serves the elders.

टिप्पणी

कीर्ति-यशसोः भेदः अस्ति । इतरकृतगुणप्रशंसनं कीर्तिः । सर्वतः स्वगुणव्याप्तिः यशः ।

सम्बद्धाः श्लोकाः

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि सम्प्रवर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम् ॥ *(मनु. 2/21)*

वृद्धांश्च नित्यं सेवेत विप्रान् वेदविदः शुचीन् ।
वृद्धसेवी हि सततं रक्षोभिरपि पूज्यते ॥ *(मनु. 7/38)*

अभिवादयेद् वृद्धांश्च दद्याच्चैवासनं स्वकम् ।
कृताञ्जलिरुपासीत गच्छतः पृष्ठतोऽन्वियात् ॥ *(मनु. 4/154)*

5. प्रशस्तानां सेवा

श्लोकः

निषेवते प्रशस्तानि निन्दितानि न सेवते ।
अनास्तिकः श्रद्दधान एतत् पण्डितलक्षणम् ॥ 1/21 ॥

पदच्छेदः

निषेवते प्रशस्तानि निन्दितानि न सेवते ।
अ-नास्तिकः श्रद्दधानः एतत् पण्डित-लक्षणम् ॥

अन्वयः

प्रशस्तानि निषेवते, निन्दितानि न सेवते, अनास्तिकः, श्रद्दधानः, एतत् पण्डितलक्षणम् ।

भावार्थः

संस्कृतम्– पण्डितः स एव भवति यः प्रशस्तं करोति, निन्दितं परित्यजति, आस्तिकः श्रद्धावान् च भवति ।

हिन्दी– जो पुरुष उत्तम कर्मों का आचरण करता है, निन्दित कर्मों का सेवन नहीं करता, नास्तिक नहीं है, श्रद्धावान् है– वही पण्डित है ।

आंग्लम्– A learned person is one who indulges in good deeds, abstains from despicable deeds, is not atheist, and has faith in God.

टिप्पणी

वेदः अस्तीति यः अङ्गीकरोति सः आस्तिकः ।

सम्बद्धः श्लोकः

आत्मज्ञानं समारम्भस्तितिक्षा धर्मनित्यता ।
यमर्था नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते ॥ *(विदुर. 1/20)*

अभ्यासः – 1

[श्लोकसङ्ख्या 1-5]

सुखार्थिनः कुतो विद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम् ।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ॥ 8/6 ॥

असूयैकपदं मृत्युरतिवादः श्रियो वधः ।
अशुश्रूषा त्वरा श्लाघा विद्यायाः शत्रवः त्रयः ॥ 8/4 ॥

आलस्यं मदमोहौ च चापलं गोष्ठिरेव च ।
स्तब्धता चाभिमानित्वं तथाऽत्यागित्वमेव च ।
एते वै सप्त दोषाः स्युः सदा विद्यार्थिनां मताः ॥ 8/5 ॥

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि सम्प्रवर्धन्ते कीर्तिरायुर्यशो बलम् ॥ 7/74 ॥

निषेवते प्रशस्तानि निन्दितानि न सेवते ।
अनास्तिकः श्रद्दधान एतत् पण्डितलक्षणम् ॥ 1/21 ॥

1. रिक्तस्थानानि पूरयत–
[रिक्तस्थानों की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. .... एकपदं मृत्युः ।

ii. .... श्रियः वधः ।

iii. .... एते विद्यायाः त्रयः शत्रवः ।

iv. विद्यार्थिनाम् एते सप्त दोषाः – आलस्यम् .... चापलं गोष्ठिः, ... च अभिमानित्वम्, तथा .... ।

v. अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः चत्वारि सम्प्रवर्धन्ते– .... ।

vi. पण्डितः .... निषेवते, ... न सेवते ।

2. एकेन पदेन उत्तरं लिखत–
[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. कस्य विद्या नास्ति ? .... ।

ii. कस्य सुखं नास्ति ? .... ।

iii. एकपदं मृत्युः कः ? .... ।

iv. अतिवादः कस्य वधं करोति ? .... ।

v. 'शुश्रूषा' इति अस्य विलोमशब्दः कः ? .... ।

vi. 'शीघ्रता' इति कस्य पदस्य अर्थः ? .... ।

vii. 'त्यागित्वम्' इति अस्य विलोमशब्दः कः ? .... ।

viii. 'जाड्यम्' इति कस्य शब्दस्य अर्थः ? .... ।

ix. अभिवादनशीलस्य कति गुणाः वर्धन्ते ? .... ।

x. 'प्रशस्तानि' इति शब्दस्य कः विलोमशब्दः अत्र प्रयुक्तः ? .... ।

3. पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–

[**पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें।** Answer the following with complete sentences.]

i. विद्यायाः के त्रयः शत्रवः ?

.... ।

ii. सुखार्थी किं त्यजेत् विद्यार्थी च किम् ? .

.... ।

iii. त्यागित्वं केषां गुणः ?

.... ।

iv. 'आत्मप्रशंसा' इति कस्य पदस्य अर्थः ?

.... ।

v. यः वृद्धान् उपसेवते सः किं कथ्यते ?

.... ।

vi. कः प्रशंसनीयानि कार्याणि करोति ?

.... ।

vii. बुद्धिमान् नरः कीदृशानि कार्याणि न करोति ?

.... ।

viii. ईर्ष्या कीदृशी वर्णिता ?

.... ।

ix. जाड्यम् अभिमानः केषां दोषौ मतौ ?

.... ।

x. विद्यायाः कति शत्रवः ?

.... ।

xi. विद्यार्थिनां कति दोषाः अत्र वर्णिताः ?

.... ।

xii. यः अभिवादनं करोति वृद्धानां सेवां च करोति तस्य किं किं वर्धते ?

.... ।

4. उदाहरणानुसारेण रूपरचनां कुरुत–

[उदाहरण के अनुसार रूपरचना करें। Write the forms as shown in the example.]

मूलशब्दः	प्र.एक.	द्विती.बहु.	प./ष.एक.	ष. बहु.
सुखार्थिन्	सुखार्थी	सुखार्थिनः	सुखार्थिनः	सुखार्थिनाम्
विद्यार्थिन्	....	....	....	....
वृद्धोपसेविन्	वृद्धोपसेवी	....	....	....

5. यथोचितं सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत –

[यथोचित सन्धि या सन्धिविच्छेद करें। Either euphonically join or disjoin as required.]

i.	सुख	+	अर्थी	=	सुखार्थी
ii.	विद्या	+	अर्थी	=	....
iii.	च	+	....	=	चाभिमानित्वम्
iv.	तथा	+	अत्यागित्वम्	=	....
v.	न	+	....	=	नास्ति
vi.	असूया	+	एकपदम्	=	असूयैकपदम्
vii.	वृद्ध	+	उपसेविनः	=	....
viii.	मृत्युः	+	अतिवादः	=	....
ix.	कीर्त्तिः	+	....	=	कीर्तिरायुः
x.	आयुः	+	....	=	आयुर्यशः

xi.	गोष्ठिः	+	....	=	गोष्ठिरेव
xii.	कुतः	+	विद्या	=	....
xiii.	श्रियः	+	वधः	=	....

6. **मञ्जूषास्थ-रिक्तस्थानानि पूरयत –**

[मञ्जूषा के रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। Fill in the blanks of boxes.]

I.

II.
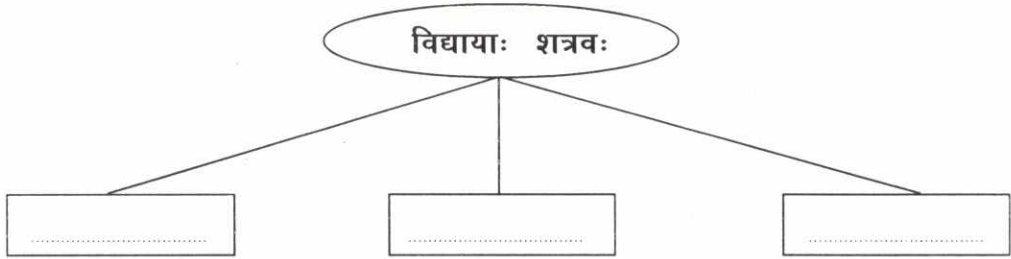
III.
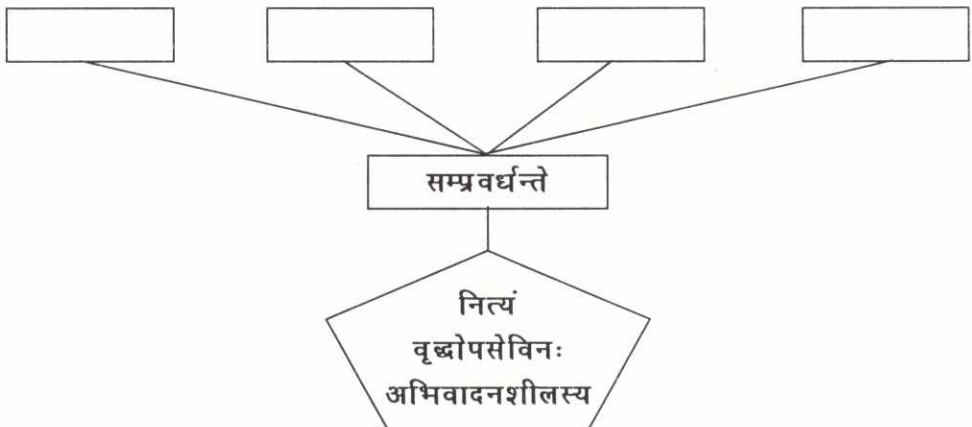
योग्यताविस्तरः

i. विद्यार्थी, सुखार्थी, त्यागी, उपसेवी – एते शब्दाः प्र. एकवचने सन्ति।

तेषां प्रातिपदिकानि एवं भवन्ति –

प्र.एक.		प्रातिपदिकम्
विद्यार्थी	–	विद्यार्थिन्
सुखार्थी	–	सुखार्थिन्
त्यागी	–	त्यागिन्
उपसेवी	–	उपसेविन्

एते शब्दाः इनन्ताः उच्यन्ते।

ii. भाववाचकाः केचन शब्दाः – स्तब्धता, अभिमानित्वम्, त्यागित्वम्।

स्तब्धस्य भावः स्तब्धता (स्तब्ध + ता = स्तब्धता)

अभिमानिनः भावः अभिमानित्वम् (अभिमानिन् + त्व = अभिमानित्व)

iii. नञ्-समासस्य उदाहरणम् –

न शुश्रूषा अशुश्रूषा

न त्यागित्वम् अत्यागित्वम्

iv. उपसर्गयोगः –

निःशेषेण सेवते निषेवते (नि + सेव् + लट् प्रपु.एक.)

सम्यक् प्रकृष्टतया वर्धन्ते सम्प्रवर्धन्ते (सम् + प्र + वृध् + प्रपु.बहु.)

6. शान्तिः योगेन विन्दते

श्लोकः

बुद्ध्या भयं प्रणुदति तपसा विन्दते महत्।
गुरुशुश्रूषया ज्ञानं शान्तिं योगेन विन्दति ॥ 4.52 ॥

पदच्छेदः

बुद्ध्या भयम् प्र-णुदति तपसा विन्दते महत्।
गुरु-शुश्रूषया ज्ञानम् शान्तिम् योगेन विन्दति ॥

अन्वयः

(नरः) बुद्ध्या भयं प्रणुदति, तपसा महत् विन्दते, गुरुशुश्रूषया ज्ञानम्, योगेन शान्तिं विन्दति।

भावार्थः

संस्कृतम्– मानवः बुद्ध्या भयं नाशयति, तपसा महत् ब्रह्म प्राप्नोति, गुरोः सेवया ज्ञानं प्राप्नोति तथा योगाभ्यासेन शान्तिं प्राप्नोति। अर्थात् बुद्धिः भयं नाशयति, तपसा परं ब्रह्म प्राप्यते, गुरुशुश्रूषया ज्ञानं वर्धते, योगाभ्यासेन शान्तिः प्राप्यते।

हिन्दी– मनुष्य बुद्धि से भय को दूर कर सकता है, तपस्या से महत् (ब्रह्म) को प्राप्त करता है, गुरु की सेवा से ज्ञान प्राप्त करता है और योग से शान्ति को प्राप्त करता है।

आंग्लम्– One can win over fear by his intellect, can perceive the Supreme Lord through penance, can obtain knowledge by serving the preceptors and can attain peace through yoga.

टिप्पणी

बुद्धिः, तपः, शुश्रूषा, योगः इति चत्वारि मानवजीवने परमावश्यकानि भवन्ति।

सम्बद्धाः श्लोकाः

यद्दूरं यद्दुराध्यं यच्च दूरे व्यवस्थितम्।
तत्सर्वं तपसा साध्यं तपो हि दुरतिक्रमम् ॥ *(चाणक्य. 17.3)*

7. प्रज्ञाबलं बलं श्रेष्ठम्

श्लोकः

येन त्वेतानि सर्वाणि सङ्गृहीतानि भारत।
यद् बलानां बलं श्रेष्ठं तत् प्रज्ञाबलमुच्यते ॥ 5.55 ॥

पदच्छेदः

येन तु एतानि सर्वाणि सम्-गृहीतानि भारत।
यद् बलानाम् बलम् श्रेष्ठम् तत् प्रज्ञा-बलम् उच्यते॥

अन्वयः

भारत ! येन तु एतानि सर्वाणि सङ्गृहीतानि, यद् बलानां श्रेष्ठं बलं तत् प्रज्ञाबलम् उच्यते।

भावार्थः

संस्कृतम्– हे भारत ! प्रज्ञा एव सर्वापेक्षया उत्तमं बलं भवति। यतः प्रज्ञायां सर्वाणि अपि बलानि अन्तर्भूतानि सन्ति। अतः एव सर्वेषु बलेषु श्रेष्ठं बलं प्रज्ञा इति उच्यते।

हिन्दी– हे भरतवंशोत्पन्न राजन् ! जिसके द्वारा सभी बलों को अपने अन्दर समाहित किया हुआ है, जो सभी बलों में श्रेष्ठ बल कहलाता है वह प्रज्ञा (बुद्धि) बल है।

आंग्लम्– O Bharat ! Intellectual strength is the best kind of strength amongst all kinds of strengths, since it includes all of them in itself.

सम्बद्धाः श्लोकाः

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्। *(पञ्च.मित्रभेदः 237)*

अज्ञाननाशिनी प्रज्ञा। *(चाणक्य. 5.11)*

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी॥ *(गीता. 18.30)*

8. प्राज्ञैः मैत्रीं समाचरेत्

श्लोकः

मत्या परीक्ष्य मेधावी बुद्ध्या सम्पाद्य चासकृत्।
श्रुत्वा दृष्ट्वाथ विज्ञाय प्राज्ञैर्मैत्रीं समाचरेत्॥ 7.41॥

पदच्छेदः

मत्या परीक्ष्य मेधावी बुद्ध्या सम्पाद्य च असकृत्।
श्रुत्वा दृष्ट्वा अथ विज्ञाय प्राज्ञैः मैत्रीम् सम्-आचरेत्॥

अन्वयः

मेधावी मत्या परीक्ष्य, बुद्ध्या च असकृत् सम्पाद्य श्रुत्वा दृष्ट्वा अथ विज्ञाय प्राज्ञैः मैत्रीं समाचरेत्।

भावार्थः

संस्कृतम्– मेधावी मननेन परीक्ष्य, बुद्ध्या निर्णीय, बहुधा श्रुत्वा, प्रत्यक्षं दृष्ट्वा सम्यक् ज्ञात्वा च

बुद्धिमद्भिः सह मैत्रीं कुर्यात्।

हिन्दी– बुद्धिमान् पुरुष मनन शक्ति से परीक्षा करके, बुद्धि द्वारा बार–बार जाँच कर, सुनकर, देखकर, सोच समझ कर बुद्धिमान् जनों के साथ मित्रता करे।

आंग्लम्– An intelligent person should enter into friendship with other intellectuals only after carefully testing them, thoughtfully investigating their behaviour (several times), having listened to them, having seen them (in action) and after obtaining full knowledge about them.

सम्बद्धौ श्लोकौ

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि॥ *(भर्तृ. 13)*

किमसुखं प्राज्ञेतरैः संगतिः। *(भर्तृ. 95)*

9. विघ्नेभ्यः भयं कुतः

श्लोकः

यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते॥1.24॥

पदच्छेदः

यस्य कृत्यम् न वि-घ्नन्ति शीतम् उष्णम् भयम् रतिः।
समृद्धिः असमृद्धिः वा सः वै पण्डितः उच्यते॥

अन्वयः

यस्य कृत्यं शीतम् उष्णं भयं रतिः समृद्धिः असमृद्धिः वा न विघ्नन्ति, स वै पण्डितः उच्यते।

भावार्थः

संस्कृतम्– शीतम् उष्णं भयं विषयासक्तिः समृद्धिः असमृद्धिः वा (एते विघ्नाः) यस्य कार्यं न नाशयन्ति, सः निश्चयेन पण्डितः भवति। धीरः विघ्नैः अविचलितः सन् कार्यं सम्पादयति इति भावः।

हिन्दी– जिस व्यक्ति के कार्य को सर्दी, गर्मी, भय, विषयासक्ति, सम्पत्ति का होना या न होना रुकावट नहीं डालते, वही निश्चय से पण्डित कहलाता है। (सर्दी, गर्मी प्राकृतिक विघ्न हैं; भय, विषयासक्ति मानसिक विघ्न हैं; समृद्धि, असमृद्धि भौतिक विघ्न हैं।)

आंग्लम्– A learned person is indeed one whose actions are not deterred by winter, summer, fear, attachment to objects of senses, prosperity or adversity.

टिप्पणी

अत्र त्रिधा विघ्नाः वर्णिताः– (i) प्राकृतिकविघ्नः – शीतम् उष्णं च। (ii) मानसः विघ्नः – भयं रतिः च। (iii) भौतिकः विघ्नः – समृद्धिः असमृद्धिः वा।

सम्बद्धौ श्लोकौ

नाप्राप्यमभिवाञ्छन्ति नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम्।
आपत्सु च न मुह्यन्ति नराः पण्डितबुद्धयः॥ *(विदुर. 1.28)*

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्त्वाय कल्पते॥ *(गीता. 2.15)*

10. शान्तो हि पण्डितः

श्लोकः

न हृष्यत्यात्मसम्माने नावमानेन तप्यते।
गाङ्गो ह्रद इवाक्षोभ्यो यः स पण्डित उच्यते॥ 1.31॥

पदच्छेदः

न हृष्यति आत्म-सम्माने न अवमानेन तप्यते।
गाङ्गः ह्रदः इव अक्षोभ्यः यः सः पण्डितः उच्यते॥

अन्वयः

यः आत्मसम्माने न हृष्यति, न अवमानेन तप्यते, गाङ्गः ह्रदः इव अक्षोभ्यः, स पण्डितः उच्यते।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः आत्मसम्मानेन हर्षं न अनुभवति, यः अवमानेन अपि दुःखं न अनुभवति, यः गङ्गासागरः इव शान्त भवति, सः पण्डितः भवति।

हिन्दी– जो व्यक्ति आत्मसम्मान होने पर हर्षित नहीं होता, अपमान होने पर दुःखी नहीं होता और गंगासागर के समान शान्त रहता है, वही पण्डित कहलाता है।

आंग्लम्– A learned person is verily one who is not overjoyed on being respected, not pained on being insulted but remains calm and cool like the Gangetic Ocean.

सम्बद्धः श्लोकः

मानापमानयोस्तुल्यः तुल्यो मित्रारिपक्षयोः।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते॥ *(गीता. 14.25)*

❖❖❖

अभ्यासः – 2

[श्लोकसङ्ख्या 6–10]

बुद्ध्या भयं प्रणुदति, तपसा विन्दते महत् ।
गुरुशुश्रूषया ज्ञानं शान्तिं योगेन विन्दति ॥ 4.52 ॥

येन त्वेतानि सर्वाणि संगृहीतानि भारत ।
यद् बलानां बलं श्रेष्ठं, तत् प्रज्ञाबलमुच्यते ॥ 5.55 ॥

मत्या परीक्ष्य मेधावी बुद्ध्या सम्पाद्य चासकृत् ।
श्रुत्वा दृष्ट्वाथ विज्ञाय, प्राज्ञैर्मैत्रीं समाचरेत् ॥ 7.41 ॥

यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः ।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डितः उच्यते ॥ 1.24 ॥

न हृष्यत्यात्मसम्माने नावमानेन तप्यते ।
गाङ्गो ह्रद इवाक्षोभ्यो यः स पण्डित उच्यते ॥ 1.31 ॥

1. रिक्तस्थानानि पूरयत–

[रिक्तस्थानों की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. .... भयं प्रणुदति, ... विन्दते महत् ।
.... ज्ञानं, शान्तिं .... विन्दति ॥

ii. भारत ! .... तु एतानि सर्वाणि .... ।
यत् .... बलं श्रेष्ठं तत् .... उच्यते ॥

iii. .... मेधावी बुद्ध्या .... चासकृत् ।
...., ... प्राज्ञैः मैत्रीं समाचरेत् ॥

iv. यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति .... उष्णं .... रतिः ।
समृद्धिः ....वा, स वै .... उच्यते ॥

v. न हृष्यति .... न .... तप्यते ।
गाङ्गः .... इव अक्षोभ्यः, यः स .... उच्यते ॥

2. एकेन पदेन उत्तरं लिखत–

[एक पद में उत्तर लिखें। Answer the following in one word.]

i. मनुष्यः कया भयं प्रणुदति ? ....

ii. मनुष्यः केन महत् (ब्रह्म) विन्दति ? ....

iii. मनुष्यः कया ज्ञानं विन्दति ? ....

iv. मनुष्यः केन शान्तिं विन्दति ? ....

v. केन सर्वाणि बलानि संगृहीतानि भवन्ति ? ....

vi. भरतवंशे उत्पन्नः हे राजन् इति अर्थे किं पदं प्रयुक्तम् ? ....

vii. कैः सह मैत्रीं समाचरेत् ? ....

viii. शीतम् उष्णं भयं रतिः वा कस्य कृत्यं न विघ्नन्ति ? ....

ix. कः आत्मसम्माने न हृष्यति ? ....

x. 'गङ्गायाः अयम्' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम् ? ....

xi. 'हृष्यति' इति पदस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम् ? ....

3. पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–

[पूर्ण वाक्य में उत्तर दें। Answer the following with complete sentence.]

i. छात्रः गुरुशुश्रूषया किं विन्दति ?

.... ।

ii. प्रज्ञाबलं केषु श्रेष्ठम् ?

.... ।

iii. 'मत्या' इत्यस्य किं समानार्थकं पदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

.... ।

iv. 'विशेषेण ज्ञात्वा' इति स्थाने किं पदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

.... ।

v. समृद्धिः इत्यस्य किं विलोमपदम् ?

.... ।

vi. 'न क्षोभ्यः' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम् ?

.... ।

vii. दशमश्लोके अन्तिमपङ्क्त्यां किम् अव्ययपदम् ?

.... ।

4. अधोलिखितानां तृतीयान्तपदानां प्रातिपदिकं प्रथमैकवचनान्तरूपं च लिखत–

[अधोलिखित तृतीयान्त पदों के प्रातिपदिक एवं प्रथमा एकवचनान्त रूप लिखें। Write the base-word and nominative form of the following instrumental forms.]

		तृतीयैकवचनान्तम्	प्रातिपदिकम्	प्रथमान्तं पदम्
यथा	i.	बुद्ध्या	बुद्धि	बुद्धिः
	ii.	मत्या	....	....
	iii.	तपसा	....	....
	iv.	गुरुशुश्रूषया	....	....
	v.	योगेन	....	....
	vi.	येन	....	....
	vii.	अवमानेन	....	....

5. यथोचितं सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कुरुत –

[यथोचित सन्धि या सन्धिविच्छेद करें। Either euphonically join or disjoin as required.]

i.	तु	+	....	=	त्वेतानि
ii.	च	+	असकृत्	=	....
iii.	....	+	अथ	=	दृष्ट्वाथ
iv.	....	+	....	=	प्राज्ञैर्मैत्री
v.	समृद्धिः	+	असमृद्धिः	=	....
vi.	असमृद्धिः	+	वा	=	....
vii.	हृष्यति	+	....	=	हृष्यत्यात्मसम्माने
viii.	न	+	अवमानेन	=	....
ix.	गाङ्गः	+	ह्रदः	=	....
x.	इव	+	अक्षोभ्यः	=	....
xi.	अक्षोभ्यः	+	यः	=	....
xii.	....	+	उच्यते	=	पण्डित उच्यते

6. प्रत्ययं योजयित्वा पदानि लिखत–

[प्रत्यय जोड़कर पद को लिखें। Write the words by adding suffix.]

i.			श्रु	+	त्वा	=	....
ii.			दृश्	+	त्वा	=	....
iii.	परि	+	ईक्ष्	+	ल्यप्	=	....
iv.	सम्	+	पाद्	+	ल्यप्	=	....
v.	वि	+	ज्ञा	+	ल्यप्	=	....

7. विलोमपदानि लिखत –

[विलोम पद लिखें। Write opposite-word of the following.]

i.	अशुश्रूषा	=	....	ii.	उष्णम्	=	....
iii.	असमृद्धिः	=	....	iv.	सम्मानः	=	....
v.	क्षोभ्यः	=	....	vi.	असकृत्	=	....

8. चित्रं पूरयत –

[चित्र की पूर्ति करें। Fill up the picture.]
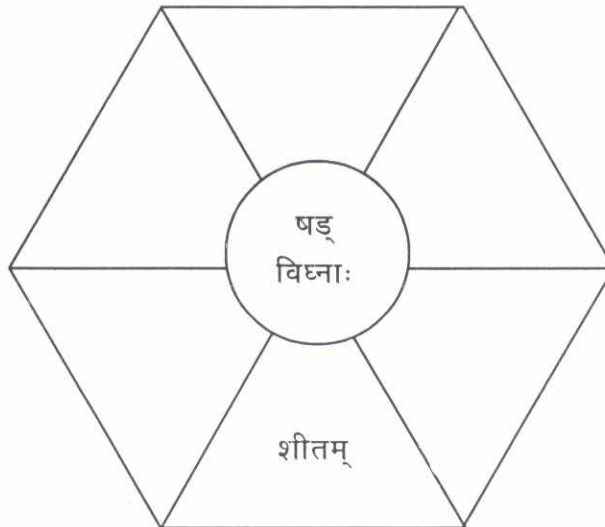
योग्यताविस्तरः

I. [क्त्वा-(त्वा)-प्रत्ययः] [ल्यप्-(य)-प्रत्ययः]

ज्ञा	+	क्त्वा	=	ज्ञात्वा	वि	+	ज्ञा	+	ल्यप्	=	विज्ञाय
श्रु	+	क्त्वा	=	श्रुत्वा	प्रति	+	श्रु	+	ल्यप्	=	प्रतिश्रुत्य
दृश्	+	क्त्वा	=	दृष्ट्वा	सम्	+	दृश्	+	ल्यप्	=	संदृश्य
ईक्ष्	+	क्त्वा	=	ईक्षित्वा	परि	+	ईक्ष्	+	ल्यप्	=	परीक्ष्य

☞ यदा धातुः उपसर्गेण युक्तः भवति तदा 'क्त्वा'-प्रत्ययस्थाने ल्यप्-प्रत्ययः भवति।

II. **दीर्घसन्धिप्रयोगाः –**

अ	+	अ	=	आ	–	शश	+	अङ्कः	=	शशाङ्कः
अ	+	आ	=	आ	–	दर्भ	+	आसनम्	=	दर्भासनम्
आ	+	अ	=	आ	–	विद्या	+	अस्ति	=	विद्यास्ति
आ	+	आ	=	आ	–	राजा	+	आस्ते	=	राजास्ते
इ	+	इ	=	ई	–	मुनि	+	इन्द्रः	=	मुनीन्द्रः
इ	+	ई	=	ई	–	हरि	+	ईशः	=	हरीशः
ई	+	इ	=	ई	–	मही	+	इन्द्रः	=	महीन्द्रः
ई	+	ई	=	ई	–	गौरी	+	ईशः	=	गौरीशः
उ	+	उ	=	ऊ	–	भानु	+	उदयः	=	भानूदयः
उ	+	ऊ	=	ऊ	–	लघु	+	ऊर्मिः	=	लघूर्मिः
ऊ	+	उ	=	ऊ	–	वधू	+	उक्तिः	=	वधूक्तिः
ऊ	+	ऊ	=	ऊ	–	वधू	+	ऊहः	=	वधूहः

11. मूर्खः कः ?

श्लोकः

अमित्रं कुरुते मित्रं मित्रं द्वेष्टि हिनस्ति च।
कर्म चारभते दुष्टं तमाहुर्मूढचेतसम् ॥1.38॥

पदच्छेदः

अमित्रम् कुरुते मित्रम् मित्रम् द्वेष्टि हिनस्ति च।
कर्म च आ-रभते दुष्टम् तम् आहुः मूढ-चेतसम् ॥

अन्वयः

(यः) अमित्रं मित्रं कुरुते, मित्रं द्वेष्टि हिनस्ति च, दुष्टं कर्म आरभते च, तं मूढचेतसम् आहुः।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः शत्रौ मित्रतां करोति, मित्रं पीडयति द्वेष्टि च, सदैव दुष्टम् एव कार्यं प्रारभते, सः मूर्खः भवति।

हिन्दी– जो व्यक्ति शत्रु को मित्र समझता है, मित्र से द्वेष करता है और उसका नाश करता है, दुष्ट कर्म प्रारम्भ करता है, उसे मूर्ख कहते हैं।

आंग्लम्– A foolish person is one who considers his enemy as friend, behaves like an enemy towards his friend, wishes to destroy him and indulges in wicked deeds.

सम्बद्धौ श्लोकौ

मूर्खाः यत्र न पूज्यन्ते धान्यं यत्र सुसञ्चितम्।
दम्पत्योः कलहो नास्ति तत्र श्रीः स्वयमागता ॥ *(चाणक्य. 3.21)*

अविश्वस्ते विश्वसिति मूढचेता नराधमः। *(विदुर. 1.41)*

12. दुर्गुणप्रियाः हि दुर्जनाः

श्लोकः

न तथेच्छन्ति कल्याणान् परेषां वेदितुं गुणान्।
यथैषां ज्ञातुमिच्छन्ति नैर्गुण्यं पापचेतसः ॥ 5.47 ॥

पदच्छेदः

न तथा इच्छन्ति कल्याणान् परेषाम् वेदितुम् गुणान्।
यथा एषाम् ज्ञातुम् इच्छन्ति नैर्गुण्यम् पाप-चेतसः ॥

अन्वयः

पापचेतसः परेषां कल्याणान् गुणान् वेदितुं तथा न इच्छन्ति, यथा एषां नैर्गुण्यं ज्ञातुम् इच्छन्ति।

भावार्थः

संस्कृतम्– दुर्जनानां प्रवृत्तिः सदैव दुर्मार्गे एव भवति। ते इतरेषाम् उत्तमगुणान् ज्ञातुं नेच्छन्ति, परन्तु इतरेषां दुर्गुणान् ज्ञातुम् उत्सहन्ते।

हिन्दी– दुष्ट मनुष्य दूसरों के उत्तम गुणों को जानने की वैसी इच्छा नहीं करते जैसी इनके अवगुणों को जानने की इच्छा करते हैं।

आंग्लम्– Wicked persons are not that much anxious to know about the merits of others as they are to know about their demerits.

सम्बद्धाः श्लोकाः

सर्वाङ्गसुन्दरे वपुषि व्रणमेवावेक्षते मक्षिकानिचयः।
दुर्जनस्य च सर्पस्य वरं सर्पो न दुर्जनः।
सर्पो दशति कालेन दुर्जनस्तु पदे पदे॥ *(चाणक्य. 3.4)*

अकरुणत्वमकारणविग्रहः
परधने परयोषिति च स्पृहा।
सुजनबन्धुजनेष्वसहिष्णुता
प्रकृतिसिद्धमिदं हि दुरात्मनाम्॥ *(भर्तृ. 48)*

तुष्यन्ति भोजने विप्रा मयूरा घनगर्जिते।
साधवः परसम्पत्तौ खलाः परविपत्तिषु॥ *(चाणक्य. 7.9)*

13. परं क्षिपति दोषेण

श्लोकः

परं क्षिपति दोषेण वर्तमानः स्वयं तथा।
यश्च क्रुध्यत्यनीशानः स च मूढतमो नरः॥1.44॥

पदच्छेदः

परम् क्षिपति दोषेण वर्तमानः स्वयं तथा।
यः च क्रुध्यति अनीशानः सः च मूढतमः नरः॥

अन्वयः

यः स्वयं तथा वर्तमानः परं दोषेण क्षिपति, अनीशानः च क्रुध्यति, स च नरः मूढतमः।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः यादृशं दोषं करोति, तादृशदोषाः इतरैः क्रियन्ते इति इतरेषु आरोपणं करोति, अधिकारस्य अभावे अपि क्रुध्यति च, सः परममूर्खः भवति।

हिन्दी– जो स्वयं वैसा ही आचरण करते हुए दूसरे पर दोषारोपण करता है और प्रभुत्व न होते हुए भी क्रोध करता है, वह मनुष्य सबसे अधिक मूर्ख है।

आंग्लम्– That man is the biggest fool who accuses others with the same blemishes which he has and expresses his anger without having any authority to do the same.

सम्बद्धाः श्लोकाः

अकामान् कामयति यः कामयानान् परित्यजेत्।
बलवन्तं च यो द्वेष्टि तमाहुः मूढचेतसम्॥ *(विदुर. 1.37)*

उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।
पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्॥ *(पञ्च. 1/4/20)*

मूर्खस्य पञ्च चिह्नानि गर्वो दुर्वचनं तथा।
हठश्च विवादश्चैव परोक्तं नैव मन्यते॥

14. सुभाषिता वाक्

श्लोकः

अभ्यावहति कल्याणं विविधं वाक् सुभाषिता।
सैव दुर्भाषिता राजन्ननर्थायोपपद्यते॥ 2.77॥

पदच्छेदः

अभि-आ-वहति कल्याणम् विविधम् वाक् सु-भाषिता।
सा एव दुर्-भाषिता राजन् अनर्थाय उप-पद्यते॥

अन्वयः

राजन्! सुभाषिता वाक् विविधं कल्याणम् अभ्यावहति, सा एव दुर्भाषिता अनर्थाय उपपद्यते।

भावार्थः

संस्कृतम्– राजन्! मधुरा, मृदुश्च वाक् मङ्गलं करोति। परन्तु कटुः परुषा च वाक् अनर्थाय भवति।

हिन्दी– हे राजन्! अच्छी प्रकार बोली गई वाणी अनेक प्रकार के कल्याणों को प्राप्त कराती है। वही वाणी बुरी तरह बोली जाने पर अनर्थकारिणी बन जाती है।

आंग्लम्– O King ! Well spoken words bringforth manifold blessings whereas the same speech if badly spoken, can prove disastrous.

सम्बद्धौ श्लोकौ

गौर्गौः कामदुधा सम्यक् प्रयुक्ता स्मर्यते बुधैः ।
दुष्प्रयुक्ता पुनर्गोत्वं प्रयोक्तुः सैव शंसति ॥ *(काव्यादर्शः 1.6)*

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ॥ *(चाणक्य. 16.17)*

15. न संरोहति वाक्क्षतम्

श्लोकः

रोहते सायकैर्विद्धं वनं परशुना हतम् ।
वाचा दुरुक्तं बीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम् ॥ 2.78 ॥

पदच्छेदः

रोहते सायकैः विद्धम् वनम् परशुना हतम् ।
वाचा दुर्-उक्तम् बीभत्सम् न सम्-रोहति वाक्-क्षतम् ॥

अन्वयः

सायकैः विद्धं रोहते, परशुना हतं वनं (रोहते)। वाचा दुरुक्तं बीभत्सं वाक्क्षतं न संरोहति

भावार्थः

संस्कृतम्– बाणैः जातः व्रणः कालक्रमेण स्वस्थः जायते। परशुना छिन्नं वनं पुनः वर्धते। परन्तु निन्दितवचनैः उत्पन्नं क्षतं चिरं तिष्ठति। (अतः कदापि कमपि वाचा न निन्देत्।)

हिन्दी– बाणों से किया गया घाव भर जाता है, कुल्हाड़े से काटा गया वन फिर से उग जाता है, परन्तु वाणी से निन्दित वचनों से दिया गया घाव कभी नहीं भरता।

आंग्लम्– A wound caused by the piercing arrows can get cured. A forest cut down by an axe can grow up again but a wound caused by despicable speech is incurable.

सम्बद्धाः श्लोकाः

मूर्खस्तु परिहर्तव्यः प्रत्यक्षो द्विपदः पशुः ।
भिनत्ति हि वाक्यशल्येन अदृष्टः कण्टको यथा ॥ *(चाणक्य. 3.7)*

यथास्योद्विजते वाचा नालोक्यां तामुदीरयेत् । *(मनु. 2.16)*

कर्णिनालीकनाराचान् निर्हरन्ति शरीरतः ।
वाक्शल्यस्तु न निर्हर्तुम् शक्यो हृदिशयो हि सः ॥ *(विदुर. 2.79)*

क्रुद्धः परुषया वाचा श्रेयसोऽप्यवमन्यते । *(महा. वन. 29/4)*

अभ्यासः - 3

[श्लोकसङ्ख्या 11-15]

अमित्रं कुरुते मित्रं मित्रं द्वेष्टि हिनस्ति च।
कर्म चारभते दुष्टं तमाहुर्मूढचेतसम् ॥1.38॥

न तथेच्छन्ति कल्याणान् परेषां वेदितुं गुणान्।
यथैषां ज्ञातुमिच्छन्ति नैर्गुण्यं पापचेतसः॥ 5.47॥

परं क्षिपति दोषेण वर्तमानः स्वयं तथा।
यश्च क्रुध्यत्यनीशानः स च मूढतमो नरः॥1.44॥

अभ्यावहति कल्याणं विविधं वाक् सुभाषिता।
सैव दुर्भाषिता राजन्ननर्थायोपपद्यते॥2.77॥

रोहते सायकैर्विद्धं वनं परशुना हतम्।
वाचा दुरुक्तं बीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम्॥2.78॥

1. **रिक्तस्थानानि पूरयत –**
[रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. तं मूढचेतसम् आहुः यः .... करोति मित्रं .... हिनस्ति च .... कर्म च आरभते।

ii. पापचेतसः परेषां कल्याणान् .... वेदितुम् .... न इच्छन्ति यथा एषाम् .... ज्ञातुम् ....।

iii. मूढतमः .... तथा स्वयं .... परं .... क्षिपति, च यः अनीशानः ....।

iv. राजन् सुभाषिता वाक् .... दुर्भाषिता सा एव .... उपपद्यते।

v. .... विद्धं .... हतं वनं रोहते परं .... दुरुक्तं .... वाक्क्षतं न ....।

2. **एकेन पदेन उत्तरं लिखत–**
[एक पद में उत्तर लिखें। Answer the following in one word.]

i. मूढचेताः नरः कं मित्रं करोति ? ....

ii. मूर्खः नरः कीदृशं कर्म आरभते ? ....

iii. पापचेतसः परेषां किं ज्ञातुम् इच्छन्ति ? ....

iv. के परेषां गुणान् वेदितुं न इच्छन्ति ? ....

v. मूर्खतमः नरः परं केन क्षिपति ? ....

vi. अधिकारः नास्ति तथापि मूर्खः किं करोति ? ....

vii. कीदृशी वाक् कल्याणं करोति ? ....

viii. कीदृशी वाक् अनर्थं करोति ? ....

ix. कैः विद्धं वनं रोहते ? ....

x. किं न संरोहति ? ....

3. पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत –

[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. मूर्खः कस्य नाशं कर्तुम् इच्छति ? ....।

ii. यः दुष्टं कर्म करोति सः किम् उच्यते ? ....।

iii. 'अन्येषाम्' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम् ? ....।

iv. 'वेदितुम्' इत्यस्य किं समानार्थकम् अत्र प्रयुक्तम् ? ....।

v. मूर्खतमः नरः स्वयं कथं भवति ? ....।

vi. 'सर्वाधिकः मूर्खः' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम् ? ....।

vii. 'न ईशानः' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम् ? ....।

viii. वनं कैः विध्यते ? ....।

ix. 'कल्याणम्' इत्यस्य किं विशेषणम् ? ....।

x. 'वाक्क्षतम्' इत्यस्य किं किं विशेषणपदम् अत्र लिखितम् ? ....।

4. यथोदाहरणं रिक्तस्थानानि पूरयत–

[उदाहरण के अनुसार रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks as shown in the example.]

	द्वितीयान्तं पदं	मूलशब्दः	प्रथमान्तपदम् (एक.)	तृतीयान्तपदम्
उदा.	1. मित्रम्	मित्र (नपुं.)	मित्रम्	मित्रेण

	2. गुणान्	गुण (पुं.)	गुणः	गुणैः
(वि)	कल्याणान्	....	....	....
	परम्	पर	परम्	....
	कल्याणम्	.... (नपुं.)	....	....
(वि)	विविधम्	....	....	....

(ख) श्लोकानुसारं रिक्ते स्थाने उचितं क्रियापदं लिखत–

[श्लोक के अनुसार रिक्त स्थान में उचित क्रियापद लिखें। Fill in the blanks by appropriate verbal form of the verse.]

i. मूर्खः अमित्रं मित्रं .... ।
ii. मूर्खः दुष्टं कर्म .... ।
iii. पापी अन्येषां गुणान् ज्ञातुं न .... ।
iv. पापिनः अन्येषां दोषान् वेदितुं .... ।
v. मूर्खतमः नरः परं दोषेण .... ।
vi. मूर्खः अनीशानः सन् अपि .... ।
vii. सुशोभिता वाक् कल्याणम् .... ।
viii. तीरैः विद्धं वनम् .... ।
ix. कटुवचनैः कारितः व्रणः न .... ।

5. सन्धिं कुरुत–

[सन्धि करें। Join the euphonic combination.]

i.	च	+	आरभते	=	....
ii.	क्रुध्यति	+	अनीशानः	=	....
iii.	मित्रम्	+	अमित्रम्	=	....
iv.	मित्रम्	+	द्वेष्टि	=	मित्रं द्वेष्टि
v.	आहुः	+	मूढचेतसम्	=	....
vi.	यथा	+	एषाम्	=	....

vii.	परम्	+	क्षिपति	=	....
viii.	मूढतमः	+	नरः	=	....
ix.	सा	+	एव	=	....
x.	राजन्	+	अनर्थाय	=	....
xi.	अनर्थाय	+	उपपद्यते	=	....
xii.	दुः	+	भाषिता	=	....
xii.	सायकैः	+	विद्धम्	=	....

6. प्रत्ययं योजयित्वा निष्पन्नं शब्दं लिखत –

[प्रत्यय जोड़कर निष्पन्न शब्द लिखें। Write the word with adding suffix.]

i.	विद्	+	तुमुन्	=	....
ii.	ज्ञा	+	तुमुन्	=	....
iii.	हन्	+	क्त	=	....
iv.	व्यध्	+	क्त	=	....
v.	दुष्	+	क्त	=	....

7. विशेषणं विशेष्येण मेलयत–

[विशेष्य के साथ विशेषण को मिलाएँ। Match qualifier as per qualificand.]

i.	दुष्टं	क.	वाक्
ii.	कल्याणान्	ख.	कल्याणानि
iii.	सुशोभिता	ग.	कर्म
iv.	विविधानि	घ.	गुणान्

8. यथोचितं योजयत–

[सही मेल बनाएँ। Make appropriately.]

i.	मूर्खः	क.	निजानाम्
ii.	शत्रुः	ख.	दोषः

iii.	गुणः	ग.	सुभाषिता
iv.	दुर्भाषिता	घ.	अनर्थकारिणी
v.	अर्थकारिणी	ङ.	पण्डितः
vi.	परेषाम्	च.	मित्रम्

योग्यताविस्तरः

(क) i. **गुणसन्धिप्रयोगाः –**

अ	+	इ	=	ए	–	च	+	इति	=	चेति
अ	+	ई	=	ए	–	गण	+	ईशः	=	गणेशः
आ	+	इ	=	ए	–	लता	+	इव	=	लतेव
आ	+	ई	=	ए	–	महा	+	ईशः	=	महेशः
अ	+	उ	=	ओ	–	सूर्य	+	उदयः	=	सूर्योदयः
अ	+	ऊ	=	ओ	–	एक	+	ऊनः	=	एकोनः
आ	+	उ	=	ओ	–	तथा	+	उक्तम्	=	तथोक्तम्
आ	+	ऊ	=	ओ	–	महा	+	ऊर्मिः	=	महोर्मिः
अ	+	ऋ	=	अर्	–	ब्रह्म	+	ऋषिः	=	ब्रह्मर्षिः
अ	+	ऌ	=	अल्	–	(प्रयोगः विरलः)				
आ	+	ऋ	=	अर्	–	महा	+	ऋषिः	=	महर्षिः
आ	+	ऌ	=	अल्	–	(प्रयोगः विरलः)				

16. नरः कीदृशः स्यात् ?

श्लोकः

नाक्रोशी स्यान्नावमानी परस्य
मित्रद्रोही नोत नीचोपसेवी।
न चाभिमानी न च हीनवृत्तो
रूक्षां वाचं रुषतीं वर्जयीत ॥ 4/6 ॥

पदच्छेदः

न आक्रोशी स्यात् न अवमानी परस्य
मित्र-द्रोही न उत नीच-उपसेवी।
न च अभिमानी न च हीनवृत्तः
रूक्षाम् वाचम् रुषतीम् वर्जयीत ॥

अन्वयः

आक्रोशी न स्यात्, परस्य न अवमानी (स्यात्), मित्रद्रोही न (स्यात्), उत नीचोपसेवी (न स्यात्), अभिमानी न (स्यात्), हीनवृत्तः च न (स्यात्), रूक्षां रुषतीं वाचं च वर्जयीत।

भावार्थः

संस्कृतम्– (मनुष्यः) आक्रोशी न स्यात्, इतरेषाम् अवमाननां न कुर्यात्, मित्रद्रोहं न आचरेत्, दुष्टजनानां सेवां न कुर्यात्, आत्माभिमानी चरित्रहीनः च न भवेत्। जनान् पीडयन्तीं परुषां वाचं च वर्जयेत्। एतादृशः आचरणशीलः मनुष्यः उत्तमः भवति इति भावः।

हिन्दी– दूसरे को बुरा भला कहने वाला न होवे, न ही दूसरों का अपमान करे, न मित्र से द्रोह करे, न ही नीच पुरुष की सेवा करे, न अभिमानी हो, न ही चरित्र–हीन हो। मनुष्य को चाहिये कि वह सूखी, कठोर और दूसरों को पीड़ा पहुंचाने वाली वाणी को छोड़ दे।

आंग्लम्– One should not shout upon others, should not insult others and should not be disloyal to a friend. One should avoid serving the wicked people, one should not be arrogant and characterless. One must always avoid harsh and provocating words.

सम्बद्धाः श्लोकाः

मर्माण्यस्थीनि हृदयं तथासून्
रूक्षां वाचो निर्दहन्तीह पुंसाम्।
तस्माद् वाचमुषतीमुग्ररूपां
धर्मारामो नित्यशो वर्जयीत ॥ *(विदुर. 4.7)*

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ॥ *(चाणक्य. 6.34)*

हृदि विद्ध इवात्यर्थं यया सन्तप्यते जनः ।
पीडितोऽपि हि मेधावी न तां वाचमुदीरयेत् ॥ *(शुक्र. 1/67)*

17. मधुरवाक्

श्लोकः

द्वे कर्मणी नरः कुर्वन्नस्मिंल्लोके विरोचते ।
अब्रुवन् परुषं किञ्चिदसतोऽनर्चयंस्तथा ॥ 1.59 ॥

पदच्छेदः

द्वे कर्मणी नरः कुर्वन् अस्मिन् लोके वि-रोचते ।
अब्रुवन् परुषम् किञ्चित् असतः अनर्चयन् तथा ॥

अन्वयः

नरः किञ्चित् परुषम् अब्रुवन् तथा असतः अनर्चयन् (इति) द्वे कर्मणी कुर्वन् अस्मिन् लोके विरोचते ।

भावार्थः

संस्कृतम्– कठोरवाचः अकथनं, दुर्जनानाम् अपूजनम् इति कार्यद्वयेन मनुष्यः अस्मिन् लोके शोभते । अर्थात् मनुष्यः परुषां वाचं न वदेत्, दुर्जनान् न अभिनन्देत् च ।

हिन्दी– वह मनुष्य इस संसार में सबसे चाहा जाने वाला होता है जो (i) कुछ भी कठोर वचन नहीं बोलता और (ii) दुर्जनों की पूजा नहीं करता है ।

आंग्लम्– A man earns fame by doing these two things; firstly by not speaking harsh words and secondly by not worshipping the wickeds.

सम्बद्धाः श्लोकाः

यदीच्छसि वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा ।
परापवादसस्येभ्यो गां चरन्तीं निवारय ॥ *(चाणक्य. 14.14)*

द्वे जिह्वे कटुक–स्नेहे, मधुरं किं न भाषसे ।
मधुरं वद कल्याणि लोकोऽयं मधुरप्रियः ॥ *(चाणक्य. 2.11)*

भद्रं भद्रमिति ब्रूयाद् भद्रमित्येव वा वदेत् ।
शुष्कवैरं विवादं च न कुर्यात्केनचित् सह ॥ *(मनु. 4/139)*

18. पञ्च अग्नयः

श्लोकः

पञ्चाग्नयो मनुष्येण परिचर्याः प्रयत्नतः ।
पिता माताग्निरात्मा च गुरुश्च भरतर्षभ ॥1.79 ॥

पदच्छेदः

पञ्च अग्नयः मनुष्येण परि-चर्याः प्र-यत्नतः ।
पिता माता अग्निः आत्मा च गुरुः च भरतर्षभ ॥

अन्वयः

हे भरतर्षभ ! मनुष्येण पिता, माता, अग्निः, आत्मा गुरुः च (इति) पञ्च अग्नयः प्रयत्नतः परिचर्याः ।

भावार्थः

संस्कृतम्– अस्मिन् लोके मनुष्येण श्रेष्ठाः पञ्च अग्नयः (देवाः) सर्वदा प्रयासेन सेवनीयाः । ते च– पिता, माता, अग्निः, आत्मा, गुरुः च सन्ति ।

हिन्दी– हे भरतश्रेष्ठ ! मनुष्य को इन पाँच अग्नियों (देवों) की प्रयत्नपूर्वक सेवा करनी चाहिये– पिता, माता, गुरु, आत्मा और अग्नि ।

आंग्लम्– O the best in Bharata dynasty ! A man should always serve the following five fires (gods) with great efforts- Father, Mother, Preceptor, Self and the Sacred fire.

टिप्पणी

अग्निशब्दः देवस्य परिचायकः ।

सम्बद्धाः श्लोकाः

पञ्चैव पूजयँल्लोके यशः प्राप्नोति केवलम् ।
देवान् पितॄन् मनुष्यांश्च भिक्षूनतिथिपञ्चमान् ॥ *(विदुर. 1.80)*

सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया स्वसा ।
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडेते मम बान्धवाः ॥ *(चाणक्य. 12.10)*

आचार्यं च प्रवक्तारं पितरं मातरं गुरुम् ।
न हिंस्याद् ब्राह्मणान् गाश्च सर्वांश्चैव तपस्विनः ॥ *(मनु. 4.162)*

पिता वै गार्हपत्योऽग्निर्माताग्निर्दक्षिणः स्मृतः ।
गुरुराहवनीयस्तु साग्नित्रेता गरीयसी ॥ *(मनु. 2.235)*

तेषां त्रयाणां शुश्रूषा परमं तप उच्यते । *(मनु. 2.233)*

19. षड् गुणाः धारणीयाः

श्लोकः

षडेते तु गुणाः पुंसा न हातव्याः कदाचन।
सत्यं दानमनालस्यमनसूया क्षमा धृतिः ॥1.86॥

पदच्छेदः

षड् एते तु गुणाः पुंसा न हातव्याः कदाचन।
सत्यम् दानम् अनालस्यम् अनसूया क्षमा धृतिः॥

अन्वयः

पुंसा सत्यं, दानम्, अनालस्यम्, अनसूया, क्षमा, धृतिः एते षट् गुणाः तु कदाचन न हातव्याः।

भावार्थः

संस्कृतम्– मनुष्यः कदापि एतान् सत्यं, दानम्, अनालस्यम्, अनसूया, क्षमा, धृतिः च उत्तमान् षट् गुणान् न त्यजेत्।

हिन्दी– मनुष्य के द्वारा ये छः गुण सत्य, दान, अनालस्य, असूया न करना, क्षमा करना और धैर्य धारण करना ये छः गुण कभी भी छोड़ने योग्य नहीं हैं।

आंग्लम्– One should never abandon these six virtues- truth, generosity, hard work, non-jealousy, forgiveness and patience.

सम्बद्धौ श्लोकौ

षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता॥ *(विदुर. 1.83)*

न योऽनभ्यसूयत्यनुकम्पते च न दुर्बलः प्रातिभाव्यं करोति।
नात्याह किञ्चित् क्षमते विवादं, सर्वत्र तादृग् लभते प्रशंसाम्॥ *(विदुर. 1.115)*

20. मानवभूषणानि

श्लोकः

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च॥1.104॥

पदच्छेदः

अष्टौ गुणाः पुरुषम् दीपयन्ति प्रज्ञा च कौल्यम् च दमः श्रुतम् च।
पराक्रमः च अ-बहु-भाषिता च दानम् यथा-शक्ति कृतज्ञता च॥

अन्वयः

प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च पराक्रमः च अबहुभाषिता च यथाशक्ति दानं च कृतज्ञता च एते अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति।

भावार्थः

संस्कृतम्– बुद्धिः, आभिजात्यम्, इन्द्रियजयः, ज्ञानं, वीरता, मितभाषिता, यथाशक्ति दानकरणं, कृतस्य अविस्मरणम् इति अष्टभिः गुणैः पुरुषः प्रकाशते।

हिन्दी– बुद्धि, कुलीनता, इन्द्रियों और मन पर विजय, ज्ञान, वीरता, मितभाषिता, यथाशक्ति दान और कृतज्ञता– ये आठ गुण मनुष्य की शोभा बढ़ाते हैं।

आंग्लम्– These eight virtues add to the prestige of a person – intellect, nobility, restraint of senses and mind, knowledge, valour, reticence, generosity to one's possible capacity and feeling obliged.

सम्बद्धाः श्लोकाः

यः काममन्यू प्रजहाति राजा
पात्रे प्रतिष्ठापयति धनं च।
विशेषविच्छ्रुतवान् क्षिप्रकारी,
तं सर्वलोकः कुरुते प्रणामम्॥ *(विदुर. 1.101)*

अभ्यासः – 4

[श्लोकसङ्ख्या 16-20]

नाक्रोशी स्यान्नावमानी परस्य
मित्रद्रोही नोत नीचोपसेवी।
न चाभिमानी न च हीनवृत्तो
रूक्षां वाचं रुषतीं वर्जयीत ॥ 4/6 ॥

द्वे कर्मणी नरः कुर्वन्नस्मिंल्लोके विरोचते।
अब्रुवन् परुषं किञ्चिदसतोऽनर्चयंस्तथा ॥ 1.59 ॥

पञ्चाग्नयो मनुष्येण परिचर्याः प्रयत्नतः।
पिता माताग्निरात्मा च गुरुश्च भरतर्षभ ॥1.79 ॥

षडेते तु गुणाः पुंसा न हातव्याः कदाचन।
सत्यं दानमनालस्यमनसूया क्षमा धृतिः ॥1.86 ॥

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च ॥ 1.104 ॥

1. रिक्तस्थानानि पूरयत–
[रिक्तस्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. न .... स्यात् न परस्य ...., ... न उत ...., न च ...., न च ...., रूक्षां वाचं .... वर्जयीत।

ii. मनुष्यः द्वे कार्ये कुर्वन् अस्मिन् ....शोभते। किञ्चित् .... अब्रुवन्, तथा असतः .... ॥

iii. हे भरतर्षभ ! मनुष्येण .... अग्नयः प्रयत्नतः ....। पिता ...., अग्निः, ..., च .... च ॥

iv. एते षड् .... पुंसा न कदाचन ....। .... दानम् .... अनसूया, क्षमा .... ॥

v. अष्टौ .... पुरुषं ....। प्रज्ञा च .... च, दमः .... च, ... च अबहुभाषिता च यथाशक्ति दानं, च कृतज्ञता च।

2. एकेन पदेन उत्तरं लिखत–
[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. 'चरित्रहीनः' इति कस्य पदस्य अर्थः ? .... ।

ii. 'क्रोधम्' उत्पादयन्तीम् इति कस्य पदस्य अर्थः ? .... ।

iii. नरः कीदृशं वचनं न वदेत् ? .... ।

iv. नरः कान् न अर्चयेत् ? .... ।

v. मनुष्येण कति अग्नयः प्रयत्नपूर्वकं परिचर्याः ? .... ।

vi. भरतकुलश्रेष्ठ इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम् ? .... ।

vii. मनुष्येण कति गुणाः कदाचन न हातव्याः ? .... ।

viii. 'असूया' इति पदस्य कः विलोमशब्दः अत्र प्रयुक्तः ? .... ।

ix. 'बहुभाषिता' इति पदस्य कः विलोमशब्दः अत्र प्रयुक्तः ? .... ।

x. 'कुलीनता' इति कस्य पदस्य अर्थः ? .... ।

3. पूर्णेन वाक्येन उत्तरयत –

[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. मनुष्यः कीदृशीं वाचं त्यजेत् ?

.... ।

ii. मनुष्यः कति कार्याणि कुर्वन् न सुशोभते ?

.... ।

iii. 'अर्चयन्' इति पदस्य कः विलोमशब्दः ?

.... ।

iv. मनुष्येण पञ्च यज्ञाः कथं करणीयाः ?

.... ।

v. 'आलस्यम्' इति शब्दस्य विलोमशब्दः कः ?

.... ।

vi. 'ज्ञानम्' इति कस्य पदस्य अर्थः ?

.... ।

vii. निरन्तरं क्रुध्यति स कः कथ्यते ?

.... ।

viii. यः परस्य अपमानं करोति सः कः उच्यते ?

.... ।

ix. 'मनुष्येण' इति स्थाने कः शब्दः अत्र प्रयुक्तः ?

.... ।

4. क्रियापदं योजयत–

[क्रियापद को जोड़ें। Add the verbal form.]

i. मनुष्यः शुष्कां कोपयन्तीं वाचं .... ।

ii. मनुष्यः दुष्टान् न पूजयन् एव .... ।

iii. मनुष्येण पञ्च अग्नयः .... ।

iv. मनुष्येण षट् गुणाः न .... ।

v. अष्टौ गुणाः पुरुषं .... ।

5. विलोमशब्दान् मेलयत –

[विलोम शब्द को मिलाएँ। Match the opposite word.]

i.	मित्रसेवी	क.	मधुरभाषी
ii.	उन्नतवृत्तः	ख.	हीनवृत्तः
iii.	आक्रोशी	ग.	मित्रद्रोही
iv.	परुषं	घ.	कोमलम्
v.	अचर्यन्	ङ.	आलस्यम्
vi.	अनालस्यम्	च.	अनर्चयन्

6. सन्धिं कुरुत –

[सन्धि करें। Join as required.]

i. न + अवमानी = ...

ii. न + उत = ...

iii.	नीच	+	उपसेवी	=	....
iv.	च	+	अभिमानी	=	....
v.	पञ्च	+	अग्नयः	=	....
vi.	माता	+	अग्निः	=	....
vii.	च	+	अबहुभाषिता	=	....
viii.	स्यात्	+	न	=	....
ix.	हीनवृत्तः	+	रूक्षां	=	....
x.	रूक्षाम्	+	वाचम्	=	....
xi.	किञ्चित्	+	असतः	=	....
xii.	असतः	+	अनर्चयन्	=	....
xiii.	अनर्चयन्	+	तथा	=	....
xiv.	अग्निः	+	आत्मा	=	....
xv.	गुरुः	+	च	=	....
xvi.	षट्	+	एते	=	....
xvii.	पराक्रमः	+	च	=	....

7. प्रत्ययं योजयित्वा शब्दं लिखत –

[प्रत्यय जोड़कर शब्द लिखें। Write the word by adding suffix.]

	धातु		प्रत्यय					
i.	कृ	+	शतृ			पुं. प्रथमा एकवचनम्	=	कुर्वन्
ii.	ब्रु	+	शतृ			पुं. प्रथमा एकवचनम्	=	....
iii.	अर्च्	+	शतृ			पुं. प्रथमा एकवचनम्	=	....
iv.	परि	+	चर्	+	यत्	पुं. प्रथमा बहुवचनम्	=	परिचर्याः
v.	हा	+	तव्य			पुं. प्रथमा बहुवचनम्	=	....

8. श्लोकाधारेण रिक्तस्थानं पूरयत –

[श्लोक के आधार पर रिक्तस्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks on the basis of the verse.]

i. नरः शुष्कां .... त्यजेत् ।

ii. नरः .... न वदेत् ।

iii. मनुष्यः .... न पूजयेत् ।

iv. पुमान् .... अग्नीन् परिचरेत् ।

v. मानवः षड् .... न त्यजेत् ।

vi. अष्ट गुणाः .... दीपयन्ति ।

9. चित्रेषु रिक्तस्थानानि पूरयन्तु –

[चित्रों में रिक्तस्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks in the pictures.]

I.
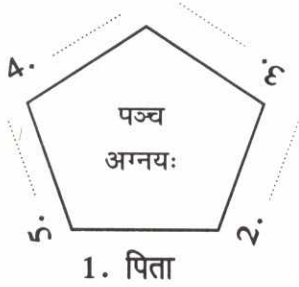
II.
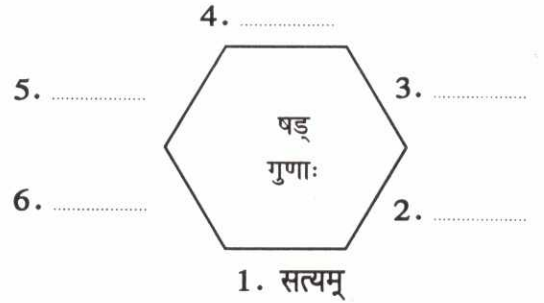
III.
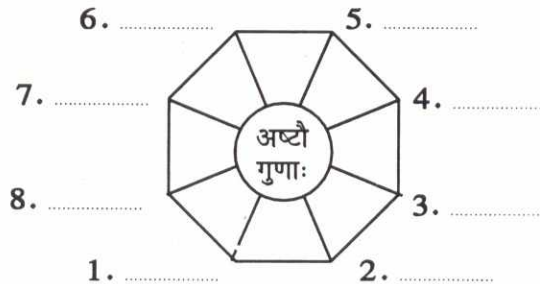
योग्यताविस्तरः

I. अधोलिखितानि विसर्गसन्धियुक्तानि पदानि पठत –

	कुतः	+	विद्या	=	कुतो विद्या
i.	श्रियः	+	वधः	=	श्रियो वधः
ii.	गाङ्गः	+	ह्रदः	=	गाङ्गो ह्रदः
iii.	अक्षोभ्यः	+	यः	=	अक्षोभ्यो यः
iv.	मूढतमः	+	नरः	=	मूढतमो नरः
v.	हीनवृत्तः	+	रूक्षाम्	=	हीनवृत्तो रूक्षाम्
vi.	अग्नयः	+	मनुष्येण	=	अग्नयो मनुष्येण

II. शतृप्रत्ययान्तरूपाणि –

i.	कृ	+	शतृ	=	कुर्वत्
ii.	ब्रु	+	शतृ	=	ब्रुवत्
iii.	अर्च्	+	शतृ	=	अर्चयत्
iv.	अस्	+	शतृ	=	सत्

21. नित्यदुःखिताः

श्लोकः

ईर्ष्यी घृणी न सन्तुष्टः क्रोधनो नित्यशङ्कितः ।
परभाग्योपजीवी च षडेते नित्यदुःखिताः ॥ 1.95 ॥

पदच्छेदः

ईर्ष्यी घृणी न सन्तुष्टः क्रोधनः नित्य-शङ्कितः ।
पर-भाग्य-उपजीवी च षड् एते नित्य-दुःखिताः ॥

अन्वयः

ईर्ष्यी, घृणी, न सन्तुष्टः, क्रोधनः, नित्यशङ्कितः, परभाग्य-उपजीवी च एते षट् नित्यदुःखिताः सन्ति ।

भावार्थः

संस्कृतम्– ईर्ष्यालुः, घृणी, असन्तुष्टः, क्रोधी, शङ्कावान्, इतरेषां भाग्यमाश्रित्य यः जीवति इति एते षट् प्रकाराः जनाः सर्वदा दुःखिताः भवन्ति ।

हिन्दी– ये छः सदा दुःखी रहते हैं– ईर्ष्यालु, घृणा करने वाला, असन्तुष्ट, क्रोधी, शङ्कालु और दूसरे के आसरे पर जीने वाला ।

आंग्लम्– These six types of people are always unhappy- one who is jealous, one who hates others, one who is never satisfied, one who is short-tempered, one who is always suspicious and one who depends upon other's fortunes.

सम्बद्धौ श्लोकौ

अनालोक्य व्ययं कर्ता, ह्यनाथः कलहप्रियः ।
आतुरः सर्वक्षेत्रेषु नरः शीघ्रं विनश्यति ॥ *(विदुर. 12.17)*

नैकः सुखी न सर्वत्र विश्रब्धो, न च शङ्कितः ॥ *(शुक्र. 3/12)*

22. आर्यशीलः सत्पुरुषः

श्लोकः

न स्वे सुखे वै कुरुते प्रहर्षं नान्यस्य दुःखे भवति प्रहृष्टः ।
दत्त्वा न पश्चात् कुरुतेऽनुतापं स कथ्यते सत्पुरुषार्थशीलः ॥ 1.118 ॥

पदच्छेदः

न स्वे सुखे वै कुरुते प्रहर्षम् न अन्यस्य दुःखे भवति प्रहृष्टः ।
दत्त्वा न पश्चात् कुरुते अनुतापम् सः कथ्यते सत्-पुरुषार्थ-शीलः ॥

अन्वयः

(यः) स्वे सुखे प्रहर्षं वै न कुरुते, अन्यस्य दुःखे प्रहृष्टः न भवति, दत्त्वा पश्चात् अनुतापं न कुरुते, सः सत्पुरुषार्थशीलः कथ्यते ।

भावार्थः

संस्कृतम्– उत्तमः सत्पुरुषः आत्मनः सुखे नाधिकं प्रसन्नः भवति, इतरेषां दुःखे न प्रसीदति, दानरूपेण किमपि दत्वा (इदं न देयमासीत् इति) पश्चात्तापं च न करोति ।

हिन्दी– जो व्यक्ति अपने सुख में अत्यधिक प्रसन्न नहीं होता, दूसरे के दुःख में प्रसन्न नहीं होता और दान देकर फिर पश्चात्ताप नहीं करता, उसे ही श्रेष्ठ स्वभाव वाला सज्जन कहते हैं ।

आंग्लम्– He alone is called a gentleman with an excellent conduct who does not over-rejoice at his own fortunes, does not feel happy when others are in distress and does not repent after having given something in charity.

सम्बद्धौ श्लोकौ

न वैरमुद्दीपयति प्रशान्तं, न दर्पमारोहति नास्तमेति ।
न दुर्गतोऽस्मीति करोत्यकार्यं, तमार्यशीलं परमाहुरार्याः ॥ *(विदुर. 1.177)*

संनियच्छति यो वेगमुत्थितं क्रोधहर्षयोः ।
स श्रियो भाजनं राजन् ! यश्चापत्सु न मुह्यति ॥ *(विदुर. 5.5)*

23. न विरोधः कदाचन

श्लोकः

सम्भोजनं संकथनं सम्प्रीतिश्च परस्परम् ।
ज्ञातिभिः सह कार्याणि न विरोधः कदाचन ॥ 7.23 ॥

पदच्छेदः

सम्-भोजनम् सम्-कथनम् सम्-प्रीतिः च परस्परम् ।
ज्ञातिभिः सह कार्याणि न विरोधः कदाचन ॥

अन्वयः

ज्ञातिभिः सह परस्परं सम्भोजनं संकथनं सम्प्रीतिः च कार्याणि कदाचन न विरोधः ।

भावार्थः

संस्कृतम्– ज्ञातयः परस्परं सम्भूय भुञ्जानाः, कुशलप्रश्नान् कुर्वन्तः प्रीत्या व्यवहरेयुः । कदापि परस्परं विरोधं न कुर्युः ।

भावार्थः

संस्कृतम्– पुरुषे सच्चरित्रम् एव प्रधानं भवति। यदि चरित्रं नष्टं भवति तस्य जीवनं, धनं, बन्धवः इति सर्वं निष्प्रयोजनम् एव।

हिन्दी– पुरुष में शील (अच्छा स्वभाव) ही प्रमुख गुण है। इस लोक में जिस मनुष्य का शील ही नष्ट हो जाता है, उसका न जीने से प्रयोजन है न धन से और न बन्धुओं से।

आंग्लम्– Good conduct of a person is his main virtue. Of what use is life and wealth or relatives to one whose conduct is soiled in this world.

सम्बद्धाः श्लोकाः

सर्वस्य तपसो मूलमाचारं जगृहुः परम्। *(मनु. 1.111)*

पुत्राश्च विविधैः शीलैर्नियोज्याः सततं बुधैः।
नीतिज्ञाः शीलसम्पन्ना भवन्ति कुलपूजिताः॥ *(चाणक्य. 2.10)*

सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम्॥ *(भर्तृ. 84)*

अभ्यासः – 5

[श्लोकसङ्ख्या 21-25]

ईर्ष्यी घृणी न सन्तुष्टः क्रोधनो नित्यशङ्कितः ।
परभाग्योपजीवी च षडेते नित्यदुःखिताः ॥ 1.95 ॥

न स्वे सुखे वै कुरुते प्रहर्षं नान्यस्य दुःखे भवति प्रहृष्टः ।
दत्त्वा न पश्चात् कुरुतेऽनुतापं स कथ्यते सत्पुरुषार्यशीलः ॥ 1.118 ॥

सम्भोजनं संकथनं सम्प्रीतिश्च परस्परम् ।
ज्ञातिभिः सह कार्याणि न विरोधः कदाचन ॥ 7.23 ॥

पीठं दत्त्वा साधवेऽभ्यागताय आनीयापः परिनिर्णिज्य पादौ ।
सुखं पृष्ट्वा प्रतिवेद्यात्मसंस्थां ततो दद्यादन्नमवेक्ष्य धीरः ॥ 6.2 ॥

शीलं प्रधानं पुरुषे तद् यस्येह प्रणश्यति ।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभिः ॥ 2.48 ॥

1. पद्यानि पठित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत –

[श्लोकों को पढ़कर रिक्तस्थान की पूर्ति करें। Read the verses and fill in the blanks.]

i. ईर्ष्यी घृणी न सन्तुष्टः .... ।
.... च षडेते नित्यदुःखिताः ॥

ii. संभोजनं .... संप्रीतिश्च परस्परम् ।
.... सह कार्याणि, न .... कदाचन ॥

iii. न .... वै कुरुते प्रहर्षं
नान्यस्य .... भवति .... ।
.... न पश्चात् .... अनुतापम्
स कथ्यते .... ॥

iv. पीठं .... साधवे अभ्यागताय .... आपः .... पादौ ।
सुखं .... आत्मसंस्थां ततो दद्यादन्नम् .... धीरः ॥

v. शीलं .... पुरुषे, तद् .... इह प्रणश्यति ।
न तस्य .... अर्थः, न .... , न बन्धुभिः ॥

हिन्दी– सम्बन्धियों के साथ परस्पर मिलकर खाना, बातचीत करना, प्रेमपूर्वक व्यवहार इत्यादि क्रियाएँ करनी चाहिए। कभी भी विरोध नही करना चाहिए।

आंग्लम्– One should eat jointly, talk smoothly and be with affection with the relations. One should never oppose them.

सम्बद्धाः श्लोकाः

ज्ञातयस्तारयन्तीह ज्ञातयो मज्जयन्ति च।
सुवृत्तास्तारयन्तीह दुर्वृत्ता मज्जयन्ति च॥ *(विदुर. 7.24)*

ज्ञातिभिर्विग्रहस्तात न कर्तव्यः शुभार्थिना।
सुखानि सहभोज्यानि ज्ञातिभिर्भरतर्षभ॥ *(विदुर. 7.22)*

विगुणा ह्यपि संरक्ष्या ज्ञातयो भरतर्षभ। *(विदुर. 7.19)*

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात्।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः॥ *(गीता. 5.23)*

यस्य सुद्रवते चित्तं परदुःखेन सर्वदा।
इष्टार्थे यततेऽन्यस्याप्रेरितः सत्करोति यः॥ *(शुक्र. 4.13)*

24. अतिथिसत्कारः

श्लोकः

पीठं दत्त्वा साधवेऽभ्यागताय आनीयापः परिनिर्णिज्य पादौ।
सुखं पृष्ट्वा प्रतिवेद्यात्मसंस्थां ततो दद्यादन्नमवेक्ष्य धीरः॥ 6.2॥

पदच्छेदः

पीठम् दत्त्वा साधवे अभ्यागताय आनीय आपः परि-निर्णिज्य पादौ।
सुखम् पृष्ट्वा प्रति-वेद्य-आत्म-संस्थाम् ततः दद्यात् अन्नम् अवेक्ष्य धीरः॥

अन्वयः

धीरः साधवे अभ्यागताय पीठं दत्त्वा, आपः आनीय पादौ परिनिर्णिज्य, सुखं पृष्ट्वा आत्मसंस्थां प्रतिवेद्य, ततः अवेक्ष्य अन्नं दद्यात्।

भावार्थः

संस्कृतम्– अतिथिपूजनक्रमः अस्मिन् पद्ये उच्यते। यदा अतिथिः समागच्छति, प्रथमं तस्मै आसनं समर्प्य, जलमानीय पादप्रक्षालनं कुर्यात्। ततः तदीयकुशलप्रश्नं विधाय, स्वीयकुशलतां च विनिवेद्य, तदीयापेक्षानुसारेण तं भोजयेत्।

हिन्दी– धीर पुरुष घर पर आये सज्जन अतिथि को आसन देकर, जल लाकर, दोनों पैर धोकर, कुशल-क्षेम पूछकर अपना समाचार निवेदन करे और फिर आवश्यकता देखकर भोजन करावे।

आंग्लम्– A well-behaved person should first offer a seat to the guest, wash his feet by bringing water, enquire about his well-being, mention about one's own well-being, should offer him food as per his requirements.

सम्बद्धाः श्लोकाः

सम्प्राप्ताय त्वतिथये प्रदद्यादासनोदके।
अन्नं चैव यथाशक्ति सत्कृत्य विधिपूर्वकम्॥ *(मनु. 3.99)*

न वै स्वयं तदश्नीयादतिथिं यन्न भोजयेत्।
धन्यं यशस्यमायुष्यं स्वर्ग्यं चातिथिपूजनम्॥ *(मनु. 3.106)*

यस्योदकं मधुपर्कं च गां च
न मन्त्रवित् प्रतिगृह्णाति गेहे।
लोभाद् भयादथ कार्पण्यतो वा
तस्यानर्थं जीवितमाहुरार्याः॥ *(विदुर. 6/3)*

दूरागतं पथि श्रान्तं वृथा च गृहमागतम्।
अनर्चयित्वा यो भुङ्क्ते स वै चाण्डाल उच्यते॥ *(चाणक्य. 15.11)*

गृहागतं क्षुद्रमपि यथार्हं पूजयेत् सदा।
तदीयकुशलप्रश्नैः शक्त्या दानैर्जलादिभिः॥ *(शुक्र. 3.104)*

25. शीलं प्रधानम्

श्लोकः

शीलं प्रधानं पुरुषे तद् यस्येह प्रणश्यति।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभिः॥ 2.48॥

पदच्छेदः

शीलम् प्रधानम् पुरुषे तद् यस्य इह प्र-णश्यति।
न तस्य जीवितेन अर्थः न धनेन न बन्धुभिः॥ 2.48॥

अन्वयः

पुरुषे शीलं प्रधानम् इह यस्य तद् प्रणश्यति तस्य जीवितेन, धनेन, बन्धुभिः (च) न अर्थः।

2. **एकेन पदेन उत्तरयत–**
[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. कति जनाः नित्यदुःखिताः ? ....
ii. ज्ञातिभिः सह किं न करणीयम् ? ....
iii. सज्जनः कस्य दुःखे प्रसन्नः न भवति ? ....
iv. सज्जनः दत्त्वा किं न करोति ? ....
v. यः घृणां करोति सः कः उच्यते ? ....
vi. धीरः जनः साधवे किं दद्यात् ? ....
vii. 'आत्म–समाचारम्' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम् ? ....
viii. अतिथेः कुशलमङ्गलं पृष्ट्वा स्वमङ्गलञ्च निवेद्य धीरः तस्मै किं दद्यात् ? ....
ix. पुरुषे किं प्रधानम् ? ....

3. **अधोलिखितकथनानि पठित्वा रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्नान् कुरुत –**
[अधोलिखित कथन को पढ़कर रेखाङ्कित पद के आधार पर प्रश्न निर्माण करें। Read the following statements and make question on the basis of underlined word.]

	कथनम्	**प्रश्नः**
यथा	यः नित्यं शङ्कां करोति सः <u>नित्यशङ्कितः</u>।	यः नित्यं शङ्कां करोति सः कः ?
i.	यः नित्यं दुःखी भवति सः <u>नित्यदुःखी</u>।	..................?
ii.	सम्भोजनं <u>ज्ञातिभिः</u> सह कार्यम्।	..................?
iii.	सज्जनः स्वे सुखे <u>प्रहर्षं</u> न करोति ?	..................?
iv.	धीरः दानं दत्वा <u>पश्चात्तापं</u> न अनुभवति।	..................?
v.	सः अतिथये <u>आपः</u> आनयति।	..................?
vi.	पुरुषे <u>शीलं</u> प्रधानम्।	..................?
vii.	शीलरहितस्य जीवनेन अपि <u>लाभः</u> नास्ति।	..................?
viii.	सज्जनः स्वसुखे <u>प्रसन्नतां</u> न अनुभवति।	..................?

4. पूर्णेन वाक्येन समाधत्त –

[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. यः ईर्ष्यां करोति स कः उच्यते ?

.... ।

ii. स्वसम्बन्धिभिः सह किं किं कर्त्तव्यम् ?

.... ।

iii. 'सज्जन' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम् ?

.... ।

iv. सज्जनः कि कृत्वा पश्चात्तापं न करोति ?

.... ।

v. 'अतिथ्ये' इति स्थाने किं पदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

.... ।

vi. 'आसनम्' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम् ?

.... ।

vii. 'निवेदनं कृत्वा' इति कस्य पदस्य अर्थः ?

.... ।

viii. 'अवेक्ष्य' इति पदे कः प्रत्ययः ?

.... ।

ix. 'क्षालयित्वा' इति कस्य पदस्य अर्थः ?

.... ।

x. 'निवेदनं कृत्वा' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम् ?

.... ।

xi. कस्मिन् नष्टे जाते मनुष्यस्य जीवनं व्यर्थम् ?

.... ।

27. कुलपरीक्षा

श्लोकः

परिच्छदेन क्षेत्रेण वेश्मना परिचर्यया।
परीक्षेत कुलं राजन् भोजनाच्छादनेन च॥ 7.43॥

पदच्छेदः

परिच्छदेन क्षेत्रेण वेश्मना परिचर्यया।
परीक्षेत कुलम् राजन् भोजन-आच्छादनेन च॥

अन्वयः

राजन्! परिच्छदेन, क्षेत्रेण, वेश्मना, परिचर्यया भोजनाच्छादनेन च कुलं परीक्षेत।

भावार्थः

संस्कृतम्– कस्यचित् कुलस्य श्रेष्ठतायाः ज्ञानं कथं भवति इति अत्र उच्यते। परिवृताः परिजनाः, जन्मस्थानं, गृहं, सेवा, भोजनं, वस्त्रम् इति एतेषां परीक्षणेन कुलस्य श्रेष्ठता ज्ञायते।

हिन्दी– हे राजन्! परिजन से, जन्मस्थान से, आवास से, सेवा से, भोजन से तथा वस्त्र से कुल की परीक्षा करें।

आंग्लम्– O king! a dynasty is tested by its external appendages, attendants, birth-places, habitations, services, food habits and clothing.

सम्बद्धाः श्लोकाः

तपो दमो ब्रह्मवित्तं वितानाः
पुण्याः विवाहाः सततान्नदानम्।
येष्वेते सप्तगुणाः वसन्ति
सम्यग्वृत्तास्तानि महाकुलानि॥ *(विदुर. 4.23)*

कुलं शीलेन धार्यते। *(चाणक्य. 5.8)*

आचारः कुलमाख्याति। *(चाणक्य. 3.2)*

28. असाधूनां शीलम्

श्लोकः

अकस्मादेव कुप्यन्ति प्रसीदन्त्यनिमित्ततः।
शीलमेतदसाधूनामभ्रं पारिप्लवं यथा॥ 4.41॥

पदच्छेदः

अकस्मात् एव कुप्यन्ति प्र-सीदन्ति अ-निमित्ततः ।
शीलम् एतत् अ-साधूनाम् अभ्रम् पारिप्लवम् यथा ॥

अन्वयः

यथा पारिप्लवम् अभ्रम् (भवति तथैव) असाधूनाम् एतत् शीलं (भवति)। अकस्मात् एव कुप्यन्ति अनिमित्ततः प्रसीदन्ति (च)।

भावार्थः

संस्कृतम्– यथा चञ्चलः मेघः कदा वर्षति, कुत्र प्लवते वायौ इति निश्चयः नास्ति, तथैव दुष्टाः निष्कारणं क्रुध्यन्ति, प्रसीदन्ति च। दुष्टाः न सेवनीयाः इति तात्पर्यम्।

हिन्दी– दुष्ट मनुष्यों का स्वभाव चंचल मेघ के समान परिवर्तनशील होता है, वे बिना कारण ही कुपित हो जाते हैं और बिना कारण ही प्रसन्न हो जाते हैं।

आंग्लम्– The nature of wicked people is always whimsical like that of a parasite cloud. They become angry or pleased without any rhyme or reason.

सम्बद्धौ श्लोकौ

चलचित्तस्य वै पुंसो वृद्धाननुपसेवतः ।
पारिप्लवमतेर्नित्यमध्रुवो मित्रसङ्ग्रहः ॥ *(विदुर. 4.39)*

दुर्जनः प्रियवादी च नैतद्विश्वासकारणम् ।
मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदि हलाहलं स्थितम् ॥ *(हितो. 1.8.3)*

29. सतां लक्षणं सदाचारः

श्लोकः

अकीर्तिं विनयो हन्ति हन्त्यनर्थं पराक्रमः ।
हन्ति नित्यं क्षमा क्रोधमाचारो हन्त्यलक्षणम् ॥ 7.42 ॥

पदच्छेदः

अ-कीर्तिम् विनयः हन्ति हन्ति अनर्थम् पराक्रमः ।
हन्ति नित्यम् क्षमा क्रोधम् आचारः हन्ति अलक्षणम् ॥

अन्वयः

विनयः अकीर्तिं हन्ति। पराक्रमः अनर्थं हन्ति। क्षमा नित्यं क्रोधं हन्ति। आचारः अलक्षणं हन्ति।

10. यथोदाहरणं पदानि लिखत–

[यथोदाहरण पदों को लिखें। Write words as shown in the example.]

यथा	यः ईर्ष्यां करोति,	सः ईर्ष्य् + इन्	ईर्ष्यिन्	ईर्ष्यी।
i.	यः घृणां करोति,	सः घृण् + इन्	घृणिन्	.... ।
ii.	यः परभाग्यम् उपजीवति,	सः परभाग्योपजीव् + इन्	परभाग्योपजीविन्	.... ।

11. चित्रे रिक्तस्थानानि पूरयत –

[चित्र में रिक्तस्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks in the picture.]
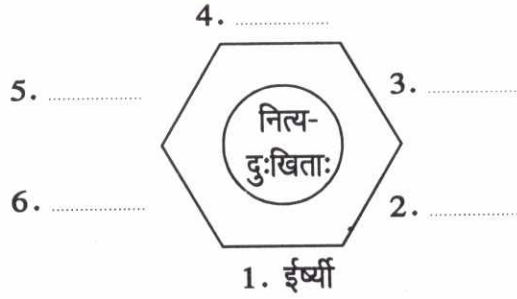
योग्यताविस्तरः

अत्र द्वाविंशतितमे श्लोके कुरुतेऽनुतापम् इति लिखितम् अस्ति। तत्र कुरुते + अनुतापम् इति पदच्छेदः भवति। एषः पूर्वरूपसन्धिः भवति। अत्र कुरुते इति पदम् अस्ति। यदा पदान्ते 'ए'कारः, 'ओ'कारः भवति, अग्रे 'अ'कारः भवति तदा पूर्वरूपसन्धिः भवति। अत्र अ-कारस्य अवग्रहः (ऽ) जातः। स्पष्टार्थम् एव अवग्रहः लिख्यते। तथैव चतुर्विंशतितमे श्लोके साधवेऽभ्यागताय इत्यत्र अपि पूर्वरूपसन्धिः अस्ति। इयं च पूर्वरूपसन्धिव्यवस्था –

(पदान्ते) ए + अ – कुरुते + अनुतापम् = कुरुतेऽनुतापम्
साधवे + अभ्यागताय = साधवेऽभ्यागताय

(पदान्ते) ओ + अ – विष्णो + अव = विष्णोऽव
प्रभो + अत्र = प्रभोऽत्र

26. कुलं वृत्तेन रक्ष्यते

श्लोकः

सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्या योगेन रक्ष्यते ।
मृजया रक्ष्यते रूपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते ॥ 2.39 ॥

पदच्छेदः

सत्येन रक्ष्यते धर्मः विद्या योगेन रक्ष्यते ।
मृजया रक्ष्यते रूपम् कुलम् वृत्तेन रक्ष्यते ॥

अन्वयः

सत्येन धर्मः रक्ष्यते । योगेन विद्या रक्ष्यते । मृजया रूपं रक्ष्यते । वृत्तेन कुलं रक्ष्यते ।

भावार्थः

संस्कृतम्– सत्याचरणेन धर्मस्य पालनं भवति, अभ्यासेन विद्यायाः रक्षा भवति, स्वच्छतया रूपं निर्मलं भवति, चरित्रेण कुलस्य मानं रक्षितं भवति । अतः धर्मरक्षायै सत्यं वदेत् । विद्यारक्षायै सदा अभ्यासं कुर्यात् । सौन्दर्यरक्षायै स्वच्छताम् अवलम्बेत । कुलरक्षायै चरित्रवान् भवेत् ।

हिन्दी– सत्य के द्वारा धर्म की रक्षा होती है, विद्या की रक्षा अभ्यास से होती है । रूप की रक्षा स्वच्छता से होती है और कुल की रक्षा चरित्र द्वारा होती है ।

आंग्लम्– Dharma is protected by truth, knowledge is protected by practice, beauty is protected by cleanliness and a dynasty is protected by good character.

सम्बद्धाः श्लोकाः

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् वित्तमेति च याति च ।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ॥ *(विदुर. 4.30)*

गोभिः पशुभिरश्वैश्च कृष्या च सुसमृद्धया ।
कुलानि न प्ररोहन्ति यानि हीनानि वृत्ततः ॥ *(विदुर. 4.31)*

वृत्ततस्त्वविहीनानि कुलान्यल्पधनान्यपि ।
कुलसङ्ख्यां च गच्छन्ति कर्षन्ति च महद् यशः ॥ *(विदुर. 4.29)*

5. सन्धिच्छेदं सन्धिं वा कुरुत –

[सन्धिविच्छेद या सन्धि करें। Either euphonically disjoin or join as required.]

i.	क्रोधनः	+	नित्यशङ्कितः	=	....
ii.	परभाग्य	+	उपजीवी	=	....
iii.	षट्	+	....	=	षड्दोषाः
iv.	सम्	+	भोजनम्	=	....
v.	सम्प्रीतिः	+	....	=	सम्प्रीतिश्च
vi.	न	+	....	=	नान्यस्य
vii.	कुरुते	+	अनुतापम्	=	....
viii.	सत्पुरुष	+	आर्यशीलः	=	....
ix.	साधवे	+	अभ्यागताय	=	....
x.	आनीय	+	आपः	=	....
xi.	प्रतिवेद्य	+	आत्मसंस्थाम्	=	....
xii.	ततः	+	दद्यात्	=	....
xiii.	दद्यात्	+	अन्नम्	=	....
xiv.	यस्य	+	इह	=	....
xv.	जीवितेन	+	अर्थः	=	....

6. प्रत्ययं योजयित्वा पदानि लिखत–

[प्रत्यय जोड़कर पदों को लिखें। Write words by adding suffix.]

i.	दा	+	क्त्वा					=	....
ii.	प्रच्छ्	+	क्त्वा					=	....
iii.	आ	+	नी	+	ल्यप्			=	....
iv.	परि	+	निर्	+	निज्	+	ल्यप्	=	....
v.	प्रति	+	विद् (णिच्)	+	ल्यप्			=	....
vi.	अव	+	ईक्ष्	+	ल्यप्			=	.....

7. **यथोचितं योजयत –**
[सही मेल बनाएँ। Match appropriately.]

	विशेषणपदम्		विशेष्यपदम्
i.	स्वे	क.	सत्पुरुषः
ii.	आर्यशीलः	ख.	नित्यदुःखी
iii.	नित्यशङ्कितः	ग.	शीलम्
iv.	प्रधानम्	घ.	सुखे

8. **विपरीतार्थकानि पदानि मेलयत–**
[विपरीत पदों को मिलाएँ। Match the opposite words.]

i.	असन्तुष्टः	क.	प्रहृष्टः
ii.	दुःखितः	ख.	क्रोधहीनः
iii.	क्रोधनः	ग.	प्रधानम्
iv.	परभाग्योपजीवी	घ.	अनागताय
v.	गौणम्	ङ.	दुर्जनाय
vi.	साधवे	च.	धीरः
vii.	अभ्यागताय	छ.	स्वावलम्बी
viii.	अधीरः	ज.	सन्तुष्टः

9. **यथोचितं क्रियापदं योजयत –**
[यथोचित क्रियापद लिखें। Write verbal form as required.]

i. सज्जनः आत्मनः सुखे हर्षं न .... ।

ii. आर्यशीलः नरः परदुःखे प्रसन्नः न .... ।

iii. सज्जनः दानं कृत्वा पश्चात्तापं न .... ।

iv. धीरः अतिथये अन्नं .... ।

अभ्यासः - 6

[श्लोकसङ्ख्या 26-30]

सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्या योगेन रक्ष्यते।
मृजया रक्ष्यते रूपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते ॥ 2.39 ॥

परिच्छदेन क्षेत्रेण वेश्मना परिचर्यया।
परीक्षेत कुलं राजन् भोजनाच्छादनेन च ॥ 7.43 ॥

अकस्मादेव कुप्यन्ति प्रसीदन्त्यनिमित्ततः।
शीलमेतदसाधूनामभ्रं पारिप्लवं यथा ॥ 4.41 ॥

अकीर्तिं विनयो हन्ति हन्त्यनर्थं पराक्रमः।
हन्ति नित्यं क्षमा क्रोधमाचारो हन्त्यलक्षणम् ॥ 7.42 ॥

दुष्कुलीनः कुलीनो वा मर्यादां यो न लङ्घयेत्।
धर्मापेक्षी मृदुर्ह्रीमान् स कुलीनशतात् वरः ॥ 7.46 ॥

1. **रिक्तस्थानानि पूरयत–**
[रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. सत्येन .... धर्मः, विद्या योगेन .... ।
मृजया .... रूपम्, कुलं वृत्तेन .... ॥

ii. परिच्छदेन .... वेश्मना .... ।
परीक्षेत .... राजन्! .... च ॥

iii. अकस्माद् एव ...., ... अनिमित्ततः।
शीलम् एतत् ...., अभ्रं .... यथा ॥

iv. .... विनयो हन्ति, हन्त्यनर्थं .... ।
हन्ति नित्यं .... क्रोधम् .... हन्त्यलक्षणम् ॥

v. दुष्कुलीनः .... वा, ... यो न .... ।
.... मृदुर्ह्रीमान् स .... वरः ॥

2. एकेन पदेन उत्तरं लिखत–

[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. धर्मः केन रक्ष्यते ? ....

ii. विद्या केन रक्ष्यते ? ....

iii. भोजनेन वस्त्रेण च किं परीक्षेत ? ....

iv. अकस्मात् एव के कुप्यन्ति ? ....

v. अकारणम् एव के प्रसीदन्ति ? ....

vi. विनयः कां हन्ति ? ....

vii. पराक्रमः कं हन्ति ? ....

viii. क्षमा नित्यं कं हन्ति ? ....

ix. कः अलक्षणं (दुर्व्यसनं) हन्ति ? ....

x. धर्मपरायणः कस्मात् वरः ? ....

3. पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–

[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. स्वच्छतया किं रक्ष्यते ?

.... ।

ii. चरित्रेण किं रक्ष्यते ?

.... ।

iii. सेवया किं परीक्षेत ?

.... ।

iv. अकस्माद् रुष्टाः अकारणं तुष्टाः इति केषां लक्षणम् ?

.... ।

v. कः अनर्थं नाशयति ?

.... ।

vi. कीदृशः नरः कुलीनशतात् वरः ?

.... ।

भावार्थः

संस्कृतम्– अपयशः विनयेन नश्यति। वीरता आपदं नाशयति। क्रोधः क्षमया निवार्यते। सदाचारः दुरभ्यासान् नाशयति। अतः मनुष्यः विनयसम्पन्नः, पराक्रमी, क्षमावान् आचारशीलश्च भवेत्।

हिन्दी– नम्रता अपयश को दूर करती है। वीरता अनर्थकारी संकटों को नष्ट कर देती है। क्षमा सदा क्रोध को दूर भगा देती है। सदाचार दुर्व्यसनों को नष्ट कर देता है।

आंग्लम्– Modesty destroys defamation. Valour destroys misfortunes. Forgiveness removes anger. Good conduct is a destroyer of all bad habits.

सम्बद्धाः श्लोकाः

आचाराल्लभते ह्यायुराचारादीप्सिताः प्रजाः।
आचाराद्धनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्षणम्॥ *(मनु. 4.156)*

सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः।
श्रद्दधानोऽनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति॥ *(मनु. 4.158)*

दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः।
दुःखभागी च सततं व्याधितोऽल्पायुरेव च॥ *(मनु. 4.157)*

३०. मर्यादापालकः वरः

श्लोकः

दुष्कुलीनः कुलीनो वा मर्यादां यो न लङ्घयेत्।
धर्मापेक्षी मृदुर्ह्रीमान् स कुलीनशताद् वरः॥ 7.46॥

पदच्छेदः

दुष्कुलीनः कुलीनः वा मर्यादाम् यः न लङ्घयेत्।
धर्मापेक्षी मृदुः ह्रीमान् सः कुलीन-शतात् वरः॥

अन्वयः

दुष्कुलीनः कुलीनः वा यः मर्यादां न लङ्घयेत्। धर्मापेक्षी मृदुः ह्रीमान् सः कुलीनशताद् वरः।

भावार्थः

संस्कृतम्– नीचकुले उच्चकुले वा जातः भवतु। यदि सः मार्यादां न उल्लङ्घते, धर्मं सेवते, मृदुः लज्जावान् च भवति तर्हि नूनम् उत्तमकुलोत्पन्नेभ्यः श्रेष्ठः भवति। श्रेष्ठता कुलेन न, परन्तु आचरणेन इति नीतिः।

आंग्लम्– Irrespective of his family background whether high or low, a person who does not cross the limits, is religious-minded, soft-tempered and shy, is better than hundreds of men belonging to very high class families.

हिन्दी– नीच कुलवाला हो या उच्चं कुलवाला हो, जो मर्यादा का उल्लंघन न करे, धार्मिक वृत्ति वाला, कोमल स्वभाव वाला तथा लज्जाशील हो वही मनुष्य उत्तम कुलों में उत्पन्न सैकड़ों मनुष्यों से श्रेष्ठ है।

सम्बद्धौ श्लोकौ

ब्रह्मचर्यं तपः क्षान्तिर्मधुमांसस्य वर्जनम्।
मर्यादायां स्थितिश्चैव शमः शौचस्य लक्षणम्॥ *(महा. आश्व. 22/6)*

vii. योगेन का रक्ष्यते ?

.... ।

viii. परीक्षेत कुलं राजन् ! अत्र किं सम्बोधनपदम् ?

.... ।

4. सन्धिं / सन्धिच्छेदं कुरुत–

[सन्धि या सन्धिविच्छेद करें। Either euphonically join or disjoin as required.]

i.	धर्मः	+	....	=	धर्मो विद्या
ii.	कुलम्	+	वृत्तेन	=	....
iii.	भोजन	+	आच्छादनेन	=	....
iv.	अकस्मात्	+	एव	=	....
v.	प्रसीदन्ति	+	....	=	प्रसीदन्त्यनिमित्ततः
vi.	एतत्	+	असाधूनाम्	=	....
vii.	विनयः	+	हन्ति	=	....
viii.	हन्ति	+	....	=	हन्त्यनर्थम्
ix.	....	+	अलक्षणम्	=	हन्त्यलक्षणम्
x.	धर्म	+	अपेक्षी	=	....
xi.	मृदुः	+	ह्रीमान्	=	....

5. कर्तृवाच्यानि कर्मवाच्यैः सह मेलयत–

[कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य के साथ जोड़ें। Match the active voice with passive voice.]

	कर्तृवाच्यम्		कर्मवाच्यम्
i.	सत्यं धर्मं रक्षति।	क.	विद्या योगेन रक्ष्यते।
ii.	योगः विद्यां रक्षति।	ख.	कुलं वृत्तेन रक्ष्यते।
iii.	मृजा रूपं रक्षति।	ग.	विनयेन अकीर्तिः हन्यते।
iv.	वृत्तं कुलं रक्षति।	घ.	पराक्रमेण अनर्थः हन्यते।
v.	विनयः अकीर्त्तिं हन्ति।	ङ.	क्रोधः क्षमया हन्यते।

vi.	पराक्रमः अनर्थं हन्ति ।	च.	आचारेण अलक्षणं हन्यते ।
vii.	क्षमा क्रोधं हन्ति ।	छ.	सत्येन धर्मः रक्ष्यते ।
viii.	आचारः अलक्षणं हन्ति ।	ज.	मृजया रूपं रक्ष्यते ।

6. **अर्थानुसारेण यथोचितं पदानि मेलयत–**
[अर्थ के अनुसार यथोचित पदों को जोड़ें। Match the following words as per their meaning.]

i.	वृत्तम्	क.	अपयशः
ii.	मृजा	ख.	विपत्तिः
iii.	अकीर्त्तिः	ग.	स्वच्छता
iv.	अनर्थः	घ.	गृहेण
v.	दुर्व्यसनम्	ङ.	सेवया
vi.	वेश्मना	च.	चरित्रम्
vii.	परिचर्यया	छ.	आच्छादनेन
viii.	वस्त्रेण	ज.	अलक्षणम्

7. **विकल्पेषु शुद्धम् उत्तरं लिखत–**
[विकल्पों में से सही उत्तर लिखें। Write correct answers from the given options.]

क. कुलपरीक्षायै किं न अपेक्षितम् ?

i.	परिच्छदः	ii.	वस्त्रम्
iii.	परिवारसङ्ख्या	iv.	जन्मस्थानम्

ख. इदम् अनेन न रक्ष्यते ।

i.	क्रोधेन क्षमा	ii.	चरित्रेण वंशः
iii.	योगेन विद्या	iv.	स्वच्छतया सौन्दर्यम्

ग. अनेन इदं न हन्यते ।

i.	विनयेन अपयशः	ii.	वीरतया विपत्तिः
iii.	शिष्टाचारेण दुर्व्यसनम्	iv.	सत्येन वृत्तम्

घ. अत्र बहुवचनं नास्ति।

i. कुप्यन्ति ii. प्रसीदन्ति

iii. हन्ति iv. गच्छन्ति

ङ. एतत् आत्मनेपदम् न अस्ति।

i. परीक्षेत ii. लङ्घयेत्

iii. रक्ष्यते iv. हन्यते

क. .... ख. .... ग. .... घ. .... ङ. ....

8. **चित्रे रिक्तस्थानानि पूरयत–**

[चित्र में रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks in the picture.]
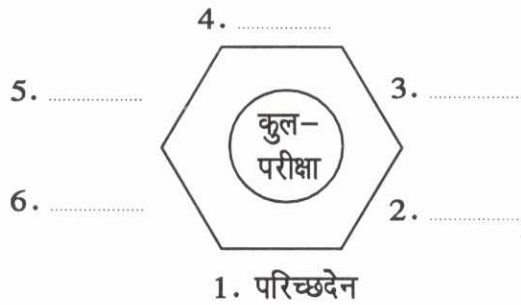
9. **मञ्जूषातः द्वितीयान्तपदानि तृतीयान्तपदानि च चित्वा अधोनिर्दिष्टेषु स्तम्भेषु लिखत–**

[मञ्जूषा से द्वितीयान्त एवं तृतीयान्त पदों को चुनकर यथानिर्दिष्ट स्तम्भों में लिखें। Write the accusative and instrumental forms as required.]

सत्येन, रूपम्, योगेन, वेश्मना, कुलम्, वृत्तेन, परिचर्यया, आच्छादनेन, अनर्थम्, अलक्षणम्, ह्रीमान्, मृदुः, धर्मापेक्षी, मृजया, क्रोधम्, अपयशः, मर्यादाम्, अकीर्तिम्।

	I. **द्वितीयान्तपदानि**	II. **तृतीयान्तपदानि**
यथा	रूपम्	सत्येन
	....	....

....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

10. विलोमपदानि मेलयत—

[विलोम पदों को मिलाएँ। Match the opposite words.]

i.	प्रसीदन्ति	क.	कुलीनः
ii.	असाधूनाम्	ख.	अर्थः
iii.	अकीर्तिः	ग.	कुप्यन्ति
iv.	अनर्थः	घ.	लक्षणम्
v.	अलक्षणम्	ङ	यशः
vi.	दुष्कुलीनः	च.	साधूनाम्

योग्यताविस्तरः

नञ्-तत्पुरुषसमासप्रयोगः —

I.		II.	
न साधुः इति	असाधुः।	न अर्थः इति	अनर्थः।
न कीर्तिः इति	अकीर्तिः।	न अश्वः इति	अनश्वः।
न लक्षणम् इति	अलक्षणम्।	न ऋतम् इति	अनृतम्।
न सत्यम् इति	असत्यम्।	न आत्मा इति	अनात्मा।
न विद्या इति	अविद्या।	न ईश्वरः इति	अनीश्वरः।

☞ नञ्तत्पुरुषसमासे पदद्वयं भवति। पूर्वपदम् उत्तरपदं च। पूर्वपदं सर्वदा 'न' इति भवति। उत्तरपदस्य प्रथमः वर्णः व्यञ्जनं भवति अथवा स्वरः भवति। यदा उत्तरपदस्य प्रथमः वर्णः व्यञ्जनं भवति तदा 'न'-कारस्य स्थाने 'अ'-कारः भवति। यथा I. स्तम्भे उदाहरणानि सन्ति। तथा च यदा उत्तर-पदस्य प्रथमः वर्णः स्वरः भवति तदा 'न'-कारस्य स्थाने 'अन्' इति भवति। यथा II. स्तम्भे उदाहरणानि सन्ति।

31. क्षमया साध्यते सर्वम्

श्लोकः

क्षमा वशीकृतिर्लोके क्षमया किं न साध्यते।
शान्तिखड्गः करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः ॥1.55॥

पदच्छेदः

क्षमा वशीकृतिः लोके क्षमया किम् न साध्यते।
शान्ति-खड्गः करे यस्य किम् करिष्यति दुर्जनः ॥

अन्वयः

क्षमा लोके वशीकृतिः। क्षमया किं न साध्यते ? यस्य करे शान्तिखड्गः, दुर्जनः (तस्य) किं करिष्यति ?

भावार्थः

संस्कृतम्– क्षमया लोकः वशीभूयते। क्षमया किं न साधयितुं शक्यते ? यस्य हस्ते शान्तिरूपः खड्गः वर्तते, दुष्टः तस्य किं कर्तुं प्रभवति ? यः क्षमावान् शान्तिप्रियः च सः सर्वान् जेष्यति इत्यर्थः।

हिन्दी– क्षमा रूपी गुण संसार में सबको वश में कर लेता है। क्षमा से क्या सिद्ध नहीं हो सकता ? जिसके हाथ में शान्ति रूपी तलवार है, दुष्ट व्यक्ति उसका क्या बिगाड़ सकता है ?

आंग्लम्– Forgiveness can control everyone in this world. What indeed cannot be served through it ? What can a wicked person do to a man equipped with the sword of peace ?

सम्बद्धाः श्लोकाः

अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति।
अक्षमावान् परं दोषैरात्मानं चैव योजयेत् ॥ *(विदुर. 1.56)*

एको धर्मः परं श्रेयः क्षमैका शान्तिरुत्तमा।
विद्यैका परमा तृप्तिरहिंसैका सुखावहा ॥ *(विदुर. 1.57)*

क्षमातुल्यं तपो नास्ति, न सन्तोषात्परं सुखम्।
न तृष्णायाः परो व्याधिर्न च धर्मो दयापरः ॥ *(सु.र.भा. 166/600)*

32. दानी दरिद्रः

श्लोकः

द्वाविमौ पुरुषौ राजन् ! स्वर्गस्योपरि तिष्ठतः।
प्रभुश्च क्षमया युक्तो दरिद्रश्च प्रदानवान् ॥1.63॥

पदच्छेदः

द्वौ इमौ पुरुषौ राजन् ! स्वर्गस्य उपरि तिष्ठतः ।
प्रभुः च क्षमया युक्तः दरिद्रः च प्रदानवान् ॥

अन्वयः

राजन् ! इमौ द्वौ पुरुषौ स्वर्गस्य उपरि तिष्ठतः । क्षमया युक्तः प्रभुः, प्रदानवान् च दरिद्रः ।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः समर्थोऽपि क्षमाम् अवलम्बते, यश्च दरिद्रः सन्नपि दानं करोति एतौ उभौ अपि स्वर्गादपि उत्तमं स्थानं प्राप्नुतः ।

हिन्दी– हे राजन् ! ये दो प्रकार के मनुष्य स्वर्ग से भी ऊपर विराजमान होते हैं– क्षमा से युक्त समर्थ व्यक्ति और दान देने वाला दरिद्र ।

आंग्लम्– O King ! These two types of persons stand atop the heaven– A capable person who is endowed with the virtue of forgiveness and a poor person who practises generosity.

सम्बद्धौ श्लोकौ

द्वावम्भसि निवेष्टव्यौ गले बद्ध्वा दृढां शिलाम् ।
धनवन्तमदातारं दरिद्रं चातपस्विनम् ॥ *(विदुर. 1.65)*

द्वाविमौ कण्टकौ तीक्ष्णौ शरीरपरिशोषिणौ ।
यश्चाधनः कामयते यश्च कुप्यत्यनीश्वरः ॥ *(विदुर. 1.61)*

33. सारं सर्वतः आदद्यात्

श्लोकः

अप्युन्मत्तात् प्रलपतो बालाच्च परिजल्पतः ।
सर्वतः सारमादद्याद् अश्मभ्य इव काञ्चनम् ॥ 2.32 ॥

पदच्छेदः

अपि उन्मत्तात् प्रलपतः बालात् च परि-जल्पतः ।
सर्वतः सारम् आ-दद्यात् अश्मभ्यः इव काञ्चनम् ॥

अन्वयः

अश्मभ्यः काञ्चनम् इव उन्मत्तात् अपि प्रलपतः, बालात् परिजल्पतः च सर्वतः सारम् आदद्यात् ।

भावार्थः

संस्कृतम्– यथा वा पाषाणेभ्यः सुवर्णं गृह्यते, तथैव निरर्थकं भाषमाणात् उन्मत्तात्, बहुभाषमाणात् बालात् च सारभूतं सार्थं वचः ग्रहणीयम्। कः वदति इत्यविचार्य किं वदति इति विचार्य सारं गृह्णीयादिति तात्पर्यम्।

हिन्दी– जैसे पत्थर से सोना ग्रहण करते हैं, उसी प्रकार प्रलाप करने वाले पागल से और वाचाल बालक से भी सारभूत विषय को ग्रहण कर लेना चाहिए।

आंग्लम्– Just as gold is extracted from rocks, essential advice should be received even from a loose-talking mad person and a talkative child.

सम्बद्धाः श्लोकाः

सुव्याहृतानि सूक्तानि सुकृतानि ततस्ततः।
सञ्चिन्वन् धीर आसीत् शिलाहारी शिलां यथा॥ *(विदुर. 2.33)*

विषादप्यमृतं ग्राह्यममेध्यादपि काञ्चनम्।
नीचादप्युत्तमा विद्या स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि॥ *(चाणक्य. 1.16)*

विषादप्यमृतं ग्राह्यं बालादपि सुभाषितम्।
अमित्रादपि सद्वृत्तममेध्यादपि काञ्चनम्॥ *(मनु. 2.243)*

विविधानि च शिल्पानि समादेयानि सर्वतः। *(मनु. 2.244)*

34. किम् आद्यम् ?

श्लोकः

यच्छक्यं ग्रसितुं ग्रस्यं ग्रस्तं परिणमेच्च यत्।
हितं च परिणामे स्यात् तदाद्यं भूतिमिच्छता॥ 2.14॥

पदच्छेदः

यत् शक्यम् ग्रसितुम् ग्रस्यम् ग्रस्तम् परिणमेत् च यत्।
हितम् च परिणामे स्यात् तत् आद्यम् भूतिम् इच्छता॥

अन्वयः

यत् ग्रस्यं ग्रसितुं शक्यम्, यत् ग्रस्तं च परिणमेत्, परिणामे च हितं स्यात् तत् भूतिम् इच्छता आद्यम्।

भावार्थः

संस्कृतम्– यत् खादितुं योग्यं खादिते च यत् सुलभतया जीर्णं भवति, जीर्णं च यत् हिताय भवति, तदेव वस्तु कल्याणं कामयमानेन खादनीयम्।

हिन्दी– जो निगलने योग्य पदार्थ खाया जा सके, जो खाया हुआ पच जाये, और जो पच जाने पर हितकारी हो, वह पदार्थ कल्याण चाहते हुए मनुष्य के द्वारा खाया जाना चाहिए।

आंग्लम्– Only that food should be taken by a person desirous of his well-being, which may be easily eaten, after eating which may be easily digestible and when digested should prove beneficial (for health).

सम्बद्धाः श्लोकाः

आयुः सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः॥ *(गीता 17.8)*

नोच्छिष्टं कस्यचिद्दद्यान्नाद्याच्चैव तथान्तरा।
न चैवात्यशनं कुर्यान्न चोच्छिष्टः क्वचिद् व्रजेत्॥ *(मनु. 2.56)*

पूजितं ह्यशनं नित्यं बलमूर्जं च यच्छति।
अपूजितं तु तद्भुक्तमुभयं नाशयेदिदम्॥ *(मनु. 2.55)*

35. मितभोजनम्

श्लोकः

गुणाश्च षण्मितभुक्तं भजन्ते आरोग्यमायुश्च बलं सुखं च।
अनाविलं चास्य भवत्यपत्यं न चैनमाद्यून इति क्षिपन्ति॥ 5.34॥

पदच्छेदः

गुणाः च षट् मितभुक्तम् भजन्ते आरोग्यम् आयुः च बलम् सुखम् च।
अनाविलम् च अस्य भवति अपत्यम् न च एनम् आद्यूनः इति क्षिपन्ति॥

अन्वयः

षट् गुणाः (च) मितभुक्तं भजन्ते– आरोग्यम् (च) आयुः (च) बलं (च) सुखम् च। अस्य अपत्यम् च अनाविलं भवति, एनं च आद्यून इति न क्षिपन्ति।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः मितभोजनं करोति, तादृशं (जनं) षड् गुणाः सेवन्ते। ते च गुणाः– आरोग्यम्, दीर्घायुः, बलं, सुखं, नीरोगसन्ततिः, बहुभोजी इत्यपवादात् रक्षा च।

हिन्दी– ये छः गुण नपा-तुला भोजन करने वाले को प्राप्त होते हैं– स्वास्थ्य, आयु, बल, सुख, निरोग सन्तान और 'पेटू है', ऐसे आक्षेप से बचाव।

आंग्लम्– These six blessings are showered upon one who eats limited quantity of food – good health, long life, strength, happiness, healthy issues and (last but not the least) people don't blame him as shameless glutton.

सम्बद्धौ श्लोकौ

अकर्मशीलं च महाशनं च
एतान् गृहे न प्रतिवासयेत् ॥ *(विदुर. 5.35)*

अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चातिभोजनम् ।
अपुण्यं लोकविद्विष्टं तस्मात्तत्परिवर्जयेत् ॥ *(मनु. 2.57)*

अभ्यासः – 7

[श्लोकसङ्ख्या 31–35]

क्षमा वशीकृतिर्लोके क्षमया किं न साध्यते।
शान्तिखड्गः करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः ॥1.55॥

द्वाविमौ पुरुषौ राजन् ! स्वर्गस्योपरि तिष्ठतः।
प्रभुश्च क्षमया युक्तो दरिद्रश्च प्रदानवान् ॥1.63॥

अप्युन्मत्तात् प्रलपतो बालाच्च परिजल्पतः।
सर्वतः सारमादद्याद् अश्मभ्य इव काञ्चनम् ॥ 2.32 ॥

यच्छक्यं ग्रसितुं ग्रस्यं ग्रस्तं परिणमेच्च यत्।
हितं च परिणामे स्यात् तदाद्यं भूतिमिच्छता ॥ 2.14 ॥

गुणाश्च षण्मितभुक्तं भजन्ते आरोग्यमायुश्च बलं सुखं च।
अनाविलं चास्य भवत्यपत्यं न चैनमाद्यून इति क्षिपन्ति ॥ 5.34 ॥

1. श्लोकान् पठित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–

[श्लोकों को पढ़कर रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Read the verses and fill in the blanks.]

i. क्षमा वशीकृतिर्लोके क्षमया .... ।

शान्तिखड्गः .... किं करिष्यति .... ॥

ii. द्वाविमौ पुरुषौ .... स्वर्गस्योपरि .... ।

प्रभुश्च .... युक्तो, दरिद्रश्च .... ॥

iii. अप्युन्मत्तात् .... बालाच्च .... ।

.... सारमादद्यात् .... इव काञ्चनम् ॥

iv. यच्छक्यं .... ग्रस्यं, ...परिणमेच्च यत्।

हितं च .... स्यात् तदाद्यं .... ॥

v. गुणाश्च षण्मितभुक्तं भजन्ते, ..., ..., ... च।

.... चास्य भवति .... न चैनमाद्यून इति क्षिपन्ति ॥

2. एकेन पदेन उत्तरं लिखत –
[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. लोके का वशीकृतिः ? ....
ii. हस्ते कीदृशः खड्गः स्यात् ? ....
iii. कया युक्तः स्वामी स्वर्गस्य उपरि तिष्ठति ? ....
iv. सर्वतः किम् आदद्यात् ? ....
v. पाषाणेभ्यः किं प्राप्यते ? ....
vi. किम् इच्छता हितं भोजनं भोक्तव्यम् ? ....
vii. कति गुणाः मितभुक्तं भजन्ते ? ....
viii. दानी दरिद्रः कस्य उपरि तिष्ठति ? ....
ix. बालात् अपि किं ग्राह्यम् ? ....
x. मितभुक्तस्य अपत्यं कीदृशं भवति ? ....

3. सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कुरुत–
[सन्धि या सन्धिविच्छेद करें। Either euphonically join or disjoin as required.]

i.	वशीकृतिः	+	लोके	=	....
ii.	द्वौ	+	इमौ	=	....
iii.	स्वर्गस्य	+	....	=	स्वर्गस्योपरि
iv.	प्रभुः	+	च	=	....
v.	दरिद्रः	+	च	=	....
vi.	अपि	+	....	=	अप्युन्मत्तात्
vii.	यत्	+	शक्यम्	=	....
viii.	परिणमेत्	+	च	=	....
ix.	तत्	+	आद्यम्	=	....
x.	गुणाः	+	....	=	गुणाश्च
xi.	षट्	+	....	=	षण्मितभुक्तं
xii.	आयुः	+	....	=	आयुश्च

xiii.	च	+	....	=	चास्य
xiv.	भवति	+	....	=	भवत्यपत्यम्
xv.	च	+	एनम्	=	....

4. पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–

[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. दुर्जनः कस्य किमपि हानिं कर्तुं न शक्नोति ?

.... ।

ii. क्षमाशीलः स्वामी, दानी दरिद्रः कस्य उपरि तिष्ठतः ?

.... ।

iii. कुतः सारः ग्रहीतव्यः ?

.... ।

iv. काञ्चनं कुतः प्राप्यते ?

.... ।

v. यः सुखम् इच्छति सः कीदृशं भोजनं स्वीकुर्यात् ?

.... ।

vi. 'सन्ततिः' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम् ?

.... ।

vii. मितभुक्तं जनाः किं कथयित्वा न क्षिपन्ति ?

.... ।

viii. 'पाषाणेभ्यः' इति स्थाने कः शब्दः प्रयुक्तः ?

.... ।

ix. 'न आविलम्' इति किं भवति ?

.... ।

x. 'भक्षणीयम्' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम् ?

.... ।

5. **यथोचितं मेलयत–**

[सही मेल बनाएँ। Match appropriately.]

	विशेषणानि		**विशेष्याणि**
i.	वशीकृतिः	क.	प्रभुः
ii.	क्षमया युक्तः	ख.	उन्मत्तात्
iii.	प्रदानवान्	ग.	अपत्यम्
iv.	प्रलपतः	घ.	पुरुषौ
v.	परिजल्पतः	ङ.	क्षमा
vi.	अनाविलम्	च.	दरिद्रः
vii.	षट्	छ.	बालात्
viii.	द्वौ	ज.	गुणाः

6. **वाक्येषु क्रियापदं योजयत–**

[वाक्यों में क्रियापद को जोड़ें। Add the verbal form in the sentences.]

i. यस्य हस्ते क्षमाखड्गः तस्य दुर्जनः किं .... ।

ii. क्षमया किं न .... ।

iii. द्वौ पुरुषौ स्वर्गस्य उपरि .... ।

iv. प्रलपतः उन्मत्तात् अपि सारम् .... ।

v. तत् भोजनं स्वीकरणीयं यत् ग्रस्तं .... ।

vi. सुखम् इच्छता जनेन हितं भोजनम् .... ।

vii. षड् गुणाः मितभुक्तम् .... ।

viii. अस्य सन्तानं स्वस्थम् .... ।

ix. यः स्वल्पं भोजनं करोति तं जनाः बहुभक्षी इति न .... ।

x. भोजनं परिणामे हितं .... ।

7. वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–

[वाच्यपरिवर्तन करें। Change the voice.]

i. क्षमा किं न साधयति ? क्षमया किं न साध्यते ?

ii. दुर्जनः तस्य किं करिष्यति ? .... ।

iii. द्वाभ्यां पुरुषाभ्यां स्वर्गस्य उपरि स्थीयते। .... ।

iv. भूतिम् इच्छन् नरः हितं भोजनम् अद्यात्। .... ।

v. जनैः एषः 'बहुभक्षी' इति न आक्षिप्यते। .... ।

8. मञ्जूषातः शतृप्रत्ययान्तपदानि चित्वा लिखत–

[मञ्जूषा से शतृप्रत्ययान्त पदों को चुनकर लिखें। Write the form ending in śatṛ-suffix from the box.]

तिष्ठतः, प्रलपतः, उन्मत्तात्, परिजल्पतः, सर्वतः, इच्छता

शतृप्रत्ययान्तानि –

(i) .... (ii) .... (iii) .... (iv) ....

10. रेखाचित्रं पूरयत–

[रेखाचित्र की पूर्ति करें। Fill in the blanks in the picture.]
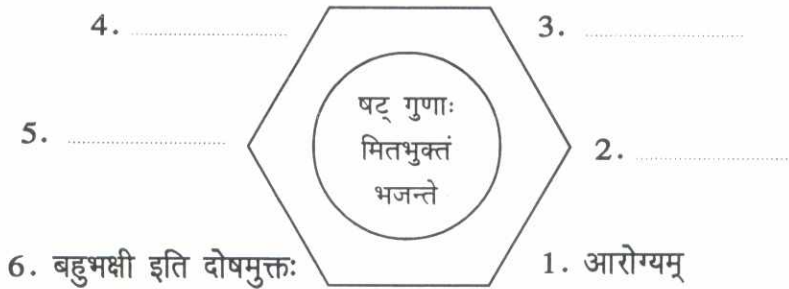
योग्यताविस्तरः

अत्र द्वात्रिंशित्तमे श्लोके 'द्वाविमौ' इति प्रयोगः अस्ति। तत्र द्वौ + इमौ इति पदविच्छेदः भवति। एषः अयादिसन्धिः भवति। अस्य च इयं व्यवस्था –

ए	+	अ/आ/इ/ई/उ/ऊ/ऋ/ए/ऐ/ओ/औ	=	अय्
ऐ	+	अ/आ/इ/ई/उ/ऊ/ऋ/ए/ऐ/ओ/औ	=	आय्
ओ	+	अ/आ/इ/ई/उ/ऊ/ऋ/ए/ऐ/ओ/औ	=	अव्
औ	+	अ/आ/इ/ई/उ/ऊ/ऋ/ए/ऐ/ओ/औ	=	आव्

यथा –

ने	+	अनम्	=	नयनम्	(न् ए – अय् + अनम् = नयनम्)
गै	+	अकः	=	गायकः	
पौ	+	अकः	=	पावकः	
नौ	+	इकः	=	नाविकः	

एवम् अन्ये अपि।

(इदम् अत्र अवधेयम् – पदान्ते एकारः अग्रे ह्रस्वः 'अ' कारः भवति तथा पदान्ते ओकारः अग्रे ह्रस्व 'अ' कारः भवति चेत् पूर्वरूपसन्धिः भवति। यथा– ते + अत्र = तेऽत्र, विष्णो + अव = विष्णोऽव। अन्यत्र तु अयादिसन्धिः भवति एव।)

36. नापक्वं फलं प्रचेतव्यम्

श्लोकः

वनस्पतेरपक्वानि फलानि प्रचिनोति यः।
स नाप्नोति रसं तेभ्यो बीजं चास्य विनश्यति ॥ 2.15 ॥

पदच्छेदः

वनस्पतेः अ-पक्वानि फलानि प्र-चिनोति यः।
स न आप्नोति रसम् तेभ्यः बीजम् च अस्य वि-नश्यति ॥

अन्वयः

यः वनस्पतेः अपक्वानि फलानि प्रचिनोति, स तेभ्यः रसं न आप्नोति, अस्य बीजं च विनश्यति।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः फलिभ्यः (फलवृक्षेभ्यः) अपक्वं फलम् अवचिनोति, सः फलरसं न प्राप्नोति, न वा पुनः रोपणाय बीजं प्राप्नोति।

हिन्दी– जो व्यक्ति वनस्पति से कच्चा फल तोड़ता है, वह उससे रस भी नहीं प्राप्त करता और उसका बीज भी नष्ट हो जाता है।

आंग्लम्– A person plucking unripe fruits can not enjoy its juice and even the seed is destroyed.

टिप्पणी

अपुष्पाः फलवन्तो ये ते वनस्पतयः स्मृताः। (वनस्पति वे वृक्ष हैं जिनमें केवल फल लगते हैं पुष्प नहीं।)

सम्बद्धौ श्लोकौ

यस्तु पक्वमुपादत्ते काले परिणतं फलम्।
फलात् रसं स लभते बीजाच्चैव फलं पुनः ॥ *(विदुर. 2.16)*

फलदानां तु वृक्षाणां छेदने जप्यमृक्शतम्।
गुल्मवल्लीलतानां च पुष्पितानां च वीरुधाम् ॥ *(मनु. 11.142)*

37. धनता अरोगता च

श्लोकः

न मनुष्ये गुणः कश्चिद् राजन् सधनतामृते।
अनातुरत्वाद् भद्रं ते मृतकल्पा हि रोगिणः ॥ 4.67 ॥

पदच्छेदः

न मनुष्ये गुणः कश्चित् राजन् सधनताम् ऋते ।
अनातुरत्वात् भद्रम् ते मृतकल्पाः हि रोगिणः ॥

अन्वयः

राजन् ! मनुष्ये सधनताम् अनातुरत्वात् ऋते कश्चिद् गुणः न, ते भद्रम् । रोगिणः हि मृतकल्पाः ।

भावार्थः

संस्कृतम्– अरोगिता, धनता इति द्वयात् उत्तमं किमपि नास्ति । रोगिणः तु मृततुल्याः एव । अतः स्वास्थ्यरक्षणं, धनार्जनं कुर्यादिति सारः ।

हिन्दी– हे राजन् ! मनुष्य में धनवत्ता और स्वास्थ्य के अतिरिक्त और कोई गुण नहीं है । तुम्हारा कल्याण हो । रोगी तो मृत के समान है ।

आंग्लम्– O King ! There is nothing more precious for a person than wealth and health. Prosperity be to you. Sick persons are like dead only.

सम्बद्धाः श्लोकाः

रोगार्दिता न फलान्याद्रियन्ते ।
न वै लभन्ते विषयेषु तत्त्वम् ।
दुःखोपेता रोगिणो नित्यमेव,
न बुध्यन्ते धनभोगान्न सौख्यम् ॥ *(विदुर. 4.69)*

आरोग्यमानृण्यमविप्रवासः सद्भिर्मनुष्यैः सह सम्प्रयोगः ।
स्वप्रत्ययावृत्तिरभीतवासः षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन् ॥ *(विदुर. 1.94)*

ऋणशेषं रोगशेषं शत्रुशेषं न रक्षयेत् । *(शुक्र. 3/108)*

रोगः शत्रुर्नावमान्योऽप्यल्प इत्युपचारतः । *(शुक्र. 3/106)*

38. गुणहीनाः त्याज्याः

श्लोकः

समृद्धाः गुणतः केचिद् भवन्ति धनतोऽपरे ।
धनवृद्धान् गुणैर्हीनान् धृतराष्ट्र विवर्जय ॥ 7/8 ॥

पदच्छेदः

समृद्धाः गुणतः केचित् भवन्ति धनतः अपरे ।
धनवृद्धान् गुणैः हीनान् धृतराष्ट्र विवर्जय ॥

अन्वयः

हे धृतराष्ट्र ! केचित् गुणतः समृद्धाः, अपरे धनतः (समृद्धाः) भवन्ति। गुणैः हीनान् धनवृद्धान् विवर्जय।

भावार्थः

संस्कृतम्– धृतराष्ट्रं प्रति विदुरस्य उपदेशः एव विदुरनीतिरिति उच्यते। विदुरः धृतराष्ट्रम् उपदिशति– हे धृतराष्ट्र ! लोके गुणिनः धनिनः च सन्ति। परन्तु यः धनी गुणहीनः भवति सः वर्जनीयः इति।

हिन्दी– हे धृतराष्ट्र ! कुछ लोग गुणों से भरपूर होते हैं और कुछ धन से। गुणों से रहित केवल धन से भरपूर लोगों को छोड़ देना चाहिये।

आंग्लम्– O Dhritrashtra ! Some people are full of virtues, others are full of wealth. Leave those who have only wealth but no virtues.

सम्बद्धाः श्लोकाः

गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः। *(उत्तर. 4.11)*

ये पापा इति विख्याता संवासे परिगर्हिताः।
युक्ताश्चान्यैर्महादोषैर्ये नरास्तान् विवर्जयेत्॥ *(विदुर. 7.13)*

गुणेष्वेव हि कर्तव्यः प्रयत्नः पुरुषैः सदा।
गुणयुक्तो दरिद्रोऽपि नेश्वरैरगुणैः समः॥ *(मृच्छ. 4.22)*

गुणो भूषयते रूपं, शीलं भूषयते कुलम्। *(चाणक्य. 8.15)*

39. कीर्तिमान् महीयते

श्लोकः

यावत्कीर्तिर्मनुष्यस्य पुण्या लोके प्रगीयते।
तावत् स पुरुषव्याघ्र ! स्वर्गलोके महीयते॥ 3.4॥

पदच्छेदः

यावत् कीर्त्तिः मनुष्यस्य पुण्या लोके प्र-गीयते।
तावत् स पुरुषव्याघ्र ! स्वर्गलोके महीयते॥

अन्वयः

पुरुषव्याघ्र ! यावत् मनुष्यस्य पुण्या कीर्त्तिः लोके प्रगीयते तावत् सः स्वर्गलोके महीयते।

भावार्थः

संस्कृतम्– लोके यावत् कस्यचित् पुरुषस्य यशः कीर्त्यते, तावत् सः स्वर्गे पूज्यते। लोके स्वजीवनकाले सत्कार्यं कृत्वा कीर्तिमान् भवेत् नरः इति सारः।

हिन्दी– हे पुरुषश्रेष्ठ ! मानव की इस लोक में जब तक पुण्य कीर्ति गाई जाती है तब तक वह स्वर्ग में पूजा जाता है।

आंग्लम्– O the best of men ! A man is worshipped in heaven till his meritorious fame is celebrated in this world.

सम्बद्धौ श्लोकौ

यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः सोऽत्र जीवतु।
काकाः किं न कुर्वन्ति चञ्च्वा स्वोदरपूरणम्॥ *(सु.र.भा. 102.6)*

40. चञ्चलानि इन्द्रियाणि

श्लोकः

चलानि हीमानि षडिन्द्रियाणि
तेषां यद् यद् वर्धते यत्र यत्र।
ततस्ततः स्रवते बुद्धिरस्य
छिद्रोदकुम्भादिव नित्यमम्भः॥ 4.48॥

पदच्छेदः

चलानि हि इमानि षट् इन्द्रियाणि
तेषाम् यत् यत् वर्धते यत्र यत्र।
ततः ततः स्रवते बुद्धिः अस्य
छिद्र-उद-कुम्भात् इव नित्यम् अम्भः॥

अन्वयः

इमानि षट् इन्द्रियाणि हि चलानि। तेषाम् यद् यद् यत्र यत्र वर्धते ततः ततः अस्य बुद्धिः छिद्रोदकुम्भात् अम्भः इव नित्यं स्रवते।

भावार्थः

संस्कृतम्– षड् इन्द्रियाणि (चक्षुः, कर्णः, नासिका, जिह्वा, त्वक्, मनः च) चञ्चलानि, विषयैः आकृष्टानि जायन्ते। यत्-यत् इन्द्रियं विषये अनुरक्तं भवति, तदा तदा बुद्धिः यथा छिद्रघटात् जलं स्रवति तथा क्षीणा जायते। तस्मात् इन्द्रियसंयमनं कुरु इति तात्पर्यम्।

आंग्लम्– Fickle indeed are these six sense-organs. Out of these, as any one sense-organ gets more and more attached to its object, the man's intellect keeps on decreasing through it, just as water gets trickled away from a cracked pitcher.

हिन्दी– ये मन सहित छहों इन्द्रियाँ निश्चय से बहुत ही चञ्चल हैं। इनमें से जो–जो इन्द्रिय जिस-जिस विषय के सेवन में आसक्त होती चली जाती है, उस-उस आसक्ति से इस मनुष्य की बुद्धि टूटे हुए घड़े से रिसते पानी के समान निश्चित रूप से क्षीण होती चली जाती है।

सम्बद्धाः श्लोकाः

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥ *(गीता 2.67)*

इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन धर्मस्यासेवनेन च।
पापान्संयान्ति संसारानविद्वांसो नराधमाः ॥ *(मनु. 12.52)*

इन्द्रियाणां तु सर्वेषां यद्येकं क्षरतीन्द्रियम्।
तेनास्य क्षरति प्रज्ञा दृतेः पात्रादिवोदकम् ॥ *(मनु. 2.99)*

अभ्यासः - 8

[श्लोकसङ्ख्या 36-40]

वनस्पतेरपक्वानि फलानि प्रचिनोति यः।
स नाप्नोति रसं तेभ्यो बीजं चास्य विनश्यति ॥ 2.15 ॥

न मनुष्ये गुणः कश्चिद् राजन् सधनतामृते।
अनातुरत्वाद् भद्रं ते मृतकल्पा हि रोगिणः ॥ 4.67 ॥

समृद्धाः गुणतः केचित् भवन्ति धनतोऽपरे।
धनवृद्धान् गुणैर्हीनान् धृतराष्ट्र विवर्जय ॥ 7/8 ॥

यावत्कीर्तिर्मनुष्यस्य पुण्या लोके प्रगीयते।
तावत् स पुरुषव्याघ्र ! स्वर्गलोके महीयते ॥ 3.4 ॥

चलानि हीमानि षडिन्द्रियाणि
तेषां यद् यद् वर्धते यत्र यत्र।
ततस्ततः स्रवते बुद्धिरस्य
छिद्रोदकुम्भादिव नित्यमम्भः ॥ 4.48 ॥

1. रिक्तस्थानानि पूरयत–
[रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. वनस्पतेरपक्वानि .... ।
.... बीजं चास्य विनश्यति ॥

ii. न मनुष्ये .... कश्चिद् राजन् ....ऋते।
अनातुरत्वाद् ...., मृतकल्पा हि .... ॥

iii. समृद्धाः .... केचित्, भवन्ति धनतः .... ।
..............................गुणैर्हीनान् .... विवर्जय ॥

iv. यावत्कीर्तिर्मनुष्यस्य .... ।
.... स्वर्गलोके महीयते ॥

v. चलानि हीमानि षडिन्द्रियाणि, ... ।
.............................., छिद्रोदकुम्भादिव नित्यमम्भः ॥

2. एकेन पदेन उत्तरं लिखत–

[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. यः वनस्पतेः अपक्वानि फलानि प्रचिनोति सः तेभ्यः किं न आप्नोति ? ....

ii. यदि वनस्पतेः अपक्वानि फलानि चिनोति तदा फलस्य किं नश्यति ? ....

iii. रुग्णाः जनाः कीदृशाः भवन्ति ? ....

iv. केचन जनाः कैः समृद्धाः भवन्ति ? ....

v. विदुरः कं गुणरहितान् धनिनः वर्जयितुं कथयति ? ....

vi. यावत् मनुष्यस्य पुण्या कीर्तिः गीयते तावत् स कुत्र महीयते ? ....

vii. पुरुषव्याघ्र इति सम्बोधनं कस्मै प्रयुक्तम् ? ....

viii. इन्द्रियाणि कीदृशानि सन्ति ? ....

3. सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कुरुत–

[सन्धि या सन्धिविच्छेद करें। Either euphonically join or disjoin as required.]

i.	वनस्पतेः	+	अपक्वानि			=	....
ii.	न	+	....			=	नाप्नोति
iii.	तेभ्यः	+	बीजम्			=	....
iv.	....	+	अस्य			=	चास्य
v.	सधनताम्	+	ऋते			=	....
vi.	मृतकल्पाः	+	हि			=	....
vii.	धनतः	+	अपरे			=	....
viii.	गुणैः	+	हीनान्			=	....
ix.	कीर्तिः	+	....			=	कीर्तिर्मनुष्यस्य
x.	हि	+	इमानि			=	....
xi.	षट्	+	इन्द्रियाणि			=	....
xii.	ततः	+	ततः			=	....
xiii.	बुद्धिः	+	अस्य			=	....
xiv.	छिद्र	+	उदकुम्भात्	+	इव	=	....

4. **पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–**

[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. कस्मात् अपक्वानि फलानि न चेतव्यानि ?

.... ।

ii. मनुष्ये कौ द्वौ गुणौ अत्र वर्णितौ ?

.... ।

iii. के मृततुल्याः भवन्ति ?

.... ।

iv. राज्ञा कीदृशाः जनाः त्यक्तव्याः ?

.... ।

v. कदा मनुष्यः स्वर्गलोके महीयते ?

.... ।

vi. छिद्रघटात् किं स्रवते ?

.... ।

vii. यस्मिन् यस्मिन् विषये इन्द्रियम् आसक्तम् भवति ततः कस्य हानिः भवति ?

.... ।

viii. वनस्पतेः कीदृंशि फलानि न चेतव्यानि ?

.... ।

ix. रसः केषु फलेषु भवति ?

.... ।

x. 'स्वास्थ्यात्' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम् ?

.... ।

5. **क्रियापदं योजयत–**

[क्रियापद को जोड़ें। Add the verbal form.]

i. सः वनस्पतेः पक्वानि फलानि .... ।

ii. सः तेभ्यः रसम् .... ।

iii. पक्वस्य फलस्य बीजं न .... ।

iv. राजन् ! त्वं धनवृद्धान् गुणहीनान् .... ।

v. सज्जनस्य पुण्या कीर्त्तिः संसारे .... ।

vi. कीर्तिमान् जनः स्वर्गे च .... ।

vii. आसक्तिकारणात् बुद्धिः .... ।

6. यथोचितं रिक्तस्थानं पूरयत–

[यथोचित रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks appropriately.]

i. .... फलानि ।

ii. .... रोगिणः ।

iii. .... इन्द्रियाणि ।

iv. .... मनुष्यान् ।

v. .... कीर्तिः ।

vi. .... केचित् ।

गुणहीनान्
पुण्या
चलानि
अपक्वानि
धनवृद्धान्
मृतकल्पाः

7. मञ्जूषातः वचनानुसारं पदानि चित्वा यथानिर्दिष्टेषु रिक्तस्थानेषु लिखत–

[मञ्जूषा से वचन के अनुसार पदों को चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks from the box according to the number.]

वनस्पतेः, फलानि, कीर्तिः, गुणहीनान्, राजन्, रोगिणः, गुणतः, समृद्धाः, केचित्, इमानि, अम्भः, कुम्भात्

	(i) एकवचने	**(ii) बहुवचने**
यथा	....	....
	....	....
	....	....
	....	....
	....	....
	....	....

8. **अर्थानुसारेण मेलयत–**
[अर्थ के अनुसार मिलाएँ। Match the words appropriately.]

i.	उदकुम्भः	(क)	जलम्
ii.	अम्भः	(ख)	मृततुल्याः
iii.	अनातुरत्वात्	(ग)	त्यज
iv.	मृतकल्पाः	(घ)	न पक्वानि
v.	ऋते	(ङ)	परिपूर्णाः
vi.	विवर्जय	(च)	निर्गच्छति
vii.	अपक्वानि	(छ)	विना
viii.	समृद्धाः	(ज)	स्वास्थ्यात्
ix.	ततः	(झ)	जलघटः
x.	स्रवते	(ञ)	तस्मात्

9. **भिन्नं पदं चिनुत–**
[भिन्न पद को चुनें। Select the odd words.]

i. लोके, मनुष्ये, स्वर्गे, प्रगीयते। ....
ii. विवर्जय, वनस्पतेः, अस्य, मनुष्यस्य। ....
iii. चलानि, इमानि, रोगिणः, यः। ....
iv. विनश्यति, प्रगीयते, स्रवते, वर्धते। ....

योग्यताविस्तरः

तसिल् प्रत्ययः पञ्चम्यर्थे प्रयुज्यते –

i.	गुणतः	–	गुणात्
ii.	धनतः	–	धनात्
iii.	ततः	–	तस्मात्
iv.	काशीतः	–	काश्याः
v.	नागपुरतः	–	नागपुरात्

तसिल् प्रत्ययेन युक्तः शब्दः अव्ययम् भवति, तस्य रूपाणि न चलन्ति।

41. विषयासक्तिः नाशाय

श्लोकः

इन्द्रियाणामनुत्सर्गो मृत्युनाऽपि विशिष्यते ।
अत्यर्थं पुनरुत्सर्गः सादयेद् दैवतान्यपि ॥ 7.5 ॥

पदच्छेदः

इन्द्रियाणाम् अनुत्सर्गः मृत्युना अपि विशिष्यते ।
अत्यर्थम् पुनः उत्सर्गः सादयेत् दैवतानि अपि ॥

अन्वयः

इन्द्रियाणाम् अनुत्सर्गः मृत्युना अपि विशिष्यते । पुनः अत्यर्थम् उत्सर्गः दैवतानि अपि सादयेत् ।

भावार्थः

संस्कृतम्– इन्द्रियाणि विषयेभ्यः पूर्णतः निवर्तन्ते चेत् मरणापेक्षयाऽपि कष्टं भवति, पूर्णतः अनुरक्तानि चेत् देवान् अपि नाशयन्ति । अतः इन्द्रियाणां समुचितरूपेण नियन्त्रणं कुर्यात् । अनासक्तिः अत्यासक्तिश्च दोषाय भवति ।

हिन्दी– इन्द्रियों की विषयों से निवृत्ति मृत्यु से भी अधिक कष्टप्रद है और विषयों में अत्यधिक प्रवृत्ति तो देवों को भी नष्ट कर सकती है ।

आंग्लम्– Non-attachment of the sense-organs from their objects is even more painful than death. But excess of attachment with the ohiects can destroy even the gods.

सम्बद्धाः श्लोकाः

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद् दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥ *(गीता. 6.34)*

इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन दोषमृच्छत्यसंशयम् ।
संनियम्य तु तान्येव ततः सिद्धिं नियच्छति ॥ *(मनु. 2.93)*

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ॥ *(मनु. 2.94)*

42. न किञ्चित् शाश्वतं लोके

श्लोकः

पुनर्नरो म्रियते जायते च पुनर्नरो हीयते वर्धते च।
पुनर्नरो याचति याच्यते च पुनर्नरः शोचति शोच्यते च॥ 4.46॥

पदच्छेदः

पुनः नरः म्रियते जायते च पुनः नरः हीयते वर्धते च।
पुनः नरः याचति याच्यते च पुनः नरः शोचति शोच्यते च॥

अन्वयः

नरः पुनः म्रियते जायते च, नरः पुनः हीयते वर्धते च, नरः पुनः याचति याच्यते च, नरः पुनः शोचति शोच्यते च।

भावार्थः

संस्कृतम्– मनुष्यः म्रियते पुनः जन्म लभते। क्षीणो भवति वर्धते च। इतरान् याचते इतरे च एनं याचन्ते। शोकं करोति शोकपात्रं च भवति। तथा च न किञ्चित् स्थिरम्। सदैव धर्ममाचरेत् इति सारः।

हिन्दी– मनुष्य पुनः-पुनः मरता है और पैदा होता है, बार-बार घटता है और बढ़ता है। नीचे गिरता है और ऊपर उठता है। बार-बार मांगता है और मांगा जाता है, और बार-बार शोक करता है या फिर उस पर शोक किया जाता है।

आंग्लम्– Man dies and is born again and again. Man falls down and again rises. A man begs and is begged by others repeatedly. Similarly a man expresses sorrow for others but at times is pitied by others. (Nothing is constant)

सम्बद्धाः श्लोकाः

सुखं च दुःखं च भवाभवौ च
लाभालाभौ मरणं जीवितं च।
पर्यायशः सर्वमेते स्पृशन्ति
तस्माद् धीरो न च हृष्येत् न शोचेत्॥ *(विदुर. 4.47)*

अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः।
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्मसङ्ग्रहः॥ *(चाणक्य. 12.11)*

चलाचले च संसारे धर्म एको हि निश्चलः। *(चाणक्य. 5.20)*

स्थितो मृत्युमुखे चाहं क्षणमायुर्ममास्ति न।
इति मत्वा दानधर्मौ यथेष्टौ तु समाचरेत्॥ *(शुक्र. 3/208)*

43. जातस्य हि ध्रुवं मृत्युः

श्लोकः

महाबलान् पश्य महानुभावान्
प्रशास्य भूमिं धनधान्यपूर्णाम्।
राज्यानि हित्वा विपुलांश्च भोगान्
गतान्नरेन्द्रान् वशमन्तकस्य॥ 8.14॥

पदच्छेदः

महाबलान् पश्य महानुभावान्
प्रशास्य भूमिम् धन-धान्य-पूर्णाम्।
राज्यानि हित्वा विपुलान् च भोगान्
गतान् नरेन्द्रान् वशम् अन्तकस्य॥

अन्वयः

(हे राजन्!) महाबलान् महानुभावान् धनधान्यपूर्णां भूमिं प्रशास्य राज्यानि विपुलान् भोगान् च हित्वा अन्तकस्य वशं गतान् नरेन्द्रान् पश्य।

भावार्थः

संस्कृतम्– विदुरः धृतराष्ट्रं वदति– धृतराष्ट्र! बलिष्ठाः, महान्तः धनधान्यसमृद्धाः राजानः भूमिं प्रशास्य, अनन्तभोगान् राज्यानि च त्यक्त्वा यमवशं गताः। तान् राज्ञः पश्य इति। जातस्य हि ध्रुवं मृत्युः इति सारः।

हिन्दी– हे राजन्! तुम अत्यन्त बलशाली, उदारचित्त, धनधान्य से परिपूर्ण भूमि पर शासन करके, राज्यों को और बड़े-बड़े भोगों को छोड़कर यमराज के वश में गये हुए राजाओं को देखो। (जैसे सभी राजा मृत्यु को प्राप्त हो गये वैसे ही तुम भी एक दिन मृत्यु को प्राप्त होगे।)

आंग्लम्– O King! Look at these kings who were not merely strong and generous but had ruled over this prosperous land, have now gone under the control of Yama leaving behind their kingdom and the manifold prosperities. (Hence you shall also die.)

सम्बद्धाः श्लोकाः

कालः पचति भूतानि कालः संहरते प्रजाः।
कालः सुप्तेषु जागर्त्ति कालो हि दुरतिक्रमः॥ *(चाणक्य. 6.6)*

अस्मिन् महामोहमये कटाहे, सूर्याग्निना रात्रिदिवेन्धनेन ।
मासर्तुदर्वीपरिघट्टनेन, भूतानि कालः पचतीति वार्ताः ॥ *(महा.वन. 3.3.118)*

मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमं क्षितौ ।
विमुखाः बान्धवाः यान्ति, धर्मस्तमनुतिष्ठति ॥ *(मनु. 4.247)*

44. पुण्यपापे हि सहचरे

श्लोकः

अन्यो धनं प्रेत्यगतस्य भुङ्क्ते
वयांसि चाग्निश्च शरीरधातून् ।
द्वाभ्यामयं सह गच्छत्यमुत्र
पुण्येन पापेन च वेष्ट्यमानः ॥ 8.16 ॥

पदच्छेदः

अन्यः धनम् प्रेत्यगतस्य भुङ्क्ते
वयांसि च अग्निः च शरीर-धातून् ।
द्वाभ्याम् अयम् सह गच्छति अमुत्र
पुण्येन पापेन च वेष्ट्यमानः ॥

अन्वयः

प्रेत्यगतस्य धनम् अन्यः भुङ्क्ते, शरीरधातून् वयांसि अग्निः च (भुञ्जते) । पुण्येन पापेन वेष्ट्यमानः अयं द्वाभ्याम् सह अमुत्र गच्छति ।

भावार्थः

संस्कृतम्– यदा कश्चित् म्रियते तदा तदीयं धनम् अन्यः भुङ्क्ते । शरीरं च पक्षिणः अग्निश्च भुञ्जते । लोकान्तर-गमनकाले पाप पुण्य इति द्वाभ्यामेव आवृतः भवति । अतः जीवनकाले पुण्यम् अर्जनीयमिति भावः ।

हिन्दी– मरे हुए मनुष्य के धन को कोई और ही खाता है। पक्षी और अग्नि शरीर के मांस आदि धातुओं को खा जाते हैं। मनुष्य तो केवल पाप और पुण्य से लिपटा हुआ ही परलोक में जाता है।

आंग्लम्– The riches of a dead man are enjoyed by others. Birds and fire consume the different elements of the body. It is only wrapped with merits or sins of his deeds that a man enters the other world.

सम्बद्धाः श्लोकाः

नामुत्र हि सहायार्थं पिता माता च तिष्ठतः ।
न पुत्रदारा न ज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठति केवलम् ॥ *(मनु. 4.229)*

अग्नौ प्रास्तं तु पुरुषं कर्मान्वेति स्वयं कृतम् ।
तस्मात्तु पुरुषो यत्नाद् धर्मं सञ्चिनुयाच्छनैः ॥ *(विदुर. 8.18)*

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे
भार्या गृहद्वारि सखा श्मशाने ।
देहश्चितायां परलोकमार्गे
कर्मानुगो गच्छति जीव एकः ॥ *(सु.र.भा. 96.55)*

उत्सृज्य विनिवर्तन्ते ज्ञातयः सुहृदः सुताः ।
अपुष्पानफलान् वृक्षान् यथा तात पतत्रिणः ॥ *(विदुर. 8.17)*

45. सन्तोषे एव सन्तृप्तिः

श्लोकः

नित्यो धर्मः सुखदुःखे त्वनित्ये
जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः ।
त्यक्त्वानित्यं प्रतितिष्ठस्व नित्ये
संतुष्य त्वं तोषपरो हि लाभः ॥ 8.13 ॥

पदच्छेदः

नित्यः धर्मः सुख-दुःखे तु अनित्ये
जीवः नित्यः हेतुः अस्य तु अनित्यः ।
त्यक्त्वा अनित्यम् प्रति-तिष्ठस्व नित्ये
सम्-तुष्य त्वम् तोष-परः हि लाभः ॥

अन्वयः

हे राजन् ! धर्मः नित्यं सुखदुःखे तु अनित्ये । जीवः नित्यः अस्य हेतुः तु अनित्यः । त्वम् अनित्यं त्यक्त्वा नित्ये सन्तुष्य प्रतितिष्ठस्व । हि तोषपरः लाभः ।

भावार्थाः

संस्कृतम्– हे राजन् ! धर्मो एकः नित्यः, सुखदुःखे अनित्ये । जीव एको नित्यः, तत्साधनं शरीरादि अनित्यम् । अतः अनित्यं परित्यज्य नित्ये सन्तुष्टो भव । यतः सन्तोषः एव महान् लाभः ।

हिन्दी– (हे राजन् !) धर्म नित्य है। सुख और दुःख क्षणिक हैं। जीव नित्य है परन्तु इसके साधन शरीरादि अनित्य हैं। तुम अनित्य को छोड़कर नित्य में सन्तुष्ट होकर स्थिर रहो क्योंकि सन्तोष ही सबसे बड़ा लाभ है।

आंग्लम्– (O King !) Dharma is eternal. Pain and pleasures are transitory. The soul is eternal whereas its abode, the body is perishable. Hence you establish yourself in the eternity with a contented mind leaving all transitory things since contentment is the greatest virtue.

सम्बद्धाः श्लोकाः

सन्तोषस्त्रिषु कर्तव्यः स्वदारे भोजने धने।
त्रिषु चैव न कर्तव्योऽध्ययने तपदानयोः॥ *(चाणक्य. 7.4 ।।)*

सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्।
न च तद् धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्॥ *(चाणक्य. 7.3 ।।)*

सन्तोषादनुत्तमसुखलाभः। *(योग. 2.42)*

अन्तो नास्ति पिपासायाः, सन्तोषः परमं सुखम्।
तस्मात्सन्तोषमेवेह परं पश्यन्ति पण्डिताः॥ *(महा.वन. 2.46)*

सन्तोषमूलं हि सुखं दुःखमूलं विपर्ययः। *(मनु. 4.12)*

अभ्यासः - 9

[श्लोकसङ्ख्या 41-45]

इन्द्रियाणामनुत्सर्गो मृत्युनाऽपि विशिष्यते।
अत्यर्थं पुनरुत्सर्गः सादयेद् दैवतान्यपि ॥ 7.5 ॥

पुनर्नरो म्रियते जायते च पुनर्नरो हीयते वर्धते च।
पुनर्नरो याचति याच्यते च पुनर्नरः शोचति शोच्यते च ॥ 4.46 ॥

महाबलान् पश्य महानुभावान्
प्रशास्य भूमिं धनधान्यपूर्णाम्।
राज्यानि हित्वा विपुलांश्च भोगान्
गतान्नरेन्द्रान् वशमन्तकस्य ॥ 8.14 ॥

अन्यो धनं प्रेत्यगतस्य भुङ्क्ते
वयांसि चाग्निश्च शरीरधातून्।
द्वाभ्यामयं सह गच्छत्यमुत्र
पुण्येन पापेन च वेष्ट्यमानः ॥ 8.16 ॥

नित्यो धर्मः सुखदुःखे त्वनित्ये
जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः।
त्यक्त्वानित्यं प्रतितिष्ठस्व नित्ये
संतुष्य त्वं तोषपरो हि लाभः ॥ 8.13 ॥

1. **रिक्तस्थानानि पूरयत–**
[रिक्तस्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. इन्द्रियाणामनुत्सर्गो .... विशिष्यते।

ii. पुनर्नरो .... च, पुनर्नरो .... च।
पुनर्नरो ....च, पुनर्नरः .... च ॥

iii. महाबलान् पश्य ...., प्रशास्य .... ।
राज्यानि .... विपुलांश्च ...., गतान्नरेन्द्रान् .... ॥

iv. अन्यो धनं .... भुङ्क्ते, वयांसि .... शरीरधातून्।
.... सह गच्छत्यमुत्र, ... च वेष्ट्यमानः ॥

v. नित्यो धर्मः .... त्वनित्ये, जीवो .... हेतुरस्य .... ।
........................प्रतितिष्ठस्व नित्ये, ... त्वं तोषपरो हि .... ॥

2. **एकेन पदेन उत्तरं लिखत–**
[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. इन्द्रियाणां विषयेभ्यः निवृत्तिः कस्मादपि विशिष्यते ? ....
ii. अत्यधिकम् आसक्तिः कान् अपि नाशयति ? ....
iii. कः पुनः म्रियते जायते च ? ....
iv. कः पुनः क्षीणः भवति वृद्धिम् आप्नोति च ? ....
v. महाबलिनः राजानः कानि त्यक्त्वा-मृत्योः मुखं गताः ? ....
vi. मृतस्य धनं कः भुङ्क्ते ? ....
vii. कः नित्यः ? ....
viii. किं त्यक्त्वा नित्ये प्रतिष्ठा करणीया ? ....

3. **सन्धिं कुरुत–**
[सन्धि करें। Euphonically join as required.]

i.	इन्द्रियाणाम्	+	अनुत्सर्गः	=	....
ii.	मृत्युना	+	अपि	=	....
iii.	अति	+	अर्थम्	=	....
iv.	दैवतान्	+	अपि	=	....
v.	पुनः	+	नरः	=	....
vi.	विपुलान्	+	च	=	....
vii.	गतान्	+	नरेन्द्रान्	=	....
viii.	वशम्	+	अन्तकस्य	=	....
ix.	गच्छति	+	अमुत्र	=	....
x.	तु	+	अनित्ये	=	....
xi.	हेतुः	+	अस्य	=	....
xii.	त्यक्त्वा	+	अनित्यम्	=	....

4. **पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–**
[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. केषाम् आसक्तिः मृत्युना अपि विशिष्यते ?

.... ।

ii. दैवतानि अपि कः सादयेत् ?

.... ।

iii. राजानः कीदृशीं भूमिं प्रशास्य दिवं गताः ।

.... ।

iv. 'पक्षिणः' इति कस्य शब्दस्य अर्थः ?

.... ।

v. काभ्यां वेष्ट्यमानः नरः परलोकं गच्छति ?

.... ।

vi. कः हि सन्तोषपरः ?

.... ।

vii. सुखदुःखे कीदृशे स्तः ?

.... ।

viii. 'यमः' इति शब्दस्य कः प्रत्ययः अत्र प्रयुक्तः ?

.... ।

ix. 'प्रतिष्ठितो भव' इति अर्थे किं क्रियापदं प्रयुक्तम् ?

.... ।

5. **मञ्जूषातः क्रियापदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत–**
[मञ्जूषा से क्रिया पद चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks with appropriate verbal forms which are given in the box.]

पश्य, भुङ्क्ते, विशिष्यते, सादयेत्, म्रियते, प्रतितिष्ठस्व

i. काकः अभक्ष्यं पदार्थं .... ।

ii. राजन् ! त्वं मृत्युं प्राप्तान् बलिनः नृपान् .... ।

iii. अर्जुनः धनुर्विद्यायां नकुलात् .... ।

iv. रुग्णः सम्यक् चिकित्सया न .... ।

v. युद्धे वीरः शत्रून् .... ।

vi. राजन् ! त्वं धर्मे .... ।

6. विलोमपदानि मेलयत–

[विलोम पद को मिलाएँ। Match the opposite word.]

i.	अनुत्सर्गः	क.	जायते
ii.	म्रियते	ख.	अनित्यः
iii.	हीयते	ग.	पुनः
iv.	नित्यः	घ.	महाबलान्
v.	एकवारम्	ङ.	गृहीत्वा
vi.	निर्बलान्	च.	प्रेत्यगतस्य
vii.	हित्वा	छ.	आत्मा
viii.	पुण्येन	ज.	पापेन
ix.	जीवितस्य	झ.	वर्धते
x.	शरीरम्	ञ.	उत्सर्गः

7. मञ्जूषातः विशेषणानि योजयत–

[मञ्जूषा से विशेषण को चुनकर लिखें। Write the qualifier from the box.]

नित्यः, धनधान्यपूर्णाम्, अनित्ये, विपुलान्

i. .... भूमिम् ।

ii. .... धर्मः ।

iii. .... सुखदुःखे ।

iv. .... भोगान् ।

8. **यथोचितं रिक्तस्थानं पूरयत–**
[यथोचित रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks appropriately.]

i.	हित्वा	=	धा	+	....			
ii.	प्रशास्य	=	प्र	+	शास्	+	....	
iii.	त्यक्त्वा	=	त्यज्	+	....			
iv.	संतुष्य	=	सम्	+	....	+	ल्यप्	

योग्यताविस्तरः

व्यञ्जनसन्धिप्रयोगः –

विपुलांश्च = विपुलान् + च इति त्रिचत्वारिंशत्तमे श्लोके प्रयोगः अस्ति।

अत्रेयं व्यवस्था –

न्	+	च	=	अम् (ं) श्	–	विपुलान् + च = विपुलांश्च
न्	+	छ	=	अम् (ं) श्	–	वंशान् + छिनत्ति = वंशांश्छिनत्ति
न्	+	ट	=	अम् (ं) ष्	–	भवान् + टीकते = भवांष्टीकते
न्	+	ठ	=	अम् (ं) ष्	–	(प्रयोगः विरलः)
न्	+	त	=	अम् (ं) स्	–	तस्मिन् + तरौ = तस्मिंस्तरौ

❖❖❖

46. धीरो याति सुखम्

श्लोकः

रथः शरीरं पुरुषस्य राजन्
आत्मा नियन्तेन्द्रियाण्यस्य चाश्वाः।
तैरप्रमत्तः कुशली सदश्वैः
दान्तैः सुखं याति रथीव धीरः ॥ 2.59 ॥

पदच्छेदः

रथः शरीरम् पुरुषस्य राजन्
आत्मा नियन्ता-इन्द्रियाणि अस्य च अश्वाः।
तैः अ-प्रमत्तः कुशली सदश्वैः
दान्तैः सुखम् याति रथी इव धीरः॥

अन्वयः

राजन्! पुरुषस्य शरीरं रथः। आत्मा नियन्ता। इन्द्रियाणि अस्य अश्वाः। तैः दान्तैः सदश्वैः अप्रमत्तः कुशली धीरः रथी इव सुखं याति।

भावार्थः

संस्कृतम्– राजन्! पुरुषस्य शरीरं रथः। आत्मा सारथिः। इन्द्रियाणि अश्वाः भवन्ति। इन्द्रियरूपैः अश्वैः अविचलितः कुशली धीरः सुनियन्त्रितैः अश्वैः सुखेन यात्रां कर्तुं शक्नोति। इन्द्रियनियन्त्रणेन जीवनं सुखमयं भवेदिति सारः।

हिन्दी– हे राजन्! पुरुष का शरीर रथ है। आत्मा सारथि है। इन्द्रियाँ इसके घोड़े हैं। इन इन्द्रियों रूपी सधे हुए घोड़ों से सावधान चतुर पुरुष धैर्यवान् रथी के समान सुख से यात्रा कर सकता है।

आंग्लम्– O King! This body of a man is like a chariot. The soul is the charioteer. Sense-organs are its horses. A cautious, intelligent and patient traveller only can travel peacefully with the help of well-controlled horses in the form of sense-organs.

सम्बद्धाः श्लोकाः

आत्मानं रथिनं विद्धि, शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि, मनः प्रग्रहमेव च।
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान्॥ *(कठ. 1/3/3-4)*

धर्मार्थौ यः परित्यज्य स्यादिन्द्रियवशानुगः।
श्रीप्राणधनदारेभ्यः क्षिप्रं स परिहीयते॥ *(विदुर. 2.62)*

इन्द्रियाणां विचरतां विषयेष्वपहारिषु।
संयमे यत्नमातिष्ठेद्विद्वान्यन्तेव वाजिनाम्॥ *(मनु. 2.54)*

47. पुण्यो हि अलोभः आत्मा

श्लोकः

आत्मा नदी भारत ! पुण्यतीर्था
सत्योदका धृतिकूला दयोर्मिः।
तस्यां स्नातः पूयते पुण्यकर्मा
पुण्यो ह्यात्मा नित्यमलोभ एव॥ 8.2॥

पदच्छेदः

आत्मा नदी भारत ! पुण्य-तीर्था
सत्य-उदका धृति-कूला दया-ऊर्मिः।
तस्याम् स्नातः पूयते पुण्य-कर्मा
पुण्यः हि आत्मा नित्यम् अलोभः एव॥

अन्वयः

भारत ! आत्मा पुण्यतीर्था नदी, सत्योदका धृतिकूला दयोर्मिः। पुण्यकर्मा तस्यां स्नातः पूयते। अलोभः आत्मा एव नित्यं पुण्यम्।

भावार्थः

संस्कृतम्– भारत ! आत्मा भवति पुण्यनदी। तस्यां सत्यमस्ति जलम्। नद्याः कूलरूपेण धृतिः वर्तते। नदीतरङ्गश्च दया भवति। पुण्यं यः आचरति सः अस्याम् आत्मरूपिण्यां नद्यां स्नात्वा पूतः जायते। अलोभः खलु आत्मा पुण्यशीलः भवति।

हिन्दी– हे भरतवंशी राजन् ! आत्मा पुण्य तीर्थों वाली नदी है। इस नदी में सत्य रूपी जल है। धैर्य रूपी किनारे हैं, दया रूपी लहरें हैं। पुण्य कर्म वाला मनुष्य इसमें स्नान करके पवित्र हो जाता है। लोभ रहित आत्मा ही सर्वदा पुण्यशील होता है।

आंग्लम्– O King of Bharat dynasty ! The soul is like a river with meritorious deeds as its bathing places, truth as water, patience – its banks and kindness as its waves. A person with noble deeds gets purified after taking a bath in it. A soul with no feeling of greed is always considered as pure.

सम्बद्धाः श्लोकाः

आत्मार्थं जीवलोकेऽस्मिन् को न जीवति मानवः ।
परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति ॥ *(सु.र.भा. 78.6)*

48. त्रयं त्यजेत्

श्लोकः

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत् त्रयं त्यजेत् ॥ 1/71 ॥

पदच्छेदः

त्रिविधम् नरकस्य इदम् द्वारम् नाशनम् आत्मनः ।
कामः क्रोधः तथा लोभः तस्मात् एतत् त्रयम् त्यजेत् ॥

अन्वयः

संस्कृतम्–कामः, क्रोधः, लोभः इति एतत् त्रयं नरकद्वारं भवति । एतैः त्रिभिः आत्मा प्रणश्यति अतः एतानि त्रीणि त्येजत् ।

भावार्थः

ययोः इयोः मनः व्यवहारः बुद्धिः परस्परं साम्येन वर्तन्ते तेषां मैत्री चिरस्थायिनी भवति ।

हिन्दी– काम, क्रोध तथा लोभ ये तीन प्रकार के नरक के द्वार हैं जो आत्मा का नाश करने वाले हैं । इसलिये इन तीनों को छोड़ देना चाहिए ।

आंग्लम्– Lust, anger and greed– these are the three kinds of gates of hell that kill the soul. Hence these three should be abandoned.

सम्बद्धाः श्लोकाः

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥ *(गीता. 16.21)*

काम एषः क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ॥ *(गीता. 3.7)*

49. धृतिमयी नौका

श्लोकः

कामक्रोधग्राहवतीं पञ्चेन्द्रियजलां नदीम् ।
नावं धृतिमयीं कृत्वा जन्मदुर्गाणि सन्तर ॥ 8.22 ॥

पदच्छेदः

काम-क्रोध-ग्राहवतीम् पञ्च इन्द्रिय-जलाम् नदीम् ।
नावम् धृतिमयीम् कृत्वा जन्म-दुर्गाणि सन्तर ॥

अन्वयः

हे राजन् ! कामक्रोधग्राहवतीं पञ्चेन्द्रियजलां नदीं धृतिमयीं नावं कृत्वा जन्मदुर्गाणि सन्तर ।

भावार्थः

संस्कृतम्– अयं संसारः नदीतुल्यः भवति । यत्र कामक्रोधरूपिणः मकराः पञ्चेन्द्रियरूपजले सन्ति । इमां संसारनदीं धैर्यरूपिणा नौकया सन्तरेत् ।

हिन्दी– (हे राजन् !) काम और क्रोध रूपी मगरमच्छवाली, पाँच इन्द्रिय रूपी जलवाली इस संसार रूपी नदी को धैर्य की नौका से जीवन-संघर्षों से पार उतर जाओ ।

आंग्लम्– (O King !) Win over the difficulties of life by crossing this river of world having lust and anger as crocodiles and the five senses as its water with the help of the boat of patience.

सम्बद्धौ श्लोकौ

उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः ।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत् ॥ *(सु.र.भा. 86.2)*

50. वृद्धसेवी न मुह्यति

श्लोकः

प्रज्ञावृद्धं धर्मवृद्धं स्वबन्धुं
विद्यावृद्धं वयसा चापि वृद्धम् ।
कार्याकार्ये पूजयित्वा प्रसाद्य
यः सम्पृच्छेन्न स मुह्येत् कदाचित् ॥ 8.23 ॥

पदच्छेदः

प्रज्ञा-वृद्धम् धर्म-वृद्धम् स्व-बन्धुम्
विद्या-वृद्धम् वयसा च अपि वृद्धम् ।
कार्य-अकार्ये पूजयित्वा प्र-साद्य
यः सम्-पृच्छेत् न सः मुह्येत् कदाचित् ॥

अन्वयः

यः कार्याकार्ये प्रज्ञावृद्धं धर्मवृद्धं विद्यावृद्धं वयसा चापि वृद्धं स्वबन्धुं पूजयित्वा प्रसाद्य सम्पृच्छेत् स कदाचित् न मुह्येत् ।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः कार्याकार्यविवेकाय ज्ञानधर्मविद्यावयोवृद्धं स्वबन्धुं सम्पूज्य प्रसन्नं विधाय च मार्गदर्शनं प्राप्नोति, सः कदाचन अपि न मुह्यति ।

हिन्दी– जो मनुष्य करने योग्य और न करने योग्य कर्मों में, बुद्धि में बड़े, धर्म में बड़े, विद्या में बड़े और उम्र में भी बड़े अपने बन्धुओं को पूजकर, प्रसन्न करके मार्गदर्शन प्राप्त करता है वह कभी भी मोहित नहीं होता ।

आंग्लम्– In the matters of dos and don'ts, a person who seeks the advice of those who are elderly in age, mature in righteousness, have knowledge of rules, and are learned persons, after properly worshipping them and propitiating them, never feels deluded.

सम्बद्धाः श्लोकाः

धर्मं धनं च धान्यं च गुरोर्वचनमौषधम् ।
सुगृहीतं च कर्तव्यम् अन्यथा तु न जीवति ॥ *(चाणक्य. 14.19)*

सर्वत्र गुणवानेव चकास्ति प्रथितो नरः । *(सु.र.भा. 85.27)*

यः पृष्ट्वा कुरुते कार्यं प्रष्टव्यान् स्वान् हितान् गुरून् ।.
न तस्य जायतेऽविद्या कस्मिंश्चिदपि कर्मणि ॥ *(सु.र.भा. 172.544)*

अभ्यासः – 10

[श्लोकसङ्ख्या 46-50]

रथः शरीरं पुरुषस्य राजन्
आत्मा नियन्तेन्द्रियाण्यस्य चाश्वाः ।
तैरप्रमत्तः कुशली सदश्वैः
दान्तैः सुखं याति रथीव धीरः ॥ 2.59 ॥

आत्मा नदी भारत ! पुण्यतीर्था
सत्योदका धृतिकूला दयोर्मिः ।
तस्यां स्नातः पूयते पुण्यकर्मा
पुण्यो ह्यात्मा नित्यमलोभ एव ॥ 8.2 ॥

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥ 1/71 ॥

कामक्रोधग्राहवतीं पञ्चेन्द्रियजलां नदीम् ।
नावं धृतिमयीं कृत्वा जन्मदुर्गाणि सन्तर ॥ 8.22 ॥

प्रज्ञावृद्धं धर्मवृद्धं स्वबन्धुं
विद्यावृद्धं वयसा चापि वृद्धम् ।
कार्याकार्ये पूजयित्वा प्रसाद्य
यः सम्पृच्छेन्न स मुह्येत् कदाचित् ॥ 8.23 ॥

1. रिक्तस्थानानि पूरयत–
[रिक्तस्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. पुरुषस्य शरीरं ...., इन्द्रियाणि .... ।

ii. आत्मा .... भारत ! पुण्यतीर्था सत्योदका .... ।
तस्यां .... पूयते ...., पुण्यो ह्यात्मा .... ॥

iii. त्रिविधं .... द्वारं नाशनम् .... ।
कामः .... तथा ...., तस्मादेतत्त्रयं .... ॥

iv. कामक्रोधग्राहवतीं .... ।
नावं .... जन्मदुर्गाणि सन्तर ॥

v. यः प्रज्ञावृद्धं .... स्वबन्धुं, ... चापि वृद्धं ।
कार्याकार्ये .... प्रसाद्य यः सम्पृच्छेन्न स .... ॥

2. सन्धिं कुरुत–

[सन्धि करें। Euphonically join as required.]

i.	नियन्ता	+	इन्द्रियाणि	+	अस्य	=	.... ।
ii.	च	+	अश्वाः			=	.... ।
iii.	तैः	+	अप्रमत्तः			=	.... ।
iv.	सत्	+	अश्वैः			=	.... ।
v.	अश्वैः	+	दान्तैः			=	.... ।
vi.	रथी	+	इव			=	.... ।
vii.	सत्य	+	उदका			=	.... ।
viii.	दया	+	ऊर्मिः			=	.... ।
ix.	हि	+	आत्मा			=	.... ।
x.	नरकस्य	+	इदम्			=	.... ।
xi.	क्रोधः	+	तथा			=	.... ।
xii.	लोभः	+	तस्मात्			=	.... ।
xiii.	तस्मात्	+	एतत्			=	.... ।
xiv.	पञ्च	+	इन्द्रियजलां			=	.... ।
xv.	कार्य	+	अकार्ये			=	.... ।
xvi.	सम्पृच्छेत्	+	न			=	.... ।

3. एकेन पदेन उत्तरं लिखत–

[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. रथः कस्य शरीरम् ? ....

ii. शरीररथस्य नियन्ता कः ? ....

iii. कानि शरीररथस्य अश्वाः भवन्ति ? ....

iv. आत्मरूपिण्यां नद्यां किं रूपं जलम् ? ....

v. सत्यजले कूलरूपेण का अस्ति ? ....

vi. नरकस्य कतिविधं द्वारम् अस्ति ? ....

vii. कीदृशीं नावं कृत्वा जनः जन्मदुर्गाणि तर्तुं शक्नोति ? ....

viii. कस्मिन् विषये वृद्धाः प्रष्टव्याः ? ....

4. वाक्येषु क्रियापदं योजयत–

[**वाक्यों में क्रियापद जोड़ें।** Write the verbal forms in the sentences.]

i. धीरः रथी संयतैः अश्वैः सुखं .... ।

ii. पुण्यकर्मा नरः धृतिकूलायां नद्यां स्नात्वा .... ।

iii. नरः कामं क्रोधं च लोभं .... ।

iv. हे मनुष्य ! त्वं धैर्यमयीं नावं कृत्वा जन्मदुर्गाणि .... ।

v. यः वयसा वृद्धं धर्मवृद्धं स्वबन्धुं पूजयति प्रसादयति च स कदाचन न .... ।

5. पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–

[**पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें।** Answer the following with complete sentences.]

i. कीदृशः रथी सदश्वैः सुखं याति ?

.... ।

ii. आत्मारूपिण्यां नद्यां स्नात्वा कः पूयते ?

.... ।

iii. कानि त्रीणि नरकस्य द्वाराणि ?

.... ।

iv. कीदृशीं नदीं धैर्यरूपिण्या नौकया सन्तरेत् ?

.... ।

v. कीदृशं वृद्धं सम्पृच्छेत् ?

.... ।

6. **विशेषणपदानि योजयत–**

[विशेष्य के साथ विशेषण को मिलाएँ। Match qualifier as per qualificand.]

पुण्यतीर्था, अप्रमत्तः, धृतिमयीं, दान्तैः, इन्द्रियजलां

	विशेषणानि	विशेष्याणि
i.	....	धीरः
ii.	....	नदी
iii.	....	सदश्वैः
iv.	....	नदीम्
v.	....	नावम्

7. **अर्थानुगुणान् अत्र प्रयुक्तान् शब्दान् लिखत–**

[अर्थ के अनुरूप यहाँ प्रयुक्त शब्दों को लिखें। Write the word according to its meaning.]

	अर्थाः	शब्दाः
i.	सावधानः	....
ii.	पवित्रः भवति	....
iii.	सम्यक् तर	....
iv.	प्रसन्नं कृत्वा	....
v.	सम्यक् पृच्छेत्	....

8. **अधोलिखितानि क्रियापदानि लकारैः सह मेलयत–**

[अधोलिखित क्रियापदों को लकार के साथ मिलाएँ। Match the following verbal forms with its *lakaras.*]

i.	याति	क.	विधिलिङ्
ii.	पूयते	ख.	लोट्
iii.	त्यजेत्	ग.	लट्
iv.	सन्तर	घ.	लट्

9 **यथोदाहरणं क्त्वा/ल्यप् प्रत्ययं प्रयुज्य वाक्यानि योजयत—**

[उदाहरण के अनुसार क्त्वा/ल्यप् प्रत्यय जोड़कर वाक्यों को लिखें। Write the sentences in using *ktwa/lyap* suffix as shown in the example.]

प्रसाद्य, समाप्य, पठित्वा, पूजयित्वा

यथा i. सः मन्दिरे देवं पूजयति। ii. ततः सः कार्यालयं गच्छति।

सः मन्दिरे देवं पूजयित्वा कार्यालयं गच्छति।

क. i. सः गुरुं प्रसन्नं करोति। ii. सः सुखं लभते।

.... ।

ख. i. सः विद्यालये पठति। ii. ततः सः महाविद्यालयं प्रविशति।

.... ।

ग. i. सः कार्यं समाप्तं करोति। ii. सः गृहं गच्छति।

.... ।

योग्यताविस्तरः

बहुव्रीहिसमासप्रयोगाः —

i.	पुण्यः तीर्थः यस्याः सा	=	पुण्यतीर्था	(नदी)
ii.	सत्यम् उदकं यस्यां सा	=	सत्योदका	(नदी)
iii.	धृतिः कूलं यस्याः सा	=	धृतिकूला	(नदी)
iv.	दया ऊर्मिः यस्यां सा	=	दयोर्मिः	(नदी)
v.	पुण्यं कर्म यस्य सः	=	पुण्यकर्मा	(मनुष्यः)
vi.	न लोभः यस्मिन् सः	=	अलोभः	(आत्मा)

❖❖❖

51. अनात्मनि श्रुतं नष्टम्

श्लोकः

नष्टं समुद्रे पतितं नष्टं वाक्यमशृण्वति।
अनात्मनि श्रुतं नष्टं नष्टं हुतमनग्निकम्॥ 7.40॥

पदच्छेदः

नष्टम् समुद्रे पतितम् नष्टम् वाक्यम् अशृण्वति।
अनात्मनि श्रुतम् नष्टम् नष्टम् हुतम् अनग्निकम्॥

अन्वयः

समुद्रे पतितं नष्टम्, अशृण्वति वाक्यं नष्टम्, अनात्मनि श्रुतं नष्टम्, अनग्निकं हुतं नष्टम्।

भावार्थः

संस्कृतम्– समुद्रे पतितं वस्तु पुनः न प्राप्यते। यः अनवधानेन वर्तते सः उक्तं न अवगच्छति। बुद्धिहीने पुरुषे ज्ञानं नष्टं भवति। अग्निं विना कृतः होमः नष्टः भवति।

हिन्दी– समुद्र में गिरी हुई वस्तु नष्ट हो जाती है, न सुनने वाले को कहा गया वचन नष्ट हो जाता है, बुद्धिहीन पुरुष में ज्ञान नष्ट हो जाता है और अग्नि के बिना किया गया हवन नष्ट हो जाता है।

आंग्लम्– Anything thrown in the ocean is lost; words spoken to a non-listener are lost; knowledge if given to a man without intellect is lost and the offerings to gods without kindling the fire are also lost.

सम्बद्धाः श्लोकाः

आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च।
तस्मादस्मिन् सदा युक्तो नित्यं स्यादात्मवान् द्विजः॥ *(मनु. 1.108)*

यथेरिणे बीजमुप्त्वा न वप्ता लभते फलम्।
तथाऽनृचे हविर्दत्त्वा न दाता लभते फलम्॥ *(मनु. 3.142)*

धर्मार्थौ यत्र न स्यातां शुश्रूषा वापि तद्विधा।
तत्र विद्या न वक्तव्या शुभं बीजमिवापरे॥ *(मनु. 2.112)*

52. कल्याणे मनः कुर्यात्

श्लोकः

यथा यथा हि पुरुषः कल्याणे कुरुते मनः।
तथा तथाऽस्य सर्वार्थाः सिद्ध्यन्ते नात्र संशयः॥ 3.42॥

पदच्छेदः

यथा यथा हि पुरुषः कल्याणे कुरुते मनः।
तथा तथा अस्य सर्व-अर्थाः सिद्ध्यन्ते न अत्र संशयः॥

अन्वयः

यथा यथा हि पुरुषः कल्याणे मनः कुरुते तथा तथा अस्य सर्वार्थाः सिद्ध्यन्ते, अत्र संशयः न।

भावार्थः

संस्कृतम्– मनुष्यः यथा यथा शुभचिन्तनं करोति तथा तथा तस्य सर्वाणि कार्याणि सिद्ध्यन्ति इत्यत्र न संशयः। कार्यसिद्धौ सततं शुभचिन्तनम् एव कारणमिति भावः।

हिन्दी– जैसे-जैसे मनुष्य कल्याणकारी कार्यों में अपना चित्त लगाता है, वैसे-वैसे ही उसके सभी कार्य सिद्ध होते चले जाते हैं (सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती चली जाती हैं)। इसमें कोई सन्देह नहीं।

आंग्लम्– Just as a man devotes his mind towards welfare activities, his desires get fulfilled in the same manner. There is no doubt about it.

सम्बद्धाः श्लोकाः

परोपकरणं येषां जागर्ति हृदये सताम्।
नश्यन्ति विपदस्तेषां सम्पदः स्युः पदे पदे॥ *(चाणक्य. 7.14)*

अभयस्य हि यो दाता स पूज्यः सततं नृपः।
सत्रं हि वर्धते तस्य सदैवाभयदक्षिणम्॥ *(मनु. 8.303)*

रक्षन् धर्मेण भूतानि राजा वध्यांश्च घातयन्।
यजतेऽहरहर्यज्ञैः सहस्रशतदक्षिणैः॥ *(मनु. 8.306)*

53. सर्वं हरति अभिमानः

श्लोकः

जरा रूपं हरति हि धैर्यमाशा
मृत्युः प्राणान् धर्मचर्यामसूया।

क्रोधः श्रियं शीलमनार्यसेवा
ह्रियं कामः सर्वमेवाभिमानः ॥13.51 ॥

पदच्छेदः

जरा रूपम् हरति हि धैर्यम् आशा
मृत्युः प्राणान् धर्मचर्याम् असूया ।
क्रोधः श्रियम् शीलम् अनार्य-सेवा
ह्रियम् कामः सर्वम् एव अभिमानः ॥

अन्वयः

जरा रूपं (हरति) आशा हि धैर्यम्, मृत्युः प्राणान्, असूया धर्मचर्याम्, क्रोधः श्रियम्, अनार्यसेवा शीलम्, कामः ह्रियम् (हरति), अभिमानः सर्वमेव हरति ।

भावार्थः

संस्कृतम्– वार्धक्यं सौन्दर्यं नाशयति । आशा तु धैर्यं हरति । मृत्युः प्राणान् हरति । असूया धर्माचरणं नाशयति । कोपः सम्पदं नाशयति । दुर्जनानां सेवया शीलं नश्यति । कामप्रवृत्तिः लज्जां हरति । अभिमानः सर्वमपि नाशयति ।

हिन्दी– वृद्धावस्था रूप को हर लेती है, आशा धैर्य को, मृत्यु प्राणों को, ईर्ष्या धर्म के आचरण को, क्रोध समृद्धि को, दुर्जनों की सेवा अच्छे स्वभाव को, काम-वासना लज्जा को, परन्तु अभिमान इन सभी को नष्ट कर देता है ।

आंग्लम्– Old age destroys beauty, hope destroys patience, death destroys life, jealousy destroys observance of duty, anger destroys prosperity, serving the wicked ones destroys modesty, lust destroys sense of shame but haughtiness destroys everything.

सम्बद्धाः श्लोकाः

पयःपूर्णः कुम्भः ध्वनति न तथा वातवलितो,
यथा रिक्तो भां भां ध्वनिमनिभृतं मुञ्चति मुहुः ॥ *(सु.र.भा. 86.47)*

गुणैरुत्तुङ्गतां याति नोच्चैरासनसंस्थितः ।
प्रासादशिखरस्थोऽपि काकः किं गरुडायते ॥ *(चाणक्य. 16.6)*

दाने तपसि शौर्ये वा विज्ञाने विनये नये ।
विस्मयो न हि कर्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा ॥ *(चाणक्य. 14.8)*

54. विद्वांसः मूढैः अवमन्यन्ते

श्लोकः

विद्याशीलवयोवृद्धान् बुद्धिवृद्धाँश्च भारत।
धनाभिजातवृद्धाँश्च नित्यं मूढोऽवमन्यते ॥ 6.33 ॥

पदच्छेदः

विद्या-शील-वयो-वृद्धान् बुद्धि-वृद्धान् च भारत।
धन-अभिजात-वृद्धान् च नित्यम् मूढः अवमन्यते ॥

अन्वयः

मूढः विद्याशीलवयोवृद्धान् बुद्धिवृद्धान् च धनाभिजातवृद्धान् च नित्यम् अवमन्यते।

भावार्थः

संस्कृतम्– ज्ञानेन, चरित्रेण, वयसा वृद्धान्, प्रज्ञया वृद्धान्, आढ्यान्, अभिजातान् सदा मूढः अवमन्यते। एते सर्वेऽपि सदा पूजनीयाः न तु अवमाननीयाः इति भावः।

हिन्दी– हे भारत ! मूर्ख मनुष्य नित्य ही विद्या, शील, आयु, बुद्धि, धन और कुल आदि में श्रेष्ठ मनुष्यों का सर्वदा निरादर ही करते हैं।

आंग्लम्– O Bharat ! A fool always keeps on insulting those who are well-versed in knowledge, have good conduct, age, intelligence, riches and belong to noble dynasty.

सम्बद्धाः श्लोकाः

दह्यमानाः सुतीव्रेण नीचाः परयशोऽग्निना।
अशक्तास्तत्पदं गन्तुं ततो निन्दां प्रकुर्वते ॥ *(चाणक्य. 13.10)*

न दुर्जनः साधुदशामुपैति बहुप्रकारैरपि शिक्ष्यमाणः।
आमूलसिक्तः पयसा घृतेन न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति ॥ *(चाणक्य. 11.6)*

मूर्खाणां पण्डिता द्वेष्या अधनानां महाधनाः। *(चाणक्य. 5.6)*

55. सप्त श्रियः समिधः

श्लोकः

धृतिः शमो दमः शौचं कारुण्यं वागनिष्ठुरा।
मित्राणां चानभिद्रोहः सप्तैताः समिधः श्रियः ॥ 6.37 ॥

पदच्छेदः

धृतिः शमः दमः शौचम् कारुण्यम् वाक् अनिष्ठुरा ।
मित्राणाम् च अनभिद्रोहः सप्त एताः समिधः श्रियः ॥

अन्वयः

धृतिः शमः दमः शौचं कारुण्यम् अनिष्ठुरा वाक्, मित्राणां च अनभिद्रोहः, एताः सप्त श्रियः समिधः ।

भावार्थः

संस्कृतम्– अग्नेः संवर्धनाय यथा समिधः सन्ति, तथैव गुणसम्पदः संवर्धनाय धैर्यं, शान्तिः, इन्द्रियजयः, शुचिः, करुणा, मधुरा वाक्, दृढमैत्री (मित्राणाम् अद्रोहः) इति सप्त समिधः सन्ति ।

हिन्दी– धैर्य, शान्ति, इन्द्रियों और मन पर विजय, पवित्रता, करुणा, कोमल वाणी और मित्रों से द्रोह न करना ये सात गुण समृद्धि को बढ़ाने वाले हैं ।

आंग्लम्-- Patience, peace, control over senses and mind, purity of all kind, pity, soft voice and absence of enmity towards friends - these seven virtues lead towards prosperity.

सम्बद्धौ श्लोकौ

अविसंवादकः दक्षः कृतज्ञः मतिमान् ऋजुः ।
अतिसंक्षीणकोशोऽपि लभते परिवारणम् ॥ *(विदुर. 6.36)*

यज्ञो दानमध्ययनं तपश्च
चत्वार्येतान्यन्वेतानि सद्भिः ।
दमः सत्यमार्जवमानृशंस्यं,
चत्वार्येतान्यनुयान्ति सन्तः ॥ *(चाणक्य. 3.56)*

अभ्यासः – 11

[श्लोकसङ्ख्या 51–55]

नष्टं समुद्रे पतितं नष्टं वाक्यमशृण्वति ।
अनात्मनि श्रुतं नष्टं नष्टं हुतमनग्निकम् ॥ 7.40 ॥

यथा यथा हि पुरुषः कल्याणे कुरुते मनः ।
तथा तथाऽस्य सर्वार्थाः सिद्ध्यन्ते नात्र संशयः ॥ 3.42 ॥

जरा रूपं हरति हि धैर्यमाशा
मृत्युः प्राणान् धर्मचर्यामसूया ।
क्रोधः श्रियं शीलमनार्यसेवा
ह्रियं कामः सर्वमेवाभिमानः ॥13.51 ॥

विद्याशीलवयोवृद्धान् बुद्धिवृद्धांश्च भारत ।
धनाभिजातवृद्धाँश्च नित्यं मूढोऽवमन्यते ॥ 6.33 ॥

धृतिः शमो दमः शौचं कारुण्यं वागनिष्ठुरा ।
मित्राणां चानभिद्रोहः सप्तैताः समिधः श्रियः ॥ 6.37 ॥

1. **रिक्तस्थानानि पूरयत–**
[रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. नष्टं .... पतितम्, नष्टं वाक्यम् .... ।
अनात्मनि .... नष्टं, नष्टं .... ॥

ii. यथा यथा हि .... कल्याणे कुरुते .... ।
तथा तथास्य .... सिद्ध्यन्ते नात्र .... ॥

iii. जरा .... हरति, ... आशा, मृत्युः .... धर्मचर्याम् .... । क्रोधः श्रियं .... अनार्यसेवा, ... कामः सर्वम् एव .... ।

iv. विद्याशीलवयोवृद्धान् .... च भारत ! .... च नित्यं मूढोऽवमन्यते ।

v. धृतिः .... दमः .... कारुण्यं .... ।
.... चानभिद्रोहः सप्तैताः .... श्रियः ॥

2. **सन्धिं कुरुत–**

[सन्धि करें। Euphonically join as required.]

i.	वाक्यम्	+	अशृण्वति	=	**वाक्यमशृण्वती** ।
ii.	हुतम्	+	अनग्निकम्	=	.... ।
iii.	धैर्यम्	+	आशा	=	.... ।
iv.	धर्मचर्याम्	+	असूया	=	.... ।
v.	शीलम्	+	अनार्यसेवा	=	.... ।
vi.	सर्वम्	+	एव	=	.... ।
vii.	नष्टम्	+	समुद्रे	=	.... ।
viii.	पतितम्	+	नष्टम्	=	.... ।
ix.	तथा	+	अस्य	=	.... ।
x.	सर्व	+	अर्थाः	=	.... ।
xi.	न	+	अत्र	=	.... ।
xii.	एव	+	अभिमानः	=	.... ।
xiii.	मूढः	+	अवमन्यते	=	.... ।
xiv.	वाक्	+	अनिष्ठुरा	=	.... ।
xv.	च	+	अनभिद्रोहः	=	.... ।
xvi.	सप्त	+	एताः	=	.... ।

4. **एकेन पदेन उत्तरं लिखत–**

[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. कुत्र पतितं वस्तु नष्टं भवति ? ....

ii. श्रुतं कुत्र नष्टं भवति ? ....

iii. यदा पुरुषः कल्याणे मनः करोति तदा तस्य किं सिध्यति ? ....

iv. नरः कस्मिन् मनः कुर्यात् ? ....

v. जरा किं हरति ? ....

vi. दुष्टानां सेवा किं हन्ति ? ....

vii. कः विद्याशीलवयोवृद्धान् अवमन्यते ? ....

viii. श्रियः कति समिधः ? ....

ix. अनिष्ठुरा वाक् कस्याः समित् ? ....

x. कामः कां हरति ? ....

xi. मृत्युः कान् हरति ? ....

4. **पूर्णेन वाक्येन समाधत्त –**
[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. यः न शृणोति तस्मिन् किं नश्यति ?

.... ।

ii. कीदृशः यज्ञः नश्यति ?

.... ।

iii. सर्वार्थाः कदा सिध्यन्ति ?

.... ।

iv. आशा कं हरति ?

.... ।

v. अभिमानः कं नाशयति ?

.... ।

vi. 'आयुः' इत्यर्थकः कः शब्दः अत्र प्रयुक्तः ?

.... ।

vii. 'अपमानं करोति' इति स्थाने किं क्रियापदं प्रयुक्तम् ?

.... ।

viii. 'मनसः दमनम्' इति कः कथ्यते ?

.... ।

ix. 'दयापूर्णा स्निग्धा वाणी' इत्यर्थे कः शब्दः प्रयुक्तः ?

.... ।

x. 'वृद्धावस्था' इति कस्य शब्दस्य अर्थः ?

.... ।

5. यथोचितं वाक्यांशान् योजयत–

[यथोचित वाक्यांशों को जोड़ें। Add the phrases appropriately.]

i.	अनात्मनि	क.	हुतं नष्टम्
ii.	अनग्निकम्	ख.	कल्याणे कुरुते मनः
iii.	यथा यथा हि पुरुषः	ग.	श्रुतं नष्टम्
iv.	मृत्युः	घ.	धनाभिजातवृद्धान् अवमन्यते
v.	क्रोधः	ङ.	सप्तैताः समिधः श्रियः
vi.	मूर्खः नित्यं	च.	सर्वार्थाः सिध्यन्ते
vii.	मित्राणां च अनभिद्रोहः	छ.	प्राणान् हरति
viii.	तथा तथा अस्य	ज.	श्रियं हरति

6. यथोचितं रिक्तस्थानं पूरयत–

[यथोचित रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks as required.]

यथा	i.	समुद्रे	पतितं	नष्टम्
	ii.	....	वाक्यम्	....
	iii.	अनात्मनि	....	नष्टम्
	iv.	कल्याणे	कुरुते	....
	v.	जरा	....	हरति
	vi.	....	धैर्यं	हरति
	vii.	मृत्युः	....	हरति
	viii.	असूया	....	....
	ix.	....	श्रियम्	....
	x.	अनार्यसेवा	....	....
	xi.	....	ह्रियं	हरति
	xii.	अभिमानः	....	....
	xiii.	मूर्खः	विद्याशीलवयोवृद्धान्	अवमन्यते
	xiv.	मूर्खः	....	अवमन्यते
	xv.	मूर्खः	....	अवमन्यते

7. **सोपानं पूरयत–**

[सीढ़ी की पूर्ति करें। Complete the step.]
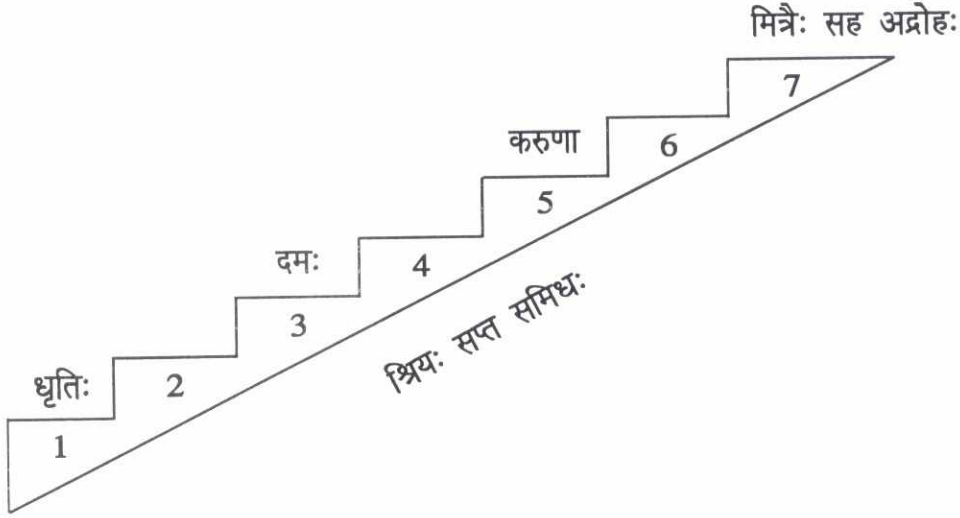
8. **यथोदाहरणं समस्तपदं लिखत–**

[उदाहरण के अनुसार समस्तपद को लिखें। Write the compound word as shown in the example.]

यथा	न	शृण्वति	=	अशृण्वति ।
i.	न	सत्यम्	=	.... ।
ii.	न	आत्मनि	=	.... ।
iii.	....	आर्यः	=	.... ।
iv.	न	निष्ठुरा	=	.... ।
v.	न	अभिद्रोहः	=	.... ।

9. i. **बहुवचनान्तं पदं चिनुत–**

[बहुवचनान्त पद को लिखें। Write the plural form.]

समिधः, संशयः, मनः .... ।

ii. **शतृप्रत्ययान्तं चिनुत–**

[शतृप्रत्ययान्त पद को लिखें। Write the form of śatṛ-suffix.]

अनात्मनि, अशृण्वति, अवमन्यते .... ।

iii. **असप्तम्यन्तं पदं चिनुत–**

[असप्तम्यन्त पद को लिखें। Write the non-locative form.]

कल्याणे, समुद्रे, अनात्मनि, सिध्यते .... ।

योग्यताविस्तरः

विद्याशीलवयोवृद्धान् – विद्यावृद्धान्, शीलवृद्धान्, वयोवृद्धान् चेति ।

विद्यावृद्धः च शीलवृद्धः च वयोवृद्धः च विद्या-शील-वयो-वृद्धाः, तान् विद्याशीलवयोवृद्धान् इति द्वन्द्वसमासप्रयोगः ।

56. अष्टविधः धर्ममार्गः

श्लोकः

इज्याध्ययनदानानि तपः सत्यं क्षमाऽघृणा।
अलोभ इति मार्गोऽयं धर्मस्याष्टविधः स्मृतः॥ 3/57॥

पदच्छेदः

इज्या-अध्ययन-दानानि तपः सत्यम् क्षमा अघृणा।
अलोभः इति मार्गः अयम् धर्मस्य अष्टविधः स्मृतः॥

अन्वयः

इज्याध्ययनदानानि, तपः, सत्यं, क्षमा, अघृणा, अलोभः इति अयं धर्मस्य अष्टविधः मार्गः स्मृतः।

भावार्थः

संस्कृतम्– धर्मस्य अष्टौ मार्गाः स्मृताः सन्ति। ते च यागानुष्ठानम्, अध्ययनं, दानं, तपस्या, सत्यरक्षा, क्षमावलम्बनम्, अघृणा (दया), अलोभः इति।

हिन्दी– यह धर्म का आठ प्रकार का मार्ग बताया गया है– यज्ञ, अध्ययन, दान, तपस्या, सत्य बोलना, क्षमा करना, दया करना और लालच न करना।

आंग्लम्– The eight-fold path leading to Dharma consists of sacrifice, study, generosity, penance, truth, forgiveness, kindness and absence of greed.

सम्बद्धाः श्लोकाः

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥ *(मनु. 6.92)*

वेदः स्मृतिः सदाचारः, स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्॥ *(मनु. 2.12)*

मुक्तिमिच्छसि चेत्तात विषयान् विषवत् त्यज।
क्षमाऽर्जवं दया शौचं सत्यं पीयूषवद् भज॥ *(चाणक्य. 9.1)*

57. सुखं वसेत्

श्लोकः

पूर्वे वयसि तत् कुर्याद् येन वृद्धः सुखं वसेत्।
यावज्जीवेन तत् कुर्यात् येन प्रेत्य सुखं वसेत्॥ 3.69॥

पदच्छेदः

पूर्वे वयसि तत् कुर्याद् येन वृद्धः सुखम् वसेत् ।
यावत् जीवेन तत् कुर्यात् येन प्रेत्य सुखम् वसेत् ॥

अन्वयः

पूर्वे वयसि तत् कुर्यात्, येन वृद्धः सुखम् वसेत्, यावत् जीवेन तत् कुर्यात्, येन प्रेत्य सुखम् वसेत् ।

भावार्थः

संस्कृतम्– जीवनस्य पूर्वार्धे उत्तमं कार्यं करोति चेत् वार्धके सुखी भविष्यति । यदि आजीवनं साधु कार्यं करोति तर्हि परलोकेऽपि सुखं प्राप्नुयात् ।

हिन्दी– आयु के पूर्वार्ध में मनुष्य को ऐसे कर्म करने चाहिए जिससे वृद्धावस्था में सुख से रहे । जीवन पर्यन्त ऐसे कर्म करने चाहिए जिससे यहाँ से जाकर परलोक में भी सुख से रहे ।

आंग्लम्– One should do such good deeds in the first half of his life through which one may live happily in the old age. One should do good deeds life-long through which one may live happily in the other world even after his death.

सम्बद्धाः श्लोकाः

दिवसेनैव तत् कुर्याद् येन रात्रौ सुखं वसेत् ।
अष्टमासेन तत् कुर्याद् येन वर्षाः सुखं वसेत् ॥ *(विदुर. 3.68)*

श्लोकेन वा तदर्धेन पादेनैकाक्षरेण वा ।
अवन्ध्यं दिवसं कुर्याद् दानाध्ययनकर्मभिः ॥ *(चाणक्य. 2.13)*

प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम् ।
तृतीये नार्जितं पुण्यं, चतुर्थे किं करिष्यति ॥ *(सु.र.भा. 169.419)*

58. सुखिनः पुरुषाः त्रयः

श्लोकः

सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः ।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम् ॥ 3.75 ॥

पदच्छेदः

सुवर्ण-पुष्पाम् पृथिवीम् चिन्वन्ति पुरुषाः त्रयः ।
शूरः च कृतविद्यः च यः च जानाति सेवितुम् ॥

अन्वयः

त्रयः पुरुषाः सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति– शूरः च, कृतविद्यः च, यः च सेवितुं जानाति।

भावार्थः

संस्कृतम्– वीरः, ज्ञानी, शुश्रूषुः इति त्रयः एव भूमौ सुखम् अनुभवन्ति। अतः शूरैः, ज्ञानिभिः, शुश्रूषुभिः भाव्यम्।

हिन्दी– तीन प्रकार के लोग ही इस धन–धान्यमयी पृथ्वी को भोग पाते हैं – शूरवीर, विद्वान् और जो यथोचित अन्य जनों की सेवा करना जानता है।

आंग्लम्– Only three kinds of people can enjoy the bounties of this earth - a valiant warrior, a learned person and one who knows how to serve others.

सम्बद्धौ श्लोकौ

सदयं हृदयं यस्य भाषितं सत्यभूषितम्।
कायः परहिते यस्य कलिस्तस्य करोति किम्॥ *(सु.र.भा. 163.192)*

59. भावानुरूपा सिद्धिः

श्लोकः

यादृशैः सन्निविशते यादृशांश्चोपसेवते।
यादृगिच्छेच्च भवितुं तादृग् भवति पूरुषः॥ 4.13॥

पदच्छेदः

यादृशैः सन्निविशते यादृशान् च उपसेवते।
यादृक् इच्छेत् च भवितुम् तादृक् भवति पूरुषः॥

अन्वयः

यादृशैः सन्निविशते यादृशान् च उपसेवते यादृग् च भवितुम् इच्छेत् पूरुषः तादृग् भवति।

भावार्थः

संस्कृतम्– मनुष्यः यादृशीं सङ्गतिं प्राप्नोति, यान् च सेवते, यथा च भवितुमिच्छति, तादृशः नूनं जायते। सङ्गतिः, सेवागुणः, प्रबला इच्छा इति त्रयं यथा भवति तथैव मनुष्यः भवतीति भावः।

हिन्दी– मनुष्य जैसों के साथ उठता-बैठता है, जैसों की सेवा करता है और जैसा बनना चाहता है वैसा ही बन जाता है।

आंग्लम्– A man becomes exactly like that on the basis of what he wants to become, the company he keeps in and the type of people he serves.

सम्बद्धौ श्लोकौ

यदि सन्तं सेवते यद्यसन्तं,
तपस्विनं यदि वा स्तेनमेव।
वासो यथा रङ्गवशं प्रयाति,
तथा स तेषां वशमभ्युपैति॥ *(विदुर. 4.10)*

यदि सत्सङ्गनिरतो भविष्यसि भविष्यसि।
अथ दुर्जनसंसर्गे पतिष्यसि पतिष्यसि॥ *(सु.र.भा. 90.15)*

60. तद् वै मित्रम्

श्लोकः

न तन्मित्रं यस्य कोपाद् बिभेति
यद् वा मित्रं शङ्कितेनोपचर्यम्।
यस्मिन् मित्रे पितरीवाश्वसीत
तद् वै मित्रं सङ्गतानीतराणि॥ 4.37॥

पदच्छेदः

न तत् मित्रम् यस्य कोपात् बिभेति
यत् वा मित्रम् शङ्कितेन उपचर्यम्।
यस्मिन् मित्रे पितरि इव आश्वसीत
तत् वै मित्रम् सङ्गतानि इतराणि॥

अन्वयः

तत् मित्रं न यस्य कोपात् बिभेति, यद् वा मित्रं शङ्कितेन उपचर्यम्। यस्मिन् मित्रे पितरि इव आश्वसीत तद् वै मित्रम्, इतराणि सङ्गतानि।

भावार्थः

संस्कृतम्– कोपिष्ठः शङ्कास्पदं च मित्रं मित्रं न भवति। यस्मिन् पितृसमः विश्वासः भवति स एव मित्रं भवति, इतरे तु केवलं सह निवसन्तः भवन्ति।

हिन्दी– वह मित्र नहीं है जिसके कोप से डर लगता है अथवा वह मित्र भी सच्चा मित्र नहीं है जिसके साथ शंकित होकर व्यवहार किया जाय। मित्र वही है जिस पर पिता के समान विश्वास किया जा सके, अन्य तो सभी साथी मात्र होते हैं।

आंग्लम्– He is not a friend whose wrath makes you uncomfortable. Even that person is also not a true friend whom you may treat with suspicion. He

indeed is a true friend whom one can trust like a father. The rest are only companions.

सम्बद्धाः श्लोकाः

यः कश्चिदप्यसम्बद्धो मित्रभावेन वर्तते ।
स एव बन्धुस्तन्मित्रं सा गतिस्तत् परायणम् ॥ *(विदुर. 4.38)*

तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यत् । *(भर्तृ. 64)*

पापान्निवारयति योजयते हिताय गुह्यं निगूहति गुणान्प्रकटीकरोति ।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ॥ *(भर्तृ. 69)*

यः सहायं सदा कुर्यात् प्रतीपं न वदेत् क्वचित् ।
सत्यं हितं वक्ति याति दत्ते गृह्णाति मित्रताम् ॥ *(शुक्र. 3.256)*

त्यज दुर्जनसंसर्गं भज साधुसमागमम् । *(चाणक्य. 14.20)*

अभ्यासः – 12

[श्लोकसङ्ख्या 56-60]

इज्याध्ययनदानानि तपः सत्यं क्षमाऽघृणा ।
अलोभ इति मार्गोऽयं धर्मस्याष्टविधः स्मृतः ॥ 3/57 ॥

पूर्वे वयसि तत् कुर्याद् येन वृद्धः सुखं वसेत् ।
यावज्जीवेन तत् कुर्यात् येन प्रेत्य सुखं वसेत् ॥ 3.69 ॥

सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः ।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम् ॥ 3.75 ॥

यादृशैः सन्निविशते यादृशांश्चोपसेवते ।
यादृगिच्छेच्च भवितुं तादृग् भवति पूरुषः ॥ 4.13 ॥

न तन्मित्रं यस्य कोपाद् बिभेति
यद् वा मित्रं शङ्कितेनोपचर्यम् ।
यस्मिन् मित्रे पितरीवाश्वसीत
तद् वै मित्रं सङ्गतानीतराणि ॥ 4.37 ॥

1. रिक्तस्थानानि पूरयत–
[रिक्तस्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. इज्या.................. तपः .... क्षमाऽघृणा ।
.... इति ....धर्मस्याष्टविधः .... ॥

ii. .... तत् कुर्याद् येन .... ।
यावज्जीवेन .... येन .... सुखं वसेत् ॥

iii. सुवर्णपुष्पां .... चिन्वन्ति .... ।
शूरश्च .... यश्च जानाति .... ॥

iv. यादृशैः .... यादृशांश्च .... ।
यादृग् ....तादृग् .... ॥

v. न तन्मित्रं यस्य ...., यद् वा मित्रं .... ।
यस्मिन् मित्रे ...., तद् वै मित्रं .... ॥

2. एकेन पदेन उत्तरं लिखत–
[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. धर्मस्य मार्गः कतिविधः ? ....

ii. 'यज्ञः' इति कस्य शब्दस्य अर्थः ? ....

iii. पूर्वे वयसि पुण्यकर्माणि कुर्वन् वृद्धः कथं वसेत् ? ....

iv. यः सेवितुं जानाति स कीदृशीं पृथिवीं चिनोति ? ....

v. कति पुरुषाः सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति ? ....

vi. 'संगतिं करोति' इत्यर्थे किं क्रियापदं प्रयुक्तम् ? ....

vii. कस्मिन्निव मित्रे आश्वसीत ? ....

3. **सन्धिं कुरुत–**

[सन्धि करें। Euphonically join as required.]

i.	इज्या	+	अध्ययनदानानि	=	.... ।
ii.	धर्मस्य	+	अष्टविधः	=	.... ।
iii.	यावत्	+	जीवेन	=	.... ।
iv.	पुरुषाः	+	त्रयः	=	.... ।
v.	शूराः	+	च	=	.... ।
vi.	कृतविद्यः	+	च	=	.... ।
vii.	यः	+	च	=	.... ।
viii.	सम्	+	निविशते	=	.... ।
ix.	यादृशान्	+	च	=	.... ।
x.	च	+	उपसेवते	=	.... ।
xi.	तत्	+	मित्रम्	=	.... ।
xii.	शङ्कितेन	+	उपचर्यम्	=	.... ।
xiii.	पितरि	+	इव	=	.... ।
xiv.	इव	+	आश्वसीत	=	.... ।
xv.	सङ्गतानि	+	इतराणि	=	.... ।

4. **पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–**
[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. 'न घृणा' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम् ?

.... ।

ii. 'न लोभः' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम् ?

.... ।

iii. कस्मिन् वयसि पुण्यं कुर्यात् येन वृद्धः सुखं वसेत् ?

.... ।

iv. के त्रयः धनधान्यपूर्णां पृथिवीं भुञ्जन्ति ?

.... ।

v. यः नरः दुष्टान् सेवते सः कीदृशः भवति ?

.... ।

vi. यः नरः सज्जनैः सह उपविशति सः कीदृशः भवति ?

.... ।

vii. किं नाम मित्रलक्षणम् ?

.... ।

5. **क्रियापदानां वचनपरिवर्तनं कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–**
[क्रियापदों के वचन परिवर्तन कर रिक्तस्थानों की पूर्ति करें। Fill in the blanks by changing the number of verbal forms.]

i. धर्मस्य अष्टविधः मार्गः स्मृतः ।
धर्मस्य अष्ट मार्गाः .... ।

ii. नरः पूर्वे वयसि पुण्यं कुर्यात् ।
नराः पूर्वे वयसि पुण्यं .... ।

iii. त्रयः पुरुषाः सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति ।
पुरुषः सुवर्णपुष्पां पृथिवीं .... ।

iv. पुरुषः यथा भवितुम् इच्छति तथा भवति ।
पुरुषाः यथा भवितुम् .... तथा .... ।

V. सः मित्रे पितरि इव आश्वसीत।

ते मित्रे पितरि इव .... ।

कुर्युः, इच्छन्ति, चिनोति, स्मृताः, भवन्ति, आश्वसीरन्

7. **अधोलिखितेषु रेखाचित्रेषु रिक्तस्थानानि पूरयत–**

[अधोलिखित रेखाचित्रों में रिक्तस्थानों की पूर्ति करें। Fill in the blanks on the following sketches.]

I.
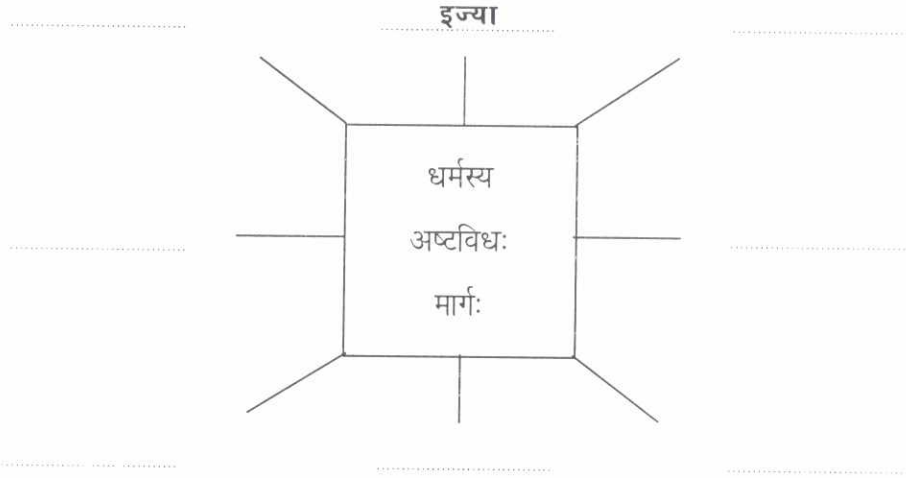
II.
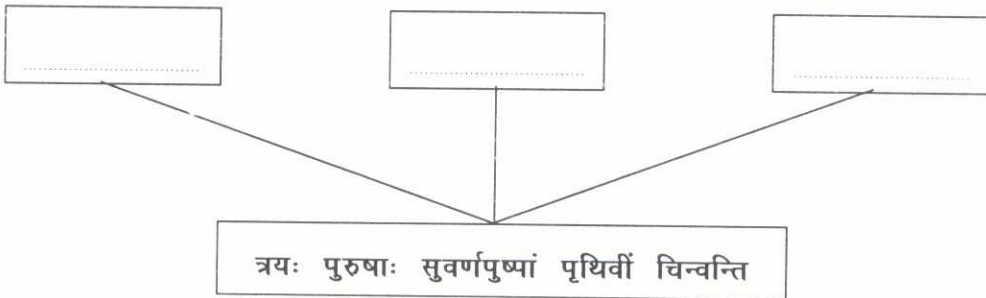
8. **उचितेन विभक्त्यन्तेन पदेन रिक्तस्थानं पूरयत–**

[उचित विभक्त्यन्त पद से रिक्तस्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks with appropriate case-form.]

i.	भरतः	....	अपि न बिभेति।	(सिंहः)
ii.	भीमः	....	अपि न बिभेति।	(असुरः)
iii.	सा बालिका	....	अपि न बिभेति।	(सर्पः)
iv.	वीराः बालिकाः	....	अपि न बिभ्यति।	(मृत्युः)
v.	रामलक्ष्मणौ	....	अपि न बिभीतः।	(रावणः)

9. **श्लोकाधारेण पदानि मेलयत–**

[श्लोकों के आधार पर पदों को मिलाएँ। Match the following words according to verses.]

	विशेषणानि		विशेष्याणि
(i)	पूर्वे	क.	पृथिवीम्
(ii)	अष्टविधः	ख.	सङ्गतानि
(iii)	सुवर्णपुष्पाम्	ग.	वयसि
(iv)	इतराणि	घ.	पुरुषाः
(v)	त्रयः	ङ.	मार्गः

योग्यताविस्तरः

यदा पूर्वपदस्य अन्ते मकारः भवति, उत्तरपदस्य प्रथमः वर्णः व्यञ्जनं भवति तदा मकारस्य अनुस्वारः (ं) भवति। यथा –

देवम् + वन्दे = देवं वन्दे।

(म् + व्यञ्जनवर्णः = ं व्यञ्जनवर्णः)

यदि मकारात् परं स्वरवर्णः भवति तर्हि मकारः एव तिष्ठति। मकारेण सह स्वरस्य योजनं भवति। यथा–

गृहम् + आयाति = गृहम् आयाति / गृहमायाति

61. चिरस्थायी मैत्री

श्लोकः

ययोश्चित्तेन वा चित्तं निभृतं निभृतेन वा।
समेति प्रज्ञया प्रज्ञा तयोर्मैत्री न जीर्यति ॥ 7.47 ॥

पदच्छेदः

ययोः चित्तेन वा चित्तम् निभृतम् निभृतेन वा।
सम्-एति प्रज्ञया प्रज्ञा तयोः मैत्री न जीर्यति ॥

अन्वयः

ययोः चित्तेन चित्तं वा निभृतेन निभृतम्, प्रज्ञया प्रज्ञा समेति, तयोः मैत्री न जीर्यति।

भावार्थः

ययोः द्वयोः मनः व्यवहारः बुद्धिः परस्परं साम्येन वर्तन्ते तेषां मैत्री चिरस्थायिनी भवति।

हिन्दी– जिन दो मुनष्यों के चित्त के साथ चित्त, गुप्त रहस्यों के साथ गुप्त रहस्य तथा बुद्धि के साथ बुद्धि मिल जाती है, उनकी मित्रता कभी जीर्ण नहीं होती।

आंग्लम्– If the minds, the secrets and the intellect of two persons match with each other, their friendship never gets stale.

सम्बद्धाः श्लोकाः

दुर्बुद्धिमकृतप्रज्ञं छन्नं कूपं तृणैरिव।
विवर्जयति मेधावी तस्मिन् मैत्री प्रणश्यति ॥ *(विदुर. 7.48)*

ययोरेव समं वित्तं ययोरेव समं बलम्।
तयोर्विवादो मैत्री वा नोत्तमाधमयोः क्वचित् ॥ *(हितो.सु.भे. 166,सु.र.भा.170.491)*

मित्रवान् साधयत्यर्थान् दुःसाध्यानपि वै यतः।
तस्मान्मित्राणि कुर्वीत समानान्येव चात्मनः ॥ *(सु.र.भा. 171.522)*

यस्य न ज्ञायते वीर्यं न कुलं न विचेष्टितम्।
न तेन संगतिं कुर्यादित्युवाच बृहस्पतिः ॥ *(सु.र.भा. 171.527)*

62. सन्तापाद् भ्रश्यते सर्वम्

श्लोकः

सन्तापाद् भ्रश्यते रूपं सन्तापाद् भ्रश्यते बलम्।
सन्तापाद् भ्रश्यते ज्ञानं सन्तापाद् व्याधिमृच्छति॥ 4.44॥

पदच्छेदः

सन्तापात् भ्रश्यते रूपम् सन्तापात् भ्रश्यते बलम्।
सन्तापात् भ्रश्यते ज्ञानम् सन्तापात् व्याधिम् ऋच्छति॥

अन्वयः

सन्तापाद् रूपं भ्रश्यते, सन्तापाद् बलं भ्रश्यते, सन्तापाद् ज्ञानं भ्रश्यते, सन्तापाद् व्याधिम् ऋच्छति।

भावार्थः

संस्कृतम्– सन्तापेन सौन्दर्यं, बलं, ज्ञानं च नश्यति। सन्तापेन मनुष्यः व्याधिं प्राप्नोति। अतः कदापि सन्तापः न करणीयः।

हिन्दी– सन्ताप से रूप नष्ट हो जाता है; सन्ताप से शक्ति नष्ट हो जाती है; सन्ताप से ज्ञान भी नष्ट हो जाता है और सन्ताप से मनुष्य रोगी हो जाता है।

आंग्लम्– Agony destroys beauty; agony destroys strength; agony also destroys knowledge and agony can make a man sick.

सम्बद्धाः श्लोकाः

अनवाप्यं च शोकेन शरीरं चोपतप्यते।
अमित्राश्च प्रहृष्यन्ति मा स्म शोके मनः कृथाः॥ *(विदुर. 4.45)*

गते शोको न कर्तव्यो भविष्यं नैव चिन्तयेत्।
वर्तमानेन कालेन प्रवर्तन्ते विचक्षणाः॥ *(चाणक्य. 13.2)*

शोको नाशयते धैर्यं शोको नाशयते श्रुतम्।
शोको नाशयते सर्वं नास्ति शोकसमो रिपुः॥ *(रामा. अयो. 62.15)*

63. किं केन जयेत् ?

श्लोकः

अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं साधुना जयेत्।
जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम्॥ 7.72॥

पदच्छेदः

अक्रोधेन जयेत् क्रोधम् असाधुम् साधुना जयेत् ।
जयेत् कदर्यम् दानेन जयेत् सत्येन च अनृतम् ॥

अन्वयः

अक्रोधेन क्रोधं जयेत्, साधुना असाधुं जयेत्, दानेन कदर्यं जयेत्, सत्येन च अनृतं जयेत् ।

भावार्थः

संस्कृतम्– प्रेम्णा क्रोधं, दुष्टान् सद्व्यवहारेण, कृपणतां दानेन, अनृतं सत्येन च जयेत् । मनुष्यः प्रियः, सदाचारी, दानी, सत्यवादी च स्यात् इति सारः ।

हिन्दी– प्रेम से क्रोध को जीतें, उत्तम व्यवहार से दुष्ट मनुष्य को जीतें, दान से कृपण को जीतें और सत्य से झूठ को जीतें ।

आंग्लम्– Win over anger by love, a wicked person by good behaviour, a miser through charity and falsehood by truth.

सम्बद्धौ श्लोकौ

सत्यमेवेश्वरो लोके, सत्ये धर्मः सदाश्रितः ।
सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम् ॥ *(रामा.अयो. 109.13)*

लुब्धमर्थेन गृह्णीयात् स्तब्धमञ्जलिकर्मणा ।
मूर्खं छन्दोऽनुवृत्तेन यथार्थत्वेन पण्डितम् ॥ *(चाणक्य. 6.11)*

64. हेयमधर्मयुक्तं धनम्

श्लोकः

महान्तमप्यर्थमधर्मयुक्तं
यः सन्त्यजत्यनपाकृष्ट एव ।
सुखं सुदुःखान्यवमुच्य शेते
जीर्णां त्वचं सर्प इवावमुच्य ॥ 8/2 ॥

पदच्छेदः

महान्तम् अपि अर्थम् अधर्म-युक्तम्
यः सम्-त्यजति अनपाकृष्टः एव ।
सुखम् सुदुःखानि अवमुच्य शेते
जीर्णाम् त्वचम् सर्पः इव अवमुच्य ॥

अन्वयः

यः अनपाकृष्ट एव महान्तम् अपि अधर्मयुक्तम् अर्थं संत्यजति (सः) जीर्णां त्वचम् अवमुच्य सर्पः इव सुदुःखानि अवमुच्य सुखं शेते।

भावार्थः

संस्कृतम्– अधर्ममार्गेण सञ्चितं धनराशिं प्रति अनाकृष्टः तं धनराशिं यः त्यजति, सः यथा सर्पः स्वीयां जीर्णां त्वचं त्यक्त्वा सुखी भवति तथा सुखी भवति।

हिन्दी– जो मुनष्य अधर्मयुक्त बहुत बड़ी धन राशि को भी बिना आकृष्ट हुए त्याग देता है वह पुरानी केंचुली को त्यागने वाले साँप के समान सभी दुःखों को दूर करके सुख से सोता है।

आंग्लम्– A person who without any attachment, renounces a huge amount of money earned by unfair means can sleep happily leaving behind all his worries just as a serpent discards his old skin.

सम्बद्धाः श्लोकाः

सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्।
योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्न मृद्वारिशुचिः शुचिः॥ *(मनु. 5.106)*

अन्यायोपार्जितं द्रव्यं दश वर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते चैकादशे वर्षे समूलं तद् विनश्यति॥ *(चाणक्य. 15/6)*

कामक्रोधौ तु संयम्य योऽर्थान्धर्मेण पश्यति।
प्रजास्तमनुवर्तन्ते समुद्रमिव सिन्धवः॥ *(मनु. 8.175)*

नित्यं बुद्धिमतोऽप्यर्थः स्वल्पकोऽपि विवर्धते। *(शुक्र. 1.28)*

65. अयोग्येषु धनेषु मनः मा कृथाः

श्लोकः

अतिक्लेशेन येऽर्थाः स्युर्धर्मस्यातिक्रमेण वा।
अरेर्वा प्रणिपातेन मा स्म तेषु मनः कृथाः॥ 7.75॥

पदच्छेदः

अति-क्लेशेन ये अर्थाः स्युः धर्मस्य अतिक्रमेण वा।
अरेः वा प्रणि-पातेन मा स्म तेषु मनः कृथाः॥

अन्वयः

ये अर्थाः अतिक्लेशेन धर्मस्य अतिक्रमेण वा अरेः प्रणिपातेन वा स्युः तेषु मनः मा स्म कृथाः।

भावार्थः

संस्कृतम्– यच्च धनं फलं वा महता क्लेशेन, धर्मोल्लङ्घनेन, शत्रोः पुरतः विहितया शरणागत्या च प्राप्यते, तादृशः अर्थः मनसाऽपि न ग्राह्यः।

हिन्दी– जो धन या प्रयोजन अत्यन्त कष्ट से, धर्म के उल्लंघन से अथवा शत्रु के प्रति झुकने से प्राप्त या सिद्ध होवे, उसमें कभी मन को मत लगाओ।

आंग्लम्– The riches or the objectives which are only achievable with troubles unparalleled or by unfair means or by bowing before an enemy, should never be coveted.

सम्बद्धौ श्लोकौ

सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्।
न च तद् धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्॥ *(चाणक्य. 7/3)*

अर्थी करोति दैन्यं, लुब्धार्थो गर्वमपरितोषं च।
नष्टधनश्च स शोकं सुखमास्ते निःस्पृहः पुरुषः॥ *(सु.र.भा. 78.12)*

लोभाविष्टो नरो वित्तं वीक्षते न स चापदम्।
दुग्धं पश्यति मार्जारो न तथा लगुडाहतिम्॥ *(सु.र.भा. 72.6)*

यत्र वर्जयते राजा पापकृद्भ्यो धनागमम्।
तत्र कालेन जायन्ते मानवा दीर्घजीविनः॥ *(मनु. 9.246)*

अभ्यासः - 13

[श्लोकसङ्ख्या 61-65]

ययोश्चित्तेन वा चित्तं निभृतं निभृतेन वा।
समेति प्रज्ञया प्रज्ञा तयोर्मैत्री न जीर्यति ॥ 7.47 ॥

सन्तापाद् भ्रश्यते रूपं सन्तापाद् भ्रश्यते बलम्।
सन्तापाद् भ्रश्यते ज्ञानं सन्तापाद् व्याधिमृच्छति ॥ 4.44 ॥

अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं साधुना जयेत्।
जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम् ॥ 7.72 ॥

महान्तमप्यर्थमधर्मयुक्तं यः सन्त्यजत्यनपाकृष्ट एव।
सुखं सुदुःखान्यवमुच्य शेते जीर्णां त्वचं सर्प इवावमुच्य ॥ 8/2 ॥

अतिक्लेशेन येऽर्थाः स्युर्धर्मस्यातिक्रमेण वा।
अरेर्वा प्रणिपातेन मा स्म तेषु मनः कृथाः ॥ 7.75 ॥

1. **रिक्तस्थानानि पूरयत–**
[**रिक्त स्थान की पूर्ति करें।** Fill in the blanks.]

i. ययोः .... चित्तं वा .... निभृतं वा, ... प्रज्ञा समेति, तयोः .... न जीर्यति ॥

ii. सन्तापात् ...., ..., ..., ..., भ्रश्यते, ... व्याधिम् ऋच्छति।

iii. .... क्रोधं जयेत्, ... असाधुं जयेत्, ... कदर्यं जयेत्, ... अनृतं जयेत् ॥

iv. यथा सर्पः जीर्णां .... अवमुच्य सुखं शेते, तथा यः ...., ..., अर्थं सन्त्यजति, सः अनपाकृष्ट एव .... अवमुच्य सुखं शेते।

v. ये अर्थाः ...., धर्मस्य, ... वा, अरेः .... वा स्युः, तेषु .... मा कृथाः।

2. एकेन पदेन उत्तरं लिखत–

[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. ययोः प्रज्ञा प्रज्ञया समेति तयोः का न जीर्यति ?

ii. नरः कस्मात् व्याधिं प्राप्नोति ?

iii. नरः कृपणं केन जेतुं शक्नोति ?

iv. सर्पः विना कष्टं कां त्यजति ?

v. 'शत्रोः' इति स्थाने कः शब्दः प्रयुक्तः ?

vi. 'जीर्णाम्' इत्यस्य विशेषणं किम् ?

3. सन्धिं कुरुत–

[सन्धि करें। Euphonically join as required.]

i.	ययोः	+	च	=	.... ।
ii.	तयोः	+	मैत्री	=	.... ।
iii.	चित्तम्	+	निभृतम्	=	.... ।
iv.	च	+	अनृतम्	=	.... ।
v.	अपि	+	अर्थम्	=	.... ।
vi.	सन्त्यजति	+	अनपाकृष्टः	=	.... ।
vii.	सुदुःखानि	+	अवमुच्य	=	.... ।
viii.	इव	+	अवमुच्य	=	.... ।
ix.	ये	+	अर्था	=	.... ।
x.	अरेः	+	वा	=	.... ।

4. पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–

[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. कयोः मैत्री न जीर्यति ?

.... ।

ii. सन्तापाद् किं किं भ्रश्यते ?

.... ।

iii. क्रोधं केन जयेत् असाधुं च केन ?

.... ।

iv. कीदृशं धनं त्यक्त्वा नरः सुखम् आप्नोति ?

.... ।

v. केषु अर्थेषु मनः न कर्तव्यम् ?

.... ।

vi. कस्मात् नरः रुग्णः भवति ?

.... ।

vii. 'स्वपिति' इति स्थाने किं क्रियापदं प्रयुक्तम् ?

.... ।

5. भिन्नपदं चिनुत—

[भिन्न पद को चुनें। Write the odd-word.]

i. सन्तापात्, अतिक्लेशेन, अतिक्रमेण, साधुना। .... ।

ii. कदर्यम्, अर्थाः, सुदुःखानि, सुखानि। .... ।

iii. प्रज्ञा, चित्तम्, असाधुः, जीर्णाम्। .... ।

iv. धर्मस्य, अवमुच्य, तयोः, अरेः। .... ।

v. मनः, चित्तं, रूपम्, असाधुम्। .... ।

6. विलोमपदानि मेलयत—

[विलोम पद को मिलाएँ। Match the opposite word.]

i.	अक्रोधः	क.	अतिक्रमणम्
ii.	असाधुः	ख.	क्रोधः
iii.	सत्यम्	ग.	सुखानि

iv. धर्मयुक्तम्   घ. अनृतम्

v. दुःखानि   ङ. अधर्मयुक्तम्

vi. अनुपालनम्   च. साधुः

7. **61-65 श्लोकेभ्यः तृतीयान्तपदानि चित्वा लिखत–**
[61-65 श्लोकों से तृतीयान्त पदों को चुन कर लिखें। Write the instrumental forms from 61-65 verses.]

यथा i. चित्तेन   ii. ....   iii. ....
iv. ....   v. ....   vi. ....
vii. ....   viii. ....   ix. ....
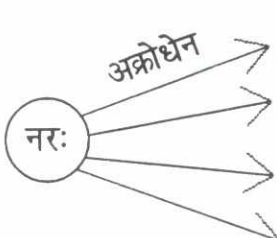
8. **अधोलिखितवाक्येषु क्रियापदानि योजयत–**
[अधोलिखित वाक्यों में क्रियापद को लिखें। Write the verbal form in the following sentences.]

i. सज्जनयोः चित्तं चित्तेन .... ।
ii. नरः सत्येन अनृतं .... ।
iii. सन्तापात् ज्ञानं .... ।
v. अधर्ममार्गेण सञ्चितेषु धनेषु मनः मा .... ।
vi. विवेकी नरः महान्तम् अपि अधर्मयुक्तं धनम् .... ।
vii. सज्जनयोः मैत्री न .... ।

9. **अधोलिखितानि रेखाचित्राणि पूरयत–**
[अधोलिखित रेखाचित्रों की पूर्ति करें। Fill in the blanks in the sketches.]

I.

नरः → अक्रोधेन → क्रोधं जयेत्।
नरः → असाधुं जयेत्।
नरः → कदर्यं जयेत्।
नरः → अनृतं जयेत्।

II.
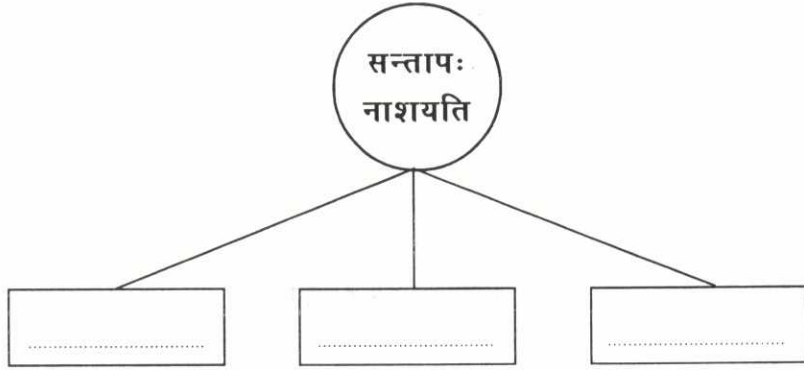
योग्यताविस्तरः

I. 64-तमे श्लोके 'महान्तम्' इति पदम् अस्ति। एतत् 'महत्' शब्दस्य पुं. द्विती. एकवचनान्तं रूपम् अस्ति। महत्-शब्दस्य पुंलिङ्गे रूपाणि एवं भवन्ति –

	एक.	द्वि.	बहु.
प्र.	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्विती.	महान्तम्	महान्तौ	महतः
तृ.	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
च.	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
प.	महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
ष.	महतः	महतोः	महताम्
स.	महति	महतोः	महत्सु
सम्बो.	हे महन्	हे महान्तौ	हे महान्तः

II. अस् धातोः विधिलिङ्-लकारे रूपाणि भवन्ति–

	एक.	द्वि.	बहु.
प्र.पु.	स्यात्	स्याताम्	स्युः
म.पु.	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ.पु.	स्याम्	स्याव	स्याम

66. दुरुपायार्जितं धनं न यशसे

श्लोकः

प्राप्नोति वै वित्तमसद्बलेन
नित्योत्थानात् प्रज्ञया पौरुषेण।
न त्वेव सम्यग् लभते प्रशंसां
न वृत्तमाप्नोति महाकुलानाम् ॥ 4.21 ॥

पदच्छेदः

प्राप्नोति वै वित्तम् असद्बलेन
नित्य-उत्थानात् प्रज्ञया पौरुषेण।
न तु एव सम्यक् लभते प्रशंसाम्
न वृत्तम् आप्नोति महाकुलानाम् ॥

अन्वयः

असद्बलेन, नित्यम् उत्थानात् प्रज्ञया पौरुषेण वै वित्तम् आप्नोति, सम्यक् प्रशंसां न एव लभते, न (च) महाकुलानां वृत्तम् आप्नोति।

भावार्थः

संस्कृतम्– मनुष्यः दुष्टेन उपायेन, निरन्तरश्रमेण, प्रज्ञया, पौरुष्येण च महत् धनं तु प्राप्तुं शक्नोति। परन्तु एतेन धनेन न वा यशः न वा उत्तमकुलानां वृत्तं प्राप्तुं शक्नोति। अतः धर्मोपायेन धनम् अर्जयेत् इति भावः।

हिन्दी– मनुष्य बुरे उपायों से निरन्तर उद्योग, बुद्धि और पौरुष्य से, चाहे निश्चय ही धन प्राप्त कर लेवे परन्तु इस धन से न तो यश को प्राप्त कर सकता है और न ही बड़े घरों की मान-मर्यादा को प्राप्त कर पाता है। अतः सन्मार्ग एवं सदुद्देश्य से धन का अर्जन करना चाहिए।

आंग्लम्– A man may earn wealth with continuous efforts, intelligence and hard work but if the means are bad, then he neither gets proper appreciation nor begets the character befitting noble families.

सम्बद्धाः श्लोकाः

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद्वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ॥ *(सु.र.भा. 87.8)*

यद्धनं यज्ञशीलानां देवत्वं तद्विदुर्बुधाः।
अयज्वनां तु यद्वित्तमासुरत्वं तदुच्यते ॥ *(मनु. 11.20)*

नाददीत नृपः साधुर्महापातकिनो धनम्।
आददानस्तु तल्लोभात्तेन दोषेण लिप्यते ॥ *(मनु. 12.43)*

67. शान्तिं नेच्छन्ति वै भिन्नाः

श्लोकः

न वै भिन्ना जातु चरन्ति धर्मम्
न वै सुखं प्राप्नुवन्तीह भिन्नाः।
न वै भिन्ना गौरवं प्राप्नुवन्ति
न वै भिन्ना प्रशमं रोचयन्ति ॥ 4.56 ॥

पदच्छेदः

न वै भिन्नाः जातु चरन्ति धर्मम्
न वै सुखम् प्राप्नुवन्ति इह भिन्नाः।
न वै भिन्नाः गौरवम् प्राप्नुवन्ति
न वै भिन्नाः प्रशमम् रोचयन्ति ॥

अन्वयः

भिन्नाः जनाः जातु धर्मं न चरन्ति। भिन्ना वै इह सुखं न प्राप्नुवन्ति। भिन्नाः गौरवं न वै प्राप्नुवन्ति। भिन्नाः न वै प्रशमं रोचयन्ति।

भावार्थः

संस्कृतम्– भेदभावयुक्ताः न धर्मम् आचरन्ति, न सुखं प्राप्नुवन्ति, न वा सम्मानं प्राप्नुवन्ति। एते न कदापि शान्तिम् इच्छन्ति।

हिन्दी– भेद को प्राप्त हुए मनुष्य न धर्म का आचरण करते हैं, न सुख को प्राप्त करते हैं और न ही गौरव को प्राप्त करते हैं। ऐसे मनुष्य कभी भी शान्ति नहीं चाहते।

आंग्लम्– Disintegrated people do not observe Dharma. They neither get happiness nor earn any fame. Such people have no liking for peace.

सम्बद्धैः श्लोकैः

न वै तेषां स्वदते पथ्यमुक्तं,
योगक्षेमं कल्पते नैव तेषाम्।
भिन्नानां वै मनुजेन्द्रपरायणं,
न विद्यते किञ्चिदन्यद् विनाशात् ॥ *(विदुर. 4.57)*
स्वास्तीर्णानि शयनानि प्रपन्ना
न वै भिन्ना जातु निद्रां लभन्ते। *(विदुर. 4.55/1)*

68. ऐक्येन प्रवर्धन्ते

श्लोकः

अन्योन्यसमुपष्टम्भात् अन्योन्यापाश्रयेण च।
ज्ञातयः सम्प्रवर्धन्ते सरसीवोत्पलान्युत ॥ 4.65 ॥

पदच्छेदः

अन्योन्य-सम्-उपष्टम्भात् अन्योन्य-अपाश्रयेण च।
ज्ञातयः सम्-प्र-वर्धन्ते सरसि इव उत्पलानि उत ॥

अन्वयः

ज्ञातयः अन्योन्यसमुपष्टम्भात् उत अन्योन्य–अपाश्रयेण च सरसि उत्पलानि इव सम्प्रवर्धन्ते।

भावार्थः

संस्कृतम्– ज्ञातयः परस्पराश्रयेण, परस्परसाहाय्येन च यथा तडागे पद्मानि विकसन्ति तथा विकासं प्राप्नुवन्ति।

हिन्दी– सम्बन्धी जन एक दूसरे के सहारे से और एक दूसरे के सहयोग से तालाब में खिले कमलों के समान वृद्धि को प्राप्त होते हैं।

आंग्लम्– Like the blooming lotuses in a pond the relatives progress only with the help and cooperation of one another.

सम्बद्धाः श्लोकाः

अथ ये संहिता वृक्षाः संघशः सुप्रतिष्ठिताः।
ते हि शीघ्रतमान् वातान् सहन्तेऽन्योन्यसंश्रयात् ॥ *(विदुर. 4.63)*

धूमायन्ते व्यपेतानि ज्वलन्ति सहितानि च।
धृतराष्ट्रोल्मुकानीव ज्ञातयो भरतर्षभ ॥ *(विदुर. 4.60)*

महानप्येकजो वृक्षो बलवान् सुप्रतिष्ठितः।
प्रसह्य एव वातेन सस्कन्धो मर्दितुं क्षणात् ॥ *(विदुर. 4.62)*

एवं मनुष्यमप्येकं गुणैरपि समन्वितम्।
शक्यं द्विषन्तो मन्यन्ते वायुर्द्रुममिवैकजम् ॥ *(विदुर. 4.64)*

दायादानामैकमत्यं राज्ञः श्रेयस्करं परम्।
पृथग्भावो विनाशाय राज्यस्य च कुलस्य च ॥ *(शुक्र. 1/344–345)*

69. षडेते आयुष्यनाशकाः

श्लोकः

अतिमानोऽतिवादश्च तथाऽत्यागो नराधिप
क्रोधश्चात्मविधित्सा च मित्रद्रोहश्च तानि षट् ।
एत एवासयस्तीक्ष्णाः कृन्तन्त्यायूंषि देहिनाम्
एतानि मानवान् घ्नन्ति न मृत्युर्भद्रमस्तु ते ॥ 5/10.11 ॥

पदच्छेदः

अतिमानः अतिवादः च तथा अत्यागः नराधिप
क्रोधः च आत्म-विधित्सा च मित्र-द्रोहः च तानि षट् ।
एते एव असयः तीक्ष्णाः कृन्तन्ति आयूंषि देहिनाम्
एतानि मानवान् घ्नन्ति न मृत्युः भद्रम् अस्तु ते ॥

अन्वयः

नराधिप ! अतिमानः, अतिवादः तथा अत्यागः, क्रोधः च आत्मविधित्सा च मित्रद्रोहः च तानि षट्, एते एव तीक्ष्णाः असयः देहिनाम् आयूंषि कृन्तन्ति, एतानि मानवान् घ्नन्ति न मृत्युः । ते भद्रम् अस्तु ।

भावार्थः

संस्कृतम्– अभिमानः, अधिकभाषणं, त्यागहीनता, क्रोधः, स्वार्थचिन्ता, मित्रदोहः इति एते षट् खड्गाः भवन्ति, ये च मनुष्यस्य आयुः नाशयन्ति । वस्तुतः मनुष्यम् एते एव दुर्गुणाः मारयन्ति, न तु मृत्युः ।

हिन्दी– हे राजन् ! अभिमान, बहुत अधिक बोलना, त्याग न करना, क्रोध, अपने ही पालन पोषण की इच्छा, मित्र से द्रोह ये छः ही तेज तलवारें हैं जो मनुष्यों की आयु को काटती रहती हैं । वस्तुतः ये ही मनुष्यों को मारती हैं न कि मृत्यु । अतः तुम्हारा कल्याण हो ।

आंग्लम्– O King ! conceit, talkativeness, absence of sacrifice, anger, looking after one's own interests only, deceiving the friends – these are the six swords that keep on cutting the age of men. In fact these are the vices that kill the men and not death. So let welfare be to you.

सम्बद्धाः श्लोकाः

अतिवादांस्तितिक्षेत नावमन्येत कञ्चन ।
न चेमं देहमाश्रित्य वैरं कुर्वीत केनचित् ॥ *(मनु. 6.47)*

क्रुध्यन्तं न प्रतिक्रुध्येदाक्रुष्टः कुशलं वदेत् ।
सप्तद्वारावकीर्णां च न वाचमनृतां वदेत् ॥ *(मनु. 6.48)*

धनलुब्धो ह्यसन्तुष्टोऽनियतात्माऽजितेन्द्रियः ।
सर्वा एवापदस्तस्य यस्य तुष्टं न मानसम् ॥ *(हितो. मि.ला. 143)*

70. यत्नेन स्वराष्ट्रं रक्षेत्

श्लोकः

य एव यत्नः क्रियते परराष्ट्रविमर्दने।
स एव यत्नः कर्तव्यः स्वराष्ट्रपरिपालने ॥ 2.30 ॥

पदच्छेदः

यः एव यत्नः क्रियते पर-राष्ट्र-विमर्दने।
सः एव यत्नः कर्तव्यः स्व-राष्ट्र-परिपालने ॥

अन्वयः

यः यत्नः परराष्ट्रविमर्दने क्रियते स एव यत्नः स्वराष्ट्रपरिपालने कर्तव्यः।

भावार्थः

संस्कृतम्– इतरराष्ट्राणां नाशाय यादृशः प्रयत्नः क्रियते, तादृशः प्रयत्नः स्वराष्ट्रस्य रक्षणाय अपि करणीयः।

हिन्दी– जो प्रयत्न एक राजा दूसरे के राज्य को नष्ट करने के लिये करता है वही प्रयत्न उसे अपने राज्य की रक्षा करने के लिये करना चाहिये।

आंग्लम्– The efforts that are made for the destruction of another's kingdom should in fact be put in for the protection of one's own kingdom.

सम्बद्धाः श्लोकाः

धर्मेण राज्यं विन्देत धर्मेण परिपालयेत्,
धर्ममूलां श्रियं प्राप्य न जहाति न हीयते ॥ *(विदुर. 2.31)*

निर्भयं तु भवेद्यस्य राष्ट्रं बाहुबलाश्रितम्।
तस्य तद्वर्धते नित्यं सिच्यमान इव द्रुमः ॥ *(मनु. 1/255)*

प्रज्ञां संरक्षति नृपः सा वर्धयति पार्थिवम्।
वर्धनाद्रक्षणं श्रेयस्तदभावे सदप्यसत् ॥ *(हितो.विग्रहः 3)*

प्रजापीडनसंतापात्समुद्भूतो हुताशनः।
राज्ञः कुलं श्रियं प्राणान्नादग्ध्वा विनिवर्तते ॥ *(सु.र.भा. 151.123)*

नृपस्य परमो धर्मः प्रजानां परिपालनम्।
दुष्टनिग्रहणं नित्यं न नीत्याऽतो विना ह्युभे ॥ *(शुक्र. 1.14)*

❖❖❖

अभ्यासः - 14

[श्लोकसङ्ख्या 66-70]

प्राप्नोति वै वित्तमसद्बलेन
नित्योत्थानात् प्रज्ञया पौरुषेण।
न त्वेव सम्यग् लभते प्रशंसां
न वृत्तमाप्नोति महाकुलानाम् ॥ 4.21 ॥

न वै भिन्ना जातु चरन्ति धर्मम्
न वै सुखं प्राप्नुवन्तीह भिन्नाः।
न वै भिन्ना गौरवं प्राप्नुवन्ति
न वै भिन्ना प्रशमं रोचयन्ति ॥ 4.56 ॥

अन्योन्यसमुपष्टम्भात् अन्योन्यापाश्रयेण च।
ज्ञातयः सम्प्रवर्धन्ते सरसीवोत्पलान्युत ॥ 4.65 ॥

अतिमानोऽतिवादश्च तथाऽत्यागो नराधिप
क्रोधश्चात्मविधित्सा च मित्रद्रोहश्च तानि षट्।
एत एवासयस्तीक्ष्णाः कृन्तन्त्यायूंषि देहिनाम्
एतानि मानवान् घ्नन्ति न मृत्युर्भद्रमस्तु ते ॥ 5/10.11 ॥

य एव यत्नः क्रियते परराष्ट्रविमर्दने।
स एव यत्नः कर्तव्यः स्वराष्ट्रपरिपालने ॥ 2.30 ॥

1. रिक्तस्थानानि पूरयत–
[रिक्तस्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. यः असत्यस्य शक्त्या धनं प्राप्नोति स सम्यग् .... न लभते, महाकुलानाम् .... न आप्नोति।

ii. भिन्नाः जनाः इह सुखं न ....। भिन्नाः जनाः प्रशमं न ....।

iii. सरसि उत्पलानि इव ज्ञातयः ....।

iv. षड् तीक्ष्णाः खड्गाः मनुष्याणाम् आयूंषि .... एतानि एव मानवान् ....।

v. यः यत्नः परराष्ट्रविमर्दने .... स एव यत्नः .... कर्तव्यः ॥

2. एकेन पदेन उत्तरं लिखत–
[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. यः कुसाधनैः अधिकं धनं प्राप्नोति सः केषां वृत्तं न आप्नोति ? ....

ii. भिन्नाः जनाः कदापि किं न चरन्ति ? .... ।

iii. भिन्नाः जनाः किं न रोचयन्ति ? .... ।

iv. श्लोके कमलशब्दस्य प्रयुक्तः पर्यायः कः ? .... ।

v. 'मारयति' इत्यर्थे प्रयुक्तं क्रियापदं किम् ? .... ।

3. **यथोचितं सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत –**
[यथोचित सन्धि या सन्धिविच्छेद करें। Either euphonically join or disjoin as required.]

i.	असत्	+	बलेन			=	....
ii.	नित्य	+	....			=	नित्योत्थानात्
iii.	तु	+	....			=	त्वेव
iv.	....	+	इह			=	प्राप्नुवन्तीह
v.	अन्योन्य	+	अपाश्रयेण			=	....
vi.	सरसि	+	उत्पलानि			=	....
vii.	अतिमानः	+	....			=	....
viii.	तथा	+	....			=	तथात्यागः
ix.	क्रोधः	+	च	+	आत्म	=	....
x.	मित्रद्रोहः	+	....			=	मित्रद्रोहश्च
xi.	एव	+	असयः	+	तीक्ष्णाः	=	....
xii.	कृन्तन्ति	+	....			=	कृन्तन्त्यायूंषि
xiii.	मृत्युः	+	भद्रम्			=	....
xiv.	नर	+	अधिपः			=	....

4. **पूर्णेन वाक्येन उत्तरयत–**
[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. कः सम्यक् प्रशंसां न लभते ?

.... ।

ii. कीदृशाः जनाः शान्तिं न इच्छन्ति ?

.... ।

iii. बान्धवाः कस्मात् केन च समुपवर्धन्ते ?

.... ।

vi. कति तीक्ष्णाः असयः ? तेषां नामानि लिखत ?

.... ।

vii. कानि षट् मनुष्यस्य आयुः कृन्तन्ति ?

.... ।

5. यथोचितं क्रियापदं योजयत–

[यथोचित क्रियापद को जोड़ें। Add the verbal form appropriately.]

कर्तव्याः, लभन्ते, हन्ति, क्रियन्ते, प्राप्नोति, कृन्तति, सम्प्रवर्धन्ते

i. असद्बलेन धनं प्राप्य नराः प्रशंसां न .... ।

ii. भिन्नाः जनाः गौरवं न .... ।

iii. अन्योन्यस्य अपाश्रयेण बन्धुजनाः .... ।

iv. तीक्ष्णः खड्गः देहिनाम् आयूंषि .... ।

v. क्रोधः एव मानवं .... ।

vi. ये यत्नाः परराष्ट्रविमर्दने .... ।

vii. ते यत्नाः स्वराष्ट्ररक्षणे .... ।

7. अधोलिखितेषु रेखाचित्रेषु रिक्तस्थानानि पूरयत–

[अधोलिखित रेखाचित्रों में रिक्तस्थानों की पूर्ति करें। Fill in the blanks on the following sketches.]

I.

भिन्नाः जनाः

.... न चरन्ति ।

.... न प्राप्नुवन्ति ।

.... न प्राप्नुवन्ति ।

.... न रोचयन्ति ।
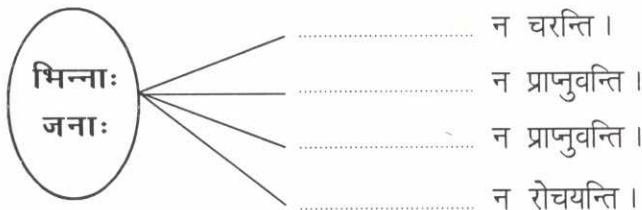
II.
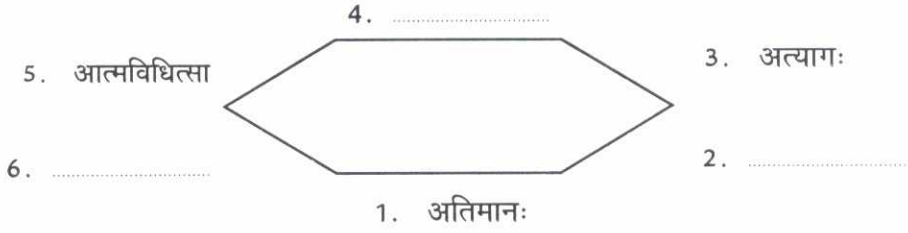
7. **भिन्नं पदं चिनुत–**
[भिन्न पद को लिखें। Write the odd-word.]

I. भिन्नाः, उत्पलानि, आयुः, असयः – .... ।
II. ज्ञातयः, प्रज्ञया, ते, एतानि – .... ।
III. राजनि, नराधिपे, सरसि, पुरुषे – .... ।
IV. देहिनाम्, राज्ञाम्, महाकुलानाम्, मानवान् – .... ।
V. सम्यग्, असद्बलेन, वृत्तेन, पौरुषेण – .... ।

योग्यताविस्तरः

I. हन् धातोः रूपाणि लट् लकारे एवं भवन्ति–

पुरुषः	एक.	द्वि.	बहु.
प्रपु.	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
मपु.	हंसि	हथः	हथ
उपु.	हन्मि	हन्वः	हन्मः

II. प्र + आप् धातोः रूपाणि लट् लकारे एवं भवन्ति–

पुरुषः	एक.	द्वि.	बहु.
प्रपु.	प्राप्नोति	प्राप्नुतः	प्राप्नुवन्ति
मपु.	प्राप्नोषि	प्राप्नुथः	प्राप्नुथ
उपु.	प्राप्नोमि	प्राप्नुवः	प्राप्नुमः

III. वृध् धातोः आत्मनेपदिरूपाणि सन्ति–

पुरुषः	एक.	द्वि.	बहु.
प्रपु.	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
मपु.	वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे
उपु.	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे

71. अनीत्या राज्यनाशः

श्लोकः

पितृपैतामहं राज्यं प्राप्तवान् स्वेन कर्मणा।
वायुरभ्रमिवासाद्य भ्रंशयत्यनये स्थितः ॥ 2.27 ॥

पदच्छेदः

पितृ-पैतामहम् राज्यम् प्राप्तवान् स्वेन कर्मणा।
वायुः अभ्रम् इव आसाद्य भ्रंशयति अनये स्थितः ॥

अन्वयः

अनये स्थितः पितृपैतामहं राज्यं प्राप्तवान्, स्वेन कर्मणा (एव) अभ्रम् आसाद्य वायुः इव भ्रंशयति।

भावार्थः

संस्कृतम्– (यथा वायुः मेघं शिथिलं करोति तथा) परम्परागतं राज्यम् अनीत्याश्रयणेन नष्टं भवति। परम्परया प्राप्तं राज्यं नीतिमार्गेण रक्षेदिति भावः।

हिन्दी– कुलपरम्परा से प्राप्त राज्य भी अनीति का आश्रय लेने वाला राजा अपने कार्यों से ऐसे ही नष्ट कर देता है जैसे वायु मेघ को पाकर उसे अपने वेग से छिन्न–भिन्न कर देती है।

आंग्लम्– Having obtained the ancestral kingdom, a king taking refuge in bad policies, gets it destroyed by his deeds just as a strong wind overcoming a weak cloud, tears it away.

सम्बद्धाः श्लोकाः

धर्ममाचरतो राज्ञः सद्भिश्चरितमादितः।
वसुधा वसुसम्पूर्णा वर्धते भूतिवर्धिनी ॥ *(विदुर. 2.28)*

यत्र वर्जयते राजा पापकृद्भ्यो धनागमम्।
तत्र कालेन जायन्ते मानवा दीर्घजीविनः ॥ *(मनु. 1.246)*

राज्ञि धर्मिणि धर्मिष्ठाः पापे पापाः समे समाः।
लोकास्तमनुवर्तन्ते यथा राजा तथा प्रजाः ॥ *(चाणक्य. 13.7)*

राजमूला महाबाहो योगक्षेमसुवृष्टयः।
प्रजासु व्याधयश्चैव मरणं च भयानि च ॥ *(महा.शान्ति 141.9)*

यदि न स्यान्नरपतिः सम्यङ् नेता ततः प्रजा।
अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव ॥ *(शुक्र. 1.65)*

72. चारचक्षुः भवेत् नृपः

श्लोकः

गन्धेन गावः पश्यन्ति वेदैः पश्यन्ति ब्राह्मणाः।
चारैः पश्यन्ति राजानश्चक्षुर्भ्यामितरे जनाः ॥ 2.34 ॥

पदच्छेदः

गन्धेन गावः पश्यन्ति वेदैः पश्यन्ति ब्राह्मणाः।
चारैः पश्यन्ति राजानः चक्षुर्भ्याम् इतरे जनाः ॥

अन्वयः

गावः गन्धेन पश्यन्ति। ब्राह्मणाः वेदैः पश्यन्ति, राजानः चारैः पश्यन्ति। इतरे जनाः चक्षुर्भ्यां (पश्यन्ति)।

भावार्थः

संस्कृतम्– गावः तृणादिकं गन्धेन पश्यन्ति (अभिजानन्ति)। ब्राह्मणाः वेदैः पश्यन्ति (कार्याकार्यज्ञानं प्राप्नुवन्ति)। राजानः गुप्तचरैः पश्यन्ति (स्वराष्ट्रस्य शत्रुराष्ट्रस्य च स्थितिम् अवगच्छन्ति)। सामान्यजनाः एव नेत्राभ्यां पश्यन्ति।

हिन्दी– गौएँ गन्ध से (अपने भोजन को) पहचान लेती हैं। ब्राह्मण वेदों के द्वारा कार्य और अकार्य को जान लेते हैं। राजा गुप्तचरों के माध्यम से शत्रु की गतिविधि को देख पाते हैं। शेष सामान्य जन ही इन आंखों से देखते हैं।

आंग्लम्– Cows recognize (their foood) by smell. Brahmins discriminate (between good and bad deeds) with the help of Vedic scriptures. Kings perceive (the activities of the enemies) through their spies. It is only the ordinary men that see through eyes.

सम्बद्धाः श्लोकाः

द्विविधांस्तस्करान्विद्यात्परद्रव्यापहारकान्।
प्रकाशांश्चाप्रकाशांश्च चारचक्षुर्महीपतिः ॥ *(मनु. 9.256)*

भवेत्स्वपरराष्ट्राणां कार्याकार्यविलोकने।
चारचक्षुर्महीभर्तुर्यस्य नास्त्यन्ध एव सः ॥ *(हितो. विग्रहः 34)*

चारैः स्वदुर्गुणं ज्ञात्वा लोकतः सर्वदा नृपः।
सुकीर्त्यै सन्त्यजेन्नित्यं, नावमन्येत वै प्रजाः ॥ *(शुक्र. 133.134)*

73. अपृष्टोऽपि हितं ब्रूयात्

श्लोकः

शुभं वा यदि वा पापं द्वेष्यं वा यदि वा प्रियम्।
अपृष्टस्तस्य तद् ब्रूयाद् यस्य नेच्छेत् पराभवम् ॥ 2.4 ॥

पदच्छेदः

शुभम् वा यदि वा पापम् द्वेष्यम् वा यदि वा प्रियम्।
अपृष्टः तस्य तत् ब्रूयात् यस्य न इच्छेत् पराभवम् ॥

अन्वयः

यस्य पराभवं न इच्छेत् अपृष्टः तस्य शुभं वा यदि पापं वा, द्वेष्यं वा यदि प्रियं वा तद् ब्रूयात्।

भावार्थः

संस्कृतम्– यस्य पराजयः नेष्यते, सः न पृच्छति चेदपि शुभं, पापं, प्रियम्, अप्रियम् इति सर्वं स्पष्टं वदेत्। अर्थात् तेन अपृष्टः अपि तस्य रुचिरम् अरुचिरं प्रियम् अप्रियं सर्वम् अपि अवश्यं वदेत्।

हिन्दी– (हे राजन् !) जो व्यक्ति जिस पुरुष की पराजय अथवा हानि न चाहे, उसको बिना पूछे ही अच्छी, बुरी, प्रिय अथवा अप्रिय बात भी यथावत् स्पष्ट रूप से बता देवे।

आंग्लम्– O King ! A person who does not seek other person's loss or defeat should, even without being asked, tell him frankly the fact even if it is good or bad, pleasant or unpleasant.

सम्बद्धाः श्लोकाः

यस्य चाप्रियमिच्छेत् तस्य ब्रूयात् सदा प्रियम्।
व्याधो मृगवधं कर्तुं गीतं गायति सुस्वरम् ॥ *(चाणक्य. 14.10)*

अपृष्टोऽपि हितं ब्रूयाद्यस्य नेच्छेत्पराभवम्।
एष एव सतां धर्मो विपरीतमतोऽन्यथा ॥ *(हितो.सु.भेदः 140)*

यदा यदुचितं कर्त्तुं वक्तुं वा तत् प्रबोधयन्।
तद्वक्ति कुरुते द्राक् तु स सद्भृत्यः सुपूज्यते ॥ *(शुक्र. 2.207)*

74. अप्रियपथ्यवक्ता दुर्लभः

श्लोकः

सुलभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥ 5/15 ॥

पदच्छेदः

सुलभाः पुरुषाः राजन् ! सततम् प्रियवादिनः ।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥

अन्वयः

राजन् ! सततं प्रियवादिनः पुरुषाः सुलभाः, अप्रियस्य पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ।

भावार्थः

संस्कृतम्– राजन् ! लोके सर्वदा ये प्रियमेव वदन्ति तादृशाः सुलभतया प्राप्यन्ते । परन्तु अप्रियं हितं वदन्तः, शृण्वन्तः च न लभ्यन्ते ।

हिन्दी– हे राजन् ! निरन्तर प्रिय बोलने वाले मनुष्य तो मिलने आसान हैं, परन्तु कड़वे और हितकारी वचन कहने और सुनने वाले दोनों ही प्रकार के मनुष्य दुर्लभ होते हैं।

आंग्लम्– O King ! Easily available are those people who always speak pleasant words but rare indeed are the speakers and listeners of bitter but beneficial advice.

सम्बद्धाः श्लोकाः

अप्रियस्यापि पथ्यस्य परिणामः सुखावहः ।
वक्ता श्रोता च यत्रास्ति रमन्ते तत्र सम्पदः ॥ *(हितो. सु. भे. 135)*

सुहृदां हितकामानां यः शृणोति न भाषितम् ।
विपत्संनिहिता तस्य स नरः शत्रुनन्दनः ॥ *(सु.र.भा. 169.446)*

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः । *(किरात. 2)*

75. अनिद्राकारणानि

श्लोकः

अभियुक्तं बलवता दुर्बलं हीनसाधनम् ।
हृतस्वं कामिनं चौरम् आविशन्ति प्रजागराः ॥ 1.13 ॥

पदच्छेदः

अभियुक्तम् बलवता दुर्बलम् हीन-साधनम् ।
हृतस्वम् कामिनम् चौरम् आविशन्ति प्रजागराः ॥

अन्वयः

दुर्बलं हीनसाधनं बलवता अभियुक्तं हृतस्वं कामिनं चौरं प्रजागराः आविशन्ति ।

भावार्थः

संस्कृतम्– दुर्बलः, साधनहीनः, चोरः, कामी, यश्च बलिष्ठेन युद्ध्यते– एते निद्रां न प्राप्नुवन्ति।

हिन्दी– बलहीन, साधनरहित, बलवान के साथ लड़ाई करने वाले को और जिसका धन चुरा लिया गया है उसको, कामी मनुष्य को और चोर को नींद नहीं आती।

आंग्लम्– A weak person, a person devoid of any means, a person who is involved in a clash with a powerful person, a person whose belongings have been stolen, a person affected by lust and a thief always suffer from sleeplessness.

सम्बद्धाः श्लोकाः

जागर्त्ति च सचिन्तो य आधिव्याधिनिपीडितः।
जारश्चोरो बलिद्विष्टो विषयी धनलोलुपः॥ *(आकरः)*

कुसहायी कुनृपतिर्भिन्नामात्यसुहृत्प्रजः।
कुर्य्याद्यथा समीक्ष्यैतत् सुखं स्वप्याच्चिरं नरः॥ *(शुक्र. 3/157-158)*

❖❖❖

अभ्यासः - 15

[श्लोकसङ्ख्या 71-75]

पितृपैतामहं राज्यं प्राप्तवान् स्वेन कर्मणा।
वायुरभ्रमिवासाद्य भ्रंशयत्यनये स्थितः ॥ 2.27 ॥

गन्धेन गावः पश्यन्ति वेदैः पश्यन्ति ब्राह्मणाः।
चारैः पश्यन्ति राजानश्चक्षुर्भ्यामितरे जनाः ॥ 2.34 ॥

शुभं वा यदि वा पापं द्वेष्यं वा यदि वा प्रियम्।
अपृष्टस्तस्य तद् ब्रूयाद् यस्य नेच्छेत् पराभवम् ॥ 2.4 ॥

सुलभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥ 5/15 ॥

अभियुक्तं बलवता दुर्बलं हीनसाधनम्।
हृतस्वं कामिनं चौरम् आविशन्ति प्रजागराः ॥ 1.13 ॥

1. **रिक्तस्थानानि पूरयत–**
[रिक्तस्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. पितृपैतामहं .... प्राप्तवान्, अनये .... भ्रंशयति वायुः .... आसाद्य इव।

ii. गावः .... पश्यन्ति, ब्राह्मणाः .... पश्यन्ति, राजानः .... पश्यन्ति, इतरे जनाः .... पश्यन्ति।

iii. अपृष्टः, यस्य .... न इच्छेत्, तस्य यदि शुभं वा पापं वा, यदि द्वेष्यं वा प्रियं वा, तत् ब्रूयात् ॥

iv. राजन् ! सततं .... पुरुषाः सुलभाः। अप्रियस्य तु पथ्यस्य ...., ..., श्रोता च दुर्लभः ॥

v. प्रजागराः बलवता अभियुक्तं ...., हीनसाधनं, ..., कामिनं, चौरं च आविशन्ति ॥

2. एकेन पदेन उत्तरं लिखत–
[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. कस्मिन् स्थितः राजा राज्यं नाशयति ? ....
ii. राजानः कैः पश्यन्ति ? ....
iii. सामान्यजनाः काभ्यां पश्यन्ति ? ....
iv. कीदृशाः पुरुषाः सुलभाः ? ....
v. 'निद्रायाः अभावः' इति कस्य पदस्य अर्थः ? ....
vi. ब्राह्मणाः कैः पश्यन्ति ? ....
vii. कीदृशस्य पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ? ....
viii. गावः केन पश्यन्ति ? ....

3. यथोचितं सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत –
[यथोचित सन्धि या सन्धिविच्छेद करें। Either euphonically join or disjoin as required.]

i.	वायुः	+	....	=	वायुरभ्रम्
ii.	इव	+	....	=	इवासाद्य
iii.	भ्रंशयति	+	अनये	=	....
iv.	राजानः	+	चक्षुर्भ्याम्	=	....
v.	....	+	तस्य	=	अपृष्टस्तस्य
vi.	....	+	....	=	नेच्छेत्
vii.	....	+	हीनसाधनम्	=	दुर्बलं हीनसाधनम्

4. पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–
[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. कीदृशं राज्यं प्राप्तवान् ?

.... ।

ii. वायुः कं भ्रंशयति ?

.... ।

iii. यदि कस्यचित् पराभवः न इष्यते तर्हि अपृष्टः अपि किं ब्रूयात् ?

.... ।

iv. यः बलवता सह विरोधं करोति, तं के आविशन्ति ?

.... ।

v. कीदृशस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ?

.... ।

5. **भिन्नं पदं चिनुत–**
[भिन्न पद को लिखें। Write the odd-word.]

i. बलवता, गन्धेन, कर्मणा, प्रियवादिनः – .... ।

ii. अभ्रम्, प्रियवादिना, हृतस्वं, पराभवम् – .... ।

iii. गावः, वक्ता, प्रजागराः, चारैः – .... ।

iv. अनये, अप्रियस्य, पथ्यस्य, राज्ञः – .... ।

v. श्रोता, दुर्लभः, अपृष्टः, राजन् – .... ।

6. **के केन पश्यन्ति इति यथोचितं मेलनं कुरुत–**
[कौन किससे देखता है यथोचित मेल करें। Match the following properly.]

i.	गावः	क.	चारैः
ii.	ब्राह्मणाः	ख.	चक्षुर्भ्याम्
iii.	राजानः	ग.	वेदैः
iv.	इतरे जनाः	घ.	गन्धेन

7. **प्रजागराः कम् आविशन्ति इति रेखाचित्रे पूरयत–**

[अनिद्रा कहाँ-कहाँ प्रवेश करती है रेखाचित्र में पूर्ण करें। Where does the sleeplessness enter, write in the sketch.]
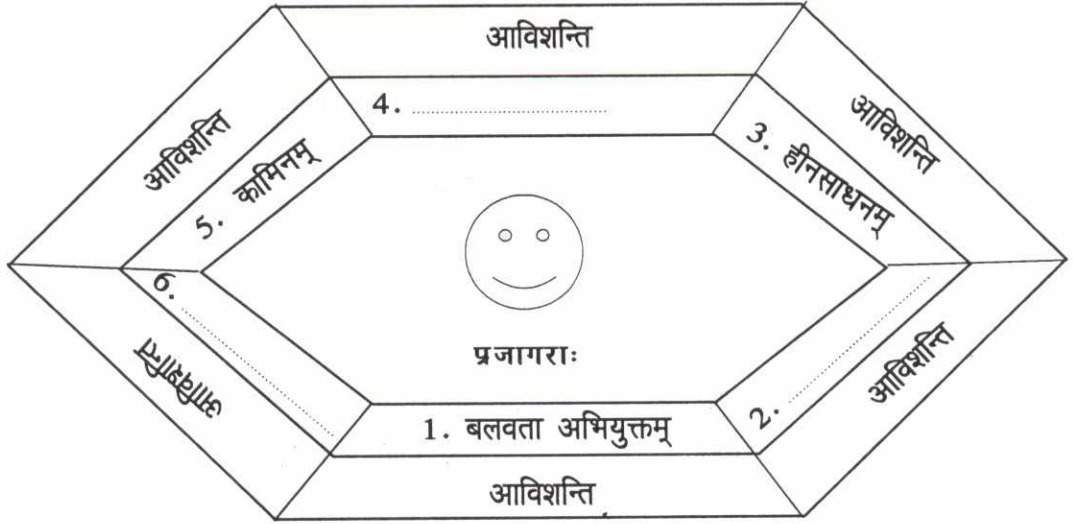
8. **वाच्यं परिवर्तयत–**

[वाच्य परिवर्तन करें। Change the voice.]

i. ते राज्यं प्राप्तवन्तः। .... ।

ii. गौः गन्धेन पश्यति। .... ।

iii. राजा चारैः पश्यति। .... ।

iv. प्रजागरः चौरम् आविशति। .... ।

v. वायवः अभ्रं भ्रंशयन्ति। .... ।

9. **विलोमपदानि मेलयत–**

[विलोम पद को मिलाएँ। Match the opposite word.]

i.	प्रियस्य	क.	पापम्
ii.	अपृष्टः	ख.	निद्रा
iii.	सुलभः	ग.	पृष्टः
iv.	पुण्यम्	घ.	अप्रियस्य
v.	द्वेष्यम्	ङ.	दुर्लभः
vi.	प्रजागरः	च.	प्रियम्

योग्यताविस्तरः

I. क्त / क्तवतु प्रत्यययोः कानिचन उदाहरणानि –

		क्तवतुप्रत्ययः (कर्तरि)	क्तप्रत्ययः (कर्मणि)
पुंल्लिङ्गे	–	सः राज्यं प्राप्तवान्।	तेन राज्यं प्राप्तम्।
स्त्रीलिङ्गे	–	सा पुस्तकं पठितवती।	तया पुस्तकं पठितम्।
नपुंसकलिङ्गे	–	मम मित्रं फलं भुक्तवत्।	मम मित्रेण फलं भुक्तम्।

II. **उपपदतत्पुरुषः–**

प्रियं वदति इति *प्रियवादिन्* जलं ददाति इति *जलदः*

सत्यं वदति इति *सत्यवादिन्* जले जायते इति *जलजम्*

मनः हरति इति *मनोहरः* भुवं पाति इति *भूपः*

स्वर्णं करोति इति *स्वर्णकारः* पादाभ्याम् पिबति इति *पादपः*

III. **कर्मन्(नपुं.)शब्दस्य रूपाणि –**

	एक.	द्वि.	बहु.
प्र.	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
द्विती.	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
तृ.	कर्मणा	कर्मभ्याम्	कर्मभिः
च.	कर्मणे	कर्मभ्याम्	कर्मभ्यः
प.	कर्मणः	कर्मभ्याम्	कर्मभ्यः
ष.	कर्मणः	कर्मणोः	कर्मणाम्
स.	कर्मणि	कर्मणोः	कर्मसु
सम्बो.	हे कर्मन्	हे कर्मणी	हे कर्माणि

76. कृतम् आख्याति पण्डितम्

श्लोकः

यस्य कृत्यं न जानन्ति मन्त्रं वा मन्त्रितं परे।
कृतमेवास्य जानन्ति स वै पण्डित उच्यते ॥ 1.23 ॥

पदच्छेदः

यस्य कृत्यम् न जानन्ति मन्त्रम् वा मन्त्रितम् परे।
कृतम् एव अस्य जानन्ति सः वै पण्डितः उच्यते ॥

अन्वयः

यस्य कृत्यं, मन्त्रं वा मन्त्रितं परे न जानन्ति, अस्य कृतमेव जानन्ति, स वै पण्डितः उच्यते।

भावार्थः

संस्कृतम्– यस्य पुरुषस्य करणीयं कार्यं, विचारं, विचारितं विषयं वा शत्रवः न जानन्ति, केवलं तेन कृतं कार्यमेव जानन्ति, तादृशः एव पण्डितः इति उच्यते। इयं नीतिः विशिष्य राज्ञां विषयिणी भवति। राजा स्वकृत्यं, मन्त्रणां, मन्त्रितविषयान् गूढं रक्षेत् इति सारः।

हिन्दी– जिस व्यक्ति के करणीय कार्यों को, विचार या निश्चित की गई योजना को शत्रु नहीं जान पाते, केवल इसके द्वारा किये गये कार्यों को ही जानते हैं, वही निश्चय से पण्डित कहलाता है।

आंग्लम्– Learned indeed is that person whose achievable targets, ideas and future plans are not known by the enemies. They only come to know what has been done.

सम्बद्धाः श्लोकाः

मनसा चिन्तितं कार्यं वाचा नैव प्रकाशयेत्।
मन्त्रेण रक्षयेद् गूढं, कार्ये चापि नियोजयेत् ॥ *(चाणक्य. 2.7)*

यस्य मन्त्रं न जानन्ति समागम्य पृथग्जनाः।
स कृत्स्नां पृथिवीं भुङ्क्ते, कोशहीनोऽपि पार्थिवः ॥ *(मनु. 7.148)*

77. गूढमन्त्रः विजयते

श्लोकः

यस्य मन्त्रं न जानन्ति बाह्याश्चाभ्यन्तराश्च ये।
स राजा सर्वतश्चक्षुश्चिरमैश्वर्यमश्नुते ॥ 6.15 ॥

पदच्छेदः

यस्य मन्त्रम् न जानन्ति बाह्याः च आभ्यन्तराः च ये।
सः राजा सर्वतः चक्षुः चिरम् ऐश्वर्यम् अश्नुते॥

अन्वयः

यस्य मन्त्रं ये बाह्याः (च) आभ्यन्तराः च न जानन्ति सः सर्वतः चक्षुः राजा चिरम् ऐश्वर्यमश्नुते।

भावार्थः

संस्कृतम्— यस्य राज्ञः गुप्तयोजनाः सन्निहितैः बाह्यैश्च न ज्ञायन्ते, यः च सर्वेषां क्रियाः गूढं निरीक्षते, तादृशः राजा सदा ऐश्वर्यम् अश्नुते।

हिन्दी— जिसकी गुप्त योजनाओं को बाहर के और भीतर के (दूर रहने वाले और साथ कार्य करने वाले) अन्तरंग मित्र भी नहीं जान पाते वह सब ओर दृष्टि रखने वाला राजा बहुत समय तक ऐश्वर्य का भोग करता है।

आंग्लम्— That king enjoys properly for a long time whose secret plans are not known to outsiders and even to his personal friends and who has an eye over everything.

सम्बद्धाः श्लोकाः

नास्य छिद्रं परो विद्याद्विद्याच्छिद्रं परस्य तु।
गूहेत्कूर्म इवाङ्गानि रक्षेद्विवरमात्मनः॥ *(मनु. 7.105)*

यथैनं नाभिसंदध्युर्मित्रोदासीनशत्रवः।
तथा सर्वं संविदध्यादेष सामासिको नयः॥ *(मनु. 7.180)*

अन्तर्वेश्मनि रात्रौ वा दिवारण्ये विशोधिते।
मन्त्रयेन्मन्त्रिभिः सार्धं भाविकृत्यन्तु निर्जने॥ *(शुक्र. 1.351)*

78. मन्त्रविप्लवः

श्लोकः

एकं विषरसो हन्ति शस्त्रेणैकश्च वध्यते।
सराष्ट्रं सप्रजं हन्ति राजानं मन्त्रविप्लवः॥ 1.50॥

पदच्छेदः

एकम् विषरसः हन्ति शस्त्रेण एकः च वध्यते।
सराष्ट्रम् सप्रजम् हन्ति राजानम् मन्त्र-विप्लवः॥

अन्वयः

विषरसः एकं हन्ति। शस्त्रेण एकः च वध्यते, मन्त्रविप्लवः सराष्ट्रं सप्रजं राजानं हन्ति।

भावार्थः

संस्कृतम्– विषपानेन एक एव म्रियते। शस्त्रेणापि एकस्य एव वधः जायते। परन्तु यस्य राज्ञः गूढयोजनाः प्रकाशिताः भवन्ति, तेन राष्ट्रेण प्रजाभिः सह च राजा प्रणश्यति। अतः राजा मन्त्रितं न प्रकाशयेत्।

हिन्दी– विष का रस केवल एक को ही मारता है, शस्त्र से भी किसी एक का ही संहार किया जाता है परन्तु मन्त्रणीय योजना का प्रकट हो जाना राष्ट्रसहित और प्रजासहित राजा को मार डालता है।

आंग्लम्– The extract of poison kills one person only. Similarly only one person is killed by a weapon but the leakage of future plans kills a king alongwith his subjects and nay even the kingdom.

सम्बद्धाः श्लोकाः

मन्त्रबीजमिदं गुप्तं रक्षणीयं यथा तथा।
मनागपि न भिद्येत तद्भिन्नं न प्ररोहति॥ *(हितो. सु.भे. 145)*

मन्त्रभेदेऽपि ये दोषा भवन्ति पृथिवीपतेः।
न शक्यास्ते समाधातुमिति नीतिविदां मतम्॥ *(सु.र.भा. 153.228)*

79. चत्वारः मन्त्रेण वर्ज्याः

श्लोकः

चत्वारि राज्ञा तु महाबलेन
वर्ज्यान्याहुः पण्डितस्तानि विद्यात्।
अल्पज्ञैः सह मन्त्रं न कुर्यात्
न दीर्घसूत्रैः रभसैश्चारणैश्च॥ 1.74॥

पदच्छेदः

चत्वारि राज्ञा तु महाबलेन
वर्ज्यानि आहुः पण्डितः तानि विद्यात्।
अल्पज्ञैः सह मन्त्रम् न कुर्यात्
न दीर्घसूत्रैः रभसैः चारणैः च॥

अन्वयः

महाबलेन राज्ञा चत्वारि तु वर्ज्यानि आहुः। पण्डितः तानि विद्यात्। अल्पज्ञैः, दीर्घसूत्रैः, रभसैः, चारणैः च सह मन्त्रं न कुर्यात्।

भावार्थः

संस्कृतम्– राज्ञा कैः सह मन्त्रणा न करणीया इति अस्मिन् पद्ये उच्यते। महाबलेन राज्ञा चतुर्भिः सह मन्त्रणा न करणीया। ते च चत्वारः – अल्पज्ञः, दीर्घसूत्री (यः प्रतिकार्यं महता विलम्बेन करोति), रभसः (यः अविचिन्त्य कार्यं कर्तुं त्वरते), चारणः (यः केवलं मुखस्तुतौ रतः) च।

हिन्दी– महापराक्रमी राजा के द्वारा ये चार प्रकार के व्यक्ति छोड़ने योग्य कहे गये हैं। विद्वान् राजा उन्हें जान ले। कम जानने वालों के साथ, प्रत्येक कार्य को विलम्ब से करने वालों के साथ, जल्दबाजी करने वालों और केवल स्तुति करने वालों के साथ विचार-विमर्श न करे।

आंग्लम्– These four types of people should be avoided even by a powerful King. A learned king should identify them. He should never have consultations with those who know very little; who take a very long time in doing a thing; who are rash and who are just flatterers.

सम्बद्धाः श्लोकाः

तत्र स्थितः प्रजाः सर्वाः प्रतिनन्द्य विसर्जयेत्।
विसृज्य च प्रजाः सर्वाः मन्त्रयेत् सह मन्त्रिभिः॥ *(मनु. 7.146)*

अन्तःसारैरकुटिलैरच्छिद्रैः सुपरीक्षितैः।
मन्त्रिभिर्धार्यते राज्यं सुस्तम्भैरिव मन्दिरम्॥ *(सु.र.भा. 148.27)*

४०. अविरोद्धा नश्यति

श्लोकः

द्वाविमौ ग्रसते भूमिः सर्पो बिलेशयानिव।
राजानं चाविरोद्धारं ब्राह्मणं चाप्रवासिनम्॥ 1.58॥

पदच्छेदः

द्वौ इमौ ग्रसते भूमिः सर्पः बिलेशयान् इव।
राजानम् च अविरोद्धारम् ब्राह्मणम् च अप्रवासिनम्॥

अन्वयः

अविरोद्धारं राजानम् अप्रवासिनं ब्राह्मणं च इमौ द्वौ भूमिः सर्पः इव बिलेशयान् ग्रसते।

भावार्थः

संस्कृतम्– यथा सर्पः बिले विद्यमानं मूषकं निगलति, तथा भूमिः इमौ द्वौ ग्रसते। तौ च– यस्य राज्ञः शत्रुं प्रतिरोद्धुं साहसं नास्ति सः राजा, यः परिव्राजकः देशाटनं न करोति सः।

हिन्दी– भूमि इन दो प्रकार के व्यक्तियों को ऐसे ही निगल जाती है जैसे साँप चूहों को। एक उस राजा को जो शत्रु का विरोध नहीं करता और दूसरे उस संन्यासी को जो भ्रमण नहीं करता।

आंग्लम्– Just as a serpent swallows mice, so this earth swallows these two types of persons; firstly, the king who has no courage to oppose his enemy and secondly, the medicant who does not travel.

सम्बद्धाः श्लोकाः

नित्यमुद्यतदण्डः स्यान्नित्यं विवृतपौरुषः।
नित्यं संवृतसंवार्यो नित्यं छिद्रानुसार्यरेः॥ *(मनु. 7.102)*

नित्यमुद्यतदण्डस्य कृत्स्नमुद्विजते जगत्।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि दण्डेनैव प्रसाधयेत्॥ *(मनु. 7.103)*

अभ्यासः – 16

[श्लोकसङ्ख्या 76-80]

> यस्य कृत्यं न जानन्ति मन्त्रं वा मन्त्रितं परे ।
> कृतमेवास्य जानन्ति स वै पण्डित उच्यते ॥ 1.23 ॥
>
> यस्य मन्त्रं न जानन्ति बाह्याश्चाभ्यन्तराश्च
> य ।
> स राजा सर्वतश्चक्षुश्चिरमैश्वर्यमश्नुते ॥ 6.15 ॥
>
> एकं विषरसो हन्ति शस्त्रेणैकश्च वध्यते ।
> सराष्ट्रं सप्रजं हन्ति राजानं मन्त्रविप्लवः ॥ 1.50 ॥
>
> द्वाविमौ ग्रसते भूमिः सर्पो बिलेशयानिव ।

1. रिक्तस्थानानि पूरयत–
[रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. परे (शत्रवः) यस्य ...., ..., ...वा न जानन्ति, अस्य ....एव जानन्ति, स वै .... उच्यते ।

ii. स सर्वतश्चक्षुः राजा चिरम् .... अश्नुते, यस्य मन्त्रं ये ....च न जानन्ति ।

iii. .... एकं हन्ति, ... एकः वध्यते । मन्त्रविप्लवः .... राजानं हन्ति ।

iv. महाबलेन राजा .... वर्ज्यानि आहुः । पण्डितः .... विद्यात् ।
.... च सह .... न कुर्यात् ।

v. भूमिः इमौ .... ग्रसते– अविरोद्धारं ...., अप्रवासिनं .... च ।
यथा सर्पः .... ग्रसते ।

2. यथोचितं सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत –
[यथोचित सन्धि या सन्धिविच्छेद करें। Either euphonically join or disjoin as required.]

i. एव + ... = एवास्य

ii.	पण्डितः	+	....				=	पण्डित उच्यते
iii.	....	+	च	+	....	+ च	=	बाह्याश्चाभ्यन्तराश्च
iv.	....	+	चक्षुः	+	....		=	सर्वतश्चक्षुश्चिरम्
v.	....	+	हन्ति				=	विषरसो हन्ति
Vi.	....	+	एकः	+	....		=	शस्त्रेणैकश्च
vii.	....	+	आहुः				=	वर्ज्यान्याहुः
viii.	पण्डितः	+	....				=	पण्डितस्तानि
ix.	रभसैः	+	....	+	च		=	रभसैश्चारणैश्च
x.	द्वौ	+	....				=	द्वाविमौ
xi.	सर्पः	+	....				=	सर्पो बिलेशयान्
xii.	च	+	....				=	चाविरोद्धारम्
xiii.	च	+	....				=	चाप्रवासिनम्

3. एकेन पदेन उत्तरं लिखत–

[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. शत्रवः पण्डितस्य किम् एव जानन्ति ? – .... ।

ii. अत्र 'बाह्याः' इति शब्दस्य कः विलोमशब्दः अस्ति ? – .... ।

iii. केन एकः वध्यते ? – .... ।

iv. कः एकं हन्ति ? – .... ।

v. महाबलेन राज्ञा कति वर्ज्यानि आहुः ? – .... ।

vi. सर्पः कान् ग्रसते ? – .... ।

vii. का अविरोद्धारं राजानं ग्रसते ? – .... ।

viii. 'अचिरम्' इति अस्य कः विलोमशब्दः अत्र प्रयुक्तः ? – .... ।

4. पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–

[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. कीदृशः राजा पण्डितः उच्यते ?

.... ।

ii. कीदृशः राजा चिरम् ऐश्वर्यम् अश्नुते ?

.... ।

iii. मन्त्रविप्लवः कीदृशं राजानं नाशयति ?

.... ।

iv. यः सर्वं कार्यं आलस्येन विलम्बेन करोति स क उच्यते ?

.... ।

v. यः सर्वं कार्यम् अविवेकेन झटिति अतिशीघ्रतया करोति सः कः उच्यते ?

.... ।

vi. भूमिः कीदृशं राजानं नाशयति ?

.... ।

vii. भूमिः कीदृशं ब्राह्मणं नाशयति ?

.... ।

5. वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–

[वाच्यपरिवर्तन करें। Change the voice.]

i. जनाः तं पण्डितं ब्रुवन्ति। – .... ।

ii. परैः तस्य कृत्यं न ज्ञायते। – .... ।

iii. तेन राज्ञा चिरम् ऐश्वर्यम् अश्नुते। – .... ।

iv. विषरसेन एकः हन्यते। – .... ।

v. शस्त्रम् एकं हन्ति। – .... ।

vi. मन्त्रविप्लवेन राजा हन्यते। – .... ।

vii. भूम्या इमौ द्वौ ग्रस्येते। – .... ।

viii. बाह्यैः तस्य मन्त्रं न ज्ञायते। – .... ।

6. भिन्नं पदं चिनुत–

[भिन्न पद को लिखें। Write the odd-word.]

i. हन्ति, जानन्ति, ग्रसन्ते, वदन्ति – .... ।

ii. इमानि, अल्पज्ञैः, वर्ज्यानि, चत्वारि – .... ।

iii. बिले, परे, ते, ये – .... ।

iv. अश्नुते, सेवते, उच्यते, ग्रसते – .... ।

v. अल्पज्ञाः, मन्त्रविप्लवः, राजानः, बाह्याः – .... ।

7. विलोमपदानि मेलयत–

[विलोम पद को मिलाएँ। Match the opposite word.]

i.	बाह्याः	क.	अल्पज्ञैः
ii.	चिरम्	ख.	प्रवासिनम्
iii.	पण्डितः	ग.	अचिरम्
iv.	सर्वज्ञैः	घ.	आभ्यन्तराः
v.	अप्रवासिनम्	ङ.	मूर्खः

8. अधोलिखितं रेखाचित्रं पूरयत–

[अधोलिखित रेखाचित्र की पूर्ति करें। Fill in the sketch.]
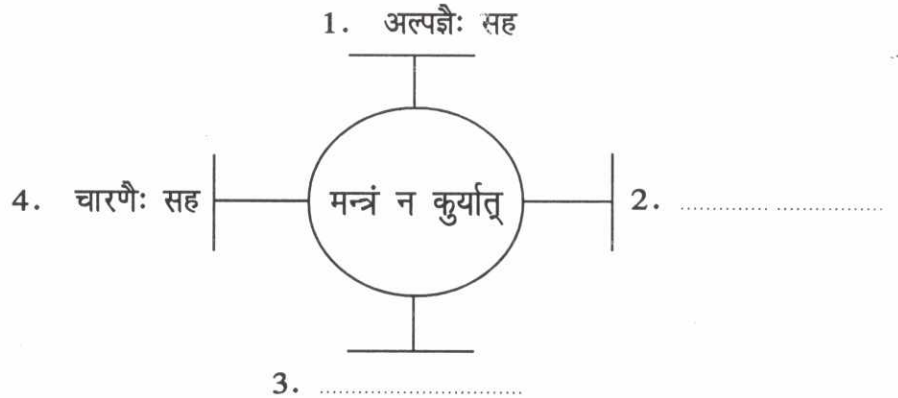
9. **विशेषणानि विशेष्यैः सह मेलयत–**

[विशेष्य के साथ विशेषण को मिलाएँ। Match qualifier as per qualificand.]

	विशेषणानि		**विशेष्याणि**
i.	सराष्ट्रम्	क.	इमौ
ii.	अप्रवासिनम्	ख.	वर्ज्यानि
iii.	द्वौ	ग.	राजानम्
iv.	चत्वारि	घ.	राजानम्
v.	अविरोद्धारम्	ङ.	ब्राह्मणम्

योग्यताविस्तरः

I. तृच् प्रत्ययः।

धातुना सह तृच्-प्रत्ययस्य योगेन 'कर्ता' इति अर्थः भवति।

यथा

दा	+	तृच्	=	दातृ	–	दाता	दातारौ	दातारः
विरुध्	+	तृच्	=	विरोद्धृ	–	विरोद्धा	विरोद्धारौ	विरोद्धारः
नी	+	तृच्	=	नेतृ	–	नेता	नेतारौ	नेतारः
गम्	+	तृच्	=	गन्तृ	–	गन्ता	गन्तारौ	गन्तारः
कृ	+	तृच्	=	कर्तृ	–	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः

II. 'सह' योगे तृतीया भवति–

i. अल्पज्ञैः सह मन्त्रं न कुर्यात्।

ii. रभसैः सह मन्त्रं न कुर्यात्।

iii. चारणैः सह मन्त्रं न कुर्यात्।

iv. दीघसूत्रैः सह मन्त्रं न कुर्यात्।

81. आत्मजयी भवेत्

श्लोकः

आत्मानमेव प्रथमं द्वेष्यरूपेण यो जयेत्।
ततोऽमात्यानमित्रांश्च न मोघं विजिगीषते ॥ 2.57 ॥

पदच्छेदः

आत्मानम् एव प्रथमम् द्वेष्य-रूपेण यः जयेत्।
ततः अमात्यान् अमित्रान् च न मोघम् विजिगीषते ॥

अन्वयः

यः प्रथमम् आत्मानम् एव द्वेष्यरूपेण जयेत् ततः सः अमात्यान् अमित्रान् च मोघं न विजिगीषते।

भावार्थः

संस्कृतम्– प्रथमम् आत्मनं शत्रुवत् सम्भाव्य सुनियन्त्र्य विजयी भवेत्। ततः सचिवान् शत्रून् च जेतुं यत्नः विधेयः। आत्मजयी इतरान् सुलभतया जेतुं शक्नोति इति भावः।

हिन्दी– जो राजा अपने आप को ही सबसे पहले शत्रुवत् जीत लेते हैं, उसके बाद मन्त्रियों और शत्रुओं को जीतने की इच्छा निष्फल नहीं होती अर्थात् वह सफलता पूर्वक उन्हें जीत सकता है।

आंग्लम्– The wish to conquer his ministers and enemies does not remain unfulfilled if a king wins over his own self first as if it is an enemy.

सम्बद्धाः श्लोकाः

वश्येन्द्रियं जितात्मानं धृतदण्डं विकारिषु।
परीक्ष्यकारिणं धीरमत्यन्तं श्रीर्निषेवते ॥ *(विदुर. 2.58)*

आत्मानं प्रथमं राजा विनयेनोपपादयेत्।
ततः पुत्रांस्ततोऽमात्यांस्ततो भृत्यांस्ततः प्रजाम् ॥ *(शुक्र. 1/93)*

हस्तं हस्तेन सम्पीड्य दन्तैर्दन्तान् विचूर्ण्य च।
अङ्गान्यङ्गैः समाक्रम्य जयेदादौ स्वकं मनः ॥ *(मुक्तिकोपनिषद् 2.42)*

82. राजा सर्वहरः न भवेत्

श्लोकः

नाममात्रेण तुष्येत छत्रेण च महीपतिः।
भृत्येभ्यो विसृजेदर्थान्नैकः सर्वहरो भवेत् ॥ 6.26 ॥

पदच्छेदः

नाम-मात्रेण तुष्येत छत्रेण च महीपतिः ।
भृत्येभ्यः विसृजेत् अर्थान् न एकः सर्वहरः भवेत् ॥

अन्वयः

महीपतिः नाममात्रेण छत्रेण च तुष्येत । अर्थान् भृत्येभ्यः विसृजेत्, एकः सर्वहरः न भवेत् ।

भावार्थः

संस्कृतम्– राजा केवलं नाम्ना भोगी भवेत् । स्वीयशासनेन च तुष्टो भवेत् । सर्वम् ऐश्वर्यं स्वयम् एकाकी न हरेत्, परन्तु सर्वेभ्यः कर्मकरेभ्यः वितरेत् ।

हिन्दी– राजा नाममात्र से और छत्र से ही सन्तुष्ट रहे और ऐश्वर्यों को अपने राजकर्मचारियों के लिये छोड़ देवे । अकेला ही सब कुछ हरण करने वाला न होवे ।

आंग्लम्– A King should distribute the luxuries to his subordinates and remain satisfied with the royal umbrella and the title of a king in name. He should not keep everything for himself only.

सम्बद्धाः श्लोकाः

अलब्धं चैव लिप्सेत लब्धं रक्षेत्प्रयत्नतः ।
रक्षितं वर्धयेच्चैव, वृद्धं पात्रेषु निक्षिपेत् ॥ *(मनु. 7.99)*

मोहाद्राजा स्वराष्ट्रं यः कर्षयत्यनवेक्षया ।
सोऽचिराद् भ्रश्यते राज्याज्जीविताच्च सबान्धवः ॥ *(मनु. 7.111)*

नृपसम्बन्धिस्त्रीपुत्रसुहृद्भृत्यगणान् तथा ।
तोषयित्वा सुखी चैव भुङ्क्ते यस्तु स्वकं धनम् ॥ *(शुक्र. 5.41)*

83. द्यूतं न सेवेत

श्लोकः

द्यूतमेतत् पुरा कल्पे दृष्टं वैरकरं नृणाम् ।
तस्माद् द्यूतं न सेवेत हास्यार्थमपि बुद्धिमान् ॥ 5.19 ॥

पदच्छेदः

द्यूतम् एतत् पुरा कल्पे दृष्टम् वैर-करम् नृणाम् ।
तस्मात् द्यूतम् न सेवेत हास्य-अर्थम् अपि बुद्धिमान् ॥

अन्वयः

पुरा कल्पे एतत् द्यूतं नृणां वैरकरं दृष्टम्, तस्माद् बुद्धिमान् हास्यार्थमपि द्यूतं न सेवेत।

भावार्थः

संस्कृतम्– प्राचीनकालादेव द्यूतं मनुष्याणां शत्रु मन्यते स्म। अतः बुद्धिमान् मनुष्यः द्यूतं मनोरञ्जनाय अपि न दीव्येत्।

हिन्दी– प्राचीनकाल में भी जुआ मनुष्यों का वैरी माना गया था। इसलिये बुद्धिमान् मनुष्य हँसी में भी कभी जुए का सेवन न करे।

आंग्लम्– Gambling was considered as an enemy of human beings even in olden days. Hence an intelligent person should never indulge in it even in fun.

सम्बद्धाः श्लोकाः

द्यूतं समाह्वयं चैव राजा राष्ट्रान्निवारयेत्।
राजान्तकरणावेतौ द्वौ दोषौ पृथिवीक्षिताम्॥ *(मनु. 9.221)*
कितवान् कुशीलवान्क्रूरान् पाषण्डस्थांश्च मानवान्।
विकर्मस्थाञ्छौण्डिकांश्च क्षिप्रं निर्वासयेत् पुरात्॥ *(मनु. 9.225)*
द्यूतं स्त्रीमद्यमेवैतत् त्रितयं बह्वनर्थकृत्। *(शुक्र. 1.109)*

84. भृत्यवात्सल्यम्

श्लोकः

यस्तात न क्रुध्यति सर्वकालं
भृत्यस्य भक्तस्य हिते रतस्य।
तस्मिन् भृत्या भर्तरि विश्वसन्ति
न चैनमापत्सु परित्यजन्ति॥ 5.22॥

पदच्छेदः

यः तात न क्रुध्यति सर्वकालम्
भृत्यस्य भक्तस्य हिते रतस्य।
तस्मिन् भृत्या भर्तरि विश्वसन्ति
न च एनम् आपत्सु परित्यजन्ति॥

अन्वयः

तात ! यः हिते रतस्य भक्तस्य भृत्यस्य सर्वकालं न क्रुध्यति, तस्मिन् भर्तरि भृत्याः विश्वसन्ति, एनं च आपत्सु न परित्यजन्ति।

भावार्थाः

संस्कृतम्– यः स्वामी हितकारिभ्यः भक्तसेवकेभ्यः कदापि न क्रुध्यति, तादृशे स्वामिनि सेवकाः सदा विश्वसन्ति, विपत्काले अपि तं स्वामिनं नैव त्यजन्ति च।

हिन्दी– हे तात ! जो स्वामी के हित में लगे हुए भक्त सेवक के प्रति सर्वदा क्रोध नहीं करता रहता उस स्वामी में सेवकगण विश्वास करते हैं और उसको आपत्ति के समय में त्यागते नहीं।

आंग्लम्– O dear ! The subordinates trust that master and never leave him even in adverse circumstances who does not keep expressing his anger all the time over a loyal servant who is always engaged in doing good to him.

सम्बद्धाः श्लोकाः

न भृत्यानां वृत्तिसंरोधनेन, राज्यं धनं संजिघृक्षेदपूर्वम्।
त्यजन्ति ह्येनं वञ्चिता वै विरुद्धाः स्निग्धाः ह्यमात्याः परिहीनभोगाः॥ *(विदुर. 5.23)*

राजा तुष्टोऽपि भृत्यानां मानमात्रं प्रयच्छति।
तेऽपि सम्मानमात्रेण प्राणैः प्रत्युपकुर्वते॥ *(सु.र.भा. 150.101)*

अरैः संधार्यते नाभिर्नाभौ चाराः प्रतिष्ठिताः।
स्वामिसेवकयोरेवं वृत्तिचक्रं प्रवर्तते॥ *(सु.र.भा. 150.87)*

भृत्यः स एव सुश्लोको नापत्तौ स्वामिनं त्यजेत्।
स्वामी स एव विज्ञेयो भृत्यार्थे जीवितं त्यजेत्॥ *(शुक्र. 5.51)*

85. आत्मा इव भृत्यः अनुकम्प्यः

श्लोकः

अभिप्रायं यो विदित्वा तु भर्तुः
सर्वाणि कार्याणि करोत्यतन्द्रीः।
वक्ता हितानामनुरक्त आर्यः
शक्तिज्ञ आत्मैव हि सोऽनुकम्प्यः॥ 5.25॥

पदच्छेदः

अभिप्रायम् यः विदित्वा तु भर्तुः
सर्वाणि कार्याणि करोति अतन्द्रीः ।
वक्ता हितानाम् अनुरक्तः आर्यः
शक्तिज्ञः आत्मा इव हि सः अनुकम्प्यः ॥

अन्वयः

यः अतन्द्रीः भर्तुः अभिप्रायं विदित्वा सर्वाणि कार्याणि करोति, हितानां वक्ता, अनुरक्तः, आर्यः, शक्तिज्ञः, स आत्मा इव अनुकम्प्यः ।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः सेवकः स्वामिनः अभिप्रायं ज्ञात्वा आलस्यं परित्यज्य सर्वं कार्यं करोति, यः स्वामिहितमेव वदति, स्वामिभक्तः, शीलवान्, स्वसामर्थ्यं जानाति, तादृशे सेवके यजमानः आत्मवत् दयां कुर्यात् ।

हिन्दी– जो आलस्य रहित सेवक स्वामी के अभिप्राय को जानकर ही सब कार्यों को कर लेता है, तथा जो हितकारी वचन बोलता है, स्वामिभक्त है, श्रेष्ठ स्वभाव वाला है, अपनी शक्ति को जानने वाला है, उस पर अपनी आत्मा के समान ही कृपा की जानी चाहिये ।

आंग्लम्– Considering him as his own soul, a master should look after that attendant who acts as per the master's intentions, utters those words which are beneficial for the master, is loyal, noble and knows his own limitations.

सम्बद्धाः श्लोकाः

वाक्यं तु यो नाद्रियतेऽनुशिष्टः
प्रत्याह यश्चापि नियुज्यमानः ।
प्रज्ञाभिमानी प्रतिकूलवादी
त्याज्यः स तादृक् त्वरयैव भृत्यः ॥ *(विदुर. 5.26)*

सारासारपरिच्छेत्ता स्वामी भृत्यस्य दुर्लभः ।
अनुकूलः शुचिर्दक्षः प्रभो ! भृत्योऽपि दुर्लभः ॥ *(सु.र.भा. 150.102)*

भृत्यैर्विना स्वयं राजा लोकानुग्रहकार्यपि ।
मयूखैरिव दीप्तांशुस्तेजसापि न शोभते ॥ *(सु.र.भा. 150.86)*

भूम्येकदेशस्य गुणान्वितस्य
भृत्यस्य वा बुद्धिमतः प्रणाशः ।
भृत्यप्रणाशो मरणं नृपाणां
नष्टापि भूमिः सुलभा, न भृत्याः ॥ *(हितो.सु.भे. 177)*

❖❖❖

अभ्यासः - 17

[श्लोकसङ्ख्या 81-85]

आत्मानमेव प्रथमं द्वेष्यरूपेण यो जयेत् ।
ततोऽमात्यानमित्रांश्च न मोघं विजिगीषते ॥ 2.57 ॥

नाममात्रेण तुष्येत छत्रेण च महीपतिः ।
भृत्येभ्यो विसृजेदर्थान्नैकः सर्वहरो भवेत् ॥ 6.26 ॥

द्यूतमेतत् पुरा कल्पे दृष्टं वैरकरं नृणाम् ।
तस्माद् द्यूतं न सेवेत हास्यार्थमपि बुद्धिमान् ॥ 5.19 ॥

यस्तात न क्रुध्यति सर्वकालं
भृत्यस्य भक्तस्य हिते रतस्य ।
तस्मिन् भृत्या भर्तरि विश्वसन्ति
न चैनमापत्सु परित्यजन्ति ॥ 5.22 ॥

अभिप्रायं यो विदित्वा तु भर्तुः
सर्वाणि कार्याणि करोत्यतन्द्रीः ।
वक्ता हितानामनुरक्त आर्यः
शक्तिज्ञ आत्मैव हि सोऽनुकम्प्यः ॥ 5.25 ॥

1. **रिक्तस्थानानि पूरयत–**
[रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. यः प्रथमम् आत्मानमेव द्वेषरूपेण ...., स .... च मोघं न विजिगीषते ।

ii. महीपतिः आत्मनः नाममात्रेण छत्रेण च .... । भृत्येभ्यः अर्थान् .... । एकः .... न भवेत् ।

iii. पुरा कल्पे एतत् .... नृणां वैरकरं दृष्टम् । तस्माद् बुद्धिमान् हास्यार्थम् अपि द्यूतं न .... ।

iv. तात ! यः सर्वकालं हिते .... भक्तस्य .... न क्रुध्यति, भृत्याः तस्मिन् भर्तरि .... ।

v. यः भर्तुः अभिप्रायं .... सर्वाणि .... करोति, (सः) हितानां वक्ता अनुरक्तः .... शक्तिज्ञः, सः .... एव हि अनुकम्प्यः ।

2. **एकेन पदेन उत्तरं लिखत–**

[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. नृपः सर्वप्रथमं कं जयेत् ? ....

ii. राजा आत्मानं केन रूपेण जयेत् ? ....

iii. महीपतिः केभ्यः अर्थान् विसृजेत् ? ....

iv. महीपतिः केन तुष्येत् ? ....

v. प्राचीनकाले नृणां वैरकरं किं मतम् ? ....

vi. कः हास्यार्थम् अपि द्यूतं न सेवेत ? ....

vii. भृत्याः अक्रुध्यन्तं भर्तारं कासु न परित्यजन्ति ? ....

viii. 'शक्तिं जानाति' इति कस्य शब्दस्य अर्थः ? ....

3. **यथोचितं सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत –**

[यथोचित सन्धि या सन्धिविच्छेद करें। Either euphonically join or disjoin as required.]

i.	यः	+	जयेत्			=	....
ii.	ततः	+	....	+	च	=	ततोऽमात्यानमित्रांश्च
iii.	न	+	....			=	नैकः
iv.	हास्य	+	....			=	हास्यार्थम्
v.	यः	+	तात			=	....
vi.	च	+	....			=	चैनम्
vii.	करोति	+	....			=	करोत्यतन्द्रीः
viii.	आत्मा	+	....			=	आत्मैव
ix.	सः	+	....			=	सोऽनुकम्प्यः
x.	....	+	आर्यः			=	अनुरक्त आर्यः

4. **पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–**

[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. राजा आत्मजयी कान् जेतुं समर्थः भवति ?

.... ।

ii. राजा केन केन च तुष्येत ?

.... ।

iii. प्राचीनकाले अपि द्यूतं नृणां किं दृष्टम् ?

.... ।

iv. बुद्धिमान् हास्यार्थम् अपि किं न सेवेत ?

.... ।

v. कीदृशाय भृत्याय क्रोधः न उचितः ?

.... ।

vi. भृत्याः कस्मिन् विश्वसन्ति ?

.... ।

vii. भृत्यः केषां वक्ता स्यात् ?

.... ।

5. अर्थानुसारेण मेलयत—

[अर्थ के अनुसार सही मिलान करें। Match the following with its meaning.]

i.	मोघम्	क.	सर्वस्य हरः
ii.	अमात्यान्	ख.	लीनस्य
iii.	सर्वहरः	ग.	व्यर्थम्
iv.	वैरकरम्	घ.	ज्ञात्वा
v.	रतस्य	ङ.	मन्त्रिणः
vi.	विदित्वा	च.	वैरस्य करः

6. क्रियापदानि योजयत—

[क्रियापद को जोड़ें। Add the verbal form.]

i. महीपतिः छत्रेण नाम्ना एव .... ।

ii. नृपः प्रथमम् आत्मानमेव शत्रुवत् .... ।

iii. राजा भृत्येभ्यः अर्थान् .... ।

iv. कोऽपि महीपः द्यूतं न .... ।

v. कोऽपि नृपतिः सर्वहरः न .... ।

7. अधोलिखितानां शब्दानाम् एकवचने रूपं लिखत–

[अधोलिखित शब्दों के एकवचनरूप लिखें। Write the singular number of the following words.]

यथा

i. भृत्येभ्यः = भृत्याय

ii. नृणाम् = ...

iii. अमात्यान्= ....

iv. अमित्रान् = ...

v. भृत्याः = ...

vi. आपत्सु = ...

vii. कार्याणि = ...

viii. हितानाम् = ...

ix. अर्थान् = ...

x. सर्वाणि = ...

8. भृत्यस्य गुणान् अधोनिर्दिष्टेषु रिक्तस्थानेषु लिखत–

[भृत्य के गुणों को अधोनिर्दिष्ट रिक्तस्थानों में लिखें। Write the qualities of the servant in the following .]
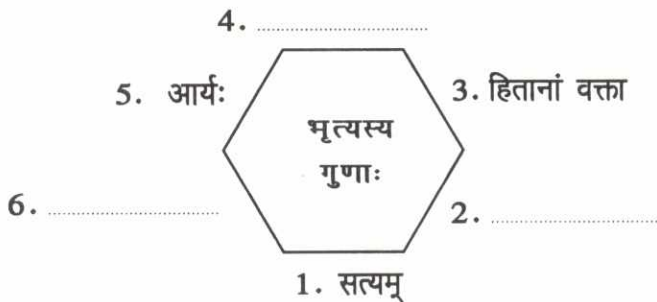
9. **समस्तपदानि रचयत–**

[समस्तपदों को लिखें। Write the compound words.]

i. मह्याः पतिः इति .... ।

ii. सर्वस्य हरः .... ।

iii. वैरस्य करः .... ।

iv. सर्वं कालम् इति .... ।

v. न तन्द्रा अस्य अस्ति .... ।

vi. शक्तिं जानाति .... ।

vii. हास्याय इदम् इति .... ।

10. **अधोलिखितेभ्यः वाक्येभ्यः अव्ययपदानि चित्वा लिखत–**

[अधोलिखित वाक्यों से अव्ययपदों को चुन कर लिखें। Write the avyaya-form from the following sentences.]

i. महीपतिः छत्रेण नाममात्रेण च तुष्येत्। .... ।

ii. पुरा कल्पे एतत् द्यूतं नृणां वैरकरं दृष्टम्। .... ।

iii. बुद्धिमान् हास्यार्थम् अपि द्यूतं न सेवेत। .... ।

iv. अनुरक्तः भृत्यः आत्मा इव हि अनुकम्प्यः। .... ।

v. सः भृत्यः भर्तुः अभिप्रायं विदित्वा तु कार्यं करोति। .... ।

योग्यताविस्तरः

I. 'क्त' प्रत्ययेन युक्तः शब्दः विशेषणवत् अपि प्रयुज्यते–

i.	अनुरञ्ज् +	क्त	=	अनुरक्तः	अनुरक्तः भृत्यः
ii.	भज् +	क्त	=	भक्तः	भक्तस्य भृत्यस्य
iii.	रम् +	क्त	=	रतः	रतस्य भृत्यस्य

II. 'विपूर्वक-श्वस्' धातोः योगे सप्तमी प्रयुज्यते–

i. भृत्याः भर्तरि विश्वसन्ति।

ii. माता पुत्रेषु विश्वसिति।

86. आत्मतृप्तम् अनर्थाः त्यजन्ति

श्लोकः

मितं भुङ्क्ते संविभज्याश्रितेभ्यो
मितं स्वपित्यमितं कर्म कृत्वा।
ददात्यमित्रेष्वपि याचितः सन्
तमात्मवन्तं प्रजहत्यनर्थाः ॥ 1.123 ॥

पदच्छेदः

मितम् भुङ्क्ते संविभज्य आश्रितेभ्यः
मितम् स्वपिति अमितम् कर्म कृत्वा।
ददाति अमित्रेषु अपि याचितः सन्
तम् आत्मवन्तम् प्रजहति अनर्थाः ॥

अन्वयः

यः आश्रितेभ्यः संविभज्य मितं भुङ्क्ते, अमितं कर्म कृत्वा मितं स्वपिति। याचितः सन् अमित्रेषु अपि ददाति तम् आत्मवन्तम् अनर्थाः प्रजहति।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः आश्रितेभ्यः अर्थं वितीर्य स्वयं न्यूनं भुङ्क्ते, अधिकं कार्यं कृत्वा न्यूनकालं निद्राति, याचिते सति शत्रुभ्यः अपि अर्थं ददाति; तादृशम् आत्मतृप्तम् अनर्थाः त्यजन्ति।

हिन्दी– जो मनुष्य अपने आश्रितों में बांट कर स्वयं बहुत कम खाता है, बहुत अधिक कार्य करके बहुत कम सोता है, मांगे जाने पर शत्रुओं को भी दे देता है– ऐसे आत्मवान् मनुष्य के पास अनर्थ नहीं आते।

आंग्लम्– Having distributed among his dependants enjoys a limited quantity only, having done a great deal of work enjoys just a little sleep, gives even to enemies if asked for, such a self-restraint person is never overcome by adversities.

सम्बद्धाः श्लोकाः

इन्द्रियाणां जये योगं समातिष्ठेद्दिवानिशम्।
जितेन्द्रियो हि शक्नोति वशे स्थापयितुं प्रजाः ॥ *(मनु. 7.44)*

काले हितमिताहारविहारी विघसाशनः।
अदीनात्मा च सुस्वप्नः शुचिः स्यात् सर्वदा नरः ॥ *(शुक्र. 3.110)*

परोपकरणं येषां जागर्ति हृदये सताम् ।
नश्यन्ति विपदस्तेषां सम्पदः स्युः पदे पदे ॥ (चाणक्य. 17.14)

87. दीनसेवया श्रेयः अश्नुते

श्लोकः

यो ज्ञातिमनुगृह्णाति दरिद्रं दीनमातुरम् ।
स पुत्रपशुभिर्वृद्धिं श्रेयश्चानन्त्यमश्नुते ॥ 7.17 ॥

पदच्छेदः

यः ज्ञातिम् अनु-गृह्णाति दरिद्रम् दीनम् आतुरम् ।
सः पुत्र-पशुभिः वृद्धिम् श्रेयः च आनन्त्यम् अश्नुते ॥

अन्वयः

यः दरिद्रं दीनम् आतुरं ज्ञातिम् अनुगृह्णाति, स पुत्रपशुभिः वृद्धिम् आनन्त्यं श्रेयः च अश्नुते ।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः दरिद्रे दीने दुःखिते स्वबान्धवे च दयां करोति, सः पुत्रवृद्धिं, पशुवृद्धिम्, अमितं श्रेयः च प्राप्नोति ।

हिन्दी– जो मनुष्य दरिद्र, दीन, दुःखी सम्बन्धी पर कृपा करता है वह पुत्र और पशुओं से वृद्धि को तथा अनन्य समृद्धि को प्राप्त करता है ।

आंग्लम्– A person who obliges his poor, helpless, pitiable relatives, is blessed with sons and cattle and obtains unparalleled prosperity.

सम्बद्धाः श्लोकाः

दरिद्रान् भर कौन्तेय ! मा प्रयच्छेश्वरे धनम् ।
व्याधितस्यौषधं पथ्यं, नीरुजस्तु किमौषधैः ॥ (हितो. 1.15)

ज्ञातयो वर्धनीयास्तैर्ये इच्छन्त्यात्मनः शुभम् ।
कुलवृद्धिं च राजेन्द्र तस्मात् साधु समाचर ॥ (विदुर. 7.18)

विगुणा अपि संरक्ष्या ज्ञातयो भरतर्षभ ।
किं पुनर्गुणवन्तस्ते त्वत्प्रसादाभिकाङ्क्षिणः ॥ (विदुर. 7.19)

नृपसम्बन्धिस्त्रीपुत्रसुहृद्भृत्यगणान् तथा ।
तोषयित्वा सुखी चैव भुङ्क्ते यस्तु स्वकं धनम् ॥ (शुक्र. 5.41)

८८. अविहिंसया अर्थमादद्यात्

श्लोकः

यथा मधु समादत्ते रक्षन् पुष्पाणि षट्पदः।
तद्वद् अर्थान् मनुष्येभ्यः आदद्यादविहिंसया ॥ 2.17 ॥

पदच्छेदः

यथा मधु सम्-आ-दत्ते रक्षन् पुष्पाणि षट्पदः।
तद्वत् अर्थान् मनुष्येभ्यः आ-दद्यात् अविहिंसया ॥

अन्वयः

यथा षट्पदः पुष्पाणि रक्षन् मधु समादत्ते, तद्वद् अविहिंसया मनुष्येभ्यः अर्थान् आदद्यात्।

भावार्थः

संस्कृतम्— राजा कथं प्रजाभ्यः राज्यकरं स्वीकुर्यात् इति अस्मिन् पद्ये उच्यते। यथा भ्रमरः पुष्पाणां हानिं विना तेभ्यः मधु सङ्गृह्णाति, तथा राजा प्रजाः न पीडयन् ताभ्यः अर्थं गृह्णीयात्।

हिन्दी— जिस प्रकार भौंरा फूलों की रक्षा करता हुआ मधु ग्रहण करता है, उसी प्रकार बिना कष्ट दिये मनुष्यों से धन ग्रहण करना चाहिए।

आंग्लम्— Just as a bee extracts honey from the flower without hurting it, money (tax) should be accepted from the subjects without harming them.

सम्बद्धाः श्लोकाः

पुष्पं पुष्पं विचिन्वीत मूलच्छेदं न कारयेत्।
मालाकार इवारामे न यथाङ्गारकारकः ॥ *(विदुर. 2.18)*

यथाल्पाल्पमदन्त्याद्यं वार्योकोवत्सषट्पदाः।
तथाल्पाल्पो ग्रहीतव्यो राष्ट्राद्राज्ञाब्दिकः करः ॥ *(मनु. 7.129)*

अष्टौ मासान् यथादित्यस्तोयं हरति रश्मिभिः।
तथा हरेत्करं राष्ट्रान्नित्यमर्कव्रतं हि तत् ॥ *(मनु. 9.305)*

आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव। *(रघु.......)*

८९. लोकरञ्जकः

श्लोकः

चक्षुषा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधम्।
प्रसादयति यो लोकं तं लोकोऽनुप्रसीदति ॥ 2.25 ॥

पदच्छेदः

चक्षुषा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधम् ।
प्रसादयति यः लोकम् तम् लोकः अनु-प्रसीदति ॥

अन्वयः

यः लोकं चक्षुषा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधं प्रसादयति, तं लोकः अनुप्रसीदति ।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः मनसा, वाचा, कर्मणा, दर्शनेन च लोकं प्रसन्नं करोति, तस्मिन् लोकः अपि प्रसीदति ।

हिन्दी– जो राजा प्रजाओं को दृष्टि, मन, वाणी और कर्म आदि चार प्रकार से प्रसन्न रखता है, उसको प्रजाएँ भी प्रसन्न रखती हैं ।

आंग्लम्– The subjects also keep that king happy who cares for them with his sight, mind, speech and actions.

सम्बद्धाः श्लोकाः

ऋजु पश्यति यः सर्वं चक्षुषानुपिबन्निव ।
आसीनमपि तूष्णीकमनुरज्यन्ति तं प्रजाः ॥ *(विदुर. 2.23)*

क्षत्रियस्य परो धर्मः प्रजानामेव पालनम् ।
निर्दिष्टफलभोक्ता हि राजा धर्मेण युज्यते ॥ *(मनु. 7.144)*

तस्करेभ्यो नियुक्तेभ्यः शत्रुभ्यो नृपवल्लभात् ।
नृपतिर्निजलोभाद्यः प्रजा रक्षेत् पितेव हि ॥ *(हितो.सु.भे. 109)*

सत्यं शौर्यं दया त्यागो नृपस्यैते महागुणाः ।
एभिर्मुक्तो महीपालः प्राप्नोति खलु वाच्यताम् ॥ *(हितो. विग्रहः 129)*

९०. अनृतसाक्ष्यफलम्

श्लोकः

नगरे प्रतिरुद्धः सन् बहिर्द्वारे बुभुक्षितः ।
अमित्रान् भूयसः पश्येद् यः साक्ष्यमनृतं वदेत् ॥ 3.33 ॥

पदच्छेदः

नगरे प्रतिरुद्धः सन् बहिः द्वारे बुभुक्षितः ।
अमित्रान् भूयसः पश्येत् यः साक्ष्यम् अनृतम् वदेत् ॥

अन्वयः

यः अनृतं साक्ष्यं वदेत् सः नगरे प्रतिरुद्धः सन् बहिः द्वारे बुभुक्षितः भूयसः अमित्रान् पश्येत्।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः असत्यं साक्ष्यं वदति, सः नगरात् बहिष्कृतः सन् नगरप्रवेशद्वारे तिष्ठन् बुभुक्षया पीडितः शत्रुभिः समावृतश्च भवेत्।

हिन्दी– जो मनुष्य झूठी गवाही देवे, वह नगर में प्रवेश करने से रोका गया बाहर द्वार पर भूखा पड़ा हुआ बहुत से शत्रुओं को देखे।

आंग्लम्– A person giving false witness should find himself surrounded by many enemies, lying hungry outside the gates of the city through which his entry has been banned.

सम्बद्धाः श्लोकाः

पञ्च पश्वनृते हन्ति दश हन्ति गवानृते।
शतमश्वानृते हन्ति सहस्रं पुरुषानृते॥ *(मनु. 8.98 विदुर. 3.34)*

हन्ति जातानजातांश्च हिरण्यार्थेऽनृतं वदन्।
सर्वं भूम्यनृते हन्ति मा स्म भूम्यनृतं वदेः॥ *(विदुर. 3.35 मनु. 8.99)*

नग्नो मुण्डः कपालेन भिक्षार्थी क्षुत्पिपासितः।
अन्धः शत्रुकुलं गच्छेद्यः साक्ष्यमनृतं वदेत्॥ *(मनु. 8.93)*

कूटसाधनकारी तु दण्ड्यः कार्य्यानुरूपतः।
द्विगुणं कूटसाक्षी तु साक्ष्यलोपी तथैव च॥ *(शुक्र. 4/5/171)*

न ब्रूयादनृतं साक्ष्यं कृतं साक्ष्यं न लोपयेत्।
प्राणात्ययेऽनृतं ब्रूयात् सुमहत्कार्यसाधने॥ *(शुक्र. 3/100)*

तत्र सत्यं ब्रुवन्साक्षी धर्मार्थाभ्यां न हीयते। *(मनु. 8.74)*

अभ्यासः - 18

[श्लोकसङ्ख्या 86-90]

मितं भुङ्क्ते संविभज्याश्रितेभ्यो
मितं स्वपित्यमितं कर्म कृत्वा।
ददात्यमित्रेष्वपि याचितः सन्
तमात्मवन्तं प्रजहत्यनर्थाः ॥ 1.123 ॥

यो ज्ञातिमनुगृह्णाति दरिद्रं दीनमातुरम्।
स पुत्रपशुभिर्वृद्धिं श्रेयश्चानन्त्यमश्नुते ॥ 7.17 ॥

यथा मधु समादत्ते रक्षन् पुष्पाणि षट्पदः।
तद्वद् अर्थान् मनुष्येभ्यः आदद्यादविहिंसया ॥ 2.17 ॥

चक्षुषा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधम्।
प्रसादयति यो लोकं तं लोकोऽनुप्रसीदति ॥ 2.25 ॥

नगरे प्रतिरुद्धः सन् बहिर्द्वारे बुभुक्षितः।
अमित्रान् भूयसः पश्येद् यः साक्ष्यमनृतं वदेत् ॥ 3.33 ॥

1. रिक्तस्थानानि पूरयत–
[रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. यः आत्मवान् आश्रितेभ्यः .... अल्पं ...., अमितं कर्म कृत्वा .... स्वपिति, याचितः सन् .... अपि ददाति, अनर्थाः तम् आत्मवन्तम् .... ।

ii. यः ...., ..., ..., ..., अनुगृह्णाति। सः पुत्रपशुभिः .... आनन्त्यम् श्रेयः च .... ॥

iii. यथा षट्पदः पुष्पाणि .... मधु ...., तद्वद् अविहिंसया अर्थान् .... ।

iv. यः (राजा) चक्षुषा .... वाचा .... च चतुर्विधं लोकं ...., लोकः तम् .... ।

v. यः अनृतं साक्ष्यं .... (सः) नगरे प्रतिरुद्धः बहिः द्वारे बुभुक्षितः भूयसः .... पश्येत्।

2. एकेन पदेन उत्तरं लिखत–

[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. राजा याचितः सन् केभ्यः धनं दद्यात् ? .... ।

ii. अनर्थाः कं परित्यजन्ति ? .... ।

iii. यः दरिद्रं दीनं बन्धुम् उपकरोति सः कीदृशं श्रेयः लभते ? .... ।

iv. 'भ्रमर-पर्यायः' कः शब्दः प्रयुक्तः ? .... ।

v. भ्रमरः पुष्पाणि रक्षन् किं गृह्णाति ? .... ।

vi. प्रसन्नः लोकः कम् अनुप्रसीदति ? .... ।

vii. 'वाण्या' इत्यर्थे कः शब्दः अत्र प्रयुक्तः ? .... ।

3. यथोचितं सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत –

[यथोचित सन्धि या सन्धिविच्छेद करें। Either euphonically join or disjoin as required.]

i. संविभज्य + ... = संविभज्याश्रितेभ्यः

ii. .... + अमितम् = स्वपित्यमितम्

iii. .... + अमित्रेषु + ... = ददात्यमित्रेष्वपि

iv. .... + अनर्थाः = प्रजहत्यनर्थाः

v. .... + वृद्धिम् = पुत्रपशुभिर्वृद्धिम्

vi. श्रेयः + ... + ... + ... = श्रेयश्चानन्त्यमश्नुते

vii. लोकः + ... = लोकोऽनुप्रसीदति

viii. .... + ... = बहिर्द्वारि

ix. .... + ... = यो लोकम्

4. पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–

[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentences.]

i. अनर्थाः कीदृशम् आत्मवन्तं प्रजहति ?

.... ।

ii. कः आनन्त्यं श्रेयः अश्नुते ?

.... ।

iii. यः दरिद्रं ज्ञातिम् अनुगृह्णाति सः कैः वर्धते ?

.... ।

iv. यः अनृतं साक्ष्यं वदेत्, स कथं भूतः किं पश्येत् ?

.... ।

v. राजा मनुष्येभ्यः कथम् अर्थान् गृह्णीयात् ?

.... ।

vi. लोकः कीदृशं राजानम् अनुप्रसीदति ?

.... ।

5. **विलोमपदानि मेलयत–**

[विलोम पद को मिलाएँ। Match the opposite word.]

i.	मितम्	क.	अनर्थाः
ii.	अर्थाः	ख.	अन्तः
iii.	अहिंसया	ग.	अमित्राणि
iv.	बहिः	घ.	अमितम्
v.	मित्राणि	ङ.	अनृतम्
vi.	ऋतम्	च.	हिंसया

6. **भिन्नं पदं चिनुत–**

[भिन्न पद को लिखें। Write the odd-word.]

i. वदेत्, पश्येत्, समादत्ते, आदद्यात् .... ।

ii. स्वपिति, अश्नुते, भुङ्क्ते, प्रजहति .... ।

iii. चक्षुषा, वाचा, भूयसः, मनसा .... ।

iv. षटपदः, श्रेयः, लोकः, अनर्थः .... ।

7. **अधोलिखितं रेखाचित्रं पूरयत–**

[अधोलिखित रेखाचित्र की पूर्ति करें। Fill in the following sketch.]
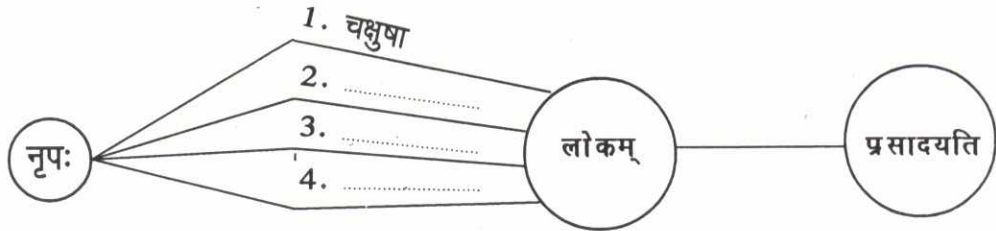
योग्यताविस्तरः

भुङ्क्ते – भुज्धातोः कर्तरि लटि प्रपु.एक. आत्मनेपदि रूपम्।
प्रजहति – प्र-पूर्वकात् हा धातोः कर्तरि लटि प्रपु.बहु. परस्मैपदि रूपम्।
ददाति – दा धातोः कर्तरि लटि प्रपु.एक. परस्मैपदि रूपम्।
दत्ते – दा धातोः कर्तरि लटि प्रपु.एक. आत्मनेपदि रूपम्।
स्वपिति – स्वप् धातोः कर्तरि लटि प्रपु.एक. परस्मैपदि रूपम्।
गृह्णाति – ग्रह् धातोः कर्तरि लटि प्रपु.एक. परस्मैपदि रूपम्।

	भुज् (आ) लटि			हा (प.) लटि		
	एक.	द्वि.	बहु.	एक.	द्वि.	बहु.
प्र.पु.	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते	जहाति	जहितः/जहीतः	जहति
म.पु.	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे	जहासि	जहिथः/जहीथः	जहिथ/जहीथ
उ.पु.	भुञ्जे	भुञ्जवहे	भुञ्जमहे	जहामि	जहिवः/जहीवः	जहिमः/जहीमः
	दा (प) लटि			दा (आ) लटि		
	एक.	द्वि.	बहु.	एक.	द्वि.	बहु.
प्र.पु.	ददाति	दत्तः	ददति	दत्ते	ददाते	ददते
म.पु.	ददासि	दत्थः	दत्थ	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उ.पु.	ददामि	दद्वः	दद्मः	ददे	दद्वहे	दद्महे
	स्वप् (प.) लटि			ग्रह (प.) लटि		
	एक.	द्वि.	बहु.	एक.	द्वि.	बहु.
प्र.पु.	स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म.पु.	स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ.पु.	स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

91. अनृतं सर्वनाशाय

श्लोकः

तस्माद्राजेन्द्र भूम्यर्थं नानृतं वक्तुमर्हसि।
मा गमः ससुतामात्यो नाशं पुत्रार्थमब्रुवन्॥ 3.40॥

पदच्छेदः

तस्मात् राजेन्द्र ! भूम्यर्थम् न अ-नृतम् वक्तुम् अर्हसि।
मा गमः ससुत-अमात्यः नाशम् पुत्रार्थम् अब्रुवन्॥

अन्वयः

राजेन्द्र ! तस्माद् भूम्यर्थम् अनृतं वक्तुं न अर्हसि। पुत्रार्थम् (असत्यम्) अब्रुंवन् ससुतामात्यः नाशं मा गमः।

भावार्थः

संस्कृतम्– विदुरः धृतराष्ट्रं वदति– राजन् ! भूमिं प्राप्तुं कदापि असत्यं न वदेत्। यदि पुत्रमोहेन असत्यं वदति तर्हि पुत्रैः सचिवैः सह नाशं प्राप्नुयात् इति।

हिन्दी– हे राजेन्द्र ! इसलिये तुम्हें भूमि के लिये झूठ बोलना उचित नहीं है। पुत्र के लिए सत्य न बोलते हुए पुत्र और मंत्रियों सहित नाश को मत प्राप्त होवो।

आंग्लम्– O King of kings ! You are, therefore, not to tell lie for the sake of land. Don't get destroyed alongwith your son and ministers by not giving true statements for the sake of your son.

सम्बद्धाः श्लोकाः

साक्षी दृष्टश्रुतादन्यद् विब्रुवन्नार्यसंसदि।
अवाङ्नरकमभ्येति प्रेत्य स्वर्गाच्च हीयते॥ *(मनु. 8.75)*

साक्ष्येऽनृतं वदन्पाशैर्बध्यते वारुणैर्भृशम्।
विवशः शतमाजातीस्तस्मात्साक्ष्यं वदेदृतम्॥ *(मनु. 8.82)*

जन्मप्रभृति यत्किञ्चित्पुण्यं भद्र त्वया कृतम्।
तत्ते सर्वं शुनो गच्छेद्यदि ब्रूयास्त्वमन्यथा॥ *(मनु. 8.90)*

प्रभुः स्वातन्त्र्यमापन्नो ह्यनर्थायैव कल्पते।
भिन्नराष्ट्रो भवेत् सद्यो भिन्नप्रकृतिरेव च॥ *(शुक्र. 2.4)*

९२. शठे शाठ्यं समाचरेत्

श्लोकः

यस्मिन् यथा वर्तते यो मनुष्यस्
तस्मिंस्तथा वर्तितव्यं स धर्मः।
मायाचारो मायया वर्तितव्यः
साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः ॥ 5.7 ॥

पदच्छेदः

यस्मिन् यथा वर्तते यः मनुष्यः
तस्मिन् तथा वर्तितव्यम् सः धर्मः।
मायाचारः मायया वर्तितव्यः
साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः ॥

अन्वयः

यः मनुष्यः यस्मिन् यथा वर्तते तस्मिन् तथा वर्तितव्यं स धर्मः। मायाचारः मायया वर्तितव्यः, साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः मनुष्यः यथा व्यवहरति, तस्मिन् तथा व्यवहारः करणीयः। कपटिना सह कपटव्यवहारः, सज्जनैः सह साधुव्यवहारश्च करणीयः।

हिन्दी– जो मनुष्य जिसके प्रति जैसा व्यवहार करता है उसके प्रति वैसा ही व्यवहार करना चाहिये, यही धर्म है। छली-कपटी के साथ छल-कपट से ही व्यवहार करना चाहिये और सज्जनों के साथ सज्जनता का व्यवहार करना चाहिए।

आंग्लम्– Behave in the same way with a person, the way he behaves with you. This is Dharma. A rogue should be treated with roguery and a noble man should be treated with nobility.

सम्बद्धाः श्लोकाः

कृते प्रतिकृतं कुर्याद् हिंसने प्रतिहिंसनम्।
तत्र दोषो न पतति, दुष्टे दुष्टं समाचरेत् ॥ *(चाणक्य. 17.2)*

तीक्ष्णश्चैव मृदुश्च स्यात् कार्यं वीक्ष्य महीपतिः।
तीक्ष्णश्चैव मृदुश्चैव राजा भवति सम्मतः ॥ *(मनु. 7.140)*

शाम्येत् प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः। *(कुमार. ....)*

खलः सत्क्रियमाणोऽपि ददाति कलहं सताम्।
दुग्धधौतोऽपि किं याति वायसः कलहंसताम्॥ *(सु.र.भा. 56.26)*

खलो न साधुतां याति सद्भिः सम्बोधितोऽपि सन्।
सरित्पूरप्रपूर्णोऽपि क्षारो न मधुरायते॥ *(सु.र.भा. 56.29)*

यश्च छद्मकारी भवति तस्मिन् छद्म समाचरेत्। *(सु.र.भा. 56.29)*

९३. विश्वस्तेऽपि न विश्वसेत्

श्लोकः

न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्ते नातिविश्वसेत्।
विश्वासाद् भयमुत्पन्नं मूलान्यपि निकृन्तति॥ 6.9॥

पदच्छेदः

न विश्वसेत् अविश्वस्ते विश्वस्ते न अति-विश्वसेत्।
विश्वासात् भयम् उत्पन्नम् मूलानि अपि निकृन्तति॥

अन्वयः

अविश्वस्ते न विश्वसेत् विश्वस्ते न अतिविश्वसेत्। विश्वासात् उत्पन्नं भयं मूलानि अपि निकृन्तति।

भावार्थः

संस्कृतम्– यः विश्वासार्हः न भवति तस्मिन् विश्वासः न करणीयः। यः विश्वासपात्रं वर्तते, तस्मिन्नपि अतिविश्वासः न करणीयः। विश्वासविषये जायमानया भीत्या मूलच्छेदः जायेत।

हिन्दी– अविश्वासी पर विश्वास नहीं करना चाहिये। विश्वासपात्र पर भी अतिविश्वास न करे। विश्वास से उत्पन्न भय जड़ों को भी काट डालता है।

आंग्लम्– One should not trust an untrustworthy person. Even a trust-worthy person should not be completely trusted since the apprehensions arising out of the trust may cut the very roots.

सम्बद्धाः श्लोकाः

न विश्वसेत् कुमित्रे च मित्रे चापि न विश्वसेत्।
कदाचित् कुपितं मित्रं सर्वं गुह्यं प्रकाशयेत्॥ *(चाणक्य. 2.6)*

अपकृत्य बुद्धिमतो दूरस्थोऽस्मीति नाश्वसेत्।
दीर्घो बुद्धिमतो बाहू याभ्यां हिंसति हिंसितः॥ *(विदुर. 6.8)*

नात्यन्तं विश्वसेत् कञ्चिद् विश्वस्तमपि सर्वदा।
पुत्रं वा भ्रातरं भार्य्याममात्यमधिकारिणम् ॥ *(शुक्र. 3.80)*

94. मिथ्याप्रशंसा नाशाय

श्लोकः

यं प्रशंसन्ति कितवा यं प्रशंसन्ति चारणाः।
यं प्रशंसन्ति बन्धक्यो, न स जीवति मानवः ॥ 6.44 ॥

पदच्छेदः

यम् प्र-शंसन्ति कितवा यम् प्र-शंसन्ति चारणाः।
यम् प्र-शंसन्ति बन्धक्यः न सः जीवति मानवः ॥

अन्वयः

यं कितवाः प्रशंसन्ति, यं चारणाः प्रशंसन्ति, यं बन्धक्यः प्रशंसन्ति स मानवः न जीवति।

भावार्थः

संस्कृतम्– द्यूतकाराः, मिथ्याप्रशंसकाः, वेश्याश्च यं प्रशंसन्तिः; सः जीवितोऽपि मृतः एव। दुर्जनप्रशंसा नाशाय एव भवति।

हिन्दी– जिस पुरुष की प्रशंसा जुआरी लोग, चाटुकार, भाट आदि गाते रहते हैं और वेश्याएँ जिसकी प्रशंसा करती हैं वह मनुष्य जीवित होता हुआ भी मृत के समान है।

आंग्लम्– The person though living is like a dead person who is always praised by gamblers, flatterers and street girls.

सम्बद्धाः श्लोकाः

वैद्यो गुरुश्च मन्त्री च यस्य राज्ञः प्रियः सदा।
शरीरधर्मकोशेभ्यः क्षिप्रं स परिहीयते ॥ *(हितो. विग्रहः 104)*

परोऽपि हितवान् बन्धुर्बन्धुरप्यहितः परः।
अहितो देहजो व्याधिर्हितमारण्यमौषधम् ॥ *(हितो. विग्रह. 98)*

नटगायकगणिका मल्लषण्ढाल्पजातिषु।
योऽतिसक्तो नृपो निन्द्यः स हि शत्रुमुखे स्थितः ॥ *(शुक्र. 1.128)*

95. सदा गृहे सन्तु

श्लोकः

अजाश्च कांस्यं रजतं च नित्यं
मध्वाकर्षः शकुनिः श्रोत्रियश्च।
वृद्धो ज्ञातिरवसन्नः कुलीन
एतानि ते सन्तु गृहे सदैव ॥ 8.9 ॥

पदच्छेदः

अजाः च कांस्यम् रजतम् च नित्यम्
मध्वाकर्षः शकुनिः श्रोत्रियः च।
वृद्धः ज्ञातिः अवसन्नः कुलीनः
एतानि ते सन्तु गृहे सदा एव ॥

अन्वयः

एतानि ते गृहे सदैव नित्यं सन्तु– अजाः, कांस्यं रजतं मध्वाकर्षः शकुनिः, श्रोत्रियः, वृद्धः ज्ञातिः अवसन्नः कुलीनः च।

भावार्थः

संस्कृतम्– अजाः, कांस्यं रजतवस्तूनि, विषनिष्कासनपक्षिविशेषः शकुनिः, वेदपाठी ब्राह्मणः, वृद्धः बन्धुः, स्वकुलस्य दुःखी बन्धुः इति एतानि सदा गृहे भवन्तु। अर्थात् मनुष्यः सम्पन्नः, आस्तिकः, वृद्धोपसेवी, दयावान् च स्यादिति सारः।

हिन्दी– ये सदा ही तुम्हारे घर में निवास करें– बकरियाँ, कांसी के पात्र, चांदी, विष का बोधन कराने वाले मैना आदि पक्षी, वेद को जानने वाले विद्वान्, वृद्ध सम्बन्धी और अपने कुल के दुःखी मनुष्य।

आंग्लम्– These should always be there in your house – sheep, bronze utensils, silver, a bird that can extract poison, a scholar knowing scriptures, old relatives, and distressed persons of your family.

सम्बद्धाः श्लोकाः

अजोक्षा चन्दनं वीणा आदर्शो मधुसर्पिषी।
विषमौदुम्बरं शङ्खः स्वर्णनाभोऽथ रोचना ॥ *(विदुर. 8.10)*

गृहे स्थापयितव्यानि धान्यानि मनुरब्रवीत्।
देवब्राह्मणपूजार्थमतिथीनां च भारत ॥ *(विदुर. 8.11)*

विषघ्नैरगदैश्चास्य सर्वद्रव्याणि योजयेत् ।
विषघ्नानि च रत्नानि नियतो धारयेत्सदा ॥ *(मनु. 7.218)*

तत्रात्मभूतैः कालज्ञैरहार्यैः परिचारकैः ।
सुपरीक्षितमन्नाद्यमद्यान्मन्त्रैर्विषापहैः ॥ *(मनु. 7.217)*

विषदोषभयादन्नं विमृशेत् कपिकुक्कुटैः ।
हंसाः स्खलन्ति कूजन्ति भृङ्गाः नृत्यन्ति मायूराः ॥ *(शुक्र. 1.326)*

विरौति कुक्कुटो माद्येत् क्रौञ्चो वै रेचते कपिः ।
हृष्टरोमा भवेद् बभ्रुः सारिका वमते तथा ॥ (शुक्र. 1.327)

❖❖❖

अभ्यासः – 19

[श्लोकसङ्ख्या 91–95]

तस्माद्राजेन्द्र भूम्यर्थं नानृतं वक्तुमर्हसि ।
मा गमः ससुतामात्यो नाशं पुत्रार्थमब्रुवन् ॥ 3.40 ॥

यस्मिन् यथा वर्तते यो मनुष्यस्
तस्मिंस्तथा वर्तितव्यं स धर्मः ।
मायाचारो मायया वर्तितव्यः
साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः ॥ 5.7 ॥

न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्ते नातिविश्वसेत् ।
विश्वासाद् भयमुत्पन्नं मूलान्यपि निकृन्तति ॥ 6.9 ॥

यं प्रशंसन्ति कितवा यं प्रशंसन्ति चारणाः ।
यं प्रशंसन्ति बन्धक्यो, न स जीवति मानवः ॥ 6.44 ॥

अजाश्च कांस्यं रजतं च नित्यं
मध्वाकर्षः शकुनिः श्रोत्रियश्च ।
वृद्धो ज्ञातिरवसन्नः कुलीन
एतानि ते सन्तु गृहे सदैव ॥ 8.9 ॥

1. **रिक्तस्थानानि पूरयत–**
[रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. राजेन्द्र ! भूम्यर्थम् .... वक्तुं न अर्हसि ।
पुत्रार्थम् असत्यम् अब्रुवन् ....नाशं मा गमः ।

ii. यस्मिन् .... वर्तते यः मनुष्यः तस्मिन् .... वर्वितव्यम् ।
मायाचारः ....वर्तितव्यः, साध्वाचारः ....प्रत्युपेयः ।

iii. .... न विश्वसेत्, ...न अतिविश्वसेत् ।
.... उत्पन्नं भयं .... अपि निकृन्तति ।

iv. यं .... कितवाः यं प्रशंसन्ति .... ।
यं प्रशंसन्ति .... न स जीवति .... ॥

v. अजाः च .... च नित्यं .... शकुनिः .... च ।
.... अवसन्न एतानि ते सन्तु .... सदैव ॥

2. **एकेन पदेन उत्तरं लिखत–**
[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. प्रथमे पद्ये किं सम्बोधनपदम् ? ....
ii. भूम्यर्थम् अपि किं न वक्तव्यम् ? ....
iii. मायाचारिणा सह कया वर्तितव्यम् ? ....
iv. कस्मिन् न अतिविश्वसेत् ? ....
v. साध्वाचारः केन प्रत्युपेयः ? ....
vi. विश्वासात् उत्पन्नं भयं कानि निकृन्तति ? ....
vii. वेश्याः इति कस्य शब्दस्य अर्थः ? ....
viii. वेदपाठी ब्राह्मणः इति कस्य शब्दस्य अर्थः ? ....

3. **यथोचितं सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत –**
[यथोचित सन्धि या सन्धिविच्छेद करें। Either euphonically join or disjoin as required.]

i.	तस्मात्	+	....	=	तस्माद्राजेन्द्र
ii.	भूमि	+	अर्थम्	=	....
iii.	न	+	....	=	नानृतम्
iv.	ससुत	+	....	=	ससुतामात्यः
v.	यः	+	मनुष्यः	=	....
vi.	....	+	....	=	तस्मिंस्तथा
vii.	....	+	मायया	=	मायाचारो मायया
viii.	साधु	+	....	=	साध्वाचारः
ix.	....	+	....	=	विश्वसेदविश्वस्ते
x.	न	+	....	=	नातिविश्वसेत्
xi.	....	+	....	=	बन्धक्यो न
xii.	अजाः	+	च	=	....
xiii.	सदा	+	....	=	सदैव

4. **पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–**

[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentence.]

i. पुत्रार्थम् असत्यं ब्रुवन् राजा किं प्राप्नोति ?

.... ।

ii. कः नाम धर्मः ?

.... ।

iii. मायाचारः कथं वर्तितव्यः ?

.... ।

iv. कस्मिन् न विश्वसेत् ?

.... ।

v. कस्मिन् अतिविश्वासः न कर्तव्यः ?

.... ।

vi. एतानि कानि सदैव गृहे सन्तु ?

.... ।

5. **अधोलिखितेषु वाक्येषु क्रियापदं योजयत–**

[अधोलिखित वाक्य में क्रियापद को जोड़ें। Add the verbal form in the senteces.]

i. राजेन्द्र ! त्वं भूम्यर्थम् अनृतं वक्तुं न .... ।

ii. यः मनुष्यः यस्मिन् यथा .... तस्मिन् नरे तथा .... ।

iii. मायाचारः मायया .... ।

iv. साध्वाचारः साधुना .... ।

v. अविश्वस्ते न .... ।

vi. विश्वासात् उत्पन्नं भयं मूलानि अपि .... ।

vii. यं कितवाः चारणाः, वेश्याजनाः .... सः न .... ।

viii. राजन् ! अजादीनि वस्तूनि सदैव ते गृहे .... ।

ix. राजन् ! त्वं पुत्रार्थम् अनृतं वदन् नाशं मा .... ।

x. विश्वस्ते अपि न .... ।

6. त्यक्तं वस्तु लिखत–

[त्यक्त वस्तु को लिखें। Write the remaining thing .]
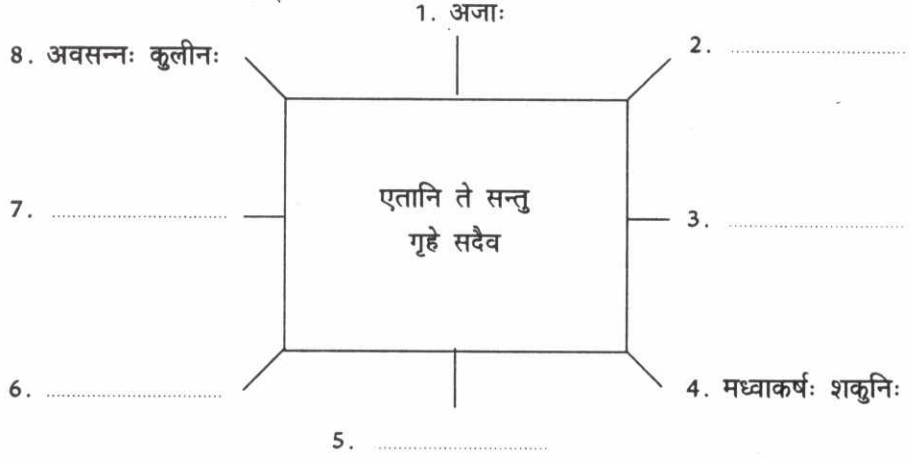
8. अधोलिखितानि रेखाचित्राणि पूरयत–

[अधोलिखित रेखाचित्रों की पूर्ति करें। Fill in the following sketchs.]
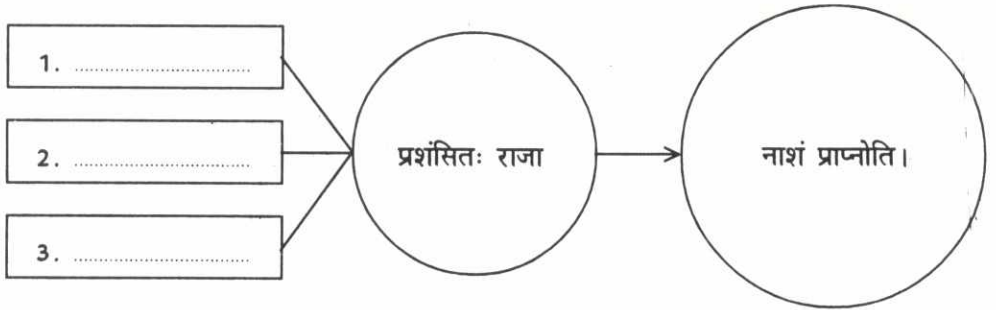
योग्यताविस्तरः

समस्तपदानि

I. चतुर्थ्यन्तशब्दानाम् अर्थबलिहितसुखरक्षितैः चतुर्थीतत्पुरुषसमासः विधीयते।

यथा द्विजाय	अयम्	इति	*द्विजार्थः*
भूम्यै	इदम्	इति	*भूम्यर्थम्*
पुत्राय	इदम्	इति	*पुत्रार्थम्*

II. कर्मणि प्रयोगे तव्यदादीनां लिङ्गं कर्मणः अनुरूपं भवति—

मायाचारः मायया *वर्तितव्यः*।

साध्वाचारः साधुना *प्रत्युपेयः*।

पुस्तकम् इदम् कस्मै *प्रदेयम्*।

मार्गः गुरुजनाय *प्रदेयः*।

III. विपूर्वक-श्वस् धातोः योगे सप्तमी भवति—

यथा अविश्वस्ते न विश्वसेत्।

विश्वस्ते अपि न अतिविश्वसेत्।

माता पुत्रे विश्वसिति।

भक्तानाम् ईश्वरे विश्वासः अस्ति।

IV. माङ् योगे लुङ् लकारः भवति।

गम् धातोः लुङ्लकारे रूपाणि एवम् भवन्ति –

	एक.	द्वि.	बहु.
प्र.पु.	अगमत्	अगमताम्	अगमन्
म.पु.	अगमः	अगमतम्	अगमत
उ.पु.	अगमम्	अगमाव	अगमाम

96. स्त्रियः रक्ष्याः विशेषतः

श्लोकः

पूजनीया महाभागाः पुण्याश्च गृहदीप्तयः।
स्त्रियः श्रियः गृहस्योक्तास्तस्माद् रक्ष्या विशेषतः॥ 6.11 ॥

पदच्छेदः

पूजनीयाः महाभागाः पुण्याः च गृह-दीप्तयः।
स्त्रियः श्रियः गृहस्य उक्ताः तस्माद् रक्ष्याः विशेषतः॥

अन्वयः

स्त्रियः पूजनीयाः महाभागाः पुण्याः गृहदीप्तयः, गृहस्य च श्रियः उक्ताः। तस्माद् विशेषतः रक्ष्याः।

भावार्थः

संस्कृतम्– स्त्रियः सौभाग्यवत्यः, पवित्राः, गृहस्य शोभां वर्धयन्त्यः, गृहस्य लक्ष्मीरूपाः पूजनीयाः सन्ति। अतः ताः सर्वदा विशेषरूपेण रक्षणीयाः।

हिन्दी– स्त्रियाँ आदर के योग्य, अत्यन्त सौभाग्यशालिनी, पवित्र, घर की शोभा और गृहलक्ष्मी कही गई हैं। अतः इनकी विशेष रूप से रक्षा की जानी चाहिए।

आंग्लम्– Women are respectable, fortunate, pure and brilliant light of houses, and dignity of homes. Hence they need be protected specially.

सम्बद्धाः श्लोकाः

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥ *(मनु. 3.56)*

पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः॥ *(मनु. 3.55)*

स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम्।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते॥ *(मनु. 3.62)*

प्रजनार्थं महाभागाः पूजार्हा गृहदीप्तयः।
स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन॥ *(मनु. 9.26)*

दाराधीनस्तथा स्वर्गः। *(मनु. 9.28)*

पुत्राधिकाश्च दौहित्रा भागिनेयाश्च भ्रातरः।
कन्याधिकाः पालनीया भ्रातृभार्य्यास्नुषास्वसा॥ *(शुक्र. 3/166)*

97. सत्त्ववतां भयं कुतः ?

श्लोकः

कान्तारे वनदुर्गेषु कृच्छ्रास्वापत्सु सम्भ्रमे।
उद्यतेषु च शस्त्रेषु नास्ति सत्त्ववतां भयम् ॥ 7.67 ॥

पदच्छेदः

कान्तारे वन-दुर्गेषु कृच्छ्रासु आपत्सु सम्भ्रमे।
उद्यतेषु च शस्त्रेषु नास्ति सत्त्ववताम् भयम् ॥

अन्वयः

कान्तारे वनदुर्गेषु कृच्छ्रासु आपत्सु सम्भ्रमे, उद्यतेषु शस्त्रेषु च सत्त्ववतां भयं नास्ति।

भावार्थः

संस्कृतम्– मनोबलेन युक्तस्य वने, वनदुर्गे, कठिनापत्सु, सम्भ्रमे, शस्त्रोत्थानस्थितौ च भीतिः न भवति। मनोबलं सर्वेषु बलेषु प्रधानमिति सारः।

हिन्दी– वन में, वन के दुर्गम स्थानों में, कठिनाई के समय, विपत्तियों में, घबराहट में, शस्त्रों के उठाये जाने पर भी मनोबल से युक्त मनुष्यों को भय नहीं सताता।

आंग्लम्– The people with great mental strength are not frightened even in forests, or in unapproachable difficult places, at the times of difficulties, or during calamities, during anxiety and even while facing the open weaponry.

सम्बद्धाः श्लोकाः

सिंहशिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु।
प्रकृतिरियं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः ॥ *(भर्तृ. 34)*

एकेनापि हि शूरेण पदाक्रान्तं महीतलम्।
क्रियते भास्करेणेव स्फारस्फुरिततेजसा ॥ *(सु.र.भा. 41.1)*

नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते मृगैः।
विक्रमार्जितसत्त्वस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता ॥ *(हितो.सु.मे. 19)*

तेजस्वी क्षमते सर्वं भोक्तुं वह्निरिवानघः। *(शुक्र. 3.146)*

९८. शत्रुः अवश्यं वध्यः

श्लोकः

न शत्रुर्वशमापन्नो मोक्तव्यो वध्यतां गतः।
न्यग्भूत्वा पर्युपासीत वध्यं हन्याद् बले सति।
अहताद्धि भयं तस्माज्जायते न चिरादिव ॥ 6.28 ॥

पदच्छेदः

न शत्रुः वशम् आपन्नः मोक्तव्यः वध्यताम् गतः।
न्यग्भूत्वा पर्युपासीत वध्यम् हन्यात् बले सति।
अहतात् हि भयम् तस्मात् जायते न चिरात् इव ॥

अन्वयः

वशम् आपन्नः वध्यतां गतः शत्रुः न मोक्तव्यः। न्यग्भूत्वा पर्युपासीत, बले सति वध्यं हन्यात्। तस्मात् अहतात् हि न चिरात् एव भयं जायते, अन्यथा सः भापयिष्यति।

भावार्थः

संस्कृतम्– वधार्हः शत्रुः वशम् आगते सति न मोचनीयः। यदि शत्रुः बलवान् भवति तर्हि विनम्रेण सेवां विधाय बले प्राप्ते अचिरादेव तं हन्यात्।

हिन्दी– वश में आये हुए, वध करने योग्य शत्रु को कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए। यदि शत्रु बलवान् है तो विनम्र होकर सेवा करे और बल होने पर उस मारने योग्य शत्रु को मार डाले क्योंकि उसके न मारे जाने से शीघ्र ही भय उत्पन्न हो सकता है।

आंग्लम्– An enemy brought under control and fit to be killed, should never be set free. First he should be served with humility and then having gained strength, should kill him who is doomed to be killed since, if not killed, he may prove dangerous.

सम्बद्धाः श्लोकाः

वहेदमित्रं स्कन्धेन यावत् कालस्य पर्ययः।
ततः प्रत्यागते काले भिन्द्यात् घटमिवाश्मनि ॥ *(महा.भा.आ.प. 139.21)*
साम्ना दानेन भेदेन समस्तैरथवा पृथक्।
विजेतुं प्रयतेतारीन् न युद्धेन कदाचन ॥ *(मनु. 7.198)*
सेवया वा वणिग्वृत्त्या रिपुराष्ट्रं विमृश्य च।
दत्ताभयं सावधानो व्यसनासक्तचेतसम्।
मार्जारलुब्धकवत् सन्तिष्ठन् नाशयेदरिम् ॥ *(शु.नी. 5.45)*

९९. सचिव-परीक्षा

श्लोकः

नापरीक्ष्य महीपालः कुर्यात्सचिवमात्मनः ।
अमात्ये ह्यर्थलिप्सा च मन्त्ररक्षणमेव च ॥ 6.19 ॥

पदच्छेदः

न अपरीक्ष्य महीपालः कुर्यात् सचिवम् आत्मनः ।
अमात्ये हि अर्थ-लिप्सा च मन्त्र-रक्षणम् एव च ॥

अन्वयः

महीपालः अपरीक्ष्य आत्मनः सचिवं न कुर्यात्, अर्थलिप्सा मन्त्ररक्षणं च अमात्ये एव (भवति) ।

भावार्थः

संस्कृतम्– राज्याद्यैश्वर्यप्राप्तिः, योजनारक्षणं च सचिवाधीनं भवति । अतः राजा सम्यक् परीक्ष्य एव कमपि सचिवं कुर्यात् ।

हिन्दी– राजा बिना परीक्षा किये अपना मन्त्री न बनाये क्योंकि नये राज्य आदि की प्राप्ति की इच्छा और गुप्त मन्त्र की सुरक्षा मन्त्री पर ही निर्भर है ।

आंग्लम्– The king should not appoint any one as minister without testing him since on him depends king's desire to achieve his objectives and also the secrecy of his policies.

सम्बद्धाः श्लोकाः

नासुहृत्परमं मन्त्रं भारतार्हति वेदितुम् ।
अपण्डितो वापि सुहृत् पण्डितो वाप्यनात्मवान् ॥ *(विदुर. 6.18)*

मौलाञ्छास्त्रविदः शूरान् लब्धलक्षान् कुलोद्भवान् ।
सचिवान्सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान् ॥ *(मनु. 7.54)*

निवर्तेतास्य यावद्भिरितिकर्तव्यता नृभिः ।
तावतोऽतन्द्रितान्दक्षान्प्रकुर्वीत विचक्षणान् ॥ *(मनु. 7.61)*

देशकालप्रविज्ञाता ह्यमात्य इति कथ्यते । *(शुक्र. 2/86)*

अधिकारे क्षमं दृष्ट्वा ह्यधिकारे नियोजयेत् ।
अधिकारमदं पीत्वा को न मुह्येत् पुनश्चिरम् ॥ *(शुक्र. 2/112)*

100. धर्मं न जह्यात्

श्लोकः

इदं च त्वां सर्वपरं ब्रवीमि
पुण्यं पदं तात महाविशिष्टम्।
न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्
धर्मं जह्याज्जीवितस्यापि हेतोः॥ 8.12 ॥

पदच्छेदः

इदम् च त्वाम् सर्वपरम् ब्रवीमि
पुण्यम् पदम् तात महा-विशिष्टम्।
न जातु कामात् न भयात् न लोभाद्
धर्मम् जह्यात् जीवितस्य अपि हेतोः॥

अन्वयः

तात ! इदं सर्वपरं पुण्यं महाविशिष्टं पदं त्वां ब्रवीमि। न कामात् न भयात् न लोभात् न जातु जीवितस्य अपि हेतोः धर्मं जह्यात्।

भावार्थः

संस्कृतम्– विदुरः धृतराष्ट्रं वदति– पुण्यमुत्तमम् अतिविशिष्टमेकं विषयं ब्रवीमि, शृणोतु। कामेन भयेन लोभेन वा प्रेरितः, जीवितार्थमपि कदापि धर्मं न त्याज्यम् इति।

हिन्दी– हे तात ! यह सर्वश्रेष्ठ, पुण्यकारी बहुत ही विशेष बात तुम्हें बताता हूँ। न काम के वशीभूत होकर, न भय से, न लालच से और न ही कभी जीवन के लिये भी मनुष्य धर्म का त्याग करे।

आंग्लम्– O dear ! I tell you something which is the best, purest and very special. One should never abandon one's Dharma even out of sheer passion, fear, greed or even for the sake of one's life.

सम्बद्धाः श्लोकाः

चला लक्ष्मीः चलाः प्राणाश्चलं जीवितयौवनम्।
चलाचले च संसारे धर्म एको हि निश्चलः॥ *(चाणक्य. 5.20)*

यौवनं जीवनं चित्तं छाया लक्ष्मीश्च स्वामिता।
चञ्चलानि षडेतानि ज्ञात्वा धर्मरतो भवेत्॥ *(शुक्र. 1.138)*

ऊर्ध्वबाहुर्विरोम्येष न च कश्चिच्छृणोति मे।
धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते॥ *(महा.स्वर्ग. 5.62)*

❖❖❖

अभ्यासः - 20

[श्लोकसङ्ख्या 96-100]

पूजनीया महाभागाः पुण्याश्च गृहदीप्तयः ।
स्त्रियः श्रियः गृहस्योक्तास्तस्माद् रक्ष्या विशेषतः ॥ 6.11 ॥

कान्तारे वनदुर्गेषु कृच्छ्रास्वापत्सु सम्भ्रमे ।
उद्यतेषु च शस्त्रेषु नास्ति सत्त्ववतां भयम् ॥ 7.67 ॥

न शत्रुर्वशमापन्नो मोक्तव्यो वध्यतां गतः ।
न्यग्भूत्वा पर्युपासीत वध्यं हन्याद् बले सति ।
अहताद्धि भयं तस्माज्जायते न चिरादिव ॥ 6.28 ॥

नापरीक्ष्य महीपालः कुर्यात्सचिवमात्मनः ।
अमात्ये ह्यर्थलिप्सा च मन्त्ररक्षणमेव च ॥ 6.19 ॥

इदं च त्वां सर्वपरं ब्रवीमि
पुण्यं पदं तात महाविशिष्टम् ।
न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्
धर्मं जह्याज्जीवितस्यापि हेतोः ॥ 8.12 ॥

1. **रिक्तस्थानानि पूरयत–**
[रिक्त स्थान की पूर्ति करें। Fill in the blanks.]

i. स्त्रियः .... गृहस्य श्रियः उक्ताः, तस्माद् विशेषतः .... ।

ii. कान्तारे .... कृच्छ्रासु .... सम्भ्रमे ।
उद्यतेषु च .... नास्ति .... भयम् ॥

iii. वशम् आपन्नः .... गतः शत्रुः न .... ।
बले सति .... हन्यात् । न चिरात् इव अहतात् हि .... तस्मात् जायते ।

iv. महीपालः आत्मनः सचिवम् .... न कुर्यात् ।
.... हि अर्थलिप्सा च .... एव च ।

v. तात ! इदं च सर्वपरं .... महाविशिष्टं पदं त्वां ब्रवीमि ।
जीवितस्य अपि .... न कामात् न .... न लोभात् न जातु .... जह्यात् ।

2. एकेन पदेन उत्तरं लिखत–

[एक शब्द में उत्तर लिखें। Answer in one word.]

i. स्त्रियः कस्य श्रियः प्रोक्ताः ? ....

ii. काः च विशेषतः रक्ष्याः ? ....

iii केषु उद्यतेषु अपि सत्त्ववतां भयं नास्ति ? ....

iv. वशम् आपन्नः कः न मोक्तव्यः ? ....

v. कथं भूत्वा पर्युपासीत ? ....

vi. यदि शत्रुः न हन्यते तर्हि तस्मात् किं जायते ? ....

vii. अर्थलिप्सा मन्त्ररक्षणं च कस्मिन् भवतः ? ....

viii. राजा आत्मनः सचिवं कथं कुर्यात् ? ....

ix. जीवितस्य हेतोः अपि किं न जह्यात् ? ....

x. विदुरः महाविशिष्टं पुण्यं कं ब्रवीति ? ....

3. यथोचितं सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत –

[यथोचित सन्धि या सन्धिविच्छेद करें। Either euphonically join or disjoin as required.]

i.	पुण्याः	+	....	=	पुण्याश्च
ii.	....	+	उक्ताः	=	गृहस्योक्ताः
iii.	उक्ताः	+	तस्मात्	=	....
iv.	कृच्छ्रासु	+	....	=	कृच्छ्रास्वापत्सु
v.	....	+	....	=	नास्ति
vi.	....	+	वशम्	=	शत्रुर्वशम्
vii.	आपन्नः	+	....	=	आपन्नो मोक्तव्यः
viii.	....	+	....	=	पर्युपासीत
ix.	अहतात्	+	हि	=	....
x.	....	+	जायते	=	तस्माज्जायते
xi.	....	+	इव	=	चिरादिव
xii.	न	+	....	=	नापरीक्ष्य

xiii. हि + ... = ह्यर्थलिप्सा

xiv. .... + न = कामान्न

xv. जह्यात् + अपि = ...

4. **पूर्णेन वाक्येन उत्तरं लिखत–**

[पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखें। Answer the following with complete sentence.]

i. कीदृशाः स्त्रियः विशेषतः रक्ष्याः ?

.... ।

ii. कुत्र सत्त्ववतां भयं नास्ति ?

.... ।

iii. सम्भ्रमे अपि केषां भयं नास्ति ?

.... ।

iv. कीदृशः शत्रुः न मोक्तव्यः ?

.... ।

v. कीदृश्याम् अवस्थायां वध्यं हन्यात् ?

.... ।

vi. अचिरादिव कस्माद् भयं जायते ?

.... ।

vii. राजा अपरीक्ष्य किं न कुर्यात् ?

.... ।

viii. 'तात' इति सम्बोधनं कस्मै प्रयुक्तम् ?

.... ।

ix. कस्य हेतोः अपि धर्मं न जह्यात् ?

.... ।

5. **विलोमपदानि मेलयत–**
[विलोम पद को मिलाएँ। Match the opposite words.]

i.	हतात्	क.	पापम्
ii.	अपरीक्ष्य	ख.	चिरात्
iii.	पुण्यम्	ग.	अभयम्
iv.	भयम्	घ.	अहतात्
v.	अचिरात्	ङ.	परीक्ष्य

6. **विशेष्येण सह विशेषणं योजयत–**
[विशेष्य के साथ विशेषण को जोड़ें। Match qualifier as per qualificand.]

	विशेषणम्		**विशेष्यम्**
i.	गृहदीप्तयः	क.	शस्त्रेषु
ii.	कृच्छ्रासु	ख.	पदम्
iii.	उद्यतेषु	ग.	आपत्सु
iv.	वशम् आपन्नः	घ.	स्त्रियः
v.	पुण्यम्	ङ.	शत्रुः

7. **भिन्नं पदं चिनुत–**
[भिन्न पद को लिखें। Write the odd-word.]

i. **यत्र विधिलिङ् नास्ति तत् पदं पृथक्कृत्य लिखत –**

जह्यात्, हन्यात्, कुर्यात्, भयात् ....

ii. **यत्र द्वितीया विभक्तिः नास्ति –**

श्रीः, वध्यम्, धर्मं, वध्यताम् ....

iii. **यत्र पञ्चमी विभक्तिः नास्ति –**

तस्मात्, लोभात्, जह्यात्, हेतोः ....

iv. **यत्र षष्ठीविभक्तिः नास्ति –**

सत्त्ववताम्, आत्मनः, गृहस्य, अपरीक्ष्य ....

v. **यत्र प्रथमा विभक्तिः नास्ति –**

गृहदीप्तयः, महीपालः, स्त्रियः, आत्मनः ....

8. रिक्तस्थानेषु समस्तपदानि लिखत–

[रिक्तस्थानों में समस्तपदों को लिखें। Write the compound words in the blanks.]

i. गृहस्य दीप्तयः = ...

ii. वनानां दुर्गेषु = ...

iii. न हतात् = ...

iv. न परीक्ष्य = ...

v. अर्थानां लिप्सा = ...

vi. मन्त्रस्य रक्षणम् = ...

vii. सर्वेभ्यः परम् = ...

9. प्रकृतिप्रत्ययं योजयित्वा पदानि रचयत–

[प्रकृति प्रत्यय को जोड़ कर पदों को लिखें। Write the words by adding prefix and suffix.]

i. पूज् + अनीयर् + टाप् + प्र. बहु. = ...

ii. रक्ष् + यत् + टाप् + प्र. बहु. = ...

iii. मुच् + तव्यत् पु. प्र. एक. = ...

iv. वध् + यत् + तल् द्विती. एक. = ...

v. हन् + क्त पु. प्र. एक. = ...

योग्यताविस्तरः

महीपालः – मही (पृथिवीं) पालयति (रक्षति) इति महीपालः = राजा

एवं भूपालः, द्वारपालः, राज्यपालः इत्यादयः ।

◆◆◆

श्लोकानुक्रमणी

श्लोकसङ्क्षेपः		पृष्ठ संख्या
अकस्मादेव कुप्यन्ति. .... पारिप्लवं यथा ॥	...	53
अकीर्तिं विनयो हन्ति. .... हन्त्यलक्षणम् ॥	...	54
अक्रोधेन जयेत् क्रोधम्. .... सत्येन चानृतम् ॥	...	127
अजाश्च कांस्यं. .... गृहे सदैव ॥	...	188
अतिक्लेशेन येऽर्थाः. .... मनःकृथाः ॥	...	129
अतिमानोऽतिवादश्च. .... न मृत्युर्भद्रमस्तु ते ॥	...	139
अन्यो धनं प्रेत्यगतस्य. .... वेष्ट्यमानः ॥	...	87
अन्योन्यसमुपष्टम्भात्. .... सरसीवोत्पलान्युत ॥	...	138
अप्युन्मत्तात् प्रलपतो. .... इव काञ्चनम् ॥	...	64
अभिप्रायं यो विदित्वा. .... सोऽनुकम्प्यः ॥	...	168
अभियुक्तं बलवता. .... आविशन्ति प्रजागराः ॥	...	148
अभिवादनशीलस्य. .... यशो बलम् ॥	...	3
अभ्यावहति कल्याणं. .... अनर्थायोपपद्यते ॥	...	22
अमित्रं कुरुते मित्रं. .... मूढचेतसम् ॥	...	20
अष्टौ गुणाः पुरुषं. .... कृतज्ञता च ॥	...	33
असूयैकपदं मृत्युः. .... शत्रवः त्रयः ॥	...	2
आत्मा नदी भारत!. .... नित्यमलोभ एव ॥	...	96
आत्मानमेव प्रथमं. .... मोघं विजिगीषते ॥	...	165
आलस्यं मदमोहौ च. .... विद्यार्थिनां मताः ॥	...	2
इज्याध्ययनदानानि. .... अष्टविधः स्मृतः ॥	...	116
इदं च त्वां सर्वपरं. .... जीवितस्यापि हेतोः ॥	...	199
इन्द्रियाणामनुत्सर्गो. .... सादयेद् दैवतान्यपि ॥	...	84
ईर्ष्यी घृणी न सन्तुष्टः. .... नित्यदुःखिताः ॥	...	41

एकं विषरसो हन्ति. .... राजानं मन्त्रविप्लवः ॥ ... 156
कान्तारे वनदुर्गेषु. .... सत्त्ववतां भयम् ॥ ... 196
कामक्रोधग्राहवतीं. .... जन्मदुर्गाणि सन्तर ॥ ... 98
क्षमा वशीकृतिर्लोके. .... किं करिष्यति दुर्जनः ॥ ... 63
गन्धेन गावः पश्यन्ति. .... इतरे जनाः ॥ ... 146
गुणाश्च षण्मितभुक्तं भजन्ते. .... इति क्षिपन्ति ॥ ... 66
चक्षुषा मनसा वाचा. .... लोकोऽनुप्रसीदति ॥ ... 177
चत्वारि राज्ञा तु महाबलेन. .... चारणैश्च ॥ ... 157
चलानि हीमानि. .... नित्यमम्भः ॥ ... 77
जरा रूपं हरति. .... सर्वमेवाभिमानः ॥ ... 107
तस्माद्राजेन्द्र भूम्यर्थे. .... पुत्रार्थमब्रुवन् ॥ ... 184
त्रिविधं नरकस्येदं. .... त्रयं त्यजेत् ॥ ... 97
दुष्कुलीनः कुलीनो वा. .... कुलीनशतात् वरः ॥ ... 55
द्यूतमेतत् पुरा कल्पे. .... हास्यार्थमपि बुद्धिमान् ॥ ... 166
द्वाविमौ ग्रसते भूमिः. .... चाप्रवासिनम् ॥ ... 158
द्वाविमौ पुरुषौ राजन्!. .... दरिद्रश्च प्रदानवान् ॥ ... 63
द्वे कर्मणी नरः कुर्वन्. .... अनर्चयंस्तथा ॥ ... 31
धृतिः शमो दमः. .... समिधः श्रियः ॥ ... 108
नगरे प्रतिरुद्धः सन्. .... अनृतं वदेत् ॥ ... 178
न तथेच्छन्ति कल्याणान्. .... पापचेतसः ॥ ... 20
न तन्मित्रं यस्य. .... सङ्गतानीतराणि ॥ ... 119
न मनुष्ये गुणः कश्चिद्. .... हि रोगिणः ॥ ... 74
न विश्वसेदविश्वस्ते. .... मूलान्यपि निकृन्तति ॥ ... 186
न वै भिन्नाः. .... प्रशमं रोचयन्ति ॥ ... 137
न शत्रुर्वशमापन्नो. .... न चिरादिव ॥ ... 197
नष्टं समुद्रे पतितं. .... नष्टं हुतमनग्निकम् ॥ ... 105
न स्वे सुखे वै. .... सत्पुरुषार्थशीलः ॥ ... 41

न हृष्यत्यात्मसम्माने. .... पण्डित उच्यते ॥ ... 14
नाक्रोशी स्यात्. .... रुषतीं वर्जयीत ॥ ... 30
नापरीक्ष्य महीपालः. .... मन्त्ररक्षणमेव च ॥ ... 198
नाममात्रेण तुष्येत. .... सर्वहरो भवेत् ॥ ... 165
नित्यो धर्मः. .... तोषपरो हि लाभः ॥ ... 88
निषेवते प्रशस्तानि. .... पण्डितलक्षणम् ॥ ... 4
पञ्चाग्नयो मनुष्येण. .... गुरुश्च भरतर्षभ ॥ ... 32
परं क्षिपति दोषेण. .... मूढतमो नरः ॥ ... 21
परिच्छदेन क्षेत्रेण. .... भोजनाच्छादनेन च ॥ ... 53
पितृपैतामहं राज्यं. .... अनये स्थितः ॥ ... 145
पीठं दत्त्वा साधवे. .... अन्नमवेक्ष्य धीरः ॥ ... 43
पुनर्नरो म्रियते. .... शोच्यते च ॥ ... 85
पूजनीया महाभागाः. .... रक्ष्या विशेषतः ॥ ... 195
पूर्वे वयसि तत् कुर्याद्. .... सुखं वसेत् ॥ ... 116
प्रज्ञावृद्धं धर्मवृद्धं. .... मुह्येत् कदाचित् ॥ ... 98
प्राप्नोति वै वित्तम्. .... महाकुलानाम् ॥ ... 136
बुद्ध्या भयं प्रणुदति. .... योगेन विन्दति ॥ ... 11
मत्या परीक्ष्य मेधावी. .... मैत्रीं समाचरेत् ॥ ... 12
महान्तमप्यर्थम्. .... सर्प इवावमुच्य ॥ ... 128
महाबलान् पश्च. .... वशमन्तकस्य ॥ ... 86
मितं भुङ्क्ते. .... प्रजहत्यनर्थाः ॥ ... 175
यः एव यत्नः. .... स्वराष्ट्रपरिपालने ॥ ... 140
यच्छक्यं ग्रसितुं ग्रस्यं. .... भूतिमिच्छता ॥ ... 65
यथा मधु समादत्ते. .... अविहिंसया ॥ ... 177
यथा यथा हि पुरुषः. .... नात्र संशयः ॥ ... 106
यं प्रशंसन्ति कितवाः. .... जीवति मानवः ॥ ... 187
ययोश्चित्तेन वा चित्तं. .... मैत्री न जीर्यति ॥ ... 126

यस्तात न क्रुध्यति. .... परित्यजन्ति ॥ ... 167
यस्मिन् यथा वर्तते. .... साधुना प्रत्युपेयः ॥ ... 185
यस्य कृत्यं न जानन्ति. .... पण्डित उच्यते ॥ ... 155
यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति. .... पण्डित उच्यते ॥ ... 13
यस्य मन्त्रं न जानन्ति. .... ऐश्वर्यमश्नुते ॥ ... 155
यादृशैः सन्निविशते. .... तादृग् भवति पूरुषः ॥ ... 118
यावत्कीर्तिर्मनुष्यस्य. .... स्वर्गलोके महीयते ॥ ... 76
येन त्वेतानि सर्वाणि. .... प्रज्ञाबलमुच्यते ॥ ... 11
यो ज्ञातिमनुगृह्णाति. .... आनन्त्यमश्नुते ॥ ... 176
रथः शरीरं पुरुषस्य राजन्. .... रथीव धीरः ॥ ... 95
रोहते सायकैर्विद्धं. .... न संरोहति वाक्क्षतम् ॥ ... 23
वनस्पतेरपक्वानि. .... चास्य विनश्यति ॥ ... 74
विद्याशीलवयोवृद्धान्. .... मूढोऽवमन्यते ॥ ... 108
शीलं प्रधानं पुरुषे. .... न बन्धुभिः ॥ ... 44
शुभं वा यदि वा. .... नेच्छेत् पराभवम् ॥ ... 147
षडेते तु गुणाः पुंसा. .... क्षमा धृतिः ॥ ... 33
सत्येन रक्ष्यते धर्मो. .... वृत्तेन रक्ष्यते ॥ ... 52
सन्तापाद् भ्रश्यते रूपं. .... व्याधिमृच्छति ॥ ... 127
समृद्धाः गुणतः केचिद्. .... धृतराष्ट्र विवर्जय ॥ ... 75
सम्भोजनं संकथनं. .... न विरोधः कदाचन ॥ ... 42
सुखार्थिनः कुतो विद्या. .... त्यजेत् सुखम् ॥ ... 1
सुलभाः पुरुषाः राजन्. .... श्रोता च दुर्लभः ॥ ... 148
सुवर्णपुष्पां पृथिवीं. .... जानाति सेवितुम् ॥ ... 117

◆◆◆

परिशिष्टम्

पदकोशः

कोष्ठके दत्ता सङ्ख्या प्रस्तुतग्रन्थे सङ्कलित-श्लोकानां क्रमसङ्ख्या

अकस्मात् (अ.) *अचानक,* all of a sudden. (28)
अकीर्त्तिम् (सं.) न कीर्त्तिः अकीर्त्तिः (नञ् तत्पु.) इ. स्त्री. द्वि. एक. *अपयश को,* defame, ill-reputation. (29)
अक्रोधेन (सं.) न क्रोधः अक्रोधः (नञ् तत्पु.) अ.पुं. तृ. एक.; *प्रेम से,* by love. (63)
अक्षोभ्यः (वि.) न क्षोभ्यः (नञ् तत्पु.), अ. पुं. प्र. एक.; *शान्त,* unexcited, peaceful. (10)
अग्नयः (सं.) अग्नि इ.पुं.प्र.बहु. *पवित्र अग्नियाँ,* sacred fires. (18)
अग्निः (सं.) अग्नि इ.पुं.प्र.एक., *आग,* fire. (44)
अघृणा (सं.) न घृणा (नञ् तत्पु.) आ.स्त्री.प्र.एक. *प्रेम, घृणा का अभाव,* absence of hatred. (56)
अजाः (सं.) अज/अजा, प्र.बहु., *बकरे/बकरियाँ,* goats. (95)
अतन्द्री (वि.) न तन्द्रा यस्य सः अतन्द्रः, अतन्द्रः अस्यास्ति प्र. एक., *तन्द्रा से रहित,* one without any laziness (85)
अतिक्रमेण (सं.) अतिक्रम अ.पुं.तृ.एक. *उल्लंघन से,* by crossing over, by trespassing. (65)
अतिक्लेशेन (सं.) अतिक्लेश, अ.पुं.तृ.एक. *अत्यधिक कष्ट से,* through unparalleled troubles. (65)
अतिमानः (सं.) अ.पुं.प्र.एक. *अत्यधिक घमण्ड,* excessive conceit. (69)
अतिवादः (सं.) अ.पुं.प्र.एक. *अत्यधिक बोलना, वाचालता,* excessive talking. (2, 69)
अतिविश्वसेत् (क्रि.) अति वि श्वस् विलि. प्रपु. एक., *अधिक विश्वास करे,* may completely confide. (93)
अत्यर्थम् (अ.) *अत्यधिक,* excessive. (41)
अत्यागः (सं.) न त्यागः (नञ् तत्पु.) अ.पुं.प्र.एक. *त्याग न करना,* absence of sacrifice. (69)
अत्यागित्वम् (सं.) अत्यागस्य भावः, नपुं.प्र.एक., *त्याग न करने की भावना,* feeling of not sacrificing anything. (3)
अत्र (अ.) *यहाँ,* here. (52)
अथ (अ.) *इसके बाद, तदनन्तर, और,* thereafter and. (8)
अधर्मयुक्तम् (वि.) न धर्मः अधर्मः (नञ् तत्पु.) अधर्मेण युक्तम् (तृ.तत्पु.) नपुं. द्वि.एक. *अधर्म से युक्त, पाप से कमाया हुआ,* full of sins, earned by unfair means. (64)
अनग्निकम् (वि.) न अग्निकम्, नपुं.प्र.एक. *बिना अग्नि वाला,* a sacrifice without fire. (51)
आनन्त्यम् (वि.) अनन्तस्य भावः नपुं.द्वि.एक. *कभी समाप्त न होने वाली,* unending, limitless (87).
अनभिद्रोहः (सं.) न अभिद्रोहः (नञ् तत्पु.) पुं.प्र.एक. *द्रोह का अभाव,* absence of malice. (55).
अनये (सं.) न नये, (नञ् तत्पु.) पुं.स.एक.; *बुरी नीति में,* in bad policies. (71).
अनर्चयन् (वि.) न अर्चयन् (नञ् तत्पु.) अर्च्, शतृ पुं.प्र.एक. *पूजा न करते हुए,* not worshipping, not respecting. (17).
अनर्थम् (सं.) न अर्थः (नञ् तत्पु.) पुं.द्वि.एक. *संकट को,*

मुसीबत को, troubles, calamities. (29).

अनर्थाः (सं.) न अर्थः अनर्थः (नञ् तत्पु.) पुं.प्र.बहु. *मुसीबतें, कष्ट;* calamities, troubles. (86)

अनर्थाय (सं.) न अर्थः अनर्थः (नञ् तत्पु.) पुं.च.एक. *अनर्थ के लिए;* for troubles. (14).

अनसूया (सं.) न असूया (नञ् तत्पु.) आ.स्त्री.प्र.एक. *ईर्ष्या का न होना;* absence of jealousy (19).

अनातुरत्वाद् (सं.) न आतुरः अनातुरः (नञ् तत्पु.) अनातुरस्य भावः अनातुरत्वम्, तस्मात् पं.एक. *स्वास्थ्य की तुलना में;* in comparison to health. (37).

अनात्मनि (सं.) न आत्मनि (नञ् तत्पु.) नपुं. स.एक. *आत्म ज्ञान से रहित व्यक्ति में;* in a person who has not realised his self. (51).

अनार्यसेवा (सं.) न आर्यः अनार्यः (नञ् तत्पु.) अनार्यस्य सेवा (ष. तत्पु.) आ.स्त्री.प्र.एक. *दुष्ट की सेवा;* serving the wicked. (53).

अनालस्यम् (सं.) अलसस्य भावः आलस्यम्, न आलस्यम्; नपुं.प्र.एक. *आलस्य का न होना;* lack of laziness. (19).

अनाविलम् (वि.) न आविलं यस्मिन् तत् (नञ्, बहुव्री); नपुं. प्र.एक. *रोगरहित,* free from diseases. (35)

अनास्तिकः (वि.) न नास्तिकः (नञ् तत्पु.) पुं.प्र.एक., *आस्तिक,* one who believes in god. (5)

अनिष्ठुरा (वि.) न निष्ठुरा (नञ् तत्पु.) आ.स्त्री.प्र.एक. *कोमल,* soft. (55)

अनिमित्ततः (क्रि.वि.) न निमित्तम् अनिमित्तम् (नञ् तत्पु.) तसिल्; *बिना किसी कारण से,* without any reason. (28)

अनीशानः (वि.) न ईशानः (नञ् तत्पु.), पुं.प्र.एक. *बिना प्रभुत्व के,* one without having any authority. (13)

अनुकम्प्यः (वि.) अनु कम्प् यत्; पुं.प्र.एक. *दया के योग्य,* fit to be obliged. (85)

अनुगृह्णाति (क्रि.) अनु ग्रह् लट् प्रपु. एक. *कृपा करता है;* obliges. (87)

अनुतापम् (सं.) अनुताप, पुं.द्वि.एक. *पश्चात्ताप,* repentance (22)

अनुत्सर्गः (सं.) न उत्सर्गः, (नञ् तत्पु.) पुं.प्र.एक. *अनासक्ति,* non-attachment. (41)

अनुप्रसीदति (क्रि.) अनु प्र सद् लट् प्रपु. एक. *प्रसन्न होता है;* feels happy after him, rejoices. (89)

अनुरक्तः (वि.) अनु रज् क्त, पुं. प्र. एक. *स्नेही, अनुरागी,* attached, affectionate. (85)

अनृतम् (सं.) न ऋतम् (नञ् तत्पु); नपुं.द्वि.एक. *झूठ को,* falsehood. (90, 91)

अन्तकस्य (सं.) अन्तक, पु. ष. एक., *यमराज के;* of the king of Death. (43)

अन्नम् (सं.) अद् क्त नपुं. द्वि. एक., *भोजन को;* food. (24)

अन्यः (सर्व.) पुं. प्र. एक. *कोई और;* somebody else. (44)

अन्यस्य (सर्व.) अन्य, पुं. ष. एक., *किसी और के, पराये;* somebody else's. (22)

अन्योन्यसमुपष्टम्भात् (सं.) अन्योन्यस्य समुपष्टम्भात् (ष. तत्पु.) पुं.प.एक. *एक-दूसरे के सहारे से,* with the help of one another. (68)

अन्योन्यापाश्रयेण (सं.) अन्योन्यस्य अपाश्रयेण (ष. तत्पु.) पुं. तृ.एक. *एक-दूसरे के सहयोग से,* with the co-operation of one another. (68)

अपक्वानि (वि.) न पक्वानि (नञ् तत्पु.) नपुं.प्र.बहु. *कच्चे,* raw, unripe. (36)

अपत्यम् (सं.) नपुं.प्र.एक. *सन्तान;* progeny. (35).

अपरीक्ष्य (अ.) न परीक्ष्य (नञ् तत्पु.) परि ईक्ष, ल्यप्; *बिना परीक्षा किये,* without examining. (99).

अपरे (सर्व.) अपर पुं. प्र. बहु., *अन्य, दूसरे;* others. (38)

अपि (अ.) *भी;* also. (33, 41)

अपृष्टः (वि.) न पृष्टः (नञ् तत्पु.) प्रच्छ.क्त.पुं.प्र.एक., *न*

पूछा गया, without being asked. (73)

अप्रमत्तः (वि.) न प्रमत्तः (नञ् तत्पु.) प्र. मद् क्त पुं. प्र. एक., *सावधान;* careful (46).

अप्रवासिनम् (वि.) न प्रवासी (नञ् तत्पु.) अप्रवासी, द्वि. एक., *यात्रा न करने वाले को,* one who does not travel around. (80)

अप्रियस्य (वि.) न प्रियः अप्रियः (नञ् तत्पु.) पुं.ष.एक., *कड़वे वचन के,* of bitter words. (74)

अबहुभाषिता (सं.) न बहुभाषिता (नञ् तत्पु.) आ.स्त्री.प्र. एक. *बहुत अधिक न बोलना,* brevity. (20)

अब्रुवन् (वि.) न ब्रुवन् (नञ् तत्पु.) ब्रू शतृ पुं. प्र. एक., *न कहते हुए;* not uttering. (17, 91)

अभिप्रायम् (सं.) अभिप्राय द्वि. एक., *उद्देश्य को, मन्तव्य को;* intentions. (85)

अभिमानः (सं.) पुं. प्र. एक. *घमण्ड;* haughtiness, conceit. (53)

अभिमानित्वम् (सं.) अभिमानस्य भावः, नपुं. प्र. एक. *अभिमान की भावना;* feeling of haughtiness. (3)

अभिमानी (वि.) अभिमान इन्, पुं. प्र. एक. *घमण्डी;* one full of self-conceit, proud. (16)

अभियुक्तम् (वि.) अभि युज् क्त, द्वि. एक., *अपराधी को;* one who is guilty, culprit, accused. (75)

अभिवादनशीलस्य (वि.) अभिवादनं शीलं यस्य तस्य, (बहु.) पुं. ष. एक. *प्रणाम करने वाले की;* of one who bows (before elders). (4)

अभ्यागताय (वि.) अभि आगत, पुं. च. एक. *अतिथि के लिये;* for the guest (24)

अभ्यावहति (क्रि.) अभि आ वह् लट् प्रपु. एक., *प्रदान करती है, लाती है;* brings. (14)

अभ्रम् (सं.) नपुं. द्वि. एक. *बादल को;* cloud. (28, 71)

अमात्यान् (सं.) अमात्य, पुं. द्वि. बहु., *मन्त्रियों को;* ministers. (81)

अमात्ये (सं.) अमात्य, पुं. स. एक., *मन्त्री पर;* on the minister. (99)

अमितम् (वि.) न मितम् (नञ् तत्पु.) द्वि. एक. *असीम;* not limited, unlimited. (86)

अमित्रम् (सं.) न मित्रम् (नञ् तत्पु.) नपुं.द्वि. एक., *शत्रु को;* enemy. (11)

अमित्रेषु (सं.) अमित्र, नपुं. स. बहु., *शत्रुओं पर;* even on the enemies. (86)

अमुत्र (अ.) *दूसरे लोक को;* to the other world. (44)

अम्भः (सं.) अम्भस्, नपुं.प्र.एक. *जल, पानी;* water. (40)

अयम् (सर्व.) इदम्, पुं. प्र. एक., *यह;* this person (44, 56)

अरेः (सं.) अरि, पुं. ष. एक., *शत्रु के;* of the enemy (65).

अर्थः (सं.) पुं.प्र.एक. *प्रयोजन, लाभ;* use, utility, purpose. (25)

अर्थम् (सं.) अर्थ पुं. द्वि. एक., *धन को;* wealth, riches. (64)

अर्थलिप्सा (सं.) अर्थस्य लिप्सा, (ष.तत्पु.) आ. स्त्री. प्र. एक. *धन को पाने की इच्छा;* desire to obtain wealth. (99)

अर्थाः (सं.) अर्थ, पुं. प्र. बहु., *धन सम्पत्ति;* wealth. (65)

अर्थान् (सं.) अर्थ, पुं. द्वि. बहु., *धनों को;* riches. (82, 88)

अर्हसि (क्रि.) अर्ह् लट् मपु.एक., *(बोलने में) समर्थ हो सकते हो;* able to (speak). (91)

अलक्षणम् (सं.) न लक्षणम् यस्मिन् (बहुव्री.) तम्. पुं. द्वि. एक. *दुर्व्यसनी को;* one with bad habits. (29)

अलोभः (सं.) न लोभः इति, (नञ् तत्पु.) पुं. प्र. एक. *लालच का न होना;* absence of greed. (56)

अल्पज्ञैः (वि.) अल्पं जानाति इति अल्पज्ञः (उपपद तत्पु.) पुं. तृ.बहु. *कम जानने वालों के साथ;* with those who

know very little. (79)

अवमन्यते (क्रि.) अव मन् लट् प्रपु.एक., *निरादर करता है;* insults. (54)

अवमानी (वि.) अवमानिन् पुं. प्र. एक., *अपमान करने वाला;* one who insults. (16)

अवमानेन (सं.) अवमान, पुं. तृ. एक. *अपमान के द्वारा;* by way of insult. (10)

अवमुच्य (अ.) अव मुच् ल्यप्, *छोड़कर;* having abandoned. (64)

अवसन्नः (वि.) अव सद् क्त, पुं. प्र. एक., *दुःखी* a distressed person (95)

अविरोद्धारम् (वि.) न विरोद्धारम्, (नञ् तत्पु.) विरुध् तृच् पुं. द्वि. एक., *न विरोध करने वाले को;* to one who does not oppose. (80)

अविश्वस्ते (वि.) न विश्वस्ते (नञ् तत्पु.) वि. श्वस् क्त पुं. स. एक., *अविश्वास के योग्य पुरुष पर;* on one who can not be trusted. (93)

अविहिंसया (सं.) न विहिंसया (नञ् तत्पु.) आ.स्त्री.तृ.एक. *बिना हिंसा के,* without harming anyone. (88)

अवेक्ष्य (अ.) अव ईक्ष् ल्यप्; *देखकर,* having seen (24)

अशुश्रूषा (सं.) न शुश्रूषा (नञ् तत्पु.) आ. स्त्री. प्र. एक. *न सुनने की इच्छा;* absence of desire to listen. (2)

अशृण्वति (वि.) न शृण्वति, (नञ् तत्पु.) श्रु शतृ, स. एक. *न सुनने वाले में;* in one who does not wish to listen. (51)

अश्नुते (क्रि.) अश् लट् प्रपु. एक., *प्राप्त करता है;* gets (77, 87)

अश्मभ्यः (सं.) अश्मन् नपुं. पं. बहु., *पत्थरों से;* from the stones. (33)

अश्वाः (सं.) अश्व, पुं. प्र. बहु., *घोड़े;* horses. (46)

अष्टौ (संख्या) अष्टन् प्र. बहु., *आठ;* eight. (20)

असकृत् (अ.) न सकृत् (नञ् तत्पु.) *बार-बार;* many a times. (8)

असतः (वि.) न सतः, अस् शतृ द्वि. बहु., *दुष्टों को,* wicked people. (17)

असद्बलेन (सं.) असतः बलम् तेन (ष. तत्पु.) नपुं. तृ. एक. *असत्य की शक्ति से;* by the power of falsehood, through unfair means. (66)

असमृद्धिः (सं.) न समृद्धिः, (नञ् तत्पु.) इ. स्त्री. प्र. एक. *गरीबी, समृद्धि का न होना;* adversity. (9)

असयः (सं.) असि पुं. प्र. बहु., *तलवारें;* swords (69)

असाधुम् (वि.) न साधुः असाधुः (नञ् तत्पु.) पुं.द्वि.एक. *दुर्जन को;* to a wicked person. (63)

असाधूनाम् (वि.) न साधुः असाधुः, (नञ् तत्पु.) पुं. ष. बहु. *दुर्जनों की;* of the wicked people. (28)

असूया (सं.) आ. स्त्री. प्र. एक. *ईर्ष्या;* jealousy. (2, 53)

अस्ति (क्रि.) अस् लट् प्रपु. एक., *है;* is. (1)

अस्तु (क्रि.) अस् लोट्, प्रपु. एक., *होवे,* may you have (good luck) (भद्रम्) अस्तु (69)

अस्मिन् (सर्व.) इदम् पुं. स. एक., *इसमें,* in this (17)

अस्य (सर्व.) इदम् पुं. ष. एक., *इसका;* of this (35, 36, 40, 45, 46, 52)

अहतात् (वि.) न हता, अहत (नञ् तत्पु.) पं. एक., *न मारे जाने से;* without being killed (98)

आक्रोशी (वि.) आक्रोश इन्, पुं. प्र. एक., *क्रोध प्रकट करने वाला, चिल्लाने वाला;* one who expresses anger, one who shouts. (16)

आचारः (सं.) पुं. प्र. एक. *आचरण;* conduct. (29)

आतुरम् (वि.) आतुर, पुं. द्वि. एक., *चिन्तित को;* one who is anxious, ill. (87)

आत्मनः (सं.) आत्मन् पुं. ष. एक., *अपना, अपने आप का;* of one's own self (48, 99)

आत्मवन्तम् (वि.) आत्मवत्, पुं. द्वि. एक. *आत्मज्ञानी को;* to one who knows his own self. (86)

आत्मविधित्सा (सं.) आत्मनः विधित्सा, (ष. तत्पु.) आ.स्त्री. प्र.एक. *अपने ही पालन पोषण की इच्छा;* desire to look after one's own self only. (69)

आत्मसम्माने (सं.) आत्मनः सम्मानः (ष. तत्पु.) तस्मिन् पुं. स.एक. *अपने सम्मान पर,* on one's own honour. (10)

आत्मसंस्थाम् (वि.) आत्मनि संस्थाम्, (स. तत्पु.) आ.स्त्री. द्वि.एक. *अपने विषय में;* about his own self. (24)

आत्मा (सं.) आत्मन्, पुं. प्र. एक., *अपनी आत्मा;* one's own self (18, 46, 47, 85)

आत्मानम् (सं.) आत्मन्, पुं. द्वि. एक., *अपने आप* को, to oneself (81)

आदद्यात् (क्रि.) आ दा, विलि. प्रपु. एक., *ले लेवे;* one should accept, take away. (33, 88)

आद्यम् (वि.) अद् ण्यत् नपुं. प्र. एक. *खाने योग्य; खाना चाहिए;* fit to be eaten, should be eaten. (34)

आद्यूनः (वि.) पुं. प्र. एक. *पेटू, बहुत अधिक खाने वाला;* a glutton, one who eats two much. (35)

आनीय (अ.) आ नी ल्यप्. *लाकर;* having brought. (24)

आपत्सु (सं.) आपद्, स्त्री. स. बहु., *आपत्तियाँ में;* in adversities, under calamities (97)

आपन्नः (वि.) आ पद् क्त पुं. प्र. एक., *प्राप्त, आया हुआ;* brought under control. (98)

आप्नोति (क्रि.) आप् लट् प्रपु. एक., *प्राप्त करता है;* gets. (36, 66)

आभ्यन्तराः (वि.) आभ्यन्तर, पुं. प्र. बहु., *अन्दर के लोग, निकट के सम्बन्धी,* close relatives. (77)

आयुः (सं.) नपुं. प्र. एक. उम्र वय; age. (4, 35)

आयूंषि (सं.) आयुष् नपुं. प्र. बहु., *आयुओं को;* ages, lives of the men. (69)

आरभते (क्रि.) आ रभ् लट् प्रपु. एक., *प्रारम्भ करता है;* initiates. (11)

आरोग्यम् (सं.) नपुं. प्र. एक. *स्वास्थ्य;* health. (35)

आर्यः (वि.) पुं. प्र. एक. *सज्जन;* noble person. (85)

आलस्यम् (सं.) *आलस्य,* नपुं. प्र. एक. *प्रमाद;* laziness. (3)

आविशन्ति (क्रि.) आ विश् लट् प्रपु. बहु., *प्रविष्ट हो जाते हैं;* enter. (75)

आशा (सं.) आ. स्त्री. प्र. एक. *उम्मीद;* hope. (53)

आश्रितेभ्यः (वि.) आश्रित, पुं. च. बहु., *आश्रितों के लिये;* for his sub-ordinates. (86)

आश्वसीत (क्रि.) आ श्वस् विलि. प्रपु. एक, *आश्वस्त होवे;* may trust, confide. (60)

आहुः (क्रि.) ब्रू लट्, प्रपु. बहु., *कहते हैं;* say. (11, 79)

इच्छता (वि.) इष् शतृ पुं. तृ. एक., *इच्छा करते हुए के द्वारा;* by one who wishes. (34)

इच्छन्ति (क्रि.) इष् लट्. प्रपु. बहु., *चाहते हैं;* want, desire. (12)

इच्छेत् (क्रि.) इष् विलि. प्रपु. एक., *चाहे;* one may desire. (59, 73)

इज्याध्ययनदानानि (सं.) इज्या च अध्ययनं च दानम् च (द्वन्द्व), प्र.बहु., *यज्ञ, अध्ययन और दान;* sacrifice, study and charity. (56)

इतराणि (सर्व.) इतर, नपुं., प्र. बहु., *अन्य;* the others. (60)

इतरे (सर्व.) इतर, प्र. बहु., *अन्य, दूसरे लोग;* the others. (72)

इति (अ.) *इस प्रकार;* like this. (35)

इदम् (सर्व.) नपुं. प्र. एक., द्वि. एक. *यह;* this. (48, 100)

इन्द्रियाणि (सं.) इन्द्रियम् नपुं. प्र. बहु., *इन्द्रियाँ,* sense-organs. (40, 46)

इन्द्रियाणाम् (सं.) इन्द्रियम् नपुं. ष. बहु. *इन्द्रियों की;* of the sense-organs. (41)

इमानि (सर्व.) इदम् नपुं., प्र. बहु. *ये सब;* these. (40)

इमौ (सर्व.) इदम् पुं. प्र. द्वि., ये दोनों, *इन दोनों को;* these two.(32, 80)

इव (अ.) *तरह;* just like, (10, 33, 40, 46, 64, 68, 85)

इह (अ.) *यहाँ, इस संसार में;* here, in this world. (25, 67)

ईर्ष्यी (वि.) ईर्ष्या इन्, पुं. प्र. एक. *ईर्ष्या करने वाला;* a jealous person (21)

उक्ताः (क्त) ब्रू. (वच्) क्त, प्रपु. बहु., *कही गई हैं;* have been described (96)

उच्यते (क्रि.) ब्रू.(वच्), कर्म. लट् प्रपु. एक., *कहा जाता है कहीं जाती है;* is described (7, 9, 10, 76)

उत (अ.) *अथवा, तथा;* and. (16, 68)

उत्पन्नम् (वि.) उत् पद क्त, नपुं. प्र. एक. *पैदा हुआ;* born, arising out of. (93)

उत्पलानि (सं.) उत्पल, नपुं., प्र. बहु., *कमल;* lotuses (68)

उत्सर्गः (सं.) उत्सर्ग, पुं. प्र. एक. *प्रवृत्ति, आसक्ति;* attachment (41)

उद्यतेषु (वि.) उत् यत् क्त, स. बहु., *(शस्त्रों के) उठाये जाने पर;* with weapons wielded high up for killing (97)

उन्मत्तात् (वि.) उत्, मन् क्त, पं. एक. *पागल से भी;* even from a mad person, (33)

उपचर्यम् (वि.) उपचर् यत्, नपुं. प्र. एक. *सेवा की जाये, पास जाया जाये;* be served, approached (60)

उपपद्यते (क्रि.) उप पद् कर्म. लट्, प्रपु. एक., *सिद्ध होती है;* becomes, proves to be. (14)

उपसेवते (क्रि.) उप सेव्, लट्, प्रपु. एक., *सेवा करता है;* serves. (59)

उष्णम् (वि.) नपुं. प्र. एक. *गर्म, गर्मी;* hot, summer. (9)

ऋच्छति (क्रि.) ऋच्छ्, लट् प्रपु. एक., *जाता है, प्राप्त होता है;* goes to, becomes a victim of. (62)

ऋते (अ.) *बिना;* without, governs fifth case-ending. (37)

एकः/एकम् (संख्या) पुं. प्र. एक., द्वि. एक., नपुं. प्र. एक., one. (78, 82)

एकपदम् (अ.) *एक साथ, तुरन्त;* immediate, instantaneous. (2)

एतत् (सर्व.) नपुं. प्र. एक., *यह;* this. (5, 28, 48)

एताः (सर्व.) एतत्, स्त्री., प्र. बहु., *ये सब* (स्त्रियाँ) these women. (55)

एतानि (सर्व.) एतत्, नपुं. प्र. बहु., *ये सब;* these. (7, 69, 95)

एते (सर्व.) एतत्, पुं., प्र. बहु., *ये सब;* these. (3, 19, 69)

एनम् (सर्व.) एतत् पुं., द्वि. एक., *इसको;* this, to this. (35, 84)

एव (अ.) *ही;* just quite, merely (3, 28, 47, 64, 69, 76)

एषाम् (सर्व.) इदम्, पुं.नपुं., ष. बहु., *इन सब का;* of these (12)

ऐश्वर्यम् (सं.) नपुं. द्वि. एक. *धनसम्पदा;* prosperity. (77)

कथ्यते (क्रि.) कथ् कर्म.लट्.प्रपु. एक., *कहा जाता है;* is called, is described. (22)

कदर्यम् (वि.) कदर्य, पुं. द्वि. एक., *कन्जूस को;* a miser. (63)

कदाचन (अ.) *कभी भी;* ever. (19, 23)

कदाचित् (अ.) संभवतः, *कभी भी;* ever. (50)

करिष्यति (क्रि.) कृ लृट्, प्रपु. एक., *करेगा;* will do. (31)

करे (सं.) कर, पुं. सं. एक., *हाथ में;* in the hand. (31)

करोति (क्रि.) कृ, लट्, प्रपु. एक., *कर सकता है,* करता है; can do, does. (85)

कर्तव्यः (वि.) कृ तव्यत्, पुं. प्र. एक., *करना चाहिए;* must be done. (70)

कर्म (सं.) कर्मन् नपुं., द्वि. एक. *कार्य,* action. (11, 86)

कर्मणा (सं.) कर्मन्, तृ. एक., *काम के द्वारा,* through action. (71, 89)

कर्मणी (सं.) कर्मन्, द्वि. द्वि., *दो काम,* two actions (17)

कल्पे (सं.) कल्प, स. एक., *कल्प में, प्राचीन युग में,* in ancient times. (83)

कश्चित् (सर्व.) किम् चित्, पुं. प्र. एक. *कोई, अन्य,* some other, (denoting uncertainty.) (37)

कांस्यम् (सं.) नपुं. प्र. एक. *कांसे के पात्र,* utensils made of bronze. (95)

काञ्चनम् (सं.) नपुं द्वि. एक. *सोना,* gold. (33)

कान्तारे (सं.) कान्तार, स. एक., *वन में,* in the forest. (97)

कामः (सं.) काम प्र. एक. *इच्छा, वासना,* desire, lust. (48, 53)

कामक्रोधग्राहवतीम् (वि.) कामः च क्रोधः च, कामक्रोधौ एव ग्राहौ, ताभ्याम् युक्ताम् द्वि. एक., *काम क्रोध रूपी मगरमच्छों वाली,* full of crockodiles in the shape of lust and anger. (49)

कामात् (सं.) काम, पं. एक., *काम वासना के कारण,* because of lust. (100)

कामिनम् (वि.) काम इन् द्वि. एक., *कामी पुरुष को,* person overpowered by lust. (75)

कारुण्यम् (सं.) नपुं. प्र. एक., करुणा; pity. (55)

कार्याकार्ये (सं.) कार्यम् च अकार्यम् च तस्मिन् (द्वन्द्व) स. एक. *कार्य और अकार्य में,* in actions to be undertaken and not to be undertaken. (50)

कार्याणि (सं.) कार्य, प्र. द्वि. बहु., *कार्य,* actions. (23, 85)

किञ्चित् (वि.) द्वि. एक. *थोड़ा भी, जरा सा भी,* even a little. (17)

कितवाः (वि.) कितव प्र. बहु., *धूर्त,* cheats (94)

किम् (सर्व.) प्रश्नवाचक सर्वनाम, द्वि. एक., *क्या,* what. (31)

कीर्त्तिः (सं.) कीर्त्ति; इ. प्र. एक. *यश,* fame. (39)

कुतः (अ.) किम् तसिल् *कहाँ, कहाँ से,* where, from where. (1)

कुप्यन्ति (क्रि.) कुप् लट् प्रपु. बहु., *क्रोध करते है,* get angry. (28)

कुरुते (क्रि.) कृ. लट्. प्रपु. एक., *करता है,* does. (11, 22, 52)

कुर्यात् (क्रि.) कृ.विलि. प्रपु. एक., *करना चाहिए,* must do. (57, 79, 99).

कुर्वन् (वि.) कृ. शतृ. पुं. प्र. एक., *करते हुए,* while doing. (17)

कुलम् (सं.) नपुं. प्र. एक. कुल, वंशः, *खानदान,* family, dynasty. (26)

कुलीनः (वि.) कुल+ ईन, प्र. एक. *उच्च कुल वाला,* belonging to a high class family. (30, 95)

कुलीनशतात् (सं.) कुलीनानां शतात् ष. तत्पु. पं. एक., *सैंकड़ों कुलीनों से,* by a hundred of high class persons. (30)

कुशली (वि.) कुशल इन्, प्र. एक. *कुशलतायुक्त,* capable. (46)

कृच्छ्रासु (वि.) कृच्छ्र, स. बहु., *कठिन परिस्थितियों में,* in hard times (97)

कृतम् (वि.) कृ क्त, नपुं. प्र. एक., *किया हुआ काम,* action done (76)

कृतज्ञता (सं.) कृतं जानाति इति कृतज्ञः, तस्य भावः (तल्), प्र. एक., *अहसान मानना,* feeling of obligation. (20)

कृतविद्यः (वि.) कृता विद्या येन सः (बहुव्री.) प्र. एक. *प्राप्त कर ली है, विद्या जिसने, विद्वान्,* a learned scholar. (58)

कृत्यम् (सं.) कृ यत्, द्वि. एक. *करने योग्य कार्य,* action. (9, 76)

कृत्वा (अ.) कृ + क्त्वा, *करके,* having done. (49, 86)

कृथाः (क्रि.) कृ. लुङ् मपु. एक., न माङ् योगे इति अडागम निषेधः, *करो, करना चाहिए,* met put indulge (65)

कृन्तन्ति (क्रि.) कृन्त्, लट् प्रपु. बहु., *काटते हैं; काटती हैं;* cut (69)

केचित् (सर्व.) किम् पुं. प्र. बहु., चित्, *कुछ लोग;* certain people. (38)

कोपाद् (सं.) कोप पं. एक., *कोप से; गुस्से से;* due to anger. (60)

कौल्यम् (सं.) प्र. एक. *कुलीनता;* belonging to high family. (20)

क्रियते (क्रि.) कृ, कर्म., लट् प्रपु. एक., *किया जाता है;* is done. (70)

क्रुध्यति (क्रि.) क्रुध्, लट् प्रपु. एक., *क्रोध करता है;* gets angry. (13, 84)

क्रोधः (सं.) क्रोध पुं. प्र.एक. *क्रोध;* anger (53)

क्रोधम् (सं.) क्रोध, पुं. द्वि. एक., *क्रोध को;* anger. (29, 63, 56)

क्रोधनः (वि.) प्र. एक., *क्रोधी;* angry. (21)

क्षमया (सं.) क्षमा, स्त्री. तृ. एक., *क्षमा से;* by forgiveness. (31, 32)

क्षमा (सं.) आ. प्र. एक., *क्षमा;* forgiveness. (19, 29, 31)

क्षिपति (क्रि.) क्षिप्, लट् प्रपु. एक., *दोषी ठहराता है;* blames, accuses. (13)

क्षिपन्ति (क्रि.) क्षिप्, लट्, प्रपु. बहु., *दोषी ठहराते हैं;* blame, accuse. (35)

क्षेत्रेण (सं.) क्षेत्र, तृ. एक., *जन्म स्थान के द्वारा;* by the birth place. (27)

गच्छति (क्रि.) गम्, लट् प्रपु. एक., *जाता है, प्राप्त होता है;* goes (44)

गतः (क्रि.) गम् क्त, पुं. प्र. एक. *(वध्यता को) गया हुआ, प्राप्त;* destined to be (killed). (98)

गतान् (वि.) गम् क्त, द्वि. बहु., *गये हुओं को, प्राप्त हुओं को;* those who have gone. (43)

गन्धेन (सं.) गन्ध, तृ. एक., *गन्ध के द्वारा;* by the smell. (72)

ग्रसते (क्रि.) ग्रस् लट् प्रपु. एक., *निगल जाती है;* swallows. (80)

ग्रसितुम् (अ.) ग्रस् तुमुन्, *निगलने के लिए, खाने के लिए,* for eating. (34)

ग्रस्तम् (वि.) ग्रस् क्त, नपुं. प्र. एक., *खाया हुआ;* that which has been eaten. (34)

ग्रस्यम् (वि.) ग्रस् यत् नपुं. प्र. एक. *खाने योग्य;* fit to be eaten. (34)

गाङ्गः (सर्व.) गङ्गायाः अयम्, पुं. प्र. एक. *गंगा का;* of the Ganges, Gangetic (10)

गावः (सं.) गो, स्त्री. प्र. बहु. *गौएँ;* cows (72)

गुणः (सं.) प्र. एक., *गुण, अच्छाई;* merit. (37)

गुणतः (अ.) गुण तसिल्, *गुण से;* because of merits. (38)

गुणाः (सं.) गुण, प्र. बहु., *गुण, अच्छाइयाँ;* merits. (19, 35)

गुणान् (सं.) गुण, द्वि. बहु., *गुणों को;* merits. (12)

गुणैः (सं.) गुण, तृ. बहु., *गुणों के द्वारा;* by the merits. (38)

गुरुः (सं.) गुरु, उ.पुं. प्र. एक. *आचार्य;* preceptor. (18)

गुरुशुश्रूषया (सं.) गुरोः शुश्रूषा, (ष. तत्पु.) तृ.एक. *गुरु की सेवा से;* by serving the preceptor. (6)

गोष्ठिः (सं.) प्र.एक. *गपशप, बातचीत, विचार-विमर्श;* talking in groups. (3)

गौरवम् (सं.) गुरोः भावः, द्वि. एक. *गौरव, बड़प्पन* greatness, magnanimity. (67)

गृहदीप्तयः (वि.) गृहाणाम् दीप्तयः, (ष. तत्पु.) प्र. बहु.; *घरों की शोभा;* the glow of houses. (96)

गृहस्य (सं.) गृह, ष. एक., *घर की;* of the house. (96)
घृणी (वि.) घृणा इन्, प्र. एक., *घृणा करने वाला;* one who hates. (21)
घ्नन्ति (क्रि.) हन् लट् प्रपु. बहु., *मारते हैं;* kill. (69)
च (अ.) और; and. (3)
चक्षुः (सं.) चक्षुष्, प्र. एक. *आंख, नेत्र;* eyes. (77)
चक्षुर्भ्याम् (सं.) चक्षुष्, तृ. द्वि., *दोनों आंखों से;* by the two eyes. (72)
चक्षुषा (सं.) चक्षुष्, तृ. एक., *चक्षु के द्वारा;* by the eyes. (89)
चतुर्विधम् (अ.) *चार प्रकार से;* by four ways. (89)
चत्वारि (वि.) नपुं. प्र. बहु. *चार;* four. (79)
चरन्ति (क्रि.) चर लट् प्रपु. बहु., *आचरण करते हैं;* observe, follow. (67)
चापलम् (सं.) प्र. एक. *चञ्चलता;* ficklemindedness. (3)
चारणाः (वि.) चारण, प्र. बहु., *स्तुति करने वाले,* चापलूस; flatteres, those who sing songs in praise. (94)
चारणैः (वि.) *चारण,* तृ. बहु., *चारणों के द्वारा, स्तुति गान करने वालों के द्वारा;* by those who sing in praise. (79)
चारैः (सं.) चार, तृ. बहु., *गुप्तचरों के द्वारा;* through the spies. (72)
चित्तम् (सं.) नपुं. प्र. एक. *चित्त, मन;* mind. (61)
चित्तेन (सं.) चित्त, तृ. एक., *चित्त के साथ;* with the mind. (61)
चिरम् (अ.) *बहुत काल तक;* for a very long time. (77)
चिरात् (अ.) *बहुत देर से;* for a very long time. (98)
छत्रेण (सं.) छत्र, तृ. एक., *छत्र के द्वारा,* by the royal umbrella. (82)
छिद्रोद्कुम्भात् (सं.) छिद्रोद्कुम्भ, पं. एक., *फूटे हुए पानी के घड़े में से;* from a broken water pitcher (40)
जनाः (सं.) जन, पुं. प्र. बहु., *लोग, मनुष्य;* people. (72)
जयेत् (क्रि.) जि, विलि. प्रपु. एक.; *जीते;* should conquer. (63)
जरा (सं.) प्र. एक. *वृद्धावस्था;* old age.
जह्यात् (क्रि.) हा, विलि. प्रपु. एक., *छोड़ देवे;* may leave. (100)
जातु (अ.) *कभी;* ever. (67, 100)
जायते (क्रि.) जन् लट् प्रपु. एक., *पैदा होता है;* takes birth. (42, 98)
जीर्णाम् (वि.) जॄ क्त टाप्, द्वि. एक., *पुरानी;* old. (64)
जीर्यति (क्रि.) जॄ लट् प्रपु. एक., *पुरानी हो जाती* है; get old. (61)
जीवः (सं.) पुं. प्र. एक. *आत्मा;* soul. (45)
जीवति (क्रि.) जीव् लट् प्रपु. एक. *जीवित रहता है;* lives. (94)
जीवितस्य (वि.) जीवित, ष. एक., *जीवन के;* even for the sake of life. (100)
जीवितेन (सं.) जीवित, तृ. एक., *जीवन से;* by life. (25)
ज्ञातयः (सं) ज्ञाति, प्र. बहु. *सम्बन्धी, रिश्तेदार;* relatives. (68)
ज्ञातिः (सं) प्र. एक. *सम्बन्धी;* reltive. (95)
ज्ञातिम् (सं.) ज्ञाति, द्वि. एक. *सम्बन्धी को;* to a relative. (87)
ज्ञातुम् (अ.) ज्ञा तुमुन्, *जानने के लिए;* for knowing. (12)
ज्ञानम् (सं.) नपुं. द्वि. एक. *ज्ञान;* knowledge. (6)
तत् (सर्व.) नपुं. प्र. एक., *वह;* that. (7, 25, 34, 60, 73)
ततः (अ.) तद्+तसिल्, *वहाँ से;* from there, thereafter. (24, 40, 81)
तथा (अ.) *और, उसी प्रकार, वैसे ही;* and, in the same way, likewise. (3, 13, 17)
तपः (सं.) तपस् नपुं, प्र: एक., *तपस्या;* penance. (56)

तपसा (सं.) तपस् तृ. एक., *तपस्या से;* through penance. (6)

तप्यते (क्रि.) तप् कर्म, लट् प्रपु. एक., *तपाया जाता है;* gets agitated, gets boiled due to insult. (10)

तम् (सर्व.) तद् पुं. द्वि. एक., *उसको,* to that person. (11)

तस्मात् (सर्व.) तद् पुं. पं. एक., *उससे,* ततः; for that reason, therefore. (83, 91, 96, 98)

तस्मिन् (सर्व.) तद् पुं. स. एक., *उसमें, पर;* on him. (84, 92)

तस्य (सर्व.) तद् पुं. ष. एक. *उसका,* his, (25, 73)

तस्याम् (सर्व.) तद् स्त्री. स. एक., *उस (स्त्री.) में;* in that river. (47)

तात (वि.) सम्बो. एक., *हे तात;* O dear ! (84, 100)

तादृग् (सर्व.) तादृश्, प्र. एक., *वैसा ही;* the same, similar. (59)

तानि (सर्व.) तद् नपुं. प्र. बहु., *वे सब;* these. (69)

तिष्ठतः (क्रि.) स्था, लट् प्रपु. द्वि., *रहते हैं, विराजते हैं;* exist, have their place. (32)

तीक्ष्णाः (वि.) तीक्ष्ण, प्र. बहु., *तेज;* sharp. (69)

तु (अ.) *तो;* either. (66)

तुष्येत (क्रि.) तुष् विलि. प्रपु. एक., *संतुष्ट रहे;* may remain satisfied. (82)

ते (सर्व.) युष्मद्, च. एक., *तुम्हारे लिए;* for you. (69)

तेभ्यः (सर्व.) तद् पं. बहु., *उनसे;* from them. (36)

तेषाम् (सर्व.) तद् ष. बहु., *उनमें से;* out of these. (40)

तैः (सर्व.) तद् तृ. बहु., *उन सब (घोड़ों के) के द्वारा;* by those (horses). (46)

तोषपरः (वि.) परः तोषः (कर्मधा.) प्र. एक. अत्यन्त *सन्तोष की अवस्था;* the highest stage of satisfaction. (45)

त्यक्त्वा (अ.) त्यज् क्त्वा, *छोड़कर;* having abandoned. (45)

त्यजेत् (क्रि.) त्यज् विलि., प्रपु. एक., *छोड़ देवे;* should leave/abandon. (1, 48)

त्रयः (वि.) त्रि, पुं. प्र., बहु. *तीन;* (these) three. (2, 58)

त्रयम् (वि.) त्रि., द्वि. एक., *इन तीनों को;* all these three. (48)

त्रिविधम् (वि.) प्र. एक., *तीन प्रकार का;* threefold. (48)

त्वचम् (सं.) त्वच् द्वि. एक., *खाल को;* skin. (64)

त्वम् (सर्व.) युष्मद्, प्र. एक., *तुम;* you. (45)

त्वरा (सं.) स्त्री. प्र. एक. शीघ्रता; haste. (2)

दत्त्वा (अ.) दा + क्त्वा, *देकर;* having given. (24)

ददाति (क्रि.) दा, लट्, प्रपु. एक., *देता है;* gives. (86)

दद्यात् (क्रि.) दा, विलि. प्रपु. एक., *देना चाहिए, देवे;* must give. (24)

दयोर्मिः (वि.) दया एव ऊर्मयः यस्याम् सा, (बहुव्री.) प्र. एक. *जिसमें दया की लहरें हैं (वह नदी);* (a river) in which kindness is in the form of waves. (47)

दरिद्रः (वि.) पुं. प्र. एक., *गरीब, निर्धन मनुष्य;* a poor person. (32)

दरिद्रम् (वि.) द्वि. एक., निर्धन को; to a poor person. (87)

दानम् (सं.) नपुं. प्र. एक., *दान;* charity, generosity. (19, 20)

दानेन (सं.) दान, तृ. एक., *दान के द्वारा;* through charity. (63)

दान्तैः (वि.) दान्त, तृ. बहु., *सधे हुए (घोड़ों के द्वारा)* by well-controlled (horses) (46)

दीनम् (वि.) दीन, द्वि. एक., *दुःखी को;* a poor, helpless person. (87)

दीपयन्ति (क्रि.) दीप् णिच् लट् प्रपु. बहु., *प्रदीप्त करते हैं, प्रकाशित करते हैं;* illuminate, glorify (20)

दीर्घसूत्रैः (वि.) दीर्घसूत्र, तृ. बहु., *धीरे-धीरे विलम्ब से कार्य करने वालों के साथ;* with prolongers, with the people with dilatory tactics. (79)

दुःखे (सं.) *दुःख, स. एक., दुःख में;* in trouble, pain. (22)

दुरुक्तम् (वि.) दुर् उक्तम्, प्र.एक., *बुरी तरह कहा गया;* badly spoken. (15)

दुर्जनः (वि.) दुर्जन, प्र.एक., दुष्ट; a wicked person. (31)

दुर्भाषिता (वि.) दुर् भाष् क्त टाप्, प्र.एक., *बुरी तरह बोली गई (वाणी)* badly uttered (speech). (14)

दुर्लभः (वि.) दुर्लभः, पुं.प्र.एक. *कठिनता से मिलने वाला;* rare. (74)

दुष्कुलीनः (वि.) दुष्कुलीन, प्र.एक. *बदनाम वंश वाला;* belonging to a bad family. (30)

दुष्टम् (वि.) द्वि.एक., *दूषित,* bad (deeds). (11)

दृष्ट्वा (अ.) दृश्, क्त्वा, *देखकर;* having seen, having examined. (8)

दैवतानि (सं.) दैवत, नपुं. द्वि. बहु., *देवताओं को;* gods, deities (41)

दोषाः (सं.) प्र. बहु. *दोष, अवगुण;* blemishes, demerits. (3)

दोषेण (सं.) दोष, तृ. एक., *दोष के द्वारा;* by the blemishes. (13)

द्यूतम् (सं.) प्र. एक., द्वि. एक., *जुआ;* gambling. (83)

द्वाभ्याम् (वि.) तृ. द्वि., *इन दो के साथ;* with these two. (44)

द्वारम् (सं.) नपुं. प्र. एक. *दरवाजा;* door, gate. (48)

द्वारे (सं.) द्वार, स. एक., *द्वार पर;* at the door. (90)

द्वे (वि.) द्वि.-द्वि. *दो;* two. (17)

द्वेष्टि (क्रि.) द्विष् लट् प्रपु. एक., *द्वेष करता है;* feels hostile, enemical. (11)

द्वेष्यम् (वि.) द्विष् यत् द्वि. एक. *द्वेष के योग्य;* unrelishable. (73)

द्वौ (वि.) द्वि. पुं. प्र. द्वि. *दो;* two. (32)

धनतः (अ.) (क्रि.वि.) धन तसिल्, *धन से;* due to wealth. (38)

धनधान्यपूर्णाम् (वि.) धनेन धान्येन पूर्णाम् (तृ. तत्पु.), द्वि. एक. *धन और धान्य से परिपूर्ण, धन-धान्य से भरी हुई (पृथ्वी को);* (the earth) filled with riches and crops. (43)

धनम् (सं.) धन, द्वि. एक., *धन को;* riches wealth. (44)

धनवृद्धान् (वि.) धनेन वृद्धान् (तृ. तत्पु.) द्वि. बहु. *धन से परिपूर्ण;* rich on account of wealth. (38)

धनाभिजातवृद्धान् (वि.) धनम् च अभिजातः च तेन (तृ. तत्पु.) धनेन अभिजातेन वृद्धान् द्वि. बहु. *धन और उच्च वंश से सम्पन्नों को;* rich and highly noble (people). (54)

धनेन (सं.) धन, तृ. एक., *धन के द्वारा;* by wealth, due to riches. (25)

धर्मः (सं.) पुं. प्र. एक., धर्म, कर्तव्य, *आन्तरिक गुण;* duty, religion, inherent merits, (26, 45, 92)

धर्मचर्याम् (सं.) धर्मस्य चर्याम् (ष. तत्पु.) द्वि. एक. *धार्मिक कृत्यों को;* religious chores, daily activities full of sanctity. (53)

धर्मम् (सं.) धर्म, द्वि. एक., *धर्म को;* duty, merits. (67, 100)

धर्मवृद्धम् (वि.) धर्मेण वृद्धम् (तृ. तत्पु.) द्वि. एक. *धर्म में वृद्ध को;* highly meritorious. (50)

धर्मस्य (सं.) धर्म, ष. एक., *धर्म का, की,* of duty religion, religious. (56, 65)

धर्मापेक्षी (वि.) धर्मम् अपेक्षते सः, प्र.एक. *धर्म की चिन्ता करने वाला;* a religious minded person. (30)

धीरः (वि.) पुं. प्र. एक., *धैर्यवान्;* a person with patient. (24, 46)

धृतराष्ट्र (सं.) सम्बो. एक. *धृतराष्ट्र नामक राजा;* Dhritarashtra (name of the king). (38)

धृतिः (सं.) धृ+क्तिन्, स्त्री. प्र. एक. *धैर्य;* patience. (19, 55)

धृतिकूला (वि.) धृतिः एव कूलं यस्याः सा, प्र.एक. *धृति, धैर्य रूपी किनारों वाली नदी;* a river having patience as its banks. (47)

धृतिमयीम् (वि.) धृतिमय ङीप्, द्वि. एक. *धैर्य से परिपूर्ण;* made of patience (boat). (49)

धैर्यम् (सं.) द्वि.एक. *धैर्य;* patience. (53)

न (अ.) नहीं; no, not. (19)

नगरे (सं.) नगर, स. एक., *नगर में;* in the city. (90)

नदी (सं.) प्र.एक. *नदी;* a river. (47)

नदीम् (सं.) नदी, द्वि. एक., *नदी को;* river. (49)

नरः (सं.) प्र.एक. *मनुष्य;* a person, man. (42)

नरकस्य (सं.) नरक, ष. एक., *नरक का;* of the hell. (48)

नराधिप ! (वि.) नराणाम् अधिप! (ष. तत्पु.) सम्बो. एक., *हे राजन्;* O King. (69)

नरेन्द्रान् (सं.) नराणाम् इन्द्रान्, द्वि. बहु. *राजाओं को;* Kings. (43)

नष्टम् (वि.) नश् क्त, नपुं., प्र. एक., *नष्ट हो गया;* destroyed, lost. (51)

नाममात्रेण (क्रि.वि.) नाममात्र, तृ. एक., *नाम के लिए;* only in name. (82)

नावम् (सं.) नौ, द्वि. एक., *नाव को;* a boat. (49)

नाशम् (सं.) द्वि.एक. *नाश को;* destruction. (91)

नाशनम् (सं.) पुं. प्र. एक. *नष्ट करने वाला;* destroying power. (48)

निकृन्तति (क्रि.) नि कृन्त्, लट्, प्रपु. एक., *काट देता है;* cuts. (93)

नित्यः (वि.) पुं. प्र. एक. *सदा रहने वाली;* eternal. (45)

नित्यदुःखिताः (वि.) प्र. एक. *नित्य दुःखी;* always unhappy. (21)

नित्यम् (वि.) *सर्वदा, स्थायी;* always, regularly, eternal. (4, 21, 40, 47, 95)

नित्योत्थानात् (क्रि.वि.) पं. एक. *नित्य ऊपर उठने से;* by continuously rising upwards. (66)

निन्दितानि (वि.) निन्दित द्वि. बहु., *निन्दित कार्यों को;* bad deeds. (5)

निभृतम् (सं.) प्र. एक. *गुप्त रहस्य;* secrets. (61)

निभृतेन (सं.) निभृत तृ. एक., *गुप्त रहस्यों के साथ;* with secrets. (61)

नियन्ता (वि.) नि यम् तृच्., प्र. एक., *वश में करने वाली;* controller. (46)

नीचोपसेवी (वि.) नीचोपसेविन् प्र.एक. नीचान् उपसेवते; *जो नीच की सेवा करता है;* one who serves the wicked. (16)

नृणाम् (सं.) नृ ष. बहु., *मनुष्यों की;* of the people. (83)

नैर्गुण्यम् (सं.) प्र. एक. *गुणों के अभाव को दोषों को;* absence of merit demerits. (12)

पञ्च (संख्या) पञ्चन् प्र. *पांच;* five. (18)

पञ्चेन्द्रियजलाम् (सं.) पञ्च इन्द्रियाणि एव जलम् यस्यां ताम् (बहुव्री.) *पांच इन्द्रियों रूपी जल वाली (नदी को);* The river having the five sense-organs as the water. (49)

पण्डितः (वि.) पण्डा इतच्, पुं. प्र. एक. *बुद्धिमान्, विद्वान्;* learned scholar. (9, 76, 79)

पण्डितलक्षणम् (सं.) पण्डितस्य लक्षणम् (ष. तत्पु.) प्र. एक., *पण्डित की पहचान;* characteristics of a learned person. (5)

पतितम् (वि.) पत् क्त, प्र. एक. *गिरा हुआ;* fallen. (51)

पथ्यस्य (वि.) पथ्य, ष. एक., *हितकारी वचन का;* of beneficial advice. (74)

पदम् (सं.) नपुं. द्वि. एक. *शब्द, वाणी;* speech, words. (100)

परभाग्योपजीवी (वि.) परेषाम् भाग्यम् उपजीवति परभाग्योपजीवी पुं. प्र. एक., *दूसरे के भाग्य पर जीने वाला;* one who

depends upon other's fortunes. (21)

परम् (सर्व.) पर, द्वि. एक., *दूसरे को;* the other person. (13)

परराष्ट्रविमर्दने (सं.) परेषां राष्ट्रस्य विमर्दने; स.एक. *शत्रुओं के राष्ट्र को कुचलने में;* in crushing, destroying the enemy's country. (70)

परशुना (सं.) परशु, तृ. एक., *फरसे के द्वारा; कुल्हाड़ी के द्वारा;* by an axe. (15)

परस्य (सर्व.) पर, ष. एक., *दूसरे का;* of the other person. (16)

परस्परम् (अ.) *आपस में, एक-दूसरे के साथ;* with one another. (23)

पराक्रमः (सं.) पुं. प्र. एक. *वीरता, बहादुरी;* valour. (20, 29)

पराभवम् (सं.) द्वि. एक., *अपमान को;* insult. (73)

परिचर्यया (सं.) परिचर्या, तृ. एक., *सेवा के द्वारा;* by service. (27)

परिचर्याः (क्रि.) परि चर्, यत् प्र. बहु., *सेवा करनी चाहिए;* should be served. (18)

परिच्छदेन (सं.) परिच्छद, तृ. एक., *परिजन, सेवकादि के द्वारा;* through external appendages, attendants. (27)

परिजल्पतः (अ.क्रि.) परि जल्प् शतृ, पं. एक., *व्यर्थ बोलते हुए से, वाचाल से;* from a talkative person. (33)

परिणमेत् (क्रि.) परि नम्, विलि. प्रपु. एक., *पच जाये;* may be digested. (34)

परिणामे (सं.) परिणाम, सं. एक., *पचने पर;* after having been digested. (34)

परित्यजन्ति (क्रि.) परि, त्यज् लट् प्रपु. एक., *छोड़ देते हैं;* leave, abandon. (84)

परिनिर्णिज्य (अ.क्रि.) परि, निर, निज् ल्यप्; *धोकर;* having washed. (24)

परीक्षेत (क्रि.) परि ईक्ष् विलि. प्रपु. एक. *परीक्षा करे;* must examine. (27)

परीक्ष्य (अ.क्रि.वि.) परि ईक्ष् ल्यप्, *परीक्षा करके;* after examining. (8)

परुषम् (वि.) परुष द्वि. एक., *कठोर वाणी को;* harsh speech. (17)

परे (सर्व.) पर, प्र. बहु., *अन्य, दूसरे लोग, शत्रुगण;* outsiders, enemies. (76)

परेषाम् (सर्व.) पर, ष. बहु., *दूसरों के;* of the others. (12)

पर्युपासीत (क्रि.) परि उप आस् विलि., प्रपु. एक., *सेवा करे;* should serve. (98)

पश्चात् (अ.) *पीछे, बाद में;* afterwards. (22)

पश्यन्ति (क्रि.) दृश् लट् प्रपु. बहु., *देखते हैं;* see. (72)

पश्येत् (क्रि.) दृश् विलि. प्रपु. एक., *देखे;* may see. (90)

पादौ (सं.) पाद द्वि. द्वि., *पैरों को, चरणों को;* feet. (24)

पापचेतसः (वि.) पापम् चेतसि येषाम् ते (बहुव्री.) प्र. बहु. *पापी मन वाले;* sinners. (12)

पापम् (सं.) पाप, द्वि. एक., *बुरा;* bad sin. (73)

पापेन (सं.) पाप, तृ. एक., *पाप से;* with sins. (44)

पारिप्लवम् (सं.) प्र.एक. *चञ्चल;* shaking, tremulous. (28)

पितरि (सं.) पितृ पुं. स. एक., *पिता पर;* in a father. (60)

पिता (सं.) पितृ प्र. एक. *पिता;* father. (18)

पितृपैतामहम् (वि.) पितृपितामहादागतम्, द्वि. एक., *बाप दादा का;* of the ancesters. (71)

पीठम् (सं.) द्वि. एक. *आसन,* seat. (24)

पुण्यकर्मा (वि.) पुण्यानि कर्माणि यस्य सः (बहुव्री.) प्र. एक. *पुण्य कर्मों वाला;* one who performs pious deeds. (47)

पुण्यतीर्था (वि.) पुण्यम् एव तीर्थम् (तीरम्) यस्याः सा

(बहुव्री.) प्र.एक. *पुण्य रूपी तट वाली (नदी)* (river) with meritorious deeds as its banks. (47)

पुण्यम् (वि.) द्वि.एक. *पुण्यकारी,* pure, beneficial. (100)

पुण्यः (वि.) पुण्य प्र. एक., *पवित्र,* pure (39, 47)

पुण्याः (वि.) पुण्य टाप्. प्र. बहु., *पुण्यकारी (स्त्रियाँ),* pure, meritorious (women). (96)

पुण्येन (सं.) पुण्य, तृ. एक., *पुण्य के साथ,* with pure deeds. (44)

पुत्रपशुभिः (सं.) पुत्राः च पशवः च पुत्रपशुः, (तृ. बहु.) *पुत्रों और पशुओं सहित,* with sons and animals, with progeny and cattle. (87)

पुत्रार्थम् (अ.) पुत्राय इदम् (च.तत्पु.) *पुत्र के लिए;* for the sake of the son. (91)

पुरा (अ.) *प्राचीन काल में;* in olden days. (83)

पुरुषः (सं.) पुं. प्र. एक., *मनुष्य,* man, a person. (52, 59)

पुरुषम् (सं.) पुरुष, द्वि. एक., *पुरुष को;* that man. (20)

पुरुषव्याघ्र (वि.) सम्बो. एक., पुरुषेषु व्याघ्रः (स. तत्पु.) *सर्वोत्तम पुरुष धृतराष्ट्र;* O the best of men here Dhritarashtra. (39)

पुरुषस्य (सं.) पुरुष, पु. ष. एक., *पुरुष का;* of that person. (46)

पुरुषाः (सं.) पुरुष, पुं. प्र. बहु., *बहुत से मनुष्य;* men. (58, 74)

पुरुषौ (सं.) पुरुष, पुं. प्र. द्वि., *दो पुरुष;* two men. (32)

पुष्पाणि (सं.) पुष्प, नपुं. द्वि. बहु., *फूलों को;* flowers. (88)

पूजनीयाः (वि.) पूजनीया, प्र. बहु., *पूजा के योग्य;* fit to be worshipped. (96)

पूजयित्वा (अ.क्रि.) पूज् क्त्वा, पूज कर; having worshipped. (50)

पूयते (क्रि.) पूञ् कर्म, लट् प्रपु. एक., *पवित्र कर दिया जाता हैं;* is purified. (47)

पूर्वे (वि.) पूर्व, स. एक., *आयु के पूर्व भाग में;* in this first part of life. (57)

पृथिवीम् (सं.) पृथिवी, द्वि. एक., *पृथ्वी को;* the earth. (58)

पौरुषेण (सं.) पौरुष तृ. एक., *पौरुष से;* with hard work. (66)

प्रगीयते (क्रि.) प्र गै (कर्म.) लट् प्रपु. एक., *गाई जाती है,* is sung, glorified. (39)

प्रजहति (क्रि.) प्र हा, लट् प्रपु. बहु., *छोड़ देती हैं;* leave, abandon. (86)

पृष्ट्वा (अ.क्रि.) पृष् क्त्वा, *पूछ कर;* having asked. (24)

प्रजागराः (सं.) प्र. बहु., *नींद का न आना,* sleeplessness. (75)

प्रज्ञया (सं.) प्रज्ञा, तृ. एक., *बुद्धि से;* with the intellect. (61, 66)

प्रज्ञा (सं.) आ., प्र. एक. *बुद्धि;* intellect. (20, 61)

प्रज्ञाबलम् (सं.) प्रज्ञा एव बलम्, प्र.एक. *बुद्धि बल,* the strength of intellect. (7)

प्रज्ञावृद्धम् (वि.) प्रज्ञायाम् वृद्धम्, द्वि. एक., *बहुत बुद्धिमान;* a highly intelligent person. (50)

प्रणश्यति (क्रि.) प्र नश् लट् प्रपु. एक., *नष्ट हो जाता है;* perishes, is destroyed. (25)

प्रणिपातेन (सं.) प्रणिपात तृ.एक., *नम्रता द्वारा, झुककर;* with humbleness, politeness, with submission. (65)

प्रणुदति (क्रि.) प्र नुद् लट् प्रपु. एक., *दूर करता है, नष्ट कर देता है;* wins over. (6)

प्रतितिष्ठस्व (क्रि.) प्रति स्था, लोट् मपु. एक. *प्रतिष्ठित हो, स्थिर रहो;* establish, be firm. (45)

प्रतिरुद्धः (वि.) प्रति रुध् क्त, पुं. प्र. एक., *रोका गया;* prohibited. (90)

प्रतिवेद्य (अ.क्रि.) प्रति विद् णिच् ल्यप्, *निवेदन करके;* having submitted. (24)

प्रत्युपेयः (वि.) प्रति उप इ यत्, प्र. एक., *पास जाना चाहिये;* should be approached. (92)

प्रथमम् (सङ्ख्या) नपुं, प्र. एक. *सबसे पहले;* at first (81)

प्रदानवान् (वि.) प्रदान मतुप्, प्रदानवत् प्र. एक., *दानी, दान करने वाला;* a donor. (32)

प्रधानम् (वि.) प्र.एक. *प्रमुख, मुख्यः;* main, most important. (25)

प्रभुः (वि.) प्र. एक. *समर्थ, शक्तिशाली;* master, powerful person. (32)

प्रयत्नतः (अ.) प्रयत्न, तसिल्, *प्रयत्न से, प्रयत्नपूर्वक;* with efforts. (18)

प्रलपतः (वि.) प्र लप् शतृ पं. एक., *प्रलाप करते हुए से;* from a person who talks aimlessly. (33)

प्रशंसन्ति (क्रि.) प्र शस् लट् प्रपु. बहु., *प्रशंसा करते हैं;* praise. (94)

प्रशंसाम् (सं.) प्रशंसा, द्वि. एक., *प्रशंसा को;* praise. (66)

प्रशमम् (सं.) प्रशम, द्वि. एक., *शान्ति को;* peace. (67)

प्रशस्तानि (वि.) प्र शस् क्त, नपुं, द्वि. बहु., *प्रशंसनीय कार्यों को;* praise-worthy deeds. (5)

प्रशास्य (अ.) प्र शास् ल्यप्, *शासन करके;* having ruled. (43)

प्रसादयति (क्रि.) प्र सद् णिच् लट् प्रपु. एक., *प्रसन्न करता है;* pleases. (89)

प्रसाद्य (अ.क्रि.) प्र सद् णिच् ल्यप्, *प्रसन्न करके;* having pleased. (50)

प्रसीदन्ति (क्रि.) प्र सद् लट् प्रपु. बहु.; *प्रसन्न होते हैं;* are pleased, feel happy. (28)

प्रहर्षम् (सं.) प्रहर्ष; द्वि. एक., *बहुत अधिक खुशी, प्रसन्नता;* great rejoicings. (22)

प्रहृष्टः (वि.) प्र हृष् क्त पुं. प्र. एक., *प्रसन्न;* happy. (22)

प्राज्ञैः (सं.) प्राज्ञ, तृ. बहु., *बुद्धिमानों के साथ;* with the learned scholars. (8)

प्राणान् (सं.) प्राण, द्वि. बहु., प्राणों को; life. (53)

प्राप्तवान् (क्रि.) प्र आप् क्तवतु पुं. प्र. एक. *प्राप्त किया;* have obtained, got. (71)

प्राप्नुवन्ति (क्रि.) प्र आप् लट् प्रपु. बहु., *प्राप्त करते हैं;* get. (67)

प्राप्नोति (क्रि.) प्र आप् लट् प्रपु. एक., *प्राप्त करता है;* gets. (66)

प्रियम् (वि.) द्वि.एक., *प्रियः;* pleasant. (73)

प्रियवादिनः (वि.) प्रियं वदति इति प्रियवादिन् प्र. बहु., *मीठा बोलने वाले;* those who speak sweet words. (74)

प्रेत्यगतस्य (वि.) प्रेत्यगत, ष. एक., *मृत व्यक्ति का;* of a dead person. (44)

प्रेत्य (अ.क्रि.) प्र इ ल्यप्, *यहाँ से जाकर, मर कर;* having gone from this world, after death. (57)

फलानि (सं.) फल, नपुं, प्र. बहु., *फल;* fruits. (36)

बन्धक्यः (सं.) बन्धकी, प्र. बहु., *वेश्याएँ, गणिकाएँ;* street girls. (94)

बन्धुभिः (सं.) बन्धु तृ. बहु., *बन्धुओं/मित्रों से;* with the friends. (25)

बलम् (सं.) बल प्र. एक. *शक्ति;* strength. (4, 35, 62)

बलवता (वि.) बलवत् तृ. एक., *बलवान के द्वारा;* by a strong person. (75)

बलानाम् (सं.) बल, ष. बहु., *बलों में से;* (निर्धारणे षष्ठी) out of all the strengths. (7)

बले सति (सं.) बल, स. एक., *बल के होने पर;* having gained the strength. (98)

बहिः (अ.) *बाहर;* outside. (90)

बालात् (सं.) बाल पं. एक., *बच्चे से;* from a child. (33)

बाह्याः (वि.) बाह्य, प्र. बहु., *बाहरी व्यक्ति;* outsiders. (77)

बिभेति (क्रि.) भी, लट् प्रपु. एक., *डरता है;* fears. (60)
बिलेशयान् (सं.) बिले शेते इति बिलेशयः, (उपपद.स.) द्वि. बहु., *चूहों को;* rats. (80)
बीजम् (सं.) नपुं. प्र.एक. बीज; seed. (36)
बीभत्सम् (वि.) नपुं, प्र. एक. *घृणित, गन्दे (शब्द),* despicable (words). (15)
बुद्धि (सं.) प्र. एक. *बुद्धि;* intellect. (40)
बुद्धिमान् (वि.) बुद्धि मतुप् बुद्धिमत् पुं. प्र. एक., *बुद्धिवाला व्यक्ति, विद्वान;* an intelligent person. (83)
बुद्ध्या (सं.) बुद्धि, तृ. एक., *बुद्धि के द्वारा;* by the intellect. (66)
बुभुक्षितः (वि.) बुभुक्षा इतच्; प्र. एक., *भूखा;* a hungry person. (90)
ब्रवीमि (क्रि.) ब्रू लट् उपु., एक., *मैं कहता हूँ;* I say. (100)
ब्राह्मणम् (सं.) ब्राह्मण, द्वि. एक., *ब्राह्मण को,* a mendicant. (80)
ब्राह्मणाः (सं.) ब्राह्मण, प्र. बहु., *ब्राह्मण, ब्रह्म को जानने वाले विद्वान्,* scholars. (72)
ब्रूयात् (क्रि.) ब्रू विलि. प्रपु. एक., *बोले;* may utter. (73)
भक्तस्य (वि.) भज् क्त ष. एक. *यहाँ भक्त पर;* on a devoted person. (84)
भजन्ते (क्रि.) भज् लट् प्रपु. बहु., *प्राप्त होते हैं;* go to. (35)
भद्रम् (वि.) प्र. एक. *कल्याण, शुभ;* welfare, good, auspicious. (69)
भयम् (सं.) *भय, डर;* fear. (6, 9, 93, 97, 98)
भयात् (सं.) भय, पं. एक., *भय से,* out of the fear. (100)
भरतर्षभ (वि.) भरते ऋषभः, *भरत वंश में श्रेष्ठ;* the best of Bharat Dynasty. (18)
भर्तरि (सं.) भर्तृ स. एक., *स्वामी पर;* in a master. (84)
भर्तुः (सं.) भर्तृ ष. एक., *स्वामी के;* of the master. (85)
भवति (क्रि.) भू लट् प्रपु. एक., *होता है;* becomes. (22, 35)
भवन्ति (क्रि.) भू लट्, प्रपु. बहु., *होते हैं;* become. (38)
भवितुम् (अ.क्रि.) भू तुमुन्; *होने के लिए;* for becoming. (59)
भवेत् (क्रि.) भू विलि., प्रपु. एक., होवे; may become. (82)
भारत (वि.) भरते भवः इति, सम्बो. एक. *भरत वंश में उत्पन्न;* O born in Bharat dynasty. (7, 47)
भिन्नाः (वि.) भिद् क्त; पुं. प्र. बहु., *अलग-अलग, असंगठित;* disintegrated. (67)
भुङ्क्ते (क्रि.) भुज् लट् प्रपु. एक., *खाता है;* eats. (44, 86)
भूतिम् (सं.) भूति द्वि. एक. *ऐश्वर्य को;* riches, prosperity. (34)
भूत्वा (अ.क्रि.) भू क्त्वा; *होकर;* having become, after being. (98)
भूमिः (सं.) इ. स्त्री. प्र. एक. पृथ्वी; this earth. (80)
भूमिम् (सं.) भूमि द्वि. एक., *भूमि को;* this earth. (43)
भूयसः (वि.) भूयस् द्वि. बहु., *बहुत सारे (शत्रुओं को);* many, a number of. (90)
भृत्यस्य (सं.) भृत्य, ष. एक., *सेवक का;* of the servant. (84)
भृत्याः (सं.) भृत्य, प्र. बहु., *कर्मचारी;* servants (84)
भृत्येभ्यः (सं.) भृत्य; च. बहु., *कर्मचारियों के लिए;* for the subordinates. (82)
भोगान् (सं.) भोग, द्वि. बहु., *भोगों को;* prosperities, luxuries. (43)
भोजनाच्छादनेन (सं.) नपुं. तृ. एक. भोजनेन आच्छादनेन च, *भोजन और वस्त्र द्वारा;* with food and clothings. (27)
भ्रंशयति (क्रि.) भ्रश् णिच् लट् प्रपु. एक. *नष्ट कर देती है;* destroys. (71)
भ्रश्यते (क्रि.) भ्रश् कर्म., लट् प्रपु. एक., *नष्ट कर दिया जाता*

है; is destroyed. (62)

मताः (क्रि.) मन् क्त पुं. प्र. बहु. *माने गये हैं;* have been considered. (3)

मत्या (सं.) मति तृ. एक., *बुद्धि के द्वारा;* by the intellect. (8)

मदमोहौ (सं.) मदः च मोहः च (द्वन्द्व); प्र. द्वि. *मद और मोह;* laziness intoxication and infatuation. (3)

मधु (सं.) नपुं. द्वि. एक. *शहद;* honey. (88)

मध्वाकर्षः (वि.) पुं, प्र. एक. *विष को खींचने वाले (पक्षी);* (The birds) that can extract poison. (95)

मनः (सं.) मनस्, नपुं. प्र. एक., *मन;* the mind. (52, 65)

मनसा (सं.) मनस्, तृ. एक., *मन से;* by the mind. (89)

मनुष्यः (सं.) मनुष्य; प्र. एक. a man, person, human being. (92)

मनुष्यस्य (सं.) मनुष्य, ष. एक., *मनुष्य का;* of a man. (39)

मनुष्ये (सं.) मनुष्य, स. एक., *मनुष्य में;* in a person. (37)

मनुष्येण (सं.) मनुष्य, तृ. एक., *मनुष्य के द्वारा;* by a person. (18)

मनुष्येभ्यः (सं.) मनुष्य, पं. बहु., *मनुष्यों से;* from the subjects (88)

मन्त्रम् (सं.) मन्त्र, द्वि. एक., *रहस्य को, योजना को;* secret plans. schemes. (76, 79)

मन्त्रितम् (सं.) मन्त्र क्त, द्वि. एक. *सोची गई योजनाओं को,* future plans. (76)

मन्त्ररक्षणम् (सं.) मन्त्रस्य रक्षणम् (ष. तत्पु.) नपुं प्र. एक. *मन्त्र की रक्षा, गुप्त योजनाओं की सुरक्षा;* maintenance of secrecy of plans. (99)

मन्त्रविप्लवः (सं.) मन्त्रस्य विप्लवः, (ष. तत्पु.) पुं. प्र. एक. , *गुप्त योजनाओं का प्रकट हो जाना;* leakage of secret plans (78)

मर्यादाम् (सं.) मर्यादा, द्वि. एक., *मर्यादा को;* the limits. (30)

महत् (सं.) महत् द्वि. एक. *ब्रह्म को;* the Supreme Entity, Brahma. (6)

महाकुलानाम् (सं.) महाकुल, ष. बहु. *महान अनुभव वालों की, उदारचित्त मनुष्यों की;* of the glorious/respectable persons, illustrious. (66)

महान्तम् (वि.) महत् द्वि. एक., *बड़े (धन को);* a large quantity of wealth. (64)

महाबलान् (वि.) महाबल, द्वि. बहु. *महाबलशाली जनों को;* people with great strength. (43)

महाबलेन (वि.) महाबल, तृ. एक., *अत्यधिक बलशाली (राजा के द्वारा)* by a strong, powerful (King). (79)

महाभागाः (वि.) महान् भागः यासां ताः, आ. स्त्री., प्र. बहु. *बहुत भाग्य वाली;* very auspicious, illustrious. (96)

महाविशिष्टम् (वि.) द्वि. एक., *बहुत ही विशिष्ट;* something very special. (100)

महीपतिः (वि.) मह्याः पतिः, (ष. तत्पु.) प्र. एक. *पृथ्वी का स्वामी;* Lord of the land. (82)

महीपालः (सं.) महीं पालयति इति (उपपदतत्पु.), प्र. एक., *राजा;* king. (99)

महीयते (क्रि.) महीय, नामधातु, लट् प्रपु. एक., *मान पाता है;* gets respected, is honoured. (39)

मा (अ.) मत; not, मा with स्म gives the meaning of don't. (65)

माता (सं.) मातृ ऋ. स्त्री. प्र. एक.; *माता;* mother. (18)

मानवः (सं.) मानवः, प्र. एक., *मनुष्य;* a person. (94)

मानवान् (सं.) मानव, द्वि. बहु., *मनुष्यों को;* human beings. (69)

मायया (सं.) माया, तृ. एक., *माया के द्वारा;* through tricks. (92)

मायाचारः (वि.) माया एव आचारः यस्य सः (बहुव्री.) मायाचारः,

पुं.प्र. एक. *मायावी मनुष्य;* a wicked person. (92)

मार्गः (सं.) पु. प्र. एक. *मार्ग, रास्ता;* way, path. (56)

मितभुक्तम् (वि.) मितं भुक्तं यस्य तम् (बहुव्री.), द्वि. एक., *कम भोजन करने वाले को,* to one who eats less (35).

मित्रद्रोहः (सं.) मित्राय द्रोहः (च.तत्पु.) प्र.एक. *मित्र के प्रति द्रोह;* enmity with the friends. (69)

मित्रद्रोही (वि.) मित्राय द्रुह्यति सः मित्रद्रोहिन्, पुं. प्र. एक. *मित्र के साथ द्रोह करने वाला;* a person who behaves enemically with friends. (16)

मित्रम् (सं.) मित्र नपुं. प्र.एक. द्वि. एक. *मित्र, मित्र को;* friends. (60, 11)

मित्रे (सं.) मित्र, स. एक., *मित्र पर;* in a friend. (60)

मुह्येत (क्रि.) मुह् विलि. प्रपु. एक., *मोहित होवे;* may get deluded. (50)

मूढः (वि.) प्र. एक. *मूर्खः* a foolish person. (54)

मूढचेतसम् (वि.) मूढम् चेतः यस्य तम् (बहुव्री.) द्वि.एक. *मूर्ख चित वाला;* a foolish person. (11)

मूढतमः (वि.) प्र. एक. *सबसे अधिक मूर्ख;* the foolish of all. (13)

मूलानि (सं.) मूल, द्वि. बहु., *जड़ों को,* even the roots. (93)

मृजया (सं.) मृजा, तृ. एक., *स्वच्छता के द्वारा;* by cleanliness. (26)

मृतकल्पाः (वि.) प्र. बहु. *मृत के समान पुरुष;* people who are like dead. (37)

मृत्युना (सं.) मृत्यु, तृ. एक., *मृत्यु के द्वारा;* by death. (41)

मृदुः (वि.) प्र.एक. *मृदु स्वभाव वाला;* soft-tempered. (30)

मेधावी (वि.) मेधाविन्, प्र. एक., *बुद्धिमान, मेधावी मनुष्य;* an intelligent person. (8)

मैत्री (सं.) ई.प्र.एक. *मित्रता;* friendship. (8, 61)

मोक्तव्यः (क्रि.) मुच् तव्यत् पु.प्र. एक. *छोड़ना चाहिए;* should be released. (98)

मोघम् (अ.) व्यर्थम्, *बेकार, असफलतापूर्वक,* fruitlessly. (81)

म्रियते (क्रि.) मृ, लट् प्रपु. एक., *मर जाता है,* dies. (42)

यः (सर्व.) यद् पुं. प्र. एक., *जो;* one who. (10, 50, 58, 64, 81)

यत् (सर्व.) यद् नपुं, प्र. एक., *जो;* that, (7, 34, 40, 60)

यत्नः (सं.) पुं. प्र. एक. *प्रयत्न;* effort. (70)

यत्र (अ.) *जहाँ;* where. (40)

यथा (अ.) *जैसे;* just like. (28, 92)

यथा-तद्वद् (अ.) *जैसे-उसी प्रकार;* just as, similarly. (88)

यथा-तथा (अ.) *जैसे-उसी तरह;* just as - likewise. (12)

यथा-यथा (अ.) *जैसे-जैसे;* the way. (52)

यथाशक्ति (अ.) *शक्ति के अनुसार;* as per one's capacity. (20)

यदि (अ.) यदि; if. (73)

यम् (सर्व.) यद् पुं. द्वि. एक., *जिसको;* one to whom. (94)

ययोः (सर्व.) यद् पुं. ष. द्वि.; *जिन दोनों की;* of which two persons. (61)

यस्मिन् (सर्व.) यद् स. एक., *जिस पर,* on whom. (60, 92)

यस्य (सर्व.) यद् ष. एक., *जिसका;* whose. (9, 25, 60, 73, 76, 77)

यशः (सं.) यशस् नपुं प्र. एक. यश, *कीर्ति;* fame. (4)

याचति (क्रि.) याच् लट् प्रपु. एक., *मांगता है;* begs. (42)

याचितः (वि.) याच् क्त पुं. प्र. एक., *मांगे जाने पर;* when begged. (86)

याच्यते (क्रि.) याच् कर्म. लट् प्रपु. एक., *मांगा जाता है;* is begged by. (42)

याति (क्रि.) या लट् प्रपु. एक., *जाता है;* goes. (46)

यादृग् (सर्व.) जैसा; whatsoever. (59)

यादृशान् (सर्व.) यादृश् पुं. द्वि. बहु., *जैसों को;* the type of people. (59)

यादृशैः (सर्व.) यादृश्, तृ. बहु., *जैसों के साथ;* in the company of the like of people. (59)

यावज्जीवेन (वि.) तृ. एक. *जीवनपर्यन्त;* till one lives. (57)

यावत्-तावत् (अ.) *जब तक-तब तक;* till-then. (39)

युक्तः (वि.) युज् क्त पु. प्र. एक., *युक्त;* equipped with. (32)

ये (सर्व.) यद् पुं. प्र. बहु., *जो;* those who (65, 77)

येन (सर्व.) यद् पुं./नपुं. तृ. एक., *जिसके द्वारा,* by which. (7, 57)

योगेन (सं.) योग, तृ. एक., *योग के द्वारा;* through penance. (6, 26)

रक्षन् (क्रि.) रक्ष् शतृ पुं. प्र. एक., *रक्षा करते हुए;* while protecting. (88)

रक्ष्यते (क्रि.) रक्ष् कर्म. लट् प्रपु. एक., *रक्षा की जाती है;* is protected. (26)

रक्ष्याः (वि.) रक्ष् यत् टाप् प्र. बहु., *रक्षा करने के योग्य हैं;* need to be protected. (96)

रजतम् (सं.) नपुं. प्र. एक. *चांदी;* silver. (95)

रतस्य (वि.) रम् क्त ष. एक., *लगे हुए का;* of one who indulges in. (84)

रतिः (सं.) रम् क्तिन्, प्र. एक. *आसक्ति;* attachment. (9)

रथः (सं.) पुं. एक. रथ; chariot. (46)

रथी (वि.) रथ इन्, रथिन् प्र. एक., *रथवाला;* the owner of chariot. (46)

रभसैः (वि.) रभस, तृ. बहु., *जल्दबाजी करने वालों के द्वारा;* by those who make haste. (79)

रसम् (सं.) रस, द्वि., एक., *रस को;* juice. (36)

राजन् (सं.) राजन् सम्बो. एक., *हे राजन्;* O king! (27, 46, 74)

राजा (सं.) राजन् प्र. एक. *राजा,* the king.

राजानः (सं.) राजन् प्र. बहु., *बहुत से राजा;* kings (72)

राजानम् (सं.) राजन् द्वि. एक., *राजा को;* the king. (78, 80)

राजेन्द्र (वि.) राज्ञाम् इन्द्रः (ष.तत्पु.), सम्बो. एक. *राजाओं में श्रेष्ठ* (ष. तत्पु.); O the best of Kings. (91)

राज्ञा (सं.) राजन् तृ. एक., *राजा के द्वारा;* by the king. (79)

राज्यम् (सं.) राज्य, द्वि. एक., *राज्य को;* the kingdom. (71)

रुषतीम् (वि.) रुष्, शतृ स्त्री. द्वि. एक.; *जलाने वाली;* the burning (speech) (16)

रूक्षाम् (वि.) रुक्ष टाप् द्वि. एक; *रूखी;* harsh. (16)

रूपम् (सं.) रूप द्वि. एक.; *रूप को;* beauty (62)

रोगिणः (वि.) रोग इन् प्र. बहु.; *रोगी;* patients. (37)

रोहते (क्रि.) रुह्, लट् प्रपु. एक., *उग जाता है;* grows. (15)

लभते (क्रि.) लभ् लट् प्रपु. एक., *प्राप्त करता है;* gets. (66)

लाभः (सं.) पुं, प्र. एक. *लाभ, प्राप्ति;* gain. (45)

लोकः (सं.) पुं. प्र. एक. *संसार, जनता;* the public. (89)

लोकम् (सं.) लोक द्वि. एक. *जनता को;* the public. (89)

लोके (सं.) लोक, स. एक., *संसार में;* in this world. (31, 39)

लोभः (सं.) पुं. प्र. एक. *लालच;* greediness. (48)

लोभात् (सं.) लोभ, पं. एक. *लालचवश;* because of greed. (100)

वक्ता (वि.) वच् तृच् पुं. प्र. एक.; *बोलने वाला;* the speaker. (74)

वक्तुम् (अ.) वच् तुमुन्; *कहने के लिए;* for uttering/saying. वक्तुम् अर्हसि, *कहने के योग्य नहीं हो;* should

not tell. (91)

वदेत् (क्रि.) वद् विलि. प्रपुं. एक., *कहे;* may say. (90)

वधः (सं.) पुं. प्र. एक. *मृत्यु;* death. (2)

वध्यताम् (सं.) वध् यत् तल्; द्वि. एक. *मारने योग्य अवस्था को प्राप्त;* fit to be killed. (98)

वध्यम् (वि.) वध् यत् द्वि. एक., *मारने योग्य;* worthy of being killed. (98)

वनदुर्गेषु (सं.) वनस्य दुर्गेषु (ष. तत्पु.); स. बहु. *वन के दुर्गम स्थानों पर;* in unreachable places of forests. (97)

वनम् (सं.) नपुं., प्र. एक. *वन;* forest. (15)

वनस्पतेः (सं.) वनस्पति, ष. एक., *वनस्पति के;* of the tree. (36)

वयसा (सं.) तृ. एक., *उम्र से;* by the age. (50)

वयसि (सं.) वयस् स. एक., *उम्र में;* in that age. (57)

वयांसि (सं.) वयस् नपुं. प्र. बहु., *पक्षी;* birds (44)

वरः (अ.) अपेक्षाकृत, *अच्छा है;* is better than. (30)

वर्जयीत (क्रि.) वर्ज् विलि. प्रपु. एक., *छोड़ देवे;* must abandon. (16)

वर्ज्यानि (वि.) वर्ज् यत् नपुं. प्र. बहु., *छोड़ने योग्य;* fit to be abandoned. (79)

वर्तते (क्रि.) वृत् लट् प्रपु. एक., *व्यवहार करता है;* behaves. (92)

वर्तमानः (वि.) वृत् शानच् पुं. प्र. एक., *होते हुए;* being. (13)

वर्तितव्यः (वि.) वृत् तव्यत्, पुं. प्र. एक., *व्यवहार करना चाहिये;* should be treated. (92)

वर्तितव्यम् (वि.) वृत् तव्यत् नपुं. प्र. एक., *व्यवहार करना चाहिये;* should behave. (92)

वर्धते (क्रि.) वृध् लट् प्रपु. एक., *बढ़ता है;* increases. (40, 42)

वशम् (सं.) वश, द्वि. एक., *वश को;* under control. (43, 98)

वशीकृतिः (वि.) स्त्री. प्र. एक. *वश में करने वाली;* one that controls everything. (31)

वा (अ.) *अथवा;* or. (1, 30, 65, 73)

वाक् (सं.) वाच् प्र. एक., *वाणी;* speech. (14, 55)

वाक्यम् (सं.) नपुं. प्र. एक. *वाक्य, बोली गई वाणी;* articulated speech, sentence. (51)

वाक्क्षतम् (सं.) वाचा क्षतम् (तृ. तत्पु.) नपुं., प्र. एक. *वाणी द्वारा किया गया घाव;* a wound caused by harsh words. (15)

वाचम् (सं.) वाच् द्वि. एक., *वाणी को;* speech, words. (16)

वाचा (सं.) वाच् तृ. एक., *वाणी के द्वारा;* by speech. (15, 89)

वायुः (सं.) प्र. एक. *वायु, हवा;* air, wind. (71)

विघ्नन्ति (क्रि.) वि हन् लट् प्रपु. बहु., *नष्ट कर देते हैं;* destroy. (9)

विजिगीषते (क्रि.) वि. जि. सन् लट् प्रपु. एक., *जीतना चाहता है;* has the desire to conquer. (81)

विज्ञाय (अ.) वि ज्ञा ल्यप्, *जानकर;* having known. (8)

वित्तम् (सं.) द्वि. एक. *धन;* wealth, riches. (66)

विदित्वा (अ.) विद् क्त्वा; *जानकर;* having known. (85)

विद्धम् (वि.) व्यध् क्त नपुं. प्र. एक. *विंधा हुआ;* pierced. (15)

विद्या (सं.) प्र. एक. *ज्ञान;* knowledge. (1)

विद्यात् (सं.) विद् विलि., प्रपु. एक., *जाने* should know. (79)

विद्याम् (सं.) द्वि. एक. *विद्या को;* studies, knowledge. (1)

विद्यायाः (सं.) विद्या ष. एक., *विद्या के;* of the knowledge. (2)

विद्यार्थिनः (सं.) विद्याम् इच्छति इति विद्यार्थिन्, तस्य, ष.

एक., *विद्यार्थी का;* of a student. (1)

विद्यार्थिनाम् (स.) विद्यार्थिन् ष. बहु., *विद्यार्थियों के;* of the students. (3)

विद्यार्थी (सं.) विद्यार्थिन् प्र. एक.; *विद्यार्थी;* student. (1)

विद्यावृद्धम् (सं.) विद्यायां वृद्धम्, स. तत्पु. द्वि. एक. *विद्या में वृद्ध, विद्वान्* highly educated. (50)

विद्याशीलवयोवृद्धान् (सं.) द्वि. बहु. *विद्या शील और उम्र में बड़े;* those who excel in knowledge, conduct and age. (54)

विनयः (सं.) पुं. प्र. एक. *विनय, नम्रता;* politeness, humility. (29)

विन्दति (क्रि.) विद् लट् प्रपु. एक., *प्राप्त करता है;* gets, obtains. (6)

विन्दते (क्रि.) विद् लट् प्रपु. एक., *प्राप्त करता है;* gets, obtains. (6)

विपुलान् (वि.) विपुल द्वि. बहु., *बहुत अधिक;* excessive. (43)

विरोचते (क्रि.) वि रुच् लट् प्रपु. एक., *शोभा पाता है;* shines, gets glorified. (17)

विरोधः (सं.) पुं. प्र. एक. *विरोध, वैर;* enmity. (23)

विवर्जय (क्रि.) वि वर्ज् लोट् मपु. एक.; *छोड़ दो;* leave, abandon. (38)

विविधम् (वि.) द्वि. एक. *विविध, भिन्न प्रकार के;* of various kinds. (14)

विशिष्यते (क्रि.) वि शिष् लट् प्रपु. एक., *बढ़कर है;* excels. (41)

विशेषतः (अ.) विशेष तसिल्; *विशेष रूप से;* specially. (96)

विश्वसन्ति (क्रि.) विश्वस् लट् प्रपु. बहु., *विश्वास करते हैं;* trust. (84)

विश्वसेत् (क्रि.) वि श्वस् विलि. प्रपु. एक., *विश्वास करना चाहिये;* one should trust. (93)

विश्वस्ते (वि.) वि श्वस् क्त सं. एक., *विश्वस्त पर;* on one who is trustworthy. (93)

विषरसः (सं.) विषस्य रसः, प्र. एक. *विष का रस;* the extract of poison. (78)

विसृजेत् (क्रि.) वि सृज् विलि., प्रपु. एक., *छोड़ देवे;* may leave, abandon. (82)

वेदितुम् (अ.) विद् तुमुन्, *जानने के लिए;* to know. (12)

वेदैः (सं.) वेद, तृ. बहु., *वेदों के द्वारा;* through Vedas. (72)

वेश्मना (सं.) वेश्मन्; तृ. एक., *घर से;* by the household living. (27)

वेष्ट्यमानः (क्रि.) वेष्ट् कर्म, शानच् पुं. प्र. एक. *लपेटा जाता हुआ;* being wrapped. (44)

वैरकरम् (वि.) वैरं करोति इति वैरकरम् (उप. तत्पु.) प्र. एक. *वैर करने वाला;* enemy. (83)

वृत्तम् (सं.) वृत्त द्वि.एक. चरित्र; character. (66)

वृत्तेन (सं.) वृत्त; तृ. एक., *चरित्र के द्वारा;* by the character. (26)

वृद्धः (सं.) प्र.एक. *बूढ़ा; उन्नत,* grown up, excelling. (57, 95)

वृद्धम् (सं.) वृद्ध द्वि. एक., *वृद्ध को;* to an elderly person. (50)

वृद्धिम् (सं.) वृध् क्तिन्, द्वि.एक. *बढ़ोतरी को,* progress. (87)

वृद्धोपसेविनः (वि.) वृद्धान् उपसेवते (उप. तत्पु.) वृद्धोपसेविन् ष.एक. *बूढ़ों की सेवा करने वाले की,* of one who respects or serves the elders. (4)

व्याधिम् (सं.) द्वि.एक. *व्याधि को; रोग को;* disease. (62)

शकुनिः (सं.) प्र.एक. *पक्षी;* a bird. (95)

शक्तिज्ञः (वि.) शक्तिं जानाति इति (उप. तत्पु.) प्र. एक. *शक्ति को जानने वाला;* one who knows his limitations. (85)

शक्यम् (वि.) शक् यत्, प्र. एक. *सम्भव ही;* can be possibly. (34)

शङ्कितेन (सं.) शङ्कित; तृ. एक., *डरे हुए के द्वारा;* out of fear. (60)

शत्रवः (सं.) शत्रुः प्र. बहु. *शत्रु;* enemies. (2)

शत्रुः (सं.) प्र. एक. *दुश्मन;* enemy. (98)

शमः (सं.) शान्तिः प्र. एक. *सुख;* peace, happiness. (55)

शरीरम् (सं.) नपुं. एक. *शरीर;* body. (46)

शरीरधातून् (सं.) शरीरस्य धातून्, (ष. तत्पु.) द्वि. बहु. *शरीर के मांस मज्जा आदि को;* elements of the body. (44)

शस्त्रेण (सं.) शस्त्र; तृ. एक., *शस्त्र के द्वारा;* by the weapon.

शस्त्रेषु (सं.) शस्त्र; स. बहु., *उद्यतेषु शस्त्रेषु, शस्त्रों के उठाये जाने पर;* even in the face of pointing weapons. (97)

शान्तिखड्गः (सं.) शान्ति एव खड्गः (कर्मधा.) पु. प्र. एक., *शान्ति रूपी तलवार;* sword in the form of peace. (31)

शान्तिम् (सं.) द्वि. एक., *शान्ति को;* peace tranquility. (6)

शीतम् (सं.) प्र. एक. *शीत, सर्दी;* winter. (9)

शीलम् (सं.) प्र.एक. *शील, स्वभाव;* conduct. (25, 28, 53)

शुभम् (सं.) द्वि. एक. *अच्छा;* good. (73)

शूरः (वि.) शूर, प्र. बहु., *बहादुर, वीर;* warrior, brave person. (58)

शेते (क्रि.) शी, लट् प्रपु. एक., *सोता है;* sleeps. (64)

शोचति (क्रि.) शुच् लट् प्रपु. एक., *शोक करता है;* expresses sorrow, feels sad. (42)

शोच्यते (क्रि.) शुच् कर्म. लट् प्रपु. एक., *शोक किया जाता है;* is lamented upon by others. (42)

शौचम् (सं.) *पवित्रता;* purity. (55)

श्रद्दधानः (वि.) श्रत् धा शानच्, पुं. प्र. एक. *श्रद्धा करता हुआ;* having faith in Him. (5)

श्रियः (सं.) श्री, ष. एक., प्र. बहु., *लक्ष्मी/समृद्धि का, लक्ष्मियाँ;* prosperities. (2, 55, 96)

श्रियम् (सं.) श्री, द्वि. एक., *लक्ष्मी को, समृद्धि की,* prosperity. (53)

श्रुतम् (सं.) प्र.एक. *सुना हुआ, ज्ञान;* knowledge. (20, 51)

श्रुत्वा (अ.) श्रु क्त्वा; *सुनकर;* having heard. (8)

श्रेयः (वि.) श्रेयस्, द्वि. एक. *(अनन्त) कल्याण को;* (unlimited) prosperity. (87)

श्रेष्ठम् (वि.) प्रशस्य, इष्ठन्, नपुं., प्र. एक. *श्रेष्ठ; सबसे अधिक अच्छा;* the best. (7)

श्रोता (वि.) श्रु तृच् पुं. प्र. एक. *सुनने वाला;* a listener. (74)

श्रोत्रियः (सं.) श्रोत्रिय पुं. प्र. एक. *ब्राह्मण;* a learned scholar. (95)

श्लाघा (सं.) आ. प्र. एक. *स्व-प्रशंसा;* self-praise. (2)

षट्पदः (सं.) षट् पादाः यस्य सः (बहुव्री.) पुं. प्र. एक. *छः पैरों वाला, भौंरा;* an insect having six feet, a bee. (88)

षड् (संख्या) प्र. बहु. *छः;* six. (19, 35, 40, 69)

संकथनम् (सं.) नपुं. प्र. एक. *परस्पर वार्तालाप;* conversation. (23)

सङ्गतानि (सं.) सम् गम् क्त, नपुं. प्र. बहु. *साथी;* companions. (60)

सङ्गृहीतानि (वि.) सम् ग्रह क्त नपुं. प्र. बहु., *समाहित कर लिये गए हैं;* have been included. (7)

संतुष्य (अ.) सम् तुष् ल्यप्, *संतुष्ट करके;* having satisfied. (45)

संभोजनम् (सं.) नपुं. प्र. एक. *साथ मिलकर भोजन करना;* eating together. (23)

संरोहति (क्रि.) सम् रुह् लट् प्रपु. एक., *ठीक हो जाता है;* gets healed. (15)

संशयः (सं.) पुं. प्र. एक. *शक, सन्देह;* doubt. (52)

संविभज्य (अ.) सम् वि, भज् ल्यप्, *विभाजित करके बांटकर;* having devided. (86)

सः (सर्व.) तद् पुं. प्र. एक., *वह;* that person. (36, 50)

सचिवम् (सं.) सचिव, द्वि. एक., *सचिव को;* the minister, secretary. (99)

सततम् (अ.) सर्वदा; *निरन्तर;* continuously. (74)

सति (क्रि.) अस् शतृ स. एक., *होने पर;* being. (98)

सत्त्ववताम् (वि.) सत्त्ववत् ष. बहु., *वीरों का;* of the brave/courageous people. (97)

सत्पुरुषार्यशीलः (वि.) सत्पुरुषः चासौ आर्यशीलः च, (कर्म.) पु. प्र. एक. *श्रेष्ठ चरित्रवाला सज्जन पुरुषः;* a gentleman with excellent character. (22)

सत्यम् (सं.) प्र. एक. *सच्चाई, सत्य;* truth. (19, 56)

सत्येन (सं.) सत्य, तृ. एक., *सत्य के द्वारा;* by truth. (26, 63)

सत्योदका (वि.) सत्यम् एव उदकं यस्याम् सा (बहुव्री) प्र. एक. *सत्य रूपी जल वाली;* having truth in the form of water. (47)

सदश्वैः (सं.) सत् अश्वैः, सदश्व तृ. बहु., *अच्छे घोड़ों से;* with good horses. (46)

सदा (अ.) सर्वदा; always. (3)

सधनताम् (सं.) सधनता, आ. स्त्री. द्वि. एक. *अमीरी;* richness. (37)

सन् (क्रि.) अस् शतृ पुं. प्र. एक., *होते हुए;* being. (95)

सन्तापाद् (सं.) सन्ताप्, पं. एक., *सन्ताप से;* by grieving. (62)

सन्तु (क्रि.) अस् लोट् प्रपु. बहु., होवें; be. (95)

सन्तर (क्रि.) सम् तृ लोट् मपु. एक., *पार करो;* cross over. (49)

सन्तुष्टः (वि.) सम् तुष् क्त पुं. प्र. एक., *सन्तुष्ट;* satisfied. (21)

सन्त्यजति (क्रि.) सम् त्यज् लट् प्रपु. एक., *छोड़ता है;* leaves, abandons. (64)

सन्निविशते (क्रि.) सम् नि विश् लट् प्रपु. एक., *बैठता है, संगति करता है;* stays in the company of. (59)

सप्त (संख्या) *सात;* seven. (3, 55)

सप्रजम् (वि.) प्रजया सह विद्यमानः तं (बहुव्री.) नपुं. द्वि. एक. *प्रजा सहित;* alongwith the subjects. (78)

समाचरेत् (क्रि.) सम् आ चर्; विलि., प्रपु. एक., *व्यवहार करें;* may enter into (friendship). (8)

समादत्ते (क्रि.) सम् आ; दा, लट् प्रपु. एक.; *ग्रहण करता है;* collects. (88)

समिधः (सं.) समिध्; प्र. बहु., *समिधाएँ;* firewood, causes of increasing. (55)

समुद्रे (सं.) समुद्र; स. एक., *समुद्र में;* in the ocean. (51)

समेति (क्रि.) सम् इण्; लट् प्रपु. एक.; *साथ जाता है;* goes together with. (61)

समृद्धाः (वि.) समृद्ध प्र. बहु. *धनी;* enriched (38)

समृद्धिः (सं.) इ.प्र.एक. *धनाढ्यता; सम्पन्नता;* richness, prosperity. (9)

सम्पाद्य (अ.) सम् पद् णिच् ल्यप्, *(जांच) पूरा करके;* having accomplished (the examination). (8)

सम्पृच्छेत् (क्रि.) सम् पृष् विलि. प्रपु. एक., *पूछे, सम्मान करे;* may care for, look after. (50)

सम्प्रवर्धन्ते (क्रि.) सम्; प्र. वृध् लट् प्रपु. बहु., *बढ़ती हैं, बढ़ते है;* increase, rise. (4, 68)

सम्प्रीतिः (सं.) प्र. एक. *परस्पर प्रेम;* mutual love and affection. (23)

सम्भ्रमे (सं.) सम्भ्रम; स. एक., *घबराहट में;* in anxiety.

(97)

सम्यग् (अ.) *भली प्रकार,* adequately. (66)

सरसि (सं.) सरस्; स. एक., *तालाब में;* in the pond. (68)

सराष्ट्रम् (वि.) राष्ट्रेण सह विद्यमानः तम् (बहुव्री.) द्वि. एक. *राष्ट्र सहित;* alongwith the kindgdom. (78)

सर्वकालम् (अ.) *सर्वदा;* for all times always. (84)

सर्वतः (अ.) सर्व तसिल्; *सब ओर से;* from all quarters. (33, 77)

सर्वपरम् (क्रि. वि.) सर्वस्मात् परम्; *सब से श्रेष्ठ;* the most important. (100)

सर्वम् (सर्व.) सर्व, द्वि.एक., *सबकुछ;* everthing. (53)

सर्वहरः (वि.) सर्वं हरति इति (उप. तत्पु.) प्र. एक. *सब कुछ हरने वाला;* an extractor of everything. (82)

सर्वाणि (सर्व.) सर्व; नपुं., प्र. बहु., *सभी;* all. (7, 85)

सर्वार्थाः (सं.) सर्वे अर्थाः (कर्मधा.) पुं. प्र. बहु. *सभी उद्देश्य, सभी कामनाएँ;* all the desires. (52)

ससुतामात्यः (वि.) सुतैः अमात्यैः च सह विद्यमानः (बहुव्री.) पु. प्र. एक. *पुत्रों और मन्त्रियों सहित;* alongwith sons and ministers. (91)

सह (अ.) *साथ;* alongwith, सह योगे तृतीया, *सह;* governs third case ending. (23)

सा (सर्व.) साक्ष्य तद् स्त्री. प्र. एक., *वह;* she, that. (14)

साक्ष्यम् (सं.) नपुं द्वि. एक. *गवाही;* witness. (90)

सादयेत् (क्रि.) सद् णिच् विलि. प्रपुं. एक., *सताए; दुःखी करें;* may cause pain, may prove troublesome. (41)

साधवे (सं.) साधु, च. एक., *सज्जन के लिए;* for a gentleman. (24)

साधुना (सं.) साधु, तृ. एक., *सज्जन के द्वारा;* by a gentleman. (92)

साध्यते (क्रि.) सिध्, कर्म. लट् प्रपु. एक., *सिद्ध किया जा सकता है;* can be accomplished. (31)

साध्वाचारः (वि.) साधु आचारः यस्य सः (बहुव्री.) प्र. एक. *अच्छे आचरण वाला;* a person of good conduct. (92)

सायकैः (सं.) सायक, तृ. बहु., *तीरों के द्वारा;* by the arrows. (15)

सारम् (सं.) द्वि. एक. *सारयुक्त तथ्य;* meaningful advice. (33)

सिध्यन्ते (क्रि.) सिध् लट् प्रपु. बहु., *सिद्ध हो जाता हैं;* get fulfilled. (52)

सुखदुःखे (सं.) सुखं च दुःखं च (द्वन्द्व) प्र. द्वि. *सुख और दुःख,* joys and sorrows. (45)

सुखम् (सं.) सुख, नपुं द्वि. एक. *सुख;* happiness. (1, 24, 35, 46, 57, 64, 67)

सुखार्थिनः (वि.) सुखम् इच्छति इति सुखार्थिन्, ष. एक., *सुख चाहने वाले की;* of one who wants pleasures. (1)

सुखार्थी (वि.) सुखम् इच्छति इति सुखार्थिन् पुं. प्र. एक., *सुख चाहने वाला;* one who seeks pleasures. (1)

सुखे (सं.) सुख, नपुं. स. एक., *सुख में;* in the happiness. (22)

सुदुःखानि (सं.) द्वि. बहु. *बड़े-बड़े दुःखों को;* bigger calamities. (64)

सुभाषिता (वि.) सु भाष् क्त टाप्, प्र. एक., *अच्छी प्रकार बोली गई;* well-spoken. (14)

सुलभाः (वि.) सुलभ प्र. बहु. *आसानी से प्राप्य;* easily available. (74)

सुवर्णपुष्पाम् (वि.) सुवर्णम् एव पुष्पाणि यस्याः ताम् (बहुव्री.) द्वि. एक., *सुवर्णमय फूलों वाली; धनधान्य से पूर्ण;* having gold as its flowers, bountiful (earth). (58)

सेवते (क्रि.) सेव् लट् प्रपु. एक., *आचरण करता है;* performs. (5)

सेवितुम् (अ.) सेव् तुमुन्, *सेवा करने के लिए;* serving, how to serve. (58)

सेवेत (क्रि.) सेव् विलि. प्रपु. एक., *सेवा करे, आचरण करे;*

indulges in. (83)

स्तब्धता (सं.) स्तब्ध तल्, प्र. एक. *उद्दण्डता;* haughtiness. (3)

स्त्रियः (सं.) स्त्री; प्र. बहु., *स्त्रियाँ;* ladies. (96)

स्थितः (वि.) स्था; क्त, पुं. प्र. एक. *स्थित, विराजमान;* existing, indulging in. (71)

स्नातः (वि.) स्नै; क्त, पु. प्र. एक. *स्नान किया हुआ;* having bathed. (47)

स्मृतः (वि.) स्मृ क्त, पुं. प्र. एक. *माना गया है;* has been considered as. (56)

स्यात् (क्रि.) अस्; विलि. प्रपु. एक., *होवे;* may be. (16, 34)

स्युः (क्रि.) अस्; विलि. प्रपु. बहु., *होवें;* many be. (3, 65)

स्रवते (क्रि.) स्रु लट् प्रपु. एक.; *निकल जाती है;* trickles away. (40)

स्वपिति (क्रि.) स्वप्; लट् प्रपु. एक.; *सोता है;* sleeps. (86)

स्वबन्धुम् (सं.) स्वं बन्धुम्; (कर्मधा.) द्वि. एक. *अपने मित्र को;* his friend. (50)

स्वयम् (अ.) *अपने आप;* himself. (13)

स्वराष्ट्रपरिपालने (सं.) स्वम् राष्ट्रम्; स्वराष्ट्रम् (कर्मधारय) तस्य परिपालने (ष. तत्पु.) स. एक. *अपने राष्ट्र की रक्षा में;* in the protection of one's own kingdom. (70)

स्वर्गलोके (सं.) स्वर्गस्य लोके (ष. तत्पु.) स. एक. *स्वर्ग के लोक में;* in the abode of heaven. (39)

स्वर्गस्य (सं.) स्वर्ग; ष. एक., *स्वर्ग के;* of the heaven. (32)

स्वे (वि.) स्व; स. एक., *अपने (सुख) में;* in one's own (joys). (22)

स्वेन (वि.) स्व; तृ. एक., *अपने (कर्म) से;* by one's own deeds. (71)

हतम् (वि.) हन्; क्त नपुं., प्र. एक., *काटा गया, मारा गया;* cut, destroyed. (15)

हन्ति (क्रि.) हन्; लट् प्रपु. एक., *नष्ट कर देता है;* destroys, kills. (29, 78)

हन्यते (क्रि.) हन्; कर्म. लट् प्रपु. एक., *मारा जाता है; नष्ट कर दिया जाता है;* is destroyed, killed. (78)

हन्याद् (क्रि.) हन्; विलि. प्रपु. एक., *नष्ट कर देवे;* may destroy. (98)

हरति (क्रि.) हृ; लट् प्रपु. एक., *हर लेती है;* destroys. (53)

हातव्याः (वि.) हा; तव्यत् पुं. प्र. बहु., *छोड़ देने योग्य;* must be abandoned. (19)

हास्यार्थम् (अ.) हास्याय; *हंसी के लिए भी;* even as a recreation. (83)

हि (अ.) *निश्चय से;* indeed, verily. (45, 52, 53, 98)

हितम् (सं.) प्र. एक. *हितकारी; गुणकारी;* beneficial. (34)

हितानाम् (वि.) हित; ष. बहु., *भलाई की;* beneficial. (85)

हिते (सं.) हित; स. एक., *भलाई में;* in the welfare of (84)

हित्वा (अ.) हा; क्त्वा, छोड़कर; having abandoned. (43)

हिनस्ति (क्रि.) हिंस्; लट् प्रपु. एक., *मारता है, सताता है;* hurts, torments. (11)

हीनवृत्तः (वि.) हीनं वृत्तं यस्य सः (बहुव्री.) प्र. एक. *नष्ट चरित्र वाला;* characterless. (16)

हीनसाधनम् (वि.) हीनानि साधनानि यस्य तम्; द्वि. एक. *नष्ट साधन वाले को;* one whose support is destroyed. (75)

हीनान् (वि.) हीन्; द्वि. बहु., *रहित;* devoid of. (38)

हीयते (क्रि.) हा; कर्म. लट् प्रपु. एक. *घट जाती है;* decreases. (42)

हुतम् (सं.) हु क्त; नपुं. प्र. एक. *हवन किया हुआ,* oblations

offered in sacrifice. (51)

हृतस्वम् (सं.) द्वि. एक. *जिसका सब कुछ चुरा लिया गया है;* one who has lost everything. (75)

हृष्यति (क्रि.) हृष्; लट् प्रपु. एक., *प्रसन्न होता है;* feels pleased. (10)

हेतुः (सं.) प्र. एक. *कारण, स्रोत;* cause source. (45)

हेतोः (सं.) हेतु; पं. एक., *कारण से;* for the sake of. (100)

ह्रदः (सं.) ह्रद, पुं. प्र. एक., *तालाब;* pond. (10)

ह्रियम् (सं.) ह्री; द्वि. एक., *लज्जा को;* sense of shame. (53)

ह्रीमान् (वि.) ह्री; मतुप्, पुं. प्र. एक. *लज्जा वाला;* one who has sense of shame. (30)

सम्पूर्णविदुरनीत्यां (मूले) प्रयुक्ताः सूक्तयः

1. यमर्थाः नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते। 1.20
   जिसको धन सम्पत्ति आकृष्ट नहीं कर पातीं, वही विद्वान है।
   A learned person is one who is not attracted by worldly riches.

2. आपत्सु न मुह्यन्ति नराः पण्डितबुद्धयः। 1.28
   विद्वान मनुष्य आपत्तियों में नहीं घबराते।
   Intellectuals are not infatuated by adversities.

3. असम्भिन्नार्यमर्यादः पण्डिताख्यां लभेत। 1.34
   सज्जन की मर्यादाओं को न लाँघने वाला ही पण्डित की उपाधि को प्राप्त कर सकता है।
   He indeed is learned who has not crossed the limits of gentlemanliness.

4. मिथ्या चरति मित्रार्थे यश्च मूढ स उच्यते। 1.36
   जो मित्र के साथ झूठा व्यवहार करता हैं वह मूर्ख कहा जाता है।
   One who practises falsehood with one's friend is called a fool.

5. अलभ्यमिच्छन्नैष्कर्म्यान्मूढबुद्धिरिहोच्यते। 1.43
   अलभ्य वस्तु को, बिना प्रयत्न किये, प्राप्त करने की इच्छा करने वाला मनुष्य मूर्ख बुद्धि कहलाता है।
   He is indeed a fool who wants to acquire something unachievable without making any efforts.

6. सराष्ट्रं सप्रजं हन्ति राजानं मन्त्रविप्लवः। 1.50
   गुप्त योजनाओं का पहले ही भेद खुल जाना सम्पूर्ण राष्ट्र को प्रजा सहित नष्ट कर देता है।
   The leakage of plans can kill a king along with his subjects and his kingdom.

7. एको न गच्छेदध्वानम्। 1.51
   अकेले यात्रा पर न जाएँ।
   One should not travel alone.

8. सत्यं स्वर्गस्य सोपानं पारावारस्य नौरिव।। 1.52
   समुद्र में स्थित नाव के समान सत्य स्वर्ग की सीढ़ी है।
   Truth is the ladder to heaven like a boat in the ocean.

9. एको धर्मः परं श्रेयः। 1.57
   एक धर्म ही कल्याणकारी है।
   Duty alone is one that brings welfare.

10. विद्यैका परमा तृप्तिः। 1.57
    विद्या ही परम सन्तोषदायिका है।
    Knowledge provides the best satisfaction.

11. **काले च यो विक्रमते स धीरः। 1.111**
उचित समय पर प्रहार करने वाला ही धैर्यवान है।
Patient is one who strikes at the right time.

12. **य आत्मनापत्रपते भृशं नरः, स सर्वलोकस्य गुरुर्भवत्युत। 1.126**
जो मनुष्य, अपनी आत्मा के समक्ष लज्जित होता हैं, वह सारे संसार का गुरु बन सकता है।
A person who feels ashamed before his own conscience can teach the whole world.

13. **श्रियं हि अविनयः हन्ति। 2.12**
उद्दण्डता शोभा को नष्ट कर देती है।
Haughtiness destroys beauty.

14. **विद्या योगेन रक्ष्यते। 2.39**
विद्या की रक्षा योग से होती है।
Knowledge can be protected through application.

15. **कुलं वृत्तेन रक्ष्यते। 2.39**
कुल की रक्षा चरित्र से होती है।
A family is protected by character.

16. **गतिरात्मवतां सन्तः। 2.46**
आत्मज्ञानियों का आश्रय सन्त ही हैं।
Sages are the final resort for those who have realized self.

17. **सर्वं शीलवताम् जितम्। 2.47**
शीलयुक्त मनुष्यों द्वारा सभी कुछ जीत लिया जाता है।
Everything is conquered by persons with good conduct.

18. **उत्तमानां तु मर्त्यानामवमानात्परं भयम्। 2.52**
उत्तम मनुष्यों को अपमान से सर्वाधिक भय होता है।
Good people are greatly afraid of insult.

19. **परीक्ष्यकारिणं धीरमत्यन्तं श्रीर्निषेवते। 2.58**
परीक्षा करके कार्य करने वाले धैर्यशाली पुरुष में श्री निवास करती है।
Good fortune comes to the patient person who acts after thorough discrimination of good and bad.

20. **इन्द्रियैरजितैः बालः सुदुःखं मन्यते सुखम्। 2.61**
असंयमित इन्द्रियों वाला मूर्ख दुःख को भी सुख समझता है।
With uncontrolled sense-organs a fool considers great fatuation as happiness.

21. **कामश्च राजन् ! क्रोधश्च तौ प्रज्ञानं विलुम्पतः। 2.66**
हे राजन्! काम और क्रोध मनुष्य के प्रज्ञान को नष्ट कर देते हैं।
O king! lust and anger destroy the conscience of a person.

22. पापैः सन्धिं न कुर्यात्। 2.70
पापियों के साथ मित्रता न करें।
Don't make friendship with sinners.

23. क्षमा गुणवतां बलम्। 2.75
क्षमा गुणी मनुष्यों की शक्ति है।
Forgiveness is the strength of meritorious persons.

24. दमः सत्यमार्जवमानृशस्यं चत्वार्येतान्यनुयान्ति सन्तः।। 3.56
मन का दमन, सत्य, सरलता और दया ये चारों गुण स्वतः ही सज्जनों का अनुगमन करते हैं।
Control of mind, truth, simplicity, absence of cruelty-these four follow noble people.

25. वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्। 3.59
वे वृद्ध नहीं जो धर्मपूर्वक नहीं बोलते।
They are not old who do not speak about righteousness.

26. न तत्सत्यं यच्छलेनाभ्युपेतम्। 3.59
वह सत्य नहीं जो छल कपट से भरा हो।
It is not truth if it is mixed with deceipt.

27. पापं प्रज्ञां नाशयति क्रियमाणं पुनः पुनः। 3.62
बार-बार किया गया पाप बुद्धि को नष्ट कर देता है।
Sins when often repeated destroy the intellect.

28. यावज्जीवेन तत्कुर्याद्येन प्रेत्य सुखं वसेत्। 3.68
जीवन में मनुष्य वह करें जिससे परलोक में सुखी रहे।
One should perform such acts in life that may enable him to live happily after death.

29. आक्रुश्यमानो न आक्रोशेत्। 4.5
आक्रुष्ट होने पर भी आक्रोश न करें।
One should not shout even when one is shouted upon.

30. रूक्षां वाचं रुषतीं वर्जयीत। 4.6
रूखी और जलाने वाली वाणी को छोड़ देवे।
Do not speak harsh and burning words.

31. यादृगिच्छेच्च भवितुं तादृग्भवति पूरुषः। 4.13
मनुष्य जैसा बनना चाहता है, वैसा ही बन जाता है।
One becomes as one wishes to become.

32. न कस्यचिन्मित्रमथो दुरात्मा। 4.18
दुरात्मा किसी का मित्र नहीं होता।
A wicked person can never be a friend of anyone.

33. अधमांस्तु न सेवेत य इच्छेत् भूतिमात्मनः।

जो मनुष्य अपना कल्याण चाहता हो वह नीच व्यक्ति की सेवा न करें।

One should not serve the wicked people if one wishes one's own welfare.

34. त्यक्तानृतास्तानि महाकुलानि। 4.24

झूठ को त्याग देने वाले मनुष्यों से ही महाकुल बनते हैं।

Great families are those whose members have left falsehood.

35. वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् वित्तमेति च याति च। 4.30

चरित्र की रक्षा करनी चाहिये, धन तो आता है और जाता है।

One should safeguard one's character, wealth comes and goes.

36. मा नः कुले वैरकृत् कश्चिद् अस्तु। 4.32

हमारे कुल में कोई भी वैरी न होवे।

Let there be no one in our family filled with enmity.

37. पारिप्लवमतेः नित्यमध्रुवो मित्रसंग्रहः। 4.39

अस्थिर मति वालों की मित्रमण्डली अनिश्चित ही होती है।

The assemblage of friends is uncertain in case of a fickle-minded person.

38. अर्चयेदेव मित्राणि सति वाऽसति वा धने। 4.43

धन हो या न हो, मित्रों की अर्चना करनी ही चाहिये।

Whether you have money or not, the friends have to be worshipped.

39. मा स्म शोके मनः कृथाः। 4.45

मन को शोकग्रस्त मत करो।

Don't submerge your mind in grief.

40. शान्तिं योगेन विन्दति। 4.52

शान्ति योग से प्राप्त होती है।

One can obtain peace with Yoga.

41. तपसा विन्दते महत्। 4.52

तपस्या से ही ईश्वर प्राप्त होता है।

The Supreme Lord can be realised through penance only.

42. तपसश्च सुतप्तस्य तस्यान्ते सुखमेधते। 4.54

सम्यक् आचरित तपस्या से ही अन्त में सुख प्राप्त होता है।

Happiness can be obtained after strictly observing penance.

43. न वै भिन्ना जातु निद्रां लभन्ते। 4.55

असंगठित मनुष्यों को कभी नींद नहीं आती।

Disintegrated people can never get sleep.

44. रोगार्दिताः न फलानि आद्रियन्ते। 4.69
रोगियों को फल भी अच्छे नहीं लगते।
People suffering from disease cannot have any taste for fruits.

45. सहायसाध्यानि हि दुष्कराणि। 5.24
दुष्कर कार्य भी सहायकों के माध्यम से सिद्ध किये जा सकते हैं।
Even difficult tasks can be accomplished with the help of supporters.

46. भोगेष्वायुषि विश्वासं कः प्राज्ञः कर्तुमर्हति? 5.57
कौन बुद्धिमान भोगों और आयु पर विश्वास करेगा ?
Who of intelligent people can ever trust the age and the pleasures?

47. न लता वर्धते जातु महाद्रुममनाश्रिता। 5.63
महावृक्ष के आश्रय के बिना कोई भी लता पनपती नहीं।
No creeper can grow without the support of a big tree.

48. दीर्घौ बुद्धिमतो बाहू। 6.8
बुद्धिमान की भुजाएँ बहुत लम्बी होती हैं।
The arms of an intelligent person are very long.

49. स्वयमेव कृषिं व्रजेत्। 6.12
कृषि कार्य स्वयं ही करें।
Agriculture should be looked after by one's own self.

50. कर्मणां तु प्रशस्तानां मनुष्याणां सुखावहम्। 6.22
प्रशंसनीय कार्यों का निष्पादन ही मनुष्यों को सुख प्रदान कर सकता है।
Performance of good deeds only can bring happiness.

51. आत्मप्रत्ययकोषस्य वसुधैव वसुन्धरा। 6.25
आत्मविश्वासी मनुष्य के लिये ही पृथ्वी समस्त धन सम्पत्ति को प्रदान करती है।
The earth bestows all prosperity on one who has the treasure of self-confidence.

52. नियन्तव्यः सदा क्रोधः। 6.30
सर्वदा क्रोध को वश में रखना चाहिये।
Anger must always be controlled.

53. यतो धर्मः ततो जयः। 7.9
जहाँ धर्म है वहीं विजय है।
Where there is righteousness there is success.

54. प्रीतिर्नीचैर्विनश्यति। 7.14
नीच मनुष्यों के साथ प्रीति नष्ट हो जाती है।
Friendship is lost in a wicked person.

55. **ज्ञातिभिर्विग्रहस्तात न कर्तव्यः शुभार्थिना। 7.22**
कल्याण चाहने वाले को सम्बन्धियों के साथ विरोध नहीं करना चाहिए।
One who wants his own welfare, should not antagonize his relatives.

56. **त्रिवर्गाचरणे युक्तः स शत्रूनधितिष्ठति। 7.38**
जो धर्म-अर्थ-काम के त्रिवर्ग में लगा रहता है वही शत्रुओं को जीत सकता है।
One who indulges in Dharma-Artha-Kama can conquer his enemies.

57. **अनिर्वेदः श्रियो मूलं लाभस्य च शुभस्य च। 7.57**
उत्साह शोभा का, लाभ का और कल्याण का मूल है।
Industriousness is the root of all gains and prosperity.

58. **प्रज्ञाभिमानिनं चैव श्रीर्भयान्नोपसर्पति। 7.63**
प्रज्ञाभिमानी मनुष्यों के पास लक्ष्मी जाने से डरती है।
Prosperity fears to approach a person who is proud of intellect.

59. **गुरोर्वचनमौषधम्। 7.70**
गुरु के वचन औषध के समान होते हैं।
The words of a preceptor are like medicine.

60. **न तत्परस्य सन्दध्यात्प्रतिकूलं यदात्मनः। 7.71**
जो स्वयं को अच्छा न लगे वह व्यवहार दूसरे के प्रति नहीं करना चाहिये।
That should not be done to others which is against the interests of one's self.

61. **वाक्शल्यं मनसो जरा। 7.77**
दुर्वचन मन का बुढ़ापा है।
The arrows of speech are like old age for the mind.

62. **नित्यो धर्मः सुखदुःखे त्वनित्ये। 8.13**
धर्म ही नित्य है, सुख और दुःख दोनों ही अनित्य हैं।
Righteousness is eternal, pain and pleasures are transitory.

63. **तोषपरो हि लाभः। 8.13**
सन्तोष ही परम लाभ है।
Contentment is superior to all other acquirements.

64. **अग्नौ प्रास्तं पुरुषं कर्मान्वेति स्वयं कृतम्। 8.18**
स्वयं किये हुए कर्म ही चिता पर रखे मनुष्य के साथ जाते हैं।
The deeds done by a person, follow the person placed on the fire for cremation.

65. **मनो वाचं च कर्मणा रक्षेत्। 8.24**
कर्म से मन और वाणी की रक्षा करें।
One should safeguard one's mind and speech with his actions.

शुद्धिपत्रम्

94 तमे पृष्ठे यत् कोष्ठकमस्ति तत् अधोनिर्दिष्टरीत्या परिष्कृत्य पठनीयम्।

योग्यताविस्तरः

व्यञ्जनसन्धिप्रयोगः–

विपुलांश्च = विपुलान् + च इति त्रिचत्वारिंशत्तमे श्लोके प्रयोगः अस्ति।

अत्रेयं व्यवस्था –

न्	+	च	=	ंश्च	–	विपुलान् + च = विपुलांश्च
न्	+	छ	=	ंश्छ	–	वंशान् + छिनत्ति = वंशांश्छिनत्ति
न्	+	ट	=	ंष्ट	–	भवान् + टीकते = भवांष्टीकते
न्	+	ठ	=	ंष्ठ	–	(प्रयोगः विरलः)
न्	+	त	=	ंस्त	–	तस्मिन् + तरौ = तस्मिंस्तरौ

✧:✧

Teach Yourself Samskrit

पञ्चमी दीक्षा
व्युत्पादिनी

चतुर्थी दीक्षा
वाङ्मयावगाहनी

तृतीया दीक्षा
वाङ्मयावतरणी

द्वितीया दीक्षा
व्यवहारावगाहनी

प्रथमा दीक्षा
व्यवहारावतरणी
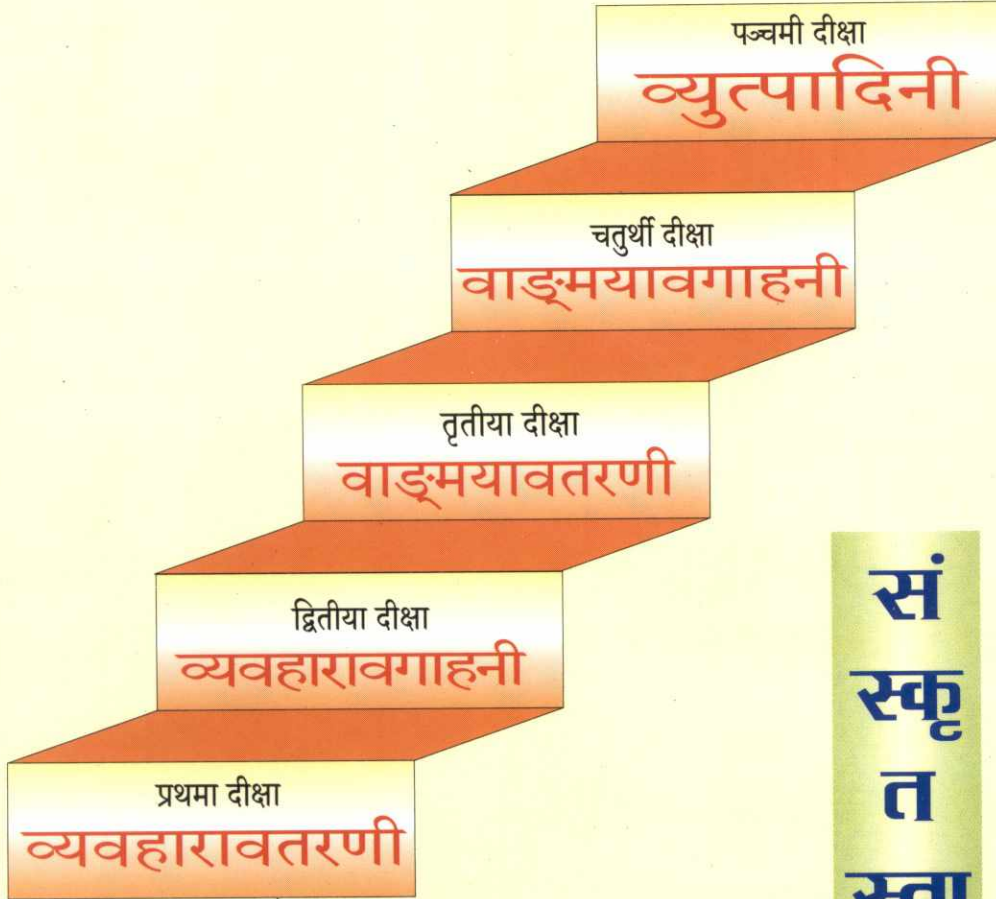
संस्कृतस्वाध्यायः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
नवदेहली